गढ़वाल हितैषिणी सभा (पंजी०)

2006 April 06 स्थापित–1923 6 April 2006

"स्मृति"

गढ़वाल मंडल की दिवंगत विभूतियों की स्मृति में स्मारिका

Be on the wilder side of Uttaranchal!

Uttaranchal is a treasure trove of natural wonders! Dense forests cover 65% of its land area. And there are so many wild discoveries! Exotic flora and fauna, the world famous national parks and sanctuaries of Corbett, Nanda Devi and Rajaji - there is a lot to watch out.

This winter, step into the untamed realms of Uttaranchal, for thrilling discoveries !

Uttaranchal Tourism

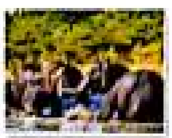

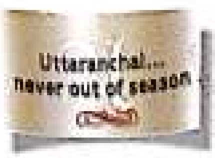

However, there exist all kinds of enjoyable destinations for everyone in Uttaranchal. For further details, online reservations, travel packages, hotel bookings and other travel arrangements please contact your travel agent or log on to our websites.

Uttaranchal Tourism Development Board : 3/3-Industrial Area, Patel Nagar, Saharanpur Road, Dehradun - 248001(Uttaranchal), India. Tel : 91-135-2721289, 2624147 Fax 91-135-2627405, E-mail : ddtourism@ua.nic.in Visit us at : http://www.ua.nic.in/uttaranchaltourism | **Garhwal Mandal Vikas Nigam Limited** : 74/1-Rajpur Road, Dehradun - 248001 (Uttaranchal), India Tel.: 91-135-2746817, 2749308, 2747898, Fax 91-135-2746847 E-mail : gmvn@gmvnl.com Website : www.gmvnl.com | **Kumaon Mandal Vikas Nigam Limited** : Oak Park, Nainital - 263001 (Uttaranchal), India. Tel.: 91-5942-236356, 236374, 236209, 235700, Fax : 91-5942-236897, 236374 E-mail: kmvn@yahoo.com Website: www.kmvn.org | **For Wildlife Tourism Information** - contact 91-135-2621669, E-mail: gspandey@yahoo.com

square/uttaranchal/06

गढ़वाल हितैषिणी सभा (पंजी)

(स्थापित-1923)

गढवाल भवन, वीर चंद्र सिंह गढ़वाली चौक, पंचकुईयां रोड़, नई दिल्ली-110001

द्वारा गढ़वाल मंडल की दिवंगत विभूतियों की स्मृति में प्रकाशित स्मारिका

"स्मृति"

संपादक मंडल

सर्व श्री आर० के० शर्मा (द्विवेदी)
चन्द्रपाल सिंह रावत
पवन मैठानी
प्रताप सिंह राणा
वीरेन्द्र सिंह रावत
शिवचरण सिंह रावत
दिनेश ध्यानी
नरेन्द्र सिंह नेगी
महादेव प्रसाद बलूनी

मुद्रक

एस. डी. आर. प्रिंटरर्स
ए-28, पश्चिमी ज्योति नगर, लोनी रोड़,
शहादरा, दिल्ली-94

डिजाइन एण्ड लेजर टाइप सेटिंग

शिव ग्रैफिक सिस्टम
803/16 ए, विजयपार्क, दिल्ली-110053
फोन : 22913282, 9818505619

कानूनी सलाहकार

श्री सी० एस० भंडारी एडवोकेट हाईकोर्ट
श्री एस० एस० लिगंवाल एडवोकेट हाईकोर्ट
श्री जे० एस० रावत एडवोकेट

स्मारिका में प्रकाशित रचनाओं में अभिव्यक्ति रचनाकारों की अपनी है, जिसके लिए रचनाकार ही उत्तरदायी होंगे। समस्त विवादों के लिए न्यायिक क्षेत्र दिल्ली होगा।

"स्मृति" का प्रकाशन निसंदेह हितैषिणी सभा का निश्छल प्रयास है ठीक वैसा ही जिस तरह उन पूर्वजों का जिन्होने एक पवित्र विचार को हकीकत का जामा पहनाया/भवन का रूप दिया।

"स्मृति" स्मारिका के प्रकाशन का विचार लम्बे समय से विचारार्थ था इससे पहले भी कई स्मारिकाएँ उपयुक्त समयाअनुसार प्रकाशित की गई हैं "गढ़वाल गौरव" भवन के जीर्णोद्धार के अवसर पर, "उत्तरांचल उदय" उत्तरांचल राज्य प्राप्ति के शुभ अवसर पर इसी प्रकार, अब आपके सम्मुख "स्मृति" उन दिवंगत विभूतियों को समर्पित है जिनके सुकृत्यों को याद कर हम अभिभूत हैं। दिंवगत विभूतियों के संबध में प्रामाणिक जानकरी हासिल करना अधिक मुश्किल कार्य नहीं है मगर एक से अधिक श्रोतों का मिलना विरोधाभासी अवश्य है, फिर यह निश्चित करना और भी कष्ट साध्य है कि उसका स्मारिका में प्रकाशन का मानक क्या रखा जाय, इसीलिए हमने इस विषय को किसी प्रकार के बन्धन से मुक्त रखा है। फिलहाल इस प्रकाशन में हमने दिवंगत विभूतियों का जीवनीवृत प्रकाशित किया है शेष भविष्य में-------

R.K. Sharma

आर के शर्मा
(महासचिव)
एवं
सदस्य संपादक मंडल

अनुक्रमणिका

3 अध्यक्ष की कलम से
4 कार्यकारिणी का सामुहिक 'चित्र'
5 महासचिव की कलम से
6 'चित्र' सलाहकार मंडल
7 हितैषिणी सभा (पदाधिकारी)
8 हितैषिणी सभा (कार्यकारिणी)

9 से 32 तक संदेश
33 सर्व श्रेष्ठ जीवन (कविता)

जीवन वृत
34 माधो सिंह भंडारी
35 मौला राम
36 बलभद्र सिंह नेगी
37 अनुसुइया प्रसाद बहुगुणा
38 पं० विश्वम्बर दत्त चंदोला
40 जया नन्द भारती
42 बैरिस्टर मुकन्दी लाल
44 दरबान सिंह नेगी
45 प्रताप सिंह नेगी
46 वीर चन्द्र सिंह गढ़वाली
49 गब्बर सिंह नेगी
50 आचार्य जोध सिंह रावत
51 डा० पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल
53 भैरव दत्त धूलिया
55 ठाकुर सिंह नेगी, आई. पी.
56 जगमोहन सिंह नेगी
57 भजन सिंह ''सिंह''
58 इंद्र सिंह गढ़वाली
59 ठाकुर शूरवीर सिंह पंवार
61 भवानी सिंह रावत
62 भक्तदर्शन सिंह
63 बलदेव सिंह आर्य
64 टिंचरी माई इच्छागिरी
66 डा० शिव प्रसाद डबराल
67 श्रीधर आजाद
68 श्रीदेव सुमन
70 डा० हरि वैष्णव
71 हेमवती नन्दन बहुगुणा
73 चन्द्र कुँवर बर्त्वाल
74 नागेन्द्र सकलानी
76 नरेन्द्र सिंह भंडारी
77 त्रेपन सिंह नेगी
78 इंद्रमणि बडोनी
79 गौरा देवी (राणा)
81 मेजर नरेन्द्रधर जुयाल
82 अबोध बन्धु बहुगुणा
84 पद्मश्री रणवीर सिंह बिष्ट
85 डा० शिवानन्द नौटियाल
86 चन्द्रमोहन सिंह नेगी
88 उत्तराखण्ड वंदना (कविता)

89 सन् 2002 से सन् 2006 तक हितैषिणी सभा की गतिविधियां

लेख
97 गढ़वाल के चार धाम
104 देव भूमि उत्तरांचल की कर्मयोगिनी नारी
107 जल समाधि में विलीन टिहरी शहर
113 हम हिमालय हैं और प्लीज मम्मी (कविताएं)
114 दिल्ली में गढ़वाली समाज का स्थायत्व
118 उत्तरांचल का एतिहासिक परिचय एवं ....
122 दहेज का दानव (कविता)
124 मनुष्य और पर्यावरण
126 नारायण दत्त तिवारी के बढते कदम
130 जरूरी है उत्तराखण्ड की अपनी भाषा
133 Stategy for Higher Education.......
142 अनेक नामों से विभूषित गढ़वाल हिमालय
145 आदमी (कविता)
146 उत्तरांचल राज्य की शिक्षा व्यवस्था
150 राजधानी का सच
153 वृक्ष (कविता)
154 उत्तरांचल के जल प्रवंधन में समुदाय..........
156 सुहाग की नथ (यात्रा संस्मरण)
159 सांस्कृतिक पर्यटन की अनंत सम्भावनाएं
161 कालीमठस्या शिवा
163 भागीदारी

अध्यक्ष की कलम से

गढ़वाल हितैषिणी सभा (रजि०) के गौरवमय इतिहास से आज पूरा उत्तरांचल समाज भली-भांति परिचित है। आज से सात दशक पूर्व समाज के प्रबुद्ध नागरिकों ने अपनी संस्कृति, भाषा, साहित्य, लोक कला तथा सामुदायिक गतिविधियों को प्रोत्साहन देने, अपने आपको संगठित रखने, अपनी पहचान संजोये रखने हेतु सभा की स्थापना की। उन दिनों अधिकांश सरकारी क्षेत्र में कार्य करने वाले प्रवासी, सभा से जुड़े। तब ग्रीष्मकाल में राजधानी शिमला तथा अन्य समय दिल्ली में होने के कारण लोगों का आना जाना लगा रहता था, जिससे प्रारम्भ में सभा की गतिविधियां शिथिल ही रहीं। किन्तु तत्कालीन परिस्थितियों को देखते हुए उन गतिविधियों को कम भी नहीं आंका जा सकता। एक महत्वपूर्ण कार्य उस समय यह हुआ कि 1941 में सभा के भवन निर्माण हेतु जमीन आवंटित करवाने के लिये सरकार को मना लिया गया। अंत में 1956 में स्थायी रूप से सभा के नाम से 0.306 एकड़ का भू-खंड जहां पर आज भवन खड़ा है आवंटित करा लिया गया।

कुछ स्वार्थी प्रवृति के लोगों ने सभा की भूमि के कुछ हिस्से पर कब्जा जमाना चाहा लेकिन सभा के वरिष्ठ सदस्यों और नौजवान साथियों के सहयोग से इस अवैध कब्जे को मुक्त करा दिया गया जो कि अविस्मरणीय घटना है। कुछ उत्साही युवक सभा से जुड़े और उन्होनें भवन निर्माण के लिये अपना तन, मन, धन लगा दिया, गढ़वाल के व्यावसायियों ने भी दिल खोल कर आर्थिक सहयोग किया परिणाम स्वरूप भवन को एक रूप दिया जा सका और आज हम यहां पर गोष्ठियां, बैठकें, ब्याह-शादी के अलावा उत्तरांचल से आने वाले व्यक्तियों को ठहरा सकते है।

समाज में हर किस्म के लोग होते हैं। ऐसा भी समय आया जब इस सामाजिक संस्था के सारे तौर-तरीकों जैसे सामुहिक जिम्मेदारी एवं निर्णय, प्रजातांत्रिक कार्य-प्रणाली को ताक में रखकर सभा के क्रिया-कलापों को निरंकुश रूप से व्यक्तिगत जागीर की तरह चलाया जाने लगा। सभा आज भी उस समय के ऐसे कुछ अलोकतांत्रिक निर्णयों से जूझ रही है। विगत चार-पांच वर्ष का कार्यकाल उन अनियमितताओं को दुरस्त करने में लग गया। यदि हमारे सामने यह सब समस्यायें न होती तो हम अपने गढ़वाली समाज के हित के लिए और भी अच्छा कर सकते थे। सभा के हित में दावों (मुकद्मों) के विरूद्ध जो सक्रियता एवं एकजुटता आपने दिखाई वह समाज के प्रति उत्तरदायित्व की एक मिसाल है।

आज बुजर्ग सदस्यों नौजवान साथियों, सहयोगियों, एवम् समय-समय पर संस्था के हित में राय व्यक्त करने वाले सदस्यों की सदभावनाओं के चलते सभा अपने क्रिया कलापों को बखूबी चला रही है। मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि आज हमारी कार्यकारिणी की पारदर्शिता के कारण संस्था की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हो पाई है, इसके अलावा गढ़वाल भवन में कम्प्यूटर प्रशिक्षण, उत्तरांचल में गढ़वाल भवन की धर्मशाला के लिए भूमि आवंटन करने जैसे प्रस्तावों पर सक्रिय रूप से कार्यवाही की जा रही है। सदस्यों के सहयोग से सभा इसमें सफल होगी ऐसा मेरा मानना है।

विगत चुनाव के बाद हमारे सामने एक गंभीर समस्या और आई। कुछ स्वार्थी प्रवृति के लोगों ने हितैषिणी सभा के प्रतिष्ठित नाम का दुरुपयोग कर मिलते-जुलते नाम से एक नई संस्था का गठन कर लिया। यह बात यहीं तक सीमित नहीं रही इससे बढ़कर इन्होने गढ़वाल हितैषिणी सभा के नाम से अपने कार्यक्रमों के लिए अनेक प्रतिष्ठित संस्थानों के पास ऐसे प्रस्ताव भेजे जिसका बयान नहीं किया जा सकता। जिससे सभा की प्रतिष्ठा को ठेस पहुंची है। सभ्य-समाज के लिए यह परंम्परा अच्छी नहीं है। यद्यपि कोई भी नागरिक सामाजिक संस्था का गठन कर सकता है किन्तु उसे आपसी टकराव के लिए इस्तेमाल नहीं किया जाना चाहिये। हमारा दृष्टिकोण समाज को जोड़ने का होना चाहिए तोड़ने का नहीं।

सभा अब इस मुकाम पर पहुँच चुकी है कि इसकी अपनी एक पहिचान समाज में ही नहीं अपितु प्रशासन में भी अंकित हो चुकी है। भविष्य में इसमें और व्यापकता आये यही अभिलाषा है।

धन्यवाद

विक्रम सिंह अधिकारी

(अध्यक्ष)

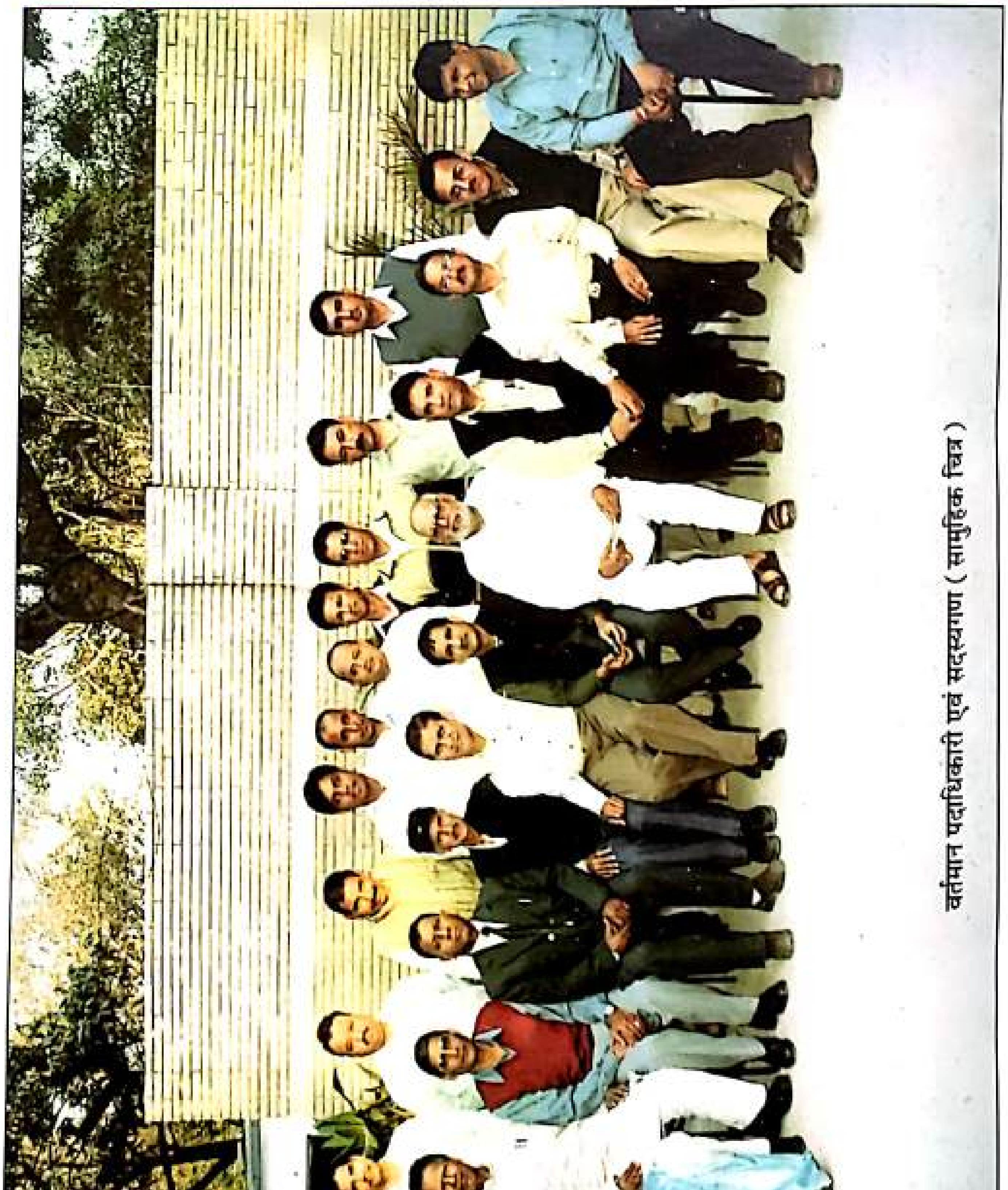

वर्तमान पदाधिकारी एवं सदस्यगण (सामूहिक चित्र)

महासचिव की कलम से

हम कृतज्ञ हैं अपने उन पूर्वजों के जिनकी सकारात्मक कल्पना की वजह से इस सामाजिक संस्था की 83 वर्ष पूर्व स्थापना हुई, जिनके अथक प्रयत्नों की वजह से भूमि प्राप्त हुई, भवन का निर्माण हुआ,उन्ही के आशीर्वाद से आज हम बड़े गर्व के साथ अपने समाज को अपने देशवाशियों के समकक्ष पाते है।

हम सौभाग्याशाली हैं कि हमारे जागरूक समाज ने हमें गढ़वाल हितैषिणी सभा के माध्यम से अपने समाज की सेवा करने का अवसर प्रदान किया, हमें नौजवान और उत्साही अध्यक्ष के साथ-साथ अति सहयोगी प्रवृति के पदाधिकारी एवं कार्यकारिणी के सदस्य चुनकर दिए, जिनके सहयोग से हमारी हितैषिणी सभा उल्लेखनीय कार्य संपन्न करने में सफल रही।

हमारा समाज धर्मपारायण मगर सहअस्तित्व की धारणा पर आधारित स्वैच्छिक सामाजिक कर्तव्यबोध से ओत-प्रोत है बावजूद शताब्दियों से शासन की अनदेखी का दंश झेलते हुए भी हम अपना अस्तित्व बचाए रखने में सफल रहें हैं। देश के किसी भी राज्य के एक हिस्से को विकास की गतिविधियों से अछूता रखना उत्तरांचल के लोगो के साथ विश्वासघात से कम नहीं है फिर भी हमारे समाज ने अपने मानस में दुराव की भावना को नहीं पनपने दिया यहां तक कि उत्तरांचल राज्य प्राप्ति के आन्दोलन के दौरान हमारे समाज के स्त्री, पुरुषों के साथ तत्कालीन शासन ने जो जघन्य अपराध किया उसे भी गरल की तरह पी गए। कानूनी लड़ाई अलग है वह सब का हक बनता है हम यह सोच कर शांत रहे कि बदले की भावना से काम करने पर हमारे नवोदित राज्य का विकास अवरुद्ध होगा क्योकि अभी तक हम ''मनीआर्डर'' पर आधारित अर्थव्यस्था के सहारे अपने पारिवारिक सपनों को साकार कर रहे थे।

देश में आई आर्थिक क्रांति ने मनुष्य के अन्दर व्यक्तिगत स्पर्धा की भावना को अप्रतिम बढ़ावा दिया है उससे हमारा समाज भी अछूता नहीं रहा। जहां हम विगत में किसी भी शहर या कसबे में प्रवास करते थे तो आपस में मिलकर धन संग्रह मंडली या भ्रातृ मंडल का गठन करते थे, या ऐसी ही अन्य सामाजिक संस्था की स्थापना करते थे और उसको एक पौधे की तरह अपनी सेवा से सींच कर आगे बढ़ाते थे, लेकिन हमारी कोशिश होती थी कि मिलते-जुलते नामों से परहेज किया जाय, उससे आपसी कटुता के जन्म लेने का भय रहता था, आज इन बातों पर ध्यान न देकर हम गलत परम्परा को बढ़ावा दे रहे हैं। जो कि हमारे सामाजिक ताने बाने के लिए घातक है ऐसा ही कुछ पिछले दिनों देखने सुनने में आया है कि उपरोक्त 75 वर्षो से भी पुरानी संस्था के मिलते जुलते नाम से एक और संस्था का गठन कतिपय अति उत्साही व्यक्तियों द्वारा किया गया। जिससे समाज में अच्छा संदेश नहीं गया। इन छोटी-छोटी मगर दूरगामी परिणामों वाली गतिविधियों से हमे बचना चाहिए।

मूलत: सामाजिक संस्थाओं के गठन का उद्देश्य पारस्परिक भाई चारा आपसी सहयोग एवं एक दूसरे के प्रति मानवता की भावना से ही प्रेरित होना चाहिए यही स्वस्थ, सुसस्कृंत समाज की पहचान है।

स्मारिका के प्रकाशन के लिए सभी विज्ञापन दाताओं, प्रबुद्ध लेखकों एवं संपादक मंडल के सदस्यों के सहयोग के लिए हार्दिक आभार व्यक्त करना मात्र औपचारिकता ही होगी।

धन्यवाद सहित

R.K. Sharma

(आर० के० शर्मा द्विवेदी)
महासचिव

बाँए से दांए:- सर्व श्री बच्चन सिंह पंवार, ओंकार सिंह नेगी, धनीराम अन्थवाल, शिवचरण सिंह रावत, वीरेन्द्र सिंह रावत, श्रीराम रतूड़ी, व्योमेश नयाल, वाइ. एस. रावत, मदन मोहन बुड़ाकोटी, एच. एस. कपरवाण, सतेन्द्र सिंह लिंगवाल, एवं आर. के. शर्मा द्विवेदी।

गढ़वाल हितैषिणी सभा के पदाधिकारी गण

श्री विक्रम सिंह अधिकारी
(अध्यक्ष)

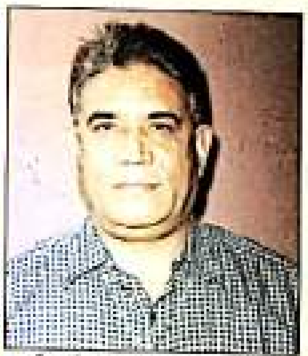
श्री रविन्द्र कुमार कुकरेती
(वरिष्ठ उपाध्यक्ष)

श्री नरेन्द्र सिंह नेगी
(उपाध्यक्ष)

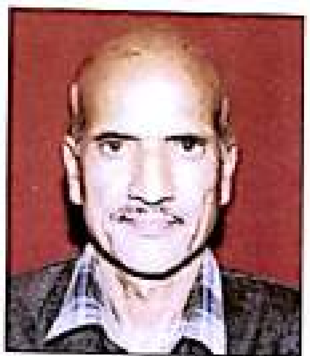
श्री जय सिंह राणा
(उपाध्यक्ष)

श्री राजेन्द्र शर्मा (द्विवेदी)
(महासचिव)

श्री रामचन्द्र सिंह भंडारी
(सचिव)

श्री ज्ञान चन्द रमोला
(कोषाध्यक्ष)

श्रीमति संयोगिता ध्यानी
(सांस्कृतिक सचिव)

श्री रामेश्वर प्रसाद गोस्वामी
(संगठन सचिव)

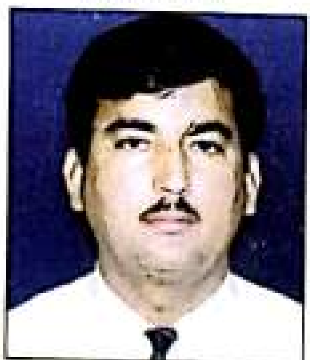
श्री जितेन्द्र सिंह सजवाण
(संगठन सचिव)

श्री दीपक द्विवेदी
(साहित्यिक सचिव)

सोनिया गांधी
अध्यक्ष

दूरभाष : 3793438
3019080

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी

24, अकबर रोड, नई दिल्ली 110011

संदेश

मुझे यह जान कर प्रसन्नता हुई कि गढ़वाल हितैषिणी सभा, गढ़वाल की दिवंगत विभूतियों की याद में एक कार्यक्रम आयोजित कर रही है। यह और भी खुशी की बात है कि इस अवसर पर इन दिवंगत विभूतियों के जीवन दर्शन पर आधारित एक स्मारिका भी प्रकाशित की जा रही है।

देश के विभिन्न अंचलों में समय-समय पर ऐसी महान् विभूतियों का जन्म हुआ है, जिन्होंने समाज को अपने योगदान से समृद्ध बनाया है। गढ़वाल ने भी देश को ऐसे कई महान् व्यक्तित्व दिए हैं, जो सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक और राजनीतिक जगत के शिखर तक पहुंचे। उन्हें याद कर हमें अपने अतीत पर गर्व करने का अवसर मिलता है और हमारी नई पीढ़ी को उनकी बताई राह पर चलने की प्रेरणा प्राप्त होती है।

मैं गढ़वाल की दिवंगत विभूतियों की स्मृति में हो रहे कार्यक्रम की सफलता की कामना करती हूं। इस अवसर पर प्रकाशित हो रही स्मारिका के लिए भी मेरी शुभकामनाएं।

24 फरवरी, 2006

शिवराज पाटील

SHIVRAJ V. PATIL

गृह मंत्री, भारत

HOME MINISTER, INDIA

2 मार्च, 2006

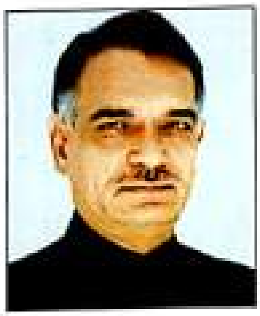

संदेश

मुझे यह जानकर असीम हर्ष हुआ है कि गढ़वाल हितैषिणी सभा, दिल्ली द्वारा गढ़वाल की दिवंगत महान विभूतियों की स्मृति में 6 अप्रैल, 2006 को दिल्ली के तालकटोरा स्टेडियम में एक भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

मैं आशा करता हूँ कि स्मारिका में दिवंगत विभूतियों के जीवन आदर्शों और उनके द्वारा की गई समाज एवं देश सेवा के संबंध में प्रमाणिक सामग्री संकलित की जायेगी, जिससे कि नई पीढ़ी के लिए यह सामग्री प्रेरणादायक बन सके। उत्तराखण्ड का और विशेषतः गढ़वाल मंडल की दिवंगत विभूतियों का अपने प्रदेश में ही नहीं बल्कि देश की प्रतिष्ठा में बड़ा योगदान रहा है। उनकी पावन स्मृति में आयोजित समारोह की सफलता एवं स्मारिका के सफल तथा प्रयोजनमूलक प्रकाशन के लिए मेरी कोटिश शुभकामनाएं।

(शिवराज वि.पाटील)

नारायण दत्त तिवारी

उत्तरांचल शासन

विधान भवन,
देहरादून-248001
भारत

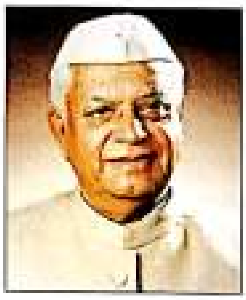

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि गढ़वाल हितैषिणी सभा, नई दिल्ली द्वारा गढ़वाल की दिवंगत महान विभूतियों के जीवन दर्शन पर आधारित स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है। गढ़वाल की दिवंगत महानं विभूतियों की स्मृति में भव्य कार्यक्रमों की श्रृंखला में स्मारिका का विमोचन, लोकगीत एवं लोक नृत्यों का आयोजन निश्चय ही प्रेरणादायक होगा, जिसके लिये आयोजक साधुवाद के पात्र हैं।

मैं कार्यक्रम की सफलता एवं स्मारिका के उद्देश्यानुरूप सफल प्रकाशन हेतु शुभ कामनाऐं प्रेषित करता हूँ।

(नारायण दत्त तिवारी)

नारायण दत्त तिवारी

उत्तरांचल शासन

विधान भवन,
देहरादून-248001
भारत

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि गढ़वाल हितैषिणी सभा, नई दिल्ली द्वारा गढ़वाल की दिवंगत महान विभूतियों के जीवन दर्शन पर आधारित स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है। गढ़वाल की दिवंगत महानं विभूतियों की स्मृति में भव्य कार्यक्रमों की श्रृंखला में स्मारिका का विमोचन, लोकगीत एवं लोक नृत्यों का आयोजन निश्चय ही प्रेरणादायक होगा, जिसके लिये आयोजक साधुवाद के पात्र हैं।

मैं कार्यक्रम की सफलता एवं स्मारिका के उद्देश्यानुरूप सफल प्रकाशन हेतु शुभ कामनाऐं प्रेषित करता हूँ।

(नारायण दत्त तिवारी)

सत्यमेव जयते

शीला दीक्षित
मुख्यमंत्री

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार
दिल्ली सचिवालय आई.पी. एस्टेट,
नई दिल्ली-110002

अ.शा. पत्र संख्या : CMO/28291
दिनांक : 24.2.2006

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि **गढ़वाल हितैषिणी सभा, पचकुइयां मार्ग, नई दिल्ली** आगामी 6 अप्रैल, 2006 को दिल्ली के तालकटोरा इन्डोर स्टेडियम में एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन करने जा रही है। साथ ही इस अवसर पर एक स्मारिका का प्रकाशन भी किया जा रहा है। आशा है स्मारिका में दी जाने वाली जानकारी समाज के प्रत्येक वर्ग के लोगों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

मैं समारोह के सफल आयोजन तथा स्मारिका के सफल प्रकाशन के लिए अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करती हूँ।

शीला दीक्षित

(शीला दीक्षित)

अजय माकन
Ajay Maken

राज्य मंत्री
MINISTER OF STATE
शहरी विकास मंत्रालय
MINISTRY OF URBAN DEVELOPMENT
भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA
निर्माण भवन, नई दिल्ली-110011
NIRMAN BHAVAN, NEW DELHI-110011

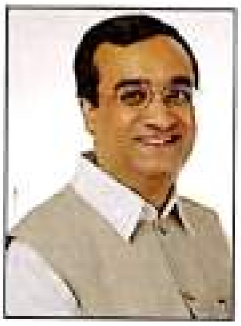

-:संदेश:-

प्रिय अधिकारी जी,

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि गढ़वाल हितैषिणी सभा तालकटोरा इण्डोर स्टेडियम में 6-4-2006 को गढ़वाल मण्डल की दिवंगत विभूतियों की स्मृति में प्रकाशित स्मारिका का विमोचन तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम करने जा रहा है। गढ़वाल मण्डल ने देश को कई महान हस्ति दी है, मैं उन सबको हार्दिक नमन करता हूँ।

मैं स्मारिका के प्रकाशन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम की सफलता की कामना करते हुए समस्त उत्तारांचली समाज को हार्दिक शुभ कामनाएं देता हूँ।

अजय माकन

लाल कृष्ण आडवाणी
नेता, प्रतिपक्ष
लोक सभा

44, संसद भवन
नई दिल्ली-110 001
दूरभाष: 23016705, 23034285
फैक्स: 23017470

दिनांक: 16 फरवरी, 2006

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि गढ़वाल हितैषिणी सभा द्वारा 6 अप्रैल, 2006 को तालकटोरा इन्डोर स्टेडियम, नई दिल्ली में गढ़वाल की दिवंगत महान विभूतियों की स्मृति में एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर लोक गीत एवं लोक नृत्यों का कार्यक्रम आयोजित किया गया है तथा एक स्मारिका प्रकाशित की जा रही है।

कार्यक्रम की सफलता एवं स्मारिका के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(लाल कृष्ण आडवाणी)

सत्यमेव जयते

डॉ. मुरली मनोहर जोशी
संसद सदस्य (राज्य सभा)
अध्यक्ष
वाणिज्य सम्बन्धी संसदीय
स्थायी समिति

123, संसदीय सौध
नई दिल्ली-110001
दूरभाष : 23034123, 23011991

<u>संदेश</u>

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि गढ़वाल हितैषिणी सभा "गढ़वाल की दिवंगत महान विभूतियों" की स्मृति में एक भव्य कार्यक्रम एवं इस अवसर पर **"पुस्तक स्मारिका"** का प्रकाशन भी किया जाने वाला है।

भारतवर्ष सदैव से ऋषियों, तपस्वियों एवं महान विभूतियों की भूमि रही है। वे जीते भी हैं और मरते भी हैं, लेकिन इतिहास के पन्नों पर ऐसे महापुरुषों का भी जन्म हुआ है, जिनके जीवन की स्याही कभी धुंधली नहीं पड़ती है एवं उनका जीवन आने वाले कल के लिए भी मूल्यवान रहता है। गढ़वाल सहित सम्पूर्ण हिमालय क्षेत्र को देवभूमि का पवित्र स्थान प्राप्त है। युगों युगों से राष्ट्र की प्रगति एवं विकास में यहां के लोगों की गौरवपूर्ण एवं अविस्मरणीय भूमिका रही है।

मेरा विश्वास है कि महान विभूतियों के जीवन पर आधारित यह पुस्तक-स्मारिका क्षेत्र के लोगों को विशेषकर युवा वर्ग के लिए मार्गदर्शक बनेगी।

मेरी असीम शुभकामनाएं।

(मुरली मनोहर जोशी)

COMMUNIST PARTY OF INDIA

CENTRAL OFFICE

Ajoy Bhavan
15, Com. Indrajit Gupta Marg (Kotla Marg), New Delhi-110002
e-mail : cpi@vsnl.com

Telephone : (91 11) 23232801
23235546
23235099
Fax : (91 11) 23235543

General Secretary : A.B. Bardhan

नयी दिल्ली
22.02.06

श्री विक्रम सिंह अधिकारी
अध्यक्ष
गढ़वाल हितैषिणी सभा (रजि.)
गढ़वाल भवन, पंचकुइयां मार्ग
नई दिल्ली–110001

प्रिय महोदय,

यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि गढ़वाल हितैषिणी सभा गढ़वाल मंडल के दिवंगत महान विभूतियों की स्मृति में एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन कर रही है तथा इस अवसर पर उनकी याद में एक "पुस्तक स्मारिका" का भी प्रकाशन कर रही है।

गढ़वाल मंडल में वीर चन्द सिंह गढ़वाली, श्रीदेव सुमन, नागेन्द्र सकलानी इत्यादि जैसे महान क्रांतिकारी पैदा हुए। देश की आजादी में उनका महान योगदान रहा।

मैं कार्यक्रम तथा "पुस्तक–स्मारिका" के सफल आयोजन के लिये अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

ए.बी.बर्धन,
(ए.बी. बर्धन)

मेजर जनरल (से०नि०)
भुवन चन्द खण्डूड़ी, एवीएसएम
संसद सदस्य
(लोक सभा)
अध्यक्ष
वित्त संबंधी संसदीय स्थायी समिति

1, डा० विशम्भर दास मार्ग
नई दिल्ली - 110001
टेली.: 23352255, 23714433

पत्रांक: 217/06
दिनांक 16-2-2006

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि गढवाल हितैषणी सभा, गढवाल भवन, नई दिल्ली द्वारा गढवाल की दिवंगत महान विभूतियों की स्मृति में एक भव्य कार्यक्रम आयोजित करने जा रही हैं, और इस अवसर पर दिवगंत महान विभूतियों के जीवन दर्शन पर एक स्मारिका का भी प्रकाशन किया जा रहा है

मैं इस स्मारिका के प्रकाशन की सफलता की कामना करता हूँ और इसके लिये अपनी शुभकामनायें प्रेषित करता हूँ ।

शुभकामनाओं सहित,

(मेजर जनरल भुवन चन्द्र खण्डूड़ी)

हरीश रावत
संसद सदस्य

12–ए, कैनिंग लेन
नई दिल्ली–110001
फोन: 23782187
फैक्स: 23782780

पत्रांक.............................

दिनांक 14 फरवरी 2006

प्रिय अधिकारी जी,

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि गढवाल हितैषिणी सभा (पंजी0) अपने वार्षिक कार्यक्रमों की श्रृंखला में दिल्ली के तालकटोरा इंडोर स्टेडियम में गढवाल की दिवंगत महान विभूतियों की स्मृति में भव्य कार्यक्रम का आयोजन कर रही है, जिसमें उनके जीवन दर्शन पर संकलित एवं प्रकाशित पुस्तक एवं स्मारिका का विमोचन तथा लोकगीत एवं लोक नृत्यों का कार्यक्रम आयोजित करेगी। निश्चय ही ऐसे कार्यक्रमों एवं प्रकाशनों के माध्यम से जहाँ देवभूमि उत्तराखण्ड की पृष्ठभूमि से जुडे सामाजिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का हमारे प्रवासी भाई–बहिनों के मध्य प्रचार–प्रसार होगा, वहीं इसके माध्यम से अपनी संस्कृति एवं भाईचारे को जानने एवं समझने का सुअवसर प्राप्त होगा।

आशा है, स्मारिका के माध्यम से आपकी समिति अपने प्रमुख उद्देश्यों को और आगे बढ़ाने में सहायक सिद्ध होगी। स्मारिका के सफल प्रकाशन हेतु आयोजन मण्डल के सभी सदस्यों को मेरी हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं ।

सद्भावनाओं सहित,

आपका

(हरीश रावत)

बची सिंह रावत "बचदा"
संसद सदस्य, (लोक सभा) (अल्मोड़ा-पिथौरागढ़)
पूर्व केन्द्रीय राज्य मंत्री
सदस्य : विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा पर्यावरण
एवं वन मंत्रालय की संसदीय स्थायी समिति

4, लोधी इस्टेट,
नई दिल्ली-110003
फोन नं0 24643676-77

पत्रांक....................

दिनांक.......................

संदेश

प्रिय श्री अधिकारी जी,

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई है कि गढ़वाल हितैषिणी सभा (रजि0) एक स्मारिका का प्रकाशन करने जा रही है, साथ ही "**गढ़वाल की दिवंगत महान विभूतियों**" की स्मृति में एक भव्य कार्यक्रम का भी आयोजन करने जा रही है। यह अत्यन्त सराहनीय कार्य है।

मैं "**पुस्तक स्मारिका**" के सफल प्रकाशन एवं कार्यक्रम की सफलता की कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित,

आपका

(बची सिंह रावत)

महाराजा मानवेन्द्र शाह
टिहरी गढ़वाल
MEMBER OF PARLIMENT
(LOK SABHA)

5, भगवानदास रोड़
नई दिल्ली – 110001
16 फरवरी 2006

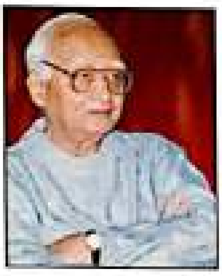

संदेश

यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि गढ़वाल हितैषिणी सभा अपने वार्षिक कार्यक्रमों की श्रृखला में दिनांक 6 अप्रैल 2006 को दोपहर 1 बजे से दिल्ली के ''तालकटोरा इण्डोर स्टेडियम'' में गढ़वाल की दिवंगत महान विभूतियों की स्मृति में एक भव्य कार्यक्रम आयोजित कर रही है। इस अवसर पर इन दिवंगत महान विभूतियों के जीवन दर्शन पर ''संकलित एवं प्रकाशित स्मारिका '' का विमोचन किया जायेगा। मैं इस स्मारिका के सफल प्रकाशन एवं कार्यक्रम की सफलता हेतु अपना शुभकामना संदेश भेजता हूं।

महाराजा मानवेन्द्र शाह

लेफ्टि.जन.(से.नि.) टी०पी०एस० रावत
(पी.वी.एस.एम.,वी.एस.एम.)
मंत्री
पर्यटन, आबकारी एवं सैनिक कल्याण

उत्तरांचल शासन

विधान सभा भवन, देहरादून (उत्तरांचल)
दूरभाष : कार्यालय : 0135-2665080
निवास : 0135-2530088
फैक्स : 0135-2665121

संदेश

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि गढ़वाल हितैषिणी सभा अपने वार्षिक कार्यक्रमों की श्रृखंला में दिनांक 6 अप्रैल,2006 की सांय 2.00 बजे से दिल्ली के"तालकटोरा इन्डोर स्टेडियम" में "गढ़वाल की दिवंगत महान विभूतियों" की स्मृति में एक भव्य कार्यक्रम आयोजित कर रही है जिसमें दिवंगत महान विभूतियोंके जीवन दर्शन पर "संकलित एवं प्रकाशित पुस्तक" एवं "स्मारिका" का विमोचन तथा लोक गीत एवं लोक नृत्यों का कार्यक्रम आयोजित किया जायेगा।

निःसन्देह आपका प्रयास सराहनीय है। मैं उक्त सुअवसर पर "**पुस्तक–स्मारिका**" के सफल प्रकाशन एवं कार्यक्रम की सफलता के लिए अपना हार्दिक शुभ–कामना संदेश प्रेषित करता हूँ।

(टी०पी०एस०रावत)

तिलक राज बेहड़
मंत्री
चिकित्सा शिक्षा, चिकित्सा स्वास्थ्य
एवं परिवार कल्याण उत्तरांचल

उत्तरांचल शासन

विधान भवन, देहरादून
0135-2666671 (O) 2531895 (R)
05944-243200

पत्रांक.........................

दिनांक.........................

संदेश

यह जानकर अति प्रसन्ता हो रही है कि गढ़वाल हितैषिणी सभा पंजी० दिल्ली दिनांक 06अप्रैल, 2006 को गढ़वाल की दिव्यांगत विभूतियों की स्मृति में एक स्मारिका का प्रकाशन करने जा रही है, इसके साथ ही एक सांस्कृतिक संध्या का भी आयोजन किया जा रहा है।

किसी भी क्षेत्र की दिव्यांगत विभूतियों का जिन्होने अपने–अपने क्षेत्र में समाज की सेवा की है, स्मरण करना एक पुनीत कर्तव्य है और एक अति सराहनीय कदम भी है।

मैं इस अवसर पर गढ़वाल हितैषिणी सभा पंजी० दिल्ली को अपनी हार्दिक शुभकामनाए देता हूँ तथा स्मारिका के प्रकाशन एवं समारोह की सफलता की कामना करता हूँ।

भवदीय,

(तिलकराज बेहड़)

प्रीतम सिंह
मंत्री
पंचायतीराज, खाद्य एंव नागरिक आपूर्ति
ग्रामीण अभियन्त्रण सेवा, खेलकूद
युवा कल्याण एवम् राजनैतिक पेन्शन

उत्तरांचल शासन

फोन : (0135) 2666766 (का.)
फैक्स : (0135) 2665900
फोन : (0135) 2712216 (आ.)
कक्ष संख्या : 52 - 46
विधान भवन, देहरादून
सं० ....
दिनांक :..........................

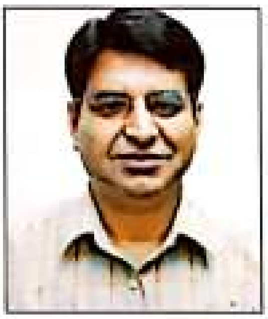

सन्देश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि गढवाल हितैषिणी सभा द्वारा गढवाल की दिव्यागंत विभूतियों की स्मृति में एक स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

मुझे आशा है कि इस स्मारिका के प्रकाशन से आम जनता को गढवाल के दिव्यांगत विभूतियों विषयक जानकारी प्राप्त हो सकेगी।

मैं इस स्मारिका के सफल प्रकाशन की कामना करते हुए इसके सभी सहयोगियों को अपनी शुभ कामनाये प्रदान करता हूँ।

आपका,

(प्रीतम सिंह)

अमृता रावत
राज्यमंत्री (सम्बद्ध मुख्यमंत्री)
ऊर्जा, सिंचाई
एवं महिला सशक्तिकरण बाल विकास
उत्तरांचल सरकार

उत्तरांचल शासन

विधान भवन, देहरादून
दूरभाष : 2666410 (कार्या.)
फैक्स : 2666411 (कार्या.)
संख्या : [illegible] / रा.मं. / ऊ.सिं.बा.वि. / 2006
दिनांक : 2.3.06

सन्देश

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि **गढवाल हितैषिणी सभा नई दिल्ली** द्वारा दिनांक 6 अप्रैल 2006 को तालकटोरा इन्डोर स्टेडियम में **गढवाल की दिवंगत महान विभूतियों** की स्मृति में एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है और इस सुअवसर पर दिवंगत महान विभूतियों के जीवन दर्शन पर संकलित एवं प्रकाशित पुस्तक एवं स्मारिका का विमोजन किया जा रहा है। मैं विश्वास करती हूँ कि **स्मारिका** के प्रकाशन से उत्तरांचल का आम जन मानस लाभान्वित होगा। स्मारिका के प्रधान सम्पादक एवं सम्पादक मण्डल के सदस्यों को शुभ कामनायें सम्प्रेषित करते हुये विश्वास करती हूँ कि स्मारिका भावी पीढी के लिये प्रेरणा का स्रोत बनकर ज्योर्तिमय स्वरूप ग्रहण करेंगी।

अमृता रावत
(अमृता रावत)

सतपाल महाराज
Satpal Maharaj
ست پال مہاراج

उत्तरांचल शासन

उपाध्यक्ष (कैबिनेट मंत्री स्तर)
Vice Chairman (Cabinet Rank)
बीस सूत्री कार्यक्रम कार्यान्वयन समिति
राज्य स्तरीय
दूरभाष : 2669154 (कार्यालय)
दूरभाष : 2654514 (आवास)

पत्रांक 905/T.P.P./06

दिनांक 7-3-06

सन्देश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि **गढवाल हितैषिणी सभा नई दिल्ली** द्वारा **गढवाल की दिवंगत** महान **विभूतियों** की स्मृति में एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन दिनांक 6 अप्रैल 2006 को तालकटोरा इन्डोर स्टेडियम में किया जा रहा है। इस सुअवसर पर दिवंगत महान विभूतियों के त्याग एवं बलिदान पर जीवन दर्शन संकलित कर प्रकाशित पुस्तक एवं स्मारिका का विमोचन किया जा रहा है।

मैं आशा करता हूँ कि **स्मारिका** के प्रकाशन से आम जन मानस लाभान्वित एवं दिवंगत महान विभूतियों की जीवन दर्शन से प्रभावित होगा। प्रधान सम्पादक एवं सम्पादक मण्डल द्वारा **स्मारिका** के सफल प्रकाशन हेतु किया जा रहा यह प्रयास अतुलनीय है।

प्रधान सम्पादक एवं सम्पादक मण्डल के सदस्यों को शुभ कामनायें प्रेषित करता हूँ।

(सतपाल महाराज)

सुबोध उनियाल
सलाहकार
मुख्यमंत्री, उत्तरांचल

उत्तरांचल शासन

पत्रां० सं० /2318/वी.आई.पी. / 2006
दिनांक : 4-3-2006
कार्यालय : विधान भवन, देहरादून
दूरभाष : 2666755 (O), 2665315 (F)
निवास : 2 यमुना कालोनी, नया मंत्री आवास
दूरभाष : 2531900, 2531800 (R)
निवास : नरेन्द्र नगर–01378–227800 (R)

शुभकामना–सन्देश

यह परम हर्ष का विषय है कि गढवाल हितैषणी सभा (पंजीकृत) वीर चन्द्र सिह गढ़वाली चौक, गढ़वाली भवन ,दिल्ली आगमी 6 अप्रैल 2006 को एक भव्य सास्कृतिक संध्या का आयोजन कर रही है । इस अवसर पर गढ़वाल की चुनी हुई दिवगंत विभूतियों की स्मृति में एक स्मारिका का भी विमोचन माननीय मुख्यमंत्री उत्तरांचल श्री नारायण दत्त तिवारी जी के कर कमलों द्वारा हो रहा है । इसके लिए सभा के सभी सदस्य बधाई के पात्र है । यह जानकर अति प्रसन्नता हो रही है कि गढवाल हितौषणी सभा गढवाल मण्डल के विकास के लिए अनेकों कार्यक्रमो का समय–समय पर आयोजन करती आयी है ।

मैं पुनः इस आयोजन की सफलता के लिए शुभ कामना प्रेषित करता हूँ और सभी को बधाई देता हूँ ।

(सुबोध उनियाल)

सुबोध उनियाल
सलाहकार
मुख्यमंत्री, उत्तरांचल

उत्तरांचल शासन

पत्र० सं० /2318/ वी.आई.पी. / 2006
दिनांक : 6-3-2006
कार्यालय : विधान भवन, देहरादून
दूरभाष : 2666755 (O), 2665315 (F)
निवास : 2 यमुना कालोनी, नया मंत्री आवास
दूरभाष : 2531900, 2531800 (R)
निवास : नरेन्द्र नगर-01378-227800 (R)

शुभकामना–सन्देश

यह परम हर्ष का विषय है कि गढवाल हितैषणी सभा (पंजीकृत) वीर चन्द्र सिह गढ़वाली चौक, गढ़वाली भवन ,दिल्ली आगमी 6 अप्रैल 2006 को एक भव्य सास्कृतिक संध्या का आयोजन कर रही है । इस अवसर पर गढ़वाल की चुनी हुई दिवगंत विभूतियों की स्मृति में एक स्मारिका का भी विमोचन माननीय मुख्यमंत्री उत्तरांचल श्री नारायण दत्त तिवारी जी के कर कमलों द्वारा हो रहा है । इसके लिए सभा के सभी सदस्य बधाई के पात्र है । यह जानकर अति प्रसन्नता हो रही है कि गढवाल हितौषणी सभा गढवाल मण्डल के विकास के लिए अनेकों कार्यक्रमो का समय–समय पर आयोजन करती आयी है ।

मैं पुनः इस आयोजन की सफलता के लिए शुभ कामना प्रेषित करता हूँ और सभी को बधाई देता हूँ ।

(सुबोध उनियाल)

सुबोध उनियाल
सलाहकार
मुख्यमंत्री, उत्तरांचल

उत्तरांचल शासन

पत्रा० सं० /2318/ पी.आई.पी. / 2006
दिनांक : 4-3-2006
कार्यालय : विधान भवन, देहरादून
दूरभाष : 2666755 (O), 2665315 (F)
निवास : 2 यमुना कालोनी, नया मंत्री आवास
दूरभाष : 2531900, 2531800 (R)
निवास : नरेन्द्र नगर–01378–227800 (R)

शुभकामना–सन्देश

यह परम हर्ष का विषय है कि गढवाल हितैषणी सभा (पंजीकृत) वीर चन्द्र सिंह गढ़वाली चौक, गढ़वाली भवन ,दिल्ली आगमी 6 अप्रैल 2006 को एक भव्य सास्कृतिक संध्या का आयोजन कर रही है । इस अवसर पर गढ़वाल की चुनी हुई दिवगंत विभूतियों की स्मृति में एक स्मारिका का भी विमोचन माननीय मुख्यमंत्री उत्तरांचल श्री नारायण दत्त तिवारी जी के कर कमलों द्वारा हो रहा है । इसके लिए सभा के सभी सदस्य बधाई के पात्र है । यह जानकर अति प्रसन्नता हो रही है कि गढवाल हितौषणी सभा गढवाल मण्डल के विकास के लिए अनेकों कार्यकमो का समय–समय पर आयोजनं करती आयी है ।

मैं पुनः इस आयोजन की सफलता के लिए शुभ कामना प्रेषित करता हूँ और सभी को बधाई देता हूँ ।

(सुबोध उनियाल)

नरेन्द्र सिंह भण्डारी
मंत्री
प्राथमिक माध्यमिक प्रौढ़ शिक्षा
एवं भाषा

उत्तरांचल शासन

विधान सभा भवन
देहरादून
कक्ष संख्या : 29/33
फोन : (0135) 2665399 (का)
(0135) 2530966 (आ)
फैक्स : (0135) 2665155

''सन्देश''

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि गढ़वाल हितैषिणी सभा (पंजी०), नई दिल्ली द्वारा गढ़वाल मंडल के सातों जिलों के विकास एवं समाज के उत्थान के साथ-साथ प्रदेश तथा देश के विभिन्न सामाजिक क्षेत्रों के उत्थान तथा आपदा हेतु प्रधान मंत्री राहत कोष हेतु वित्तीय फंड एकत्रित कर अपना योगदान दे रहा है तथा संस्था द्वारा गढ़वाल मंडल के समस्त दिवंगत महान विभूतियों की जीवन परिचय एवं स्मृतियों हेतु दिनांक 06 अप्रैल, 2006 को ताल कटोरा इण्डोर स्टेडियम नई दिल्ली में एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है तथा इस अवसर पर एक स्मारिका का भी प्रकाशन किया जा रहा है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि प्रकाशित होने वाली स्मारिका में गढ़वाल मण्डल की उन समस्त महान विभूतियों को स्थान दिया जायेगा, जिनके अथक प्रयास एवं योगदान से गढ़वाल की सांस्कृतिक, सामाजिक तथा शैक्षणिक तथा अन्य समस्त क्षेत्रों के विकास को एक नई दिशा प्राप्त हुई।

मेरी ओर से सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा प्रकाशित होने वाली स्मारिका की सफलता हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

शुभकामनाओं सहित।

(नरेन्द्र सिंह भण्डारी)

कुलानन्द भारतीय
पूर्व प्रभारी शिक्षामंत्री, दिल्ली
कार्यकारी अध्यक्षः
संस्कृतअकादमी, दिल्ली सरकार

सत्यमेव जयते

30/21, शक्ति नगर,
दिल्ली-110007
दूरभाष : 23841602
23847022

क्रमांक

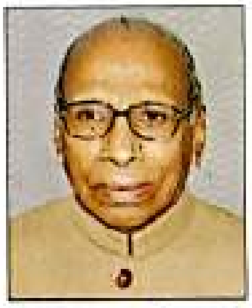

दिनांक : 2 मार्च 2006

"शुभ सन्देश"

हिमालय के प्राकृतिक सौन्दर्य में साक्षात शिव केदारनाथ, बद्रीनाथ भगवान के दर्शन होते हैं। कल-कल, छल- छल करते निरझर, सागर की ओर बहती-वेगवती सरितायें, उनका नर्तन-तर्जन, स्वर-ताल मय उनका नर्तन, हमें मंत्र मुग्ध कर देते हैं। द्रुम, तृण, लतर, मग-मग, पग-पग में हंसते-मुस्कुराते पुष्प, औषधियों से परिपूर्ण शैलशिखर, स्वच्छ, धवल, हिमखंडों का नैसर्गिक सौन्दर्य हमें अलौकिक स्वर्ग का आनन्द प्रदान करते हैं। इस पावन पवित्र देव भूमि को हम सब नमन करते हैं।

मुझे अति प्रसन्नता है कि गढ़वाल हितैषिणी सभा एक विशेष 'स्मारिका' का प्रकाशन कर रही है, मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस स्मारिका के माध्यम से गढ़वाल हितैषिणी सभा की प्रगति उन्नति एवं गतिविधि पढने को मिलेगी, साथ ही इस पत्रिका से पाठकों को उत्तरांचल की साँस्कृतिक स्मृतियाँ, झलकियाँ, गतिविधियाँ, वहाँ की परम्परायें, विशेषतायें पढने को और देखने को मिलेंगी।

दिल्ली में लाखों दिल्ली निवासी, पर्वतीय प्रवासी रहते हैं मुझे विश्वास है कि सभी मिल-जुल कर संगठित, सुगठित होकर अपनी एकता को बनाये रखेंगे। हम देश में रहें, विदेश में रहें, किसी भेष में रहें अपनी बोली, भाषा एवं अपने नैतिक मूल्यों को न भूलें। अन्त में मैं गढ़वाल हितैषणी सभा के प्रधान जी, मंत्री जी एवं समिति के सभी पदाधिकारियों को पत्रिका के प्रकाशन पर बधाई देता हूं। नववर्ष की शुभकामना प्रेषित करता हूं।

(हस्ताक्षर)
कुलानन्द भारतीय

مجموعة بن صقر

BIN SAGAR GROUP

BSG/GEN/06 14/03/06

BIN SAGAR GROUP
General Trading
Hotel & Catering Division
& Medical Division

AL FALAHI INTERNATIONAL
Supplies & Service Est.
Medical Equipments
Industrial Chemicals

BIN SAGAR FACTORIES
Manufacturers of
HDPE Plastic Woven Bags

BIN SAGAR STORES
Watches & Exclusive
Gift Items

IATA
DELMA TRAVEL AGENCY

To: **The President**
Garhwal Hieshini Sabha (Regd)
New Delhi.

I am glad to know that "Garhwal Hiteshini Sabha (Regd)", one of the oldest and pioneer social organization of Uttaranchali people, in Delhi; who helps the poor and motivate the young sportsman of Uttaranchal, is issuing a "Souvenir" on noble deeds and great achievement of our Indian / Uttaranchali historical people.

In U A E, particular in Abu Dhabi, we came to know more about Uttaranchal and their people through Mr. Ganesh Chandra, Hon. Advisor (Investment) to Chief Minister, Uttarachal, a very sincere and hard working person, committed to fulfill the dream of their chief Minister Mr. Narayan Dutt Tiwari to make Uttaranchal another world Holiday destination like 'Switzerland'.

I wish Mr. Vikram Singh Adhikari, President –"Garhwal Hiteshini Sabha (Regd)" and his team of the organization a great success for this cause.

Joy Thomas John

Managing Director,
Bin Sager Group,
Abu Dhabi, U.A.E.

Bin Sagar Tower - 5th Floor - Najda Street - P.O. Box 2760, ABU DHABI - U.A.E.
TEL.: 6335584 / 6336684, FAX : 6323470
E-Mail : binsagar@emirates.net.ae

Engr. GANESH CHANDRA
Hon. Advisor (Investment) to Chief Minister,
Uttaranchal: U.A.E. Region

Govt. of Uttaranchal

P.O. Box- 46281
ABUDHABI, U.A.E.
00-971-505715960 (M)
00-971-2-6344738(R)
email : gchandra@emirates.net.ae

Ref : Invest/UA/0306-003

Date: 23rd Mar'06
ABU DHABI, UAE

MESSAGE

It is my great pleasure to know that "Garhwal Hitesini Sabha" a pioneering and Oldest Social Organization of Garhwali people in Delhi, is releasing a **SOUVENIR** in memory of our freedom fighters and martyr of Uttaranchal on 06th April'06, in **TALKATORA STADIUM**, New Delhi.

It is really a great historical moment not only for 'Garhwal Hitesini Sabha', but also for all Uttaranchali residing in India as well as abroad (NRIs). This occasion will also be a great tribute to those who lost their lives or suffered for the creation of separate state Uttaranchal.

As I know that 'Garhwal Hitesini Sabha' has set up a good network to help poor people of Uttaranchal area and provided good support in their life. There is one more feather in their cap as they are promoting our Uttaranchal state in the field of Sports. These efforts are laudable and needs support from one and all. I congratulate the organization for their efforts and wish them all the success in forthcoming events.

On behalf of all Uttaranchali residing in Middle East, I wish a great success and prosperous future to Mr. Vikram Adhikari, President - 'Garhwal Hitesini Sabha' and all the distinguished members of the Organization.

(G.CHANDRA)

भगत सिंह कोश्यारी
प्रदेश अध्यक्ष

भारतीय जनता पार्टी
उत्तरांचल

दिनांक 21 मार्च 2006

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि गढ़वाल हितैषीणी सभा द्वारा गढ़वाल मण्डल की दिवंगत विभूतियों की स्मृति में 6 अप्रैल 2006 को एक रंगारंग कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है, तथा इस मौके पर एक स्मारिका का प्रकाशन भी किया जायेगा।

कार्यक्रम के सफल आयोजन एवं स्मारिका के मूल उद्देश्य प्राप्ति व सफल प्रकाशन हेतु मेरी शुभकामनायें स्वीकार करें।

धन्यवाद

भवदीय

(भगत सिंह कोश्यारी)
पूर्व मुख्यमंत्री

गढ़वाल हितैषीणी सभा (रजि0)
गढ़वाल भवन पंचकुयाँ रोड,
नई दिल्ली

डा. (श्रीमती) इन्दिरा हृदयेश
मंत्री,
लोक निर्माण, राज्य सम्पत्ति, संसदीय कार्य,
सूचना, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

उत्तरांचल शासन

विधान भवन, देहरादून
दूरभाष : 0135-2665088 (कार्यालय)
फैक्स : 0135-2665988
0135-2726116 (आवास)

दिनांक 04-3-2006

संदेश

यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि **गढ़वाल हितैषिणी सभा** अपने वार्षिक कार्यक्रमों की श्रृँखला के तहत् आगामी 06 अप्रैल, 2006 को तालकटोरा इन्डोर स्टेडियम में **''गढ़वाल की दिवंगत महान''** विभूतियों की स्मृति में लोक गीत एंव लोक नृत्यों का कार्यक्रम आयोजन कर रहा है, तथा इस अवसर पर दिवंगत महान विभूतियों के जीवन दर्शन पर एक स्मारिका का प्रकाशन भी किया जा रहा है

''गढ़वाल मण्डल के दिवंगत महान विभूतियों'' की सचित्र जीवनी तथा उनके द्वारा समाज को दिया गया योगदान, गढ़वाल की संस्कृति एंव परम्पराएं, उत्तरांचल में पर्यटन, तीर्थाटन, शिक्षा, रोजगार एंव पर्यावरण उत्तरांचल के सम्बन्ध में विकास की संभावनाएं तथा दिल्ली स्थित प्रवासी (उत्तराचंलियो) की आर्थिक, सामाजिक एंव राजनैतिक गतिविधियों, उपलब्धियों का प्रकाशन स्मारिका में किया जाना नि:संदेह सराहनीय कार्य है।

मुझे विश्वास है कि यह स्मारिका प्रवासी उत्तराचंलियो के लिए सदुपयोगी होगी ।

स्मारिका के सफल प्रकाशन एंव कार्यक्रम की सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

(डा० इन्दिरा हृदयेश)

BRIEF PROFILE : Mr. Alam Singh Bist

Born on 20th August 1945, Mr.Alam Singh Bist is a renowned and an outstanding Industrialist, dealing in the manufacturing of Power/Distribution Transformers with the manufacturing unit situated at D-25&26 Site "C" Surajpur Indl. Area, Greater Noida. Dashing and a dynamic entrepreneur since beginning Mr. Bist is presently the Managing Director of Paramex Electronics Private Limited, an ISO 9001-2000 Company. He was not a born industrialist but came to this position after a long stint of hard work and great toil. During the period of his earlier years of life, he commenced the work of manufacturing of Distribution Transformers. He was basically a pioneer in this field. After gaining enough experience in the field of electronics, Mr Bist started his own business in 1967, in the name of Paramex Electronics at Naraina Industrialist Area in New Delhi for very first time. In 1982 it was converted into a Private Limited company known as, Paramex Electronics Pvt. Ltd." with factory in sector 10, Noida U.P. After manufacturing Power Distribution Transformers in Sec-10 Noida for a long time, Mr Bist shifted to Surajpur Industrial Area, Greater Noida in the year 2001, having an excellent turnover in several Crores of Rupees. Under the able guidance and supervision of Sh. Alam Singh Bist, Paramex Electronics Private Limited achieve remarkable growth in its Turnover as well as profitability.

A popular name in Uttaranchal Circle of Delhi and Uttaranchal, Mr Bist is a multifaceted personality having tremendous interest and involvement in socio political activities of Uttaranchal too. His contribution in the affairs and activities of separate hill state movement cannot be ruled out , as he was closely associated with the movement since 1978 with late. Sh. T.S. Negi M.P. Apart from being an enterprising INDUSTRIALIST, Mr Bist was quite active in Uttarakhand Rajya Parishad from 1978 till 1982 with late Sh. T.S. Negi, MP. as a social-activist. From 1990 till 1994, he was the Member of telephone Advisory Committee, Ghaziabad, U.P. He is also the life Member of Delhi Rifle Associatio and National Rifle Association since 1995. A man of strong will and determination, Mr. Bist contested as MLA against th Congress heavy weight Late Shri S.N. Nautiyal, Ex Minister as UKD Candidate and mustered good number of votes. H is quite active in sociopolitical and Uttaranchali circles of Delhi and Uttaranchal. He was also felicitated with a prestigio Udyog Patra Award in the year 2003 at the hands of Union Minister for Consumer Affairs, GOI. Mr. Sharad Yadav. Apart from this Mr. A.S.Bist also a recepent of Quality Excellence award from Shri. Shankar Singh Baghela, heavy industry Minister for his outstanding performance. These exclusive awards was bestowed on Mr. Bist for his exemplary and outstanding contribution in the field of industrial output and record production as the only extra-ordinary industrialist of Uttaranchal in Transformer Industry. Mr. Alam Singh Bist is true professional of his field and has remarkable leadership qualities. He has been able to accomplish this goal amidst stiff competition due to his diligence and hard work.

The above Profile gives a true and fair picture of the personality of Mr. Alam Singh Bist including the various fa of his life.

Mr. Alam Singh Bist
Managing Director

Paramex Electronics Pvt, Ltd.
AN ISO 9001-2000 COMPANY
(Res.)- F-217-D, SAINIK FARMS,
NEW DELHI-10062.
TEL.- 29553221, MOB.-9891343828

(Off.) D-25 & 26 Site 'C' Suraj
Industrial Area Greater Noida
Fax-01202569490
Tel,- 01202560176, 2560177
E-mail- paramextrans@vsnl.

20.00/

एम. एस. रावत

एम.एससी., बी.एड़.

स्वावलंबन या परावलंबन मनुष्य की आन्तरिक वृतियाँ है। जिस मनुष्य में स्वावलंबन की वृति पनप चुकी है, वह जीवन के हर क्षेत्र में कुछ कर गुजरने की हिम्मत और हैसियत रखता है। समुचित सहायता या उपयुक्त मार्गदर्शन न मिलने पर भी वह हाथ पर हाथ धरे बैठा नहीं रहता। अपनी मेहनत और हिम्मत के बल पर ऐसा व्यक्ति अपने लिए राह बना ही लेता है स्वावलंबन की यह वृति सोई या निष्क्रिय पड़ी रही तो परालंबन ही जीवन की परिभाषा बन जाती है। हर समय हर बात में औरों का मुख ताकना परावलंबन है।

सफलता प्राप्त करने के लिए श्रम, संकल्प साहस और सूझ-बूझ का होना जरूरी है। श्री एम.एस रावत को विरासत में ऐसा कुछ नहीं मिला मगर अपने इन्ही दैविक गुणों के कारण आज वे मयूर पब्लिक स्कूल का सफलता पूर्वक संचालन कर रहे हैं। प्रारम्भ में कोचिंग अध्यापक के रूप में लोकप्रियता प्राप्त की और फिर एक जुनून विद्यालय खोलने का हुआ।

मंजा कोट, रावतस्यूँ, पौड़ी गढ़वाल मे जन्मे श्री एम. एस. रावत एम.एससी., बी.एड़. की परीक्षा उत्तीर्ण कर एक प्रशिक्षित अध्यापक बनकर प्रगति पथ पर बढ़े। फिर पत्नी के रूप में शकुन्तला रावत को पाकर और भी भाग्यशाली बने, श्रीमति शकुन्तला रावत वर्तमान समय में विद्यालय की प्रधानाचार्या और योग्य-प्रशासक हैं इस प्रकार दोनो के सहयोग, दूरदर्शिता और प्रशासनिक योग्यता विद्यालय की लोकप्रियता को बढ़ाने में आधार बनी है।

श्री आनन्द सिंह रावत

प्रसिद्ध उद्योगपति

- एक सहृदय सामाजिक व्यक्ति
- कई सामाजिक एंव धार्मिक संस्थाओं में सक्रिय
- समाज-उत्थान के कार्यों में सदैव सक्रिय
- भवन की समय-समय पर आर्थिक मदद

जन्म 1942

ग्राम-कठुली, पो० औ०-पाठी सैण
पटटी-मौदाड़स्यूं (उत्तरी)
जिला-पौड़ी गढ़वाल

(28)

With Best Compliments

From:-

Sh. Ravinder Gupta

B.Com L.L.B

C.L PRODUCTS (INDIA) LIMITED

Manufacturers & Exporter of SLM Brand Spices, Incense Sticks, Food Products & Other Agro Commodities

Regd. & Administrative Office

Rithala Industrial Area, Near SBI, Delhi-110085

Ph. : +91-11-27047076, 27054212,55452847

Fax : +91-11-27932212

E-mail : info@slm-products.com / slmp@bol.net.in

www.slm-products.com / www.shrilalmahal-rice.com

SLM®

श्री जयकुमार बंसल

श्री जयकुमार बंसल का जन्म दिल्ली स्थित एक हरियाणवी परिवार में धर्मपारायण स्वं० श्री देशराज जी बंसल के यहाँ 2 अक्टूबर 1957 में हुआ। इनकी शिक्षा दिल्ली और झज्जर हरियाणा में हुई, श्री जयकुमार बंसल बडे मेधावी छात्र थे, लेकिन शुरू से ही इनका रूझान व्यापार (फुटवियर उद्योग) की ओर अधिक था। शिक्षा पूरी करने के बाद अपने पुश्तैनी कारोबार को संभाला और उसको ऊँचे मुकाम पर पहुँचा दिया। आज इनके बादली औद्योगिक-क्षेत्र में फुटवियर के 3 यूनिट स्थापित है।

मृदुभाषी श्री बंसल धार्मिक प्रवृति के सहृदय व्यक्ति हैं। रोहिणी में बंसल पैलेस नाम से एक अति-आधुनिक अतिथिग्रह है। रोहिणी में ही एक निर्माणाधीन स्कूल भी है।

श्री जयकुमार बंसल का समाज सेवा में शुरू से ही रुझान रहा है। श्री जयकुमार बंसल वर्तमान में ऐ.पी.एम.सी. फल एंव सब्जी मंडी आजादपुर के चेयरमैन हैं इनकी नियुक्ति के बाद इस बहुउदेशीय संस्थान की गतिविधियों में काफी सुधार हुआ है।

RAWAT
Innovative By Design

RAWAT STEEL INDUSTRIES (Since 1974)

Corporate Office & Showroom

B-24, New Multan Nagar , Opp. Paschim Vihar, Rohtak Road, New Delhi-110056
E-mail : rawatsteel@yahoo.co.in, Web site : www.rawatsteel.com
Tel.: +91-11-25291647,25291775 Res. 25291326 Fax.: 91-11-25291005, Mobile: 9811060920

At RAWAT we are in process of continuous innovation, design and development. We reserve the right to modify the specifications/dimensions without prior notice

सर्वश्रेष्ठ जीवन

उत्तरांचल की दिवंगत विभूतियों को समर्पित

उन्होंने अपना जीवन त्याग समझकर जिया।
जीते हैं जीवन सभी,
मगर उन्होंने अनोखा जिया,
कर दिया प्राणों को न्यौछावर जननी--जन्मभूमि
पर आज।
थी उत्तरांचल की देव भूमि को उनके बलिदान
की आस,
माना वे सब कुछ कर ना सके,
पर भारत माता के हाथों को रिक्त होने ना दिया,
लिखा था पूर्वजों ने तप से
इतिहास हमारा।
उनकी वीरता नहीं भूलेगा यह संसार
सारा॥
उनकी इन अनमोल स्मृतियों को संजोकर हम
हैं गौरवान्वित आज।
हे ईश्वर हम बार-बार जन्म लें
इस पवित्र भारत भूमि पर।

दीपक द्विवेदी

माधो सिंह भण्डारी

माधो सिंह भण्डारी का जन्म ग्राम मलेथा (कीर्तिनगर) टिहरी गढ़वाल में सन् 1595 को हुआ। माधो सिंह भण्डारी गढ़वाल नरेश महीपति शाह के प्रधान सेनापति रहे। अपने समय के अत्यन्त वीर और साहसी पुरुष, योद्धा, कुशल सेनानी। इतिहास प्रसिद्ध "मलेथा" की गूल के शिल्पी के रूप में भी उन्हें जाना जाता है। कुमाऊं के राजा लक्ष्मीचन्द ने गढ़वाल राज्य पर आठ आक्रमण किए। उत्तरी सीमा से भी तिब्बती शासकों ने गढ़राज्य पर आक्रमण किए। इन सभी युद्धों में माधो भण्डारी ने राजा महीपति शाह का दाहिना हाथ बनकर दुश्मन का मुकाबला किया और गढ़ राज्य को विजयश्री दिलाई। दापा मण्डी (तिब्बत) के युद्ध में सेनानायक लोदी रिखोला के साथ भण्डारी ने सहायक के रूप में भाग लिया। इस युद्ध में गढ़ राज्य की विजय हुई और दापा घाट का किला तथा मठ गढ़ राज्य के अधीन हो गए। युद्ध में इनकी वीरता और साहस से गढ़ नरेश अत्यन्त प्रसन्न हुए। खुश होकर राजा ने इन्हें गढ़वाल के कई स्थान जागीर के रूप में प्रदान किए। लोदी रिखोला की युद्ध में वीरगति के बाद माधो सिंह भण्डारी सेनापति बने। एक बार गढ़ राज्य की उत्तरी सीमा का निर्धारण करते वे तिब्बत के भीतरी भाग में पहुँच गये। अत्यधिक शीत के कारण वहाँ बीमार हो गए और वहीं इनकी मृत्यु हो गई। इनके साथियों ने इनके शव को हरिद्वार पहुँचाया जहाँ इनकी अन्त्येष्टि की गई। कहते हैं भण्डारी द्वारा निर्धारित भारत-तिब्बत की सीमा को ही 200 साल बाद ब्रिटिश राज्य ने "मैकमोहन रेखा" मानकर सीमा का निर्धारण किया।

माधो सिंह भण्डारी की इतिहास-प्रसिद्धि वीर सेनानी के साथ-साथ मलेथा की गूल से भी है। कीर्तिनगर, टिहरी के नजदीक मलेथा गांव (हरिद्वार-बद्रीनाथ राजमार्ग पर) का प्रसिद्ध सेरा "मलेथा कु सेरू" (सिंचाई वाली भूमि) आजतक इसी गूल से उपजाऊ और प्रसिद्ध है। पहाड़ को चीरकर (सुरंग बनाकर) यह गूल निकाली गई थी। एक जनश्रुति है कि मलेथा की गूल निकालते समय जब पानी आगे नहीं बढ़ रहा था और कार्य में व्यवधान पर व्यवधान पड़ रहा था और कहा गया कि मानव बली देने पर ही व्यवधान दूर हो सकता है, तो इसके लिए भण्डारी जी ने अपने पुत्र की बलि दी थी तब पानी आगे बढ़ सका था? यदि यह घटना सत्य है, तो विश्व इतिहास में जन हितार्थ किया गया अब तक का यह अकेला और अनोखा त्याग है। ऐसे शूरवीर और त्यागी पुरुष पर किसे गर्व न होगा ? स्व. श्री भोलादत्त देवरानी लिखित ये पंक्तियां क्या कहती हैं ? "माधु की कीर्ति जस गाद गांदा, आज तैं, फूल तख बगद जांद।" गढ़राज्य की सीमा निर्धारण करते जब यह तिब्बत पहुँचे तो भंयकर शीत के कारण सम्भल न सके और वहीं पर शीत ऋतु में 1645 में उनका प्राणान्त हो गया।

मौलाराम

गढ़वाली चित्रकला शैली के कुशल चित्रकार श्री मौलाराम का जन्म 1740 में श्रीनगर, गढ़वाल में हुआ। मौलाराम दिल्ली के प्रसिद्ध चित्रकार शामदास की पाँचवी पीढ़ी में जन्मे थे। इनके पिता मंगतराम पेशे से स्वर्णकार थे। इनकी माता जी का नाम श्रीमती रमा देवी था। इन्होंने अपने पिता से स्वर्णकला के साथ-साथ चित्रकला भी सीखी थी। इनके चित्रों में उस समय की चित्रकला पद्धति प्रगति, सामान्य साहित्य, सरलता एवं सौन्दर्य परिलक्षित होता है। तत्कालीन चित्रकला में अतीत की गम्भीरता और शनैःशनै आगे बढ़ती अट्ठारहवीं सदी की प्रचुर रमणीयता पाई जाती है। इन्होंने सांसारिक और असांसारिक विषयों को रंगों में बांधकर चित्रकला के क्षेत्र में एक नई पहल की।

साहित्यकार डा. पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल के शब्दों में "मध्यकाल की सांस्कृतिक सुषुप्ति के युग में पहाड़ी चित्रकार ही कला के भारतीयपन को जागृत कर सके हैं"। "मौलाराम ने पहाड़ी चित्रकला को श्रेष्ठ नेतृत्व प्रदान किया है"। बंगाल के प्रमुख कलाविद प्रो. आर.सी. गांगुली के अनुसार गढ़वाल के मौलाराम के नेतृत्व में काँगड़ा शैली के चित्रकारों ने भारतीय चित्रकला के समूचे इतिहास में सुन्दरतम अध्याय जोड़ा है। प्रसिद्ध चित्रकार अजीत घोष के अनुसार - कई दृष्टियों से गढ़वाली चित्रकला अपनी समकालीन काँगड़ा चित्रकला शैली से बहुत आगे प्रतीत होती है। उत्तरांचल के अन्य साहित्यकार श्री वाचस्पति गैरोला के शब्दों में "सदियों से पिछड़ी और अस्तित्व की तलाश में भटकती गढ़वाली चित्रकला शैली ने एक ही दशक की अल्पायु में अपनी अलग पहचान बनाकर भारतीय चित्रकला की समृद्धि में एक नवीन अध्याय जोड़ा है। मौलाराम की कलाकृतियाँ आज भी हमारी गौरवशाली इतिहास की समृद्धि को पुष्ट कर रही हैं।"

अमेरिका के प्रसिद्ध बोस्टन संग्रहालय में मौलाराम के उत्कृष्ट कला-चित्र शोभा बढ़ा रहे हैं। इससे पूर्व 1947-48 में इनकी चित्रकला को विश्व चित्रकला प्रदर्शनी में लन्दन में प्रदर्शित किया जा चुका है। चित्रकार मौलाराम की चित्रकला को प्रकाशन में लाने का श्रेय गढ़वाल के प्रसिद्ध वकील, स्वतंत्रता सैनानी बैरिस्टर मुकन्दीलाल को जाता है। मौलाराम जी चित्रकार ही नहीं, वे अपने कालखण्ड के श्रेष्ठ साहित्यकार और इतिहास कार भी रहे हैं। उत्तराखण्ड के मूर्धन्य इतिहासकार डा.शिव प्रसाद डबराल "चारण" की खोज के अनुसार मौलाराम के अब तक 35 हिन्दी काव्य खोजे जा चुके हैं। जिनमें ऐतिहासिक गाथाओं पर आधारित लगभग एक दर्जन काव्य, पौराणिक आख्यानों पर आधारित लगभग छह काव्य, दस सन्त काव्य, राष्ट्रीय उद्बोधन सम्बन्धी तीन काव्य, नीति एवं श्रृंगारिक चार काव्य प्रमुख हैं। मौलाराम ने गढ़वाल के चार राजाओं प्रदीप शाह, ललित शाह, जयकृत शाह और प्रद्युम्न शाह के कार्यकाल में अपनी कला का जौहर दिखाया है। मौलाराम जी का देहान्त जीवन के 93 बसन्त पूरे करने के पश्चात् सन 1833 में हुआ।

बलभद्र सिंह नेगी

बलभद्र सिंह नेगी का जन्म सन् 1829 में पौढ़ी गढ़वाल जनपद की असवालस्यूं पट्टी के हेड़ाखोली गाँव में हुआ था। इनके पिता श्री धनसिंह नेगी एक साधारण परिवार के थे। इनकी उम्र सत्रह वर्ष की थी कि सिर से पिता का साया उठ गया। बलभद्र सिंह नौकरी की खोज में पाँचवी गोरखा राइफल्स में भर्ती हो गये। उन दिनों गोरखा बटालियन पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्त के एबटाबाद नामक स्थान पर तैनात थी। फौज में इन्होंने उत्साह व विश्वास के साथ कार्य किया। परिणामतः 1857 की "गदर" में वीरता दिखाने पर हवलदार मेजर नियुक्त किए गए। अफगान युद्ध में इन्होंने अपनी वीरता और बुद्धिचातुर्य से सबको सम्मोहित कर दिया था ।

अफगान सेना युद्ध लड़ने में पारंगत थी। जब भारतीय सेना अपने को निरापद समझ कर आगे बढ़ती तो अफगान सेना कन्दराओं से निकलकर उन पर टूट पड़ती। ब्रिटिश सेनानायक दुविधा में थे कि किस प्रकार अफगान सेना से युद्ध में विजय प्राप्त की जाये। अन्त में उन्होंने बलभद्र सिंह नेगी को खुफिया तौर पर शत्रु का भेद निकाल लाने के लिए तैयार किया। इन्होंने एक पठान फकीर का वेश धारण किया और मृत सैनिकों के बीच सात दिन तक पड़े रहे। पठान सैनिक आते और इन्हें मुर्दा समझकर अपनी फौजी योजनाओं के सम्बन्ध में बातें करते, ये चुपचाप उनकी बातें सुनते रहे। अन्त में सातवें दिन इन्होंने शत्रु की रणनीति का भेद पा लिया और अपने कैम्प वापिस लौट आये। सेनानायक लार्ड रौबर्ट्स ने उसी सूचना के आधार पर सामरिक योजना तैयार कर युद्ध लड़ा और विजयी हुए। लार्ड रौबर्ट्स ने सेवानिवृत्त के बाद इंग्लैण्ड जाकर अपने जो संस्मरण लिखे थे, उसमें इस घटना का भी उल्लेख किया।

सन् 1879 में जब कन्धार क्षेत्र में युद्ध चल रहा था तो इन्हें वीरतापूर्ण कार्यों के लिए "आर्डर ऑफ मैरिट" का सम्मान दिया गया। कन्धार के युद्ध में योग्यता एवं वीरता प्रदर्शन के कारण इन्हें सूबेदार मेजर बना दिया गया, जो कि उन दिनों भारतवासियों के लिए फौज में सबसे ऊंचा पद था। इसके अतिरिक्त इन्हें पुनः "आर्डर ऑफ मेरिट" से सम्मानित किया गया। ब्रिटिश फौज के तत्कालीन कमाण्डर-इन-चीफ ने "सर्वोत्तम सैनिक" का पदक भी इन्हें प्रदान किया। कुछ समय उपरान्त इन्हें "आर्डर ऑफ ब्रिटिश इण्डिया" का सम्मान दिया गया फलस्वरूप ये "सरदार बहादुर" बन गये । तदुपरान्त लार्ड रौबर्ट्सन ने इसके लिए एक नये पद की घोषणा की और ये जंगी लाट के अंगरक्षक नियुक्त किये गये और लाट सूबेदार कहलाने लगे। उस पद पर पाँच वर्ष तक कार्य करने के बाद सन् 1885 में पेंशन प्राप्त कर घर आ गये।

इनकी प्रशंसनीय सेवाओं के लिए इन्हें कोटद्वार भाबर के घोसीखाता गांव में 1600 एकड़ भूमि जागीर के रूप में प्रदान की गयी। वीर बलभद्र सिंह नेगी सन् 1912 में स्वर्ग सिधार गये। सन् 1880 में भारत के तत्कालीन जंगीलाट, लार्ड रौबर्ट्स को गढ़वालियों की अलग पल्टन खड़ी करने का इन्होंने सुझाव दिया था। इनके वीरतापूर्ण कृत्यों पर जंगी लाट लार्ड रौबर्ट्स ने कहा था, "एक जाति जो बलभद्र सिंह नेगी के समान वीर पुरुषों को पैदा कर सकती है, उसे अपनी एक अलग बटालियन अवश्य ही मिलनी चाहिए"। बलभद्र सिंह की इच्छाओं का सम्मान करते हुए अप्रैल,1887 में बर्ड गोरखा रेजीमेन्ट को दूसरी बटालियन खड़ी करने का आदेश दिया था। यही पल्टन आगे चल कर गढ़वाल राइफल्स कहलाई। जंगी लाट के इस कथन के बाद ही ब्रिटिश सैन्य अधिकारियों ने अलग गढ़वाल बटालियन की स्थापना कर गढ़वाल रेजिमेन्ट की स्थापना की। इन्हीं के सुझाव पर लैन्सडाउन (कालौडांडा) में गढ़वाल रेजिमेन्ट शुरू हुई।

अनुसूया प्रसाद बहुगुणा

अनुसूया देवी के मंदिर में इनका जन्म हुआ था, इसलिए पिता ने इनका नाम अनुसूया प्रसाद रख दिया था। इनका जन्म 18.2.1864 में नन्द प्रयाग, चमोली में हुआ था। उन्होंने 1914 में मेम्योर सेन्ट्रल कालेज से बी.एस.सी. और 1916 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एल.एल.बी. की परीक्षा उत्तीर्ण की। 1919 में बैरिस्टर मुकुन्दी लाल के साथ कांग्रेस अधिवेशन में भाग लेने लाहौर गए। वहाँ से लौटकर समाज सुधार और जन संगठन के कार्यों में जुट गए। उस समय तक गढ़वाल में कुली-बेगार आदि कुप्रथाओं के विरुद्ध तथा कुछ समय पश्चात जंगलात कानून में सरकारी हस्तक्षेप के विरुद्ध जन-आन्दोलन तीव्र गति पकड़ चुका था। दोनों आन्दोलनों में इन्होंने सफल नेतृत्व किया। फलस्वरूप इन कुप्रथाओं का अन्त हो गया. 1930 में गढ़वाल में नमक-सत्याग्रह ने जोर पकड़ा। बहुगुणा जी ने इस आन्दोलन का सफलतापूर्वक नेतृत्व किया। धारा 144 का उल्लंघन करने के आरोप में गिरफ्तार कर लिए गए। फलस्वरूप 4 माह जेल की सजा हुई।

1931 में आप जिला बोर्ड के चैयरमेन चुने गए। इनके प्रयासों से हिमालय एयरवेज नाम की एक कम्पनी ने बद्री-केदार धाम आने वाले तीर्थ यात्रियों की सुविधा के लिए हरिद्वार से गौचर तक हवाई सर्विस शुरू की। 1934 में तत्कालीन वायसराय की पत्नी लेडी विलिंगटन विश्व विख्यात पत्रकार सन्त निहाल सिंह के साथ हवाई जहाज से गौचर उतरीं। गढ़वाल की ओर से बहुगुणा जी ने उनका स्वागत किया। 1937 में आप गढ़वाल से संयुक्त प्रान्त की विधान परिषद के सदस्य चुने गए। स्वाधीनता संग्राम के प्रखर, निर्भीक और निःस्वार्थ सेनानी, प्रभावशाली वक्ता,राष्ट्र प्रेमी और लोकप्रिय जनसेवक रहे। उन्हें "गढ़केसरी" सम्मान से भी सम्बोधित किया जाता था. 1931 में आपने संयुक्त प्रान्त विधान परिषद में बदरीनाथ मंदिर की कुव्यवस्था के विरुद्ध आवाज उठाई और श्री बदरीनाथ मंदिर प्रबन्ध कानून पास करवाया. 1938 में पंडित नेहरू और श्रीमती विजय लक्ष्मी पण्डित 5 दिनों के भ्रमण पर गढ़वाल आए। स्वाधीनता के लिए बहुगुणा जी की भावनाओं को देखकर नेहरू जी बेहद प्रभावित हुए। अप्रैल, 1940 में कर्णप्रयाग में राजनैतिक सम्मेलन में बहुगुणा जी सभापति चुने गए। व्यक्तिगत सत्याग्रह के दौरान 14 दिसम्बर, 1941 को गिरफ्तार हुए और उन्हें एक वर्ष कारावास की सजा भुगतनी पड़ी। जेल में ही उनका स्वास्थ्य और बिगड़ता चला गया और 29 मार्च, 1943 को वह इस संसार से विदा हो गए।

पं0 विश्वम्भर दत्त चन्दोला

पं0 विश्वम्भर दत्त चन्दोला का जन्म विक्रमी सम्वत् 1936 के कार्तिक 17 गते (प्रविष्टा) शनिवार (2 नवम्बर 1879) को थापली गाँव पट्टी कपोलस्यूं पौड़ी में हुआ था। इनके अग्रज, दो बड़े सहोदर, जो देहरादून में उत्पन्न हुए थे, अल्पकाल में ही समाप्त हो गए। अतः माता-पिता अपने दोनों पुत्रों की मृत्यु से दुःखी होकर अपनी पितृभूमि थापली चले आए। किशोर चन्दोला का पठन-पाठन चल ही रहा था कि उनके माता-पिता का केवल चालीस दिन के अन्दर स्वर्गवास हो गया। उस समय चन्दोला जी की आयु केवल 17 वर्ष की थी। उनसे छोटी तीन बहिनें और दो भाई थे। सबसे छोटे भाई की मृत्यु कुछ समय पश्चात् ही हो गई। स्वतंत्र व्यवसाय और पत्रकारी जीवन गढ़वाली प्रेस के द्वारा चन्दोला जी ने भारत भूमि, संयुक्त प्रान्त, कुमाउं खण्ड और गढ़वाल की जो समयोचित सेवा की वह इतिहास के इस तूफानी काल के भिन्न-भिन्न पृष्ठों पर अपनी अमिट छाप रखती है। इस शताब्दी के प्रथम और द्वितीय चरणों के सन्धिकाल के दिनों में देहरादून की एक राजनैतिक सभा में पं0 जवाहर लाल नेहरू आने वाले थे। लखनऊ सरकार का संकेत था कि स्थानीय वातावरण की गरमाहट के अनुसार सुपरिटेण्डेन्ट दून, अर्थात् जिलाधीश महोदय यदि उचित समझें तो रेल में ही उन्हें देहरादून पहुँचने से पूर्व गिरफ्तार कर लें। तत्कालीन जिलाधीश, सम्भवतः मि. मेसन को उनके अधीनस्थ अधिकारी वर्ग और शहर के जी हजूरों में से अधिकांश ने गिरफ्तारी के पक्ष में राय दी थी, अस्तु मि. मेसन बड़े पसोपेश में थे कि क्या किया जाए? अतः उन्होंने चन्दोला जी की भी राय ली। चन्दोला जी ने गिरफ्तारी के खिलाफ अपनी स्पष्ट राय दी। कलक्टर मेसन ने उनकी राय मानी। कहा यह भी जाता है कि मि. मेसन गढ़वालियों की ईमानदारी, साफगोई और देश- भक्ति का बड़ा आदर करते थे।

चन्दोला जी सुधारवादी थे और सबके उद्धार में विश्वास करते थे। अपनी जिज्ञासा को वे बड़ों के सम्मुख भी बिना संकोच व्यक्त कर देते थे। अपने कारावास काल में देहरादून डिस्ट्रिक्ट जेल में पं0 जवाहर लाल नेहरू से उन्होंने पूछा था कि यह बात कहां तक सत्य है कि आपके कपड़े धुलने के लिए पेरिस जाते हैं । जवाहर लाल जी ने उत्तर दिया कि एक बार विदेश भ्रमण करके हम लोग पेरिस आए वहां कपड़े धुलने के लिए दिए थे जो भूल से वहीं रह गए थे। वह कपड़े पार्सल से भारत आए थे और कोई कपड़े पेरिस धुलने नहीं भेजे गए। रवांई कांड से पूर्व सन् 1925 में भी चन्दोला जी गिरफ्तार हुए थे। उस समय भी अनेक नेताओं ने उनके पास सहानुभूति-पूर्ण पत्र भेजे। संयुक्त प्रान्तीय लेजिस्लेटिव ऐसेम्बली के तत्कालीन प्रभावशाली राष्ट्रीय नेता पं. गोविन्द बल्लभ पन्त ने भी इसी आशय का पत्र भेजा था । जानकारी के अनुसार श्री विश्वम्भर दत्त चन्दोला सबसे पुराने पत्रकार रहे हैं जिनका सारा समय 21 वर्ष की अवस्था से 91 वर्ष की आयु तक लगभग 71 वर्ष पत्रकारिता में बीता। वे अपने संवाददाता का नाम न बताने और लेख के लिए माफी न मांगने के कारण एक साल तक कारावास में भी रहे। जानकारी में ऐसा दूसरा दृष्टान्त सिवाय "केसरी" के सम्पादक लोकमान्य तिलक के अलावा और कोई नहीं है। सन् 1911 ई. में पं0 विश्वम्भर दत्त चन्दोला ने अपना प्रेस स्थापित किया और "गढ़वाली" को एक उच्च कोटि का साप्ताहिक पत्र बनाया। उनके पत्र में गढ़वाल की उन्नति और गढ़वाल के पिछड़ेपन और हाकिमों की ज्यादतियों के विषय में लिखा जाता था। उन्होंने निडरता पूर्वक, उक्त विषयों पर अपने विचार बेबाक रूप में "गढ़वाल साप्ताहिक" में प्रकट किये। उन्हें गढ़वाल में पत्रकारियों का जनक ही नहीं कहा जाता अपितु पत्रकारिता का पितामह माना जाता है। वह निर्भीक और स्वाभिमानी पत्रकार थे।

जब बहिष्कार आन्दोलन सन 1920 और 21 में आरम्भ हुआ तब चन्दोला जी ने गढ़वाल में अपनी राय उसके खिलाफ व्यक्त की। उनका कहना था कि स्कूल, कालेज और न्यायालयों के बहिष्कार करने से देश की हानि होगी और जनता की उन्नति में बाधा पड़ेगी। आखिर में उनकी राय उचित मालूम हुई और अन्त में स्कूल, कालेज और न्यायालयों का बहिष्कार न हो सका। वह बराबर चलते रहे, यद्यपि हज़ारों नवयुवकों ने स्कूल और कालेजों का परित्याग किया। पं0 विश्वम्भर दत्त चन्दोला की मृत्यु 14 अगस्त, 1970 को अपने निवास स्थान देहरादून में उसी भवन में हुई, जिसमें उन्होंने अपना सारा जीवन एक आदर्श पत्रकार और सम्पादक की हैसियत से बिताया था। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा, पौड़ी मिशन स्कूल में हुई थी जो उस समय गढ़वाल में सबसे उच्चकोटि का अंग्रेजी मिशन स्कूल था और जहां पढ़ाई केवल आठवें दर्जे तक होती थी।

जयानन्द भारतीय

भारतीय समाज अशिक्षा एवं पिछड़ेपन के कारण अनेक कुप्रथाओं का शिकार रहा है। इन कुप्रथाओं को समाप्त करने के लिए अनेक क्रान्तिकारी समाज सुधारकों के नेतृत्व में समाज सुधार आन्दोलन चलते रहे। इन समाज सुधार आन्दोलनों के कारण ही हमारे समाज से सती प्रथा, बाल विवाह, परदा-प्रथा छुआछूत जैसी कुप्रथाएँ समाप्त हुई। उत्तरांचल में प्रचलित इसी तरह की एक कुप्रथा डोला-पालकी प्रथा थी, जिसके अनुसार अनुसूचित जाति के लोगों को शादी में वर-वधु के लिए डोला-पालकी का इस्तेमाल पर सामाजिक प्रतिबन्ध था अर्थात् शिल्पकार (अनुसूचित जाति) लोग विवाह के मौके पर डोला-पालकी का इस्तेमाल नहीं कर सकते थे। डोला-पालकी विरोधी आन्दोलन के सूत्रधार थे "जयानन्द भारतीय"। सुप्रसिद्ध समाज सुधारक स्वामी श्रद्धानन्द के शिष्य जयानंद भारतीय का जन्म पौढ़ी जिले के बीरोंखाल ब्लॉक, पट्टी साबली, अरकंडाई गाँव में एक शिल्पकार परिवार में 17 अक्तूबर,1881 को हुआ बताया गया। उनका बचपन का नाम जेवी था बाद में वह जयानन्द भारतीय कहलाए। पिता का नाम छबिलाल था। उनके पिता गाँव में शिल्प का कार्य करने के अलावा देवताओं की आराधना करने वाले पारंपरिक धामी अथवा जागरी का कार्य करते थे । विरासत में मिली इस कला में जयानंद भी शीघ्र ही पारंगत हो गये और उन्होंने जागर के कार्य में पिता का हाथ बँटाना शुरू कर दिया।

समाज में कुप्रथाओं को देखते हुए उन्हें वेदना हुई। धीरे-धीरे उनका झुकाव आर्य समाज की तरफ दिखाई दिया। आर्य समाज आंदोलन से स्वयं को जोड़ने की ललक लेकर जयानन्द भारतीय हरिद्वार में गुरुकुल कांगड़ी पहुँचे। वहाँ पहुँचकर उन्होंने स्वामी श्रद्धानंद से आर्य समाज की दीक्षा लेकर यज्ञोपवीत धारण किया और जयानन्द आर्य "पथिक" के नाम से 1920 में आर्य समाज के प्रचारक बन गए। जयानन्द ने गढ़वाल में छुआछूत की प्रथा को दूर करने का संकल्प लिया। गढ़वाल के शिल्पकारों की स्थिति का अध्ययन करने के लिए उन्होंने गढ़वाल में अनेक गाँवों का भ्रमण किया तथा डोला-पालकी प्रथा के विरुद्ध आवाज उठाई। इस संबंध में शिल्पकार समाज के ही कुछ वृद्धों ने उन्हें समझाने की चेष्टा की और यह आन्दोलन छोड़ने को कहा। तत्कालीन कुछ कांग्रेसी नेताओं ने भी उनके इस समाज सुधार आन्दोलन को उचित नहीं ठहराया पर वे अपने द्वारा शुरू किए गए आन्दोलन पर अडिग रहे। सन् 1932 में अंग्रेज गवर्नर सर विलियम मैलकम हेली का पौड़ी का स्वागत दरबार-वाला कांड भारतीय जी के राजनैतिक जीवन का एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक कांड है। भारतीय जी जेल से छूटकर आये ही थे और उन्हें इस शान्ति दरबार का भी पता था। उन्होंने प्रण कर लिया था कि इस दरबार को नहीं होन देंगे। उन्होंने किसान का भेष बनाया, तिरंगा झंडा को तीन भागों में बांटा, उनके तीनों साथी उन टुकड़ों में गुड़, सत्तू व तम्बाकू बाँध कर घटनास्थल पर पहुँचे। भारतीय जी मंच के समीप बैठ गए। सभा प्रारम्भ होने पर भारत माता की जय, अमन सभा मुर्दाबाद के नारे लगाने पर पुलिस ने उन्हें घेर लिया और पूरा पुलसिया अख्तियार के बाद इन्हें बंदी बना लिया गया। जनता ने भी भारतीय जी का साथ दिया, भीड़ जेल के फाटक पर पहुँच गई। भारतीय जी ने उन्हें समझाया और फिर भीड़ तितर-बितर हुई। कोटद्वार में विलियम मैलकम हेली ने कहा कि मैं भारतीय जी का शुक्रगुजार हूँ। वे चाहते तो मुझे गोली मार सकते थे। परन्तु उन्होंने मेरी जान बख्श दी। भारतीय जी को इस जुर्म में एक साल की कठोर कारागार की सजा सुनाई गई।

जब गाँधी जी को जयानन्द से डोला-पालकी की कुप्रथा के बारे में जानकारी मिली तो उन्होंने उत्तराखंड के कांग्रेसी नेताओं से सत्याग्रह बंद करने को कहा। गाँधी जी का मानना था कि जिस समाज में इतनी ज्यादा सामाजिक विषमता हो, उस समाज में सत्याग्रह जैसा आंदोलन कैसे सफल हो सकता है। परिणामस्वरूप 23 फरवरी, 1941 को लैंसडाउन में एक सर्वदलीय सभा का आयोजन किया गया, जिसमें लम्बी बहस और तीखे विचार-विमर्श के बाद डोला-पालकी विरोधी आंदोलन में भागीदारी का निर्णय लिया गय। भारत छोड़ो आंदोलन में 21 नवम्बर 1942 से 11 मार्च, 1944 तक जयानन्द जेल में रहे। इसी दौरान इनकी पत्नी और बेटे का निधन हो गया। सामाजिक विषमताओं के खिलाफ जीवन भर संघर्ष करने वाले जयानन्द भारतीय अथाह गरीबी में जिये और क्षयरोग से ग्रस्त इस स्वतंत्रता सैनानी ने 9 सितम्बर, 1952 को अपने पैतृक गाँव में लम्बी बीमारी के बाद अंतिम साँस ली।

बैरिस्टर मुकन्दीलाल

मुकन्दीलाल जी ने अपने बारे में लिखा है कि उनके पूर्व पुरुष किशन सिंह जी के पूर्वज पंजाब में कपूरथला से आकर गढ़वाल में बस गये थे और सब की तरह पंजाबी से गढ़वाली बन गये थे। उनके पूर्वज सिक्ख गुरुगोविन्द सिंह के समकालीन श्रीनगर के राजा फतेहशाह के शासन-काल में सत्रहवीं सदी में गढ़वाल आये थे, और राज-दरबार में चोबदार के पद पर नियुक्त हो गये थे। तब से श्रीनगर में उनका खानदान चोबदार खानदान कहलाता था। उनके पड़दादा केशर सिंह की पत्नी पट्टी पैडुलस्यूं के निसणी गाँव के एक भण्डारी परिवार की बेटी थी। केशर सिंह के तीन लड़के थे। इनमें सबसे बड़े देवीदत्त, मुकन्दीलाल के दादा रामदत्त और गोपाल सिंह। रामदत्त के दो बेटे बद्री प्रसाद और दुर्गा प्रसाद और एक बेटी हुई। बैरिस्टर मुकन्दीलाल के पिता बद्री प्रसाद की दो पत्नियाँ थीं । बद्री प्रसाद की दूसरी पत्नी पद्मा देवी जोशीमठ के हेलंग स्थित सलूड़ गांव की थी। गोपेश्वर के निकट पाटली गांव मल्ला नागपुर में बद्री प्रसाद और पद्मा देवी के घर 15.10.1885 को मुकन्दी लाल का जन्म हुआ था। बद्री प्रसाद जी अपनी योग्यता, ईमानदारी निर्भीकता और स्पष्टवादिता के लिए चर्चित रहे। भारतीयों के आत्म सम्मान का जब भी कोई मसला उठता, वे उसके लिए कोई भी कुर्बानी देने को तत्पर रहते

बैरिस्टर मुकन्दीलाल उत्तराखण्ड के प्रथम बार-एट-ला थे। वे सुविख्यात विधिवेत्ता, कुशल प्रशासक, उच्चकोटि के कलामर्मज्ञ, लेखक, पत्रकार, मशहूर शिकारी, फोटोग्राफर, पुष्प और पक्षी प्रेमी और न जाने किन-किन मानवीय गुणों से परिपूर्ण एक व्यक्ति नहीं एक व्यक्तित्व थे बैरिस्टर मुकन्दीलाल। उत्तर प्रदेश के पूर्व राज्यपाल श्री बी. गोपाल रेड्डी के शब्दों में - "बैरिस्टर मुकन्दीलाल गढ़वाल के भीष्म पितामह हैं"। मुकन्दीलाल जी की प्रारम्भिक शिक्षा चोपड़ा (पौड़ी) मिशन हाईस्कूल में हुई। रैमजे इन्टर कालेज अल्मोड़ा से हाईस्कूल और इन्टर परीक्षाएं प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कीं। 1911 में इलाहाबाद से प्रथम श्रेणी में बी.ए. की परीक्षा पास कर, गढ़वाल के एक प्रतिष्ठित और मालदार के नाम से प्रसिद्ध परिवार में जन्मे दानवीर घनानन्द खण्डूड़ी से मिली आर्थिक सहायता से, 1913 में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए इंग्लैण्ड गए। वहां से 1919 में बार-एट-ला की डिग्री लेकर स्वदेश लौटे।

इंग्लैण्ड प्रवास में भारतीय कम्युनिस्ट नेता सकलातवाला, प्रवासी स्वाधीनता संग्राम सेनानी शिव प्रसाद गुप्त, प्रो. हेराल्ड लास्की, प्रो.गिलबर्ट गेर, दार्शनिक बर्ट्रेंड रसेल और साहित्यकार बर्नार्ड शॉ आदि चोटी के लोगों के सम्पर्क में आए। वहीं 1914 में गाँधी जी से मुलाकात की । अप्रैल 1919 में इलाहाबाद चले आए, जहां पहुँचने पर पण्डित नेहरू ने स्वयं आपका स्वागत किया। इस दौरान इन्हें पण्डित मोती लाल नेहरू, जवाहर लाल नेहरू, रामेश्वरी नेहरू, सुन्दरलाल और महात्मा गाँधी जैसे राष्ट्रीय नेताओं के सम्पर्क में आने का अवसर मिला। इनके विचारों से प्रभावित हुए और विदेश में राष्ट्रीय नेताओं के सम्पर्क में आने का अवसर मिला और इनके विचारों से प्रभावित हुए। विदेश में रहने के दौरान मार्क्सवादी विचारों की ओर झुकाव होने पर कांग्रेस की ओर से राजनीतिक जीवन में उतरे और मुकन्दीलाल जी ने काँग्रेस की सदस्यता ग्रहण कर ली. 1919 में लैन्सडौन में वकालत प्रारम्भ की। तभी इनका आमना-सामना स्वाधीनता संग्राम सेनानियों और आन्दोलनकारियों से हुआ. 1920 में प्रतिनिधिमण्डल के साथ अमृतसर काँग्रेस में सम्मिलित होने गए, जहां पहली बार जिन्ना से इनकी मुलाकात हुई। गढ़वाल लौटने पर काँग्रेस की स्थापना की और 800 सदस्य बनाए। इस समय गढ़वाल

में कुली-बेगार आन्दोलन चरम पर था। बैरिस्टर साहब आन्दोलन में शरीक हो गए। आन्दोलन में इन्हें गढ़वाल की धड़कन का पता चला। 1923 और 1926 में बैरिस्टर मुकन्दीलाल गढ़वाल से प्रान्तीय कौंसिल के लिए चुने गये. 1927 में कौंसिल के उपाध्यक्ष बने. 1930 में असहयोग आन्दोलन शुरू हुआ तो इन्होंने कॉंग्रेस छोड़ दी. 1930 से 1962 तक ये स्वाधीनता आन्दोलन तथा कांग्रेस से विमुख रहे. 1930 में एबटाबाद (अब पाकिस्तान में) जाकर इतिहास प्रसिद्ध पेशावर काण्ड के सिपाहियों की पैरवी की और उन्हें फांसी से बचा लाए. 1938 से 1943 तक टिहरी रियासत हाईकोर्ट के जज रहे। कांग्रेस से इस्तीफा देने के 32 साल बाद और प्रान्तीय कौंसिल के लिए 1936 में हुए चुनाव में पराजित होने के 26 साल बाद सन् 1962 में इन्होंने गढ़वाल से विधान सभा के लिए निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में चुनाव लड़ा और जीते। इसी वर्ष कॉंग्रेस में शामिल हुए।

1967 के बाद ये दलीय राजनीति से दूर रहे, किन्तु गढ़वाल से जुड़े हर मामले में चिन्तित रहे। एक कला समीक्षक, लेखक, सम्पादक-पत्रकार, कुशल आखेटक-शिकारी और संग्रहकार के रूप में भी इनकी पहचान बनी रहेगी। मौलाराम के कवि-चित्रकार व्यक्तित्व को प्रकाश में लाने का श्रेय इन्हीं को है। "गढ़वाल पेन्टिंग्स" नामक इनकी प्रसिद्ध पुस्तक का प्रकाशन 1969 में भारत सरकार के प्रकाशन विभाग ने किया। 1972 में इन्हें उत्तर प्रदेश ललित कला अकादमी की फेलोशिप दी गयी। 1978 में अखिल भारतीय कला संस्थान ने अपनी स्वर्ण जयन्ती पर इन्हें सम्मानित किया। बैरिस्टर निरन्तर 75 वर्षों तक लिखते रहे । बैरिस्टर जीवन भर गढ़वाल के विकास के लिए प्रयत्नशील रहे। गढ़वाल कमिश्नरी का सृजन - (1969) और मौलाराम स्कूल ऑफ गढ़वाल आर्ट की स्थापना का श्रेय आपको ही है। जीवन के 97 वर्षों में बैरिस्टर आर्य समाज, ईसाई, सिख, हिन्दू और बौद्ध बने। बतौर बौद्ध ही निर्वाण प्राप्त किया ।

बैरिस्टर साहब ने अपने लम्बे सार्वजनिक जीवन में खूब उतार-चढ़ाव देखे। अतः सन् 1967 से मृत्यु-पर्यन्त तक लगभग पन्द्रह वर्ष, उन्होंने एक अवकाश-प्राप्त वरिष्ठ राजनीतिज्ञ का जीवन बिताया। उनका समय मुख्यतया कोटद्वार में बीता करता था। वहां पर खास दफ्तर के पीछे नहर के किनारे उन्होंने अपने एम.एल.सी. कार्यकाल में एक विस्तृत भूखण्ड खरीद लिया था और उस पर एक बंगला बनवाया था, उसका नाम उन्होंने भारती-भवन रखा। वहीं पर वे साहित्यकारों कलाकारों और जनसेवकों का स्वागत व आतिथ्य-सत्कार करते थे । उन वर्षों में बैरिस्टर साहब ने जो शान्तिपूर्ण व्यवस्थित, एवं पत्नी का 1972 में निधन के पश्चात पूर्णतया एकाकी जीवन बिताना पड़ा। उस एकान्तवास का सदुपयोग उन्होंने साहित्यिक, सांस्कृतिक तथा कला-सम्बन्धी गतिविधियों में किया। गढ़वाल के महापुरुष बैरिस्टर मुकन्दीलाल जी की अन्तिम बीमारी नवम्बर 1981 में आरम्भ हुई डाक्टरों ने उनकी बीमारी लाइलाज बताई और इस प्रकार बरेली के फौजी अस्पताल में ही गढ़वाल के "भीष्म पितामह" 10 जनवरी, 1982 की रात लगभग साढ़े 10 बजे सदा के लिए इस संसार से विदा हो गए।

दरवान सिंह नेगी

दरवान सिंह नेगी का जन्म सन् 1887 में चमोली जनपद के कफारतीर गाँव में हुआ था। प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद दरवान सिंह फौज में भर्ती हो गये थे। प्रथम विश्व युद्ध प्रारम्भ होने तक नायक के पद पर पहुँच गये थे, उनकी पल्टन को फ्रांस के मोर्चे पर जाने का हुक्म हुआ। पल्टन के साथ ब्रिटिश सेना की ओर से फ्रांस की रणभूमि में पहुँच गये थे। फ्रांस में फेस्टुबर्ट के समीप खाइयों में रहकर महीनों जर्मन सैनिकों से युद्ध करते रहे। इनके नेतृत्व में गढ़वाली सैनिकों ने जर्मन बमों से घायल हो जाने के उपरान्त भी 300 गज लम्बी खाई जर्मनों के चुंगल से मुक्त करायी। दरवान सिंह नेगी के रणकौशल और वीरता के कारण अनेक जर्मन सैनिक मारे गये तथा भारी मात्रा में युद्ध सामग्री भी हस्तगत हुई थी। इसी अनुपम एवं असाधारण वीरता के लिए इन्हें ब्रिटिश साम्राज्य का सर्वोच्च सम्मान "विक्टोरिया क्रास" प्रदान किया गया। इस पदक को प्राप्त करने वाले उस महायुद्ध में केवल दस भारतीय थे। उस महायुद्ध में ही कुछ समय बाद इन्हें प्रोन्नत कर जमादार बना दिया गया। युद्धोपरान्त स्वयं सम्राट जार्ज पंचम ने अपने हाथों से लंदन में इन्हें यह पदक पहनाया।

सन् 1923 में सेना से अवकाश प्राप्त कर घर आ गये। तब तक इन्हें सूबेदार का पद प्राप्त हो चुका था। सन् 1931 से 1935 तक ये गढ़वाल जिला बोर्ड के निर्वाचित सदस्य रहे। सन् 1946 में इन्होंने अन्य व्यक्तियों की सहायता से पैंतोली में एक जूनियर हाईस्कूल की स्थापना की, 24 जून सन् 1950 को इनका देहावसान हो गया।

प्रताप सिंह नेगी

स्वर्गीय प्रताप सिंह नेगी एक सफल सांसद और कांग्रेस नेता के साथ-साथ महान स्वाधीनता सेनानी, उत्तराखण्ड आन्दोलन के संस्थापकों में थे। नेगी वामपंथी रुझान वाले राजनेता थे। नेगी जी जीवन पर्यन्त इन्हीं मूल्यों के लिये काम करते रहे। प्रताप सिंह नेगी का जन्म 1899 में जिला पौढ़ी गढ़वाल के ग्राम ढौंरी पट्टी डबरालस्यूं में हुआ।

माध्यमिक शिक्षा के बाद श्री नेगी ने अपना जीवन एक प्राईमरी शिक्षक से आरम्भ किया। उन्नीसवीं सदी के आरम्भ से ही भारत के लिये सम्पूर्ण स्वाधीनता की मांग जोर पकड़ती जा रही थी। सोवियत संघ में महान अक्तूबर समाजवादी क्रांति का असर भारत के स्वाधीनता संघर्ष पर स्पष्ट तौर से दिखाई दे रहा था। भारत की जनता स्वाधीनता के लिये देश के कोने-कोने में संगठित होकर संघर्ष में उतर आई थी। उत्तराखण्ड में भी ब्रिटिश-साम्राज्यवाद विरोधी संघर्ष जोर पकड़ रहा था। टिहरी रियासत के खिलाफ श्रीदेव सुमन ने संघर्ष तेज कर दिया था। प्रजा मण्डल का गठन हो चुका था। पूरा उत्तराखण्ड आन्दोलित था प्रताप सिंह नेगी जी भी इस आन्दोलन से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके। उन्होंने नौकरी त्याग दी, प्रजामण्डल में शामिल हुए और आजादी के दीवानों की पंक्ति में शामिल हो गये। बाद में वे कांग्रेस में शामिल हुए और कांग्रेस में अपने क्रांतिकारी विचारों की वजह से हमेशा गरम दल के नेताओं में शुमार रहे। स्वाधीनता संघर्ष के दौरान उन्हें कई बार कारागार और पुलिस दमन का शिकार होना पड़ा, इसी दौरान वे कई बार भूमिगत भी रहे। नमक सत्याग्रह और नशाबन्दी आन्दोलन में भाग लेने के जुर्म में उन्हें 9 महीने की सजा हुई। सविनय अवज्ञा आन्दोलन व लगान बन्दी आन्दोलनों में भाग लेने के फलस्वरूप उन्हें एक वर्ष की सजा हुई। सरकार ने उनकी चल-अचल सम्पत्ति जब्त कर ली। उनका पुश्तैनी "ढौंरी गांव" बागी गांव घोषित कर दिया गया था। श्री नेगी का गढ़वाल प्रवेश दूभर हो गया था, इसलिए वे कोटद्वार भाबर में घास-फूस की झोपड़ी बनाकर अपने काम में जुटे रहे। पुनः इन्हें 1941 में नजरबन्द कर दिया गया।

1971 के संसदीय चुनावों में लोक सभा के लिये निर्वाचित हुए और 1977 तक संसद सदस्य रहे। लोकसभा सदस्य निर्वाचित होने के बाद संसद में अपने पहले ही लोकसभा भाषण में उत्तराखण्ड के लिये अलग प्रान्त की मांग कर डाली। तब उन्होंने देश के सामने उत्तराखण्ड में सामाजिक आर्थिक पिछड़ेपन की जो तस्वीर पेश की थी उसको देश एवं उत्तराखण्ड के अखबारों ने प्रमुखता से छापा, उन्होंने अपने विद्रोही तेवर इस तरह पेश किये थे: "मैं एक ऐसे संसदीय क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता हूँ जहाँ अंग्रेजों के समय से चली आ रही सिर्फ आधा किलोमीटर रेलवे लाईन है।" इसने उत्तराखण्ड राज्य की मांग करने वाले आन्दोलनकारियों को उनके इर्दगिर्द एकत्रित कर दिया था। नेगी जी के नेतृत्व में उत्तराखण्ड राज्य परिषद का गठन हुआ। परिषद के गठन के साथ ही नेगी जी के नेतृत्व में उत्तराखण्ड में बड़ी-बड़ी सभाओं का सिलसिला एवं गांव-गांव भ्रमण के कार्यक्रम आरम्भ हो गये। उनके इस जोश से उत्तराखण्ड आन्दोलन की ज्योति प्रज्वलित करने को लोग खुल कर संघर्ष के मैदान में उतर पड़े। प्रताप सिंह नेगी हमेशा समाज सेवा से जुड़े रहे तथा स्वभाव से एक घुमक्कड़ी व्यक्ति थे इसलिए अपने स्वास्थ्य के प्रति उचित ध्यान नही दे पाये इसीलिए उन्हें दमा तथा गठिया जैसी असाध्य रोगों ने घेर लिया। निरन्तर संघर्षरत रहने, यात्राओं की थकान, शरीर की परवाह न करने, लाईलाज बीमारियों से छुटकारा न पा सकने से उनका शरीर अब और संघर्ष करने के लिए जवाब देने लगा और अन्ततः 17 दिसम्बर, 1984 को उन्होंने इस संसार से हमेशा के लिए विदा ले ली।

वीर चन्द्र सिंह गढ़वाली

वीर चन्द्र सिंह गढ़वाली का जन्म थलीसैंण तहसील के अन्तर्गत चौथान पट्टी में रौणीसेरा के मासों नामक गांव में 25 दिसम्बर, सन् 1891 में हुआ। इनके पिता जी एक सामान्य किसान थे। उनका नाम जाथली सिंह भण्डरी था। उस समय की सामाजिक प्रथा के अनुसार छोटी अवस्था में ही वीर चन्द्र सिंह गढ़वाली को दाम्पत्य सूत्र में बंधना पड़ा। कहा जाता है कि गढ़वाली जी के पूर्वज जिला मुरादाबाद के सम्भल तहसील के चौहान वंश के थे जो कि सैकड़ों वर्ष पूर्व गढ़वाल की अन्य जातियों की भांति यहां आकर बस गये थे। सर्वप्रथम वे लोग चान्दपुर गढ़ी के निकट आकर रहने लगे। वहां से कई वर्षों बाद इनके पूर्वज राठ क्षेत्रान्तर्गत पट्टी ढाईज्यूली में आकर भण्डारी थोकदार के रूप में रहने लगे। यहीं से इनके एक वंशज अपने परिवार को लेकर चौथान पट्टी के ग्राम मासीं में आकर रहने लगे। जिसकी पुष्टि गढ़वाली जी ने स्वयं अपनी आत्मकथा में की है।

गढ़वाली जी को बचपन से ही फौजी जीवन पसन्द था। जिसके कारण वे सेना में भर्ती होने के तीव्र इच्छुक थे. 13 सितम्बर, सन् 1914 को प्रथम विश्व युद्ध के दौरान वे लैन्सडौन में गढ़वाल पल्टन में भर्ती हो गये। सन् 1915 में गढ़वाली जी की पल्टन प्रथम विश्वयुद्ध में भाग लेने हेतु मित्र राष्ट्रों की ओर से युद्ध करने फ्रान्स पहुँची। वहां पर उनकी पल्टन ने युद्ध में शौर्य का परिचय देते हुए बड़ी बहादुरी से युद्ध लड़ा। जिसके फलस्वरूप उनकी पल्टन के दरबान सिंह नेगी और मरणोपरांत गबर सिंह नेगी नामक दो सैनिकों को उस समय का सर्वोच्च बहादुरी सैन्य पदक "विक्टोरिया क्रास" मिला। किन्तु मित्र राष्ट्रों के व्यवहार से गढ़वाली जी बहुत दुःखी हुए और उनके ह्रदय में अंग्रेजों और फ्रान्ससियों के प्रति घृणा की भावना घर कर गई।

सन् 1928 में गढ़वाल पल्टन की दूसरी बटालियन को पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्त से खैबर दर्रे के लन्डीकोतल से अब्दुल गफ्फार खां के नेतृत्व में पठानों के एक बहुत बड़े जलूस को रोकने के लिये पेशावर बुला लिया गया। वहाँ पर पहले से ही एक गोरा रेजीमेन्ट और एक सिख पल्टन विद्यमान थी. 21 नवम्बर, 1929 को लाहौर में कांग्रेस का एक महत्वपूर्ण सम्मेलन होना था। जिसमें विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार एवं मादक पदार्थों का सेवन न करना शामिल था। भारतीय जनता में अंग्रेजों के प्रति उनकी दमनकारी नीति के कारण घृणा और गुस्से की भावना दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही थी। जिसका न्यूनाधिक प्रभाव फौज में भी दिखाई देने लगा था। अंग्रेज अफसरों का गढ़वाली सैनिकों की स्वामिभक्ति पर पूरा विश्वास था। इसलिये उन्होंने पठानों के विद्रोह को कुचलने के लिए गढ़वाली पल्टन को चुना। गढ़वाली पल्टन में उन्होंने मुसलमानों के प्रति घृणा और द्वेष की भावना भरना आरम्भ किय। इसके लिए अंग्रेज अफसरों ने गढ़वाल पल्टन की दूसरी बटालियन के जवानों को एक स्थान पर इकठ्ठा किया और उनके सामने मुसलमानों के प्रति घृणा और द्वेष फैलाने की कोशिश करने में लगे थे। अंग्रेज अफसरों के इस रवैये को सुनकर गढ़वाल पल्टन के सिपाहियों का मन विचलित हो रहा था. 22 अप्रैल सन् 1930 की रात्रि को अंग्रेज कमान्डिंग आफिसर कर्नल वाकर ने 72 गढ़वाली सैनिकों को कैप्टन रिकेट के नेतृत्व में पेशावर में आन्दोलनकारियों को कुचलने के उद्देश्य से तैनात कर दिया। जैसे ही आन्दोलनकारियों का जलूस सामने से बढ़ता हुआ आया तो कैप्टन रिकेट ने आदेश दिया, "थ्री राउण्ड फायर" अर्थात् तीन बार गोली चलाओ? हवलदार चन्द्रसिंह गढ़वाली ने तुरन्त तेज आवाज में कहा "सीज फायर" अर्थात् गोली मत चलाओ? इस आज्ञा का पालन करते हुए गढ़वाली सैनिकों ने अपनी बंदूकों के मुंह नीचे धरती की ओर कर दिये। इस पर कै. रिकेट आग बबूला होकर हवलदार चन्द्रसिंह गढ़वाली पर गरजा तुमने ये क्या किया? चन्द्रसिंह गढ़वाली ने

निर्भीकता पूर्वक उत्तर दिया ये सब प्रदर्शनकारी निहत्थे हैं, इन पर गोली कैसे चलावें? वीर चन्द्र सिंह गढ़वाली इस तथ्य से भली भाँति परिचित थे कि सेना में अपने बड़े अधिकारी की आज्ञा का उल्लंघन करना भयंकर अपराध है। इसके बाद गोरों की फौजी टुकड़ी से गोली चलवाई गई।

चन्द्रसिंह का और गढ़वाली पल्टन के उन जांबाजों का यह अद्भुत और असाधारण साहस था लेकिन हुकूमत की खुली अवहेलना और ब्रिटिश हुकूमत के प्रति विद्रोह था। सरकार ने इस हुक्म अदूली को राजद्रोह करार दिया। फलस्वरूप सारी बटालियन एबटाबाद (पेशावर) में नजरबन्द कर दी गई। उन पर राजद्रोह का अभियोग चलाया गया। हवलदार चन्द्रसिंह भण्डारी (गढ़वाली) को मृत्यु दण्ड की जगह आजन्म कारावास की सजा सुनाई गई। प्रारम्भ में गढ़वाली को एक काल कोठरी में रखा गया। जेल के जमादार ने उनके पैरों में बेड़ियाँ डाली, साथ ही कहने लगा-मुझे माफ करना भाई मैं मजबूर हूँ, रियासत चित्रशाल के मेहर (राजा) भी वहां पहुँचे और ऊँची आवास में शाबास! शाबास! कहकर उनका हौंसला बढ़ाया। लोहे की यह बेड़ी उनके पैरों में 6 वर्ष तक रही, 16 व्यक्तियों को सख्त और लम्बी सजाएँ हुई, 39 व्यक्तियों को कोर्ट मार्शल द्वारा नौकरी से निकाला गया, 7 अन्य लोगों को बाद में मिलेट्री से बरखास्त किया गया। इन सभी का सारा संचित वेतन जब्त कर दिया गया। यह फैसला मिलेट्री कोर्ट मार्शल द्वारा 13 जून, 1930 को ऐबटाबाद छावनी में सुनाया गया। बैरिस्टर मुकन्दीलाल ने उन फौजी गढ़वालियों की मुकदमें की पैरवी की थी। चन्द्रसिंह गढ़वाली तत्काल ऐबटाबाद जेल भेज दिए गए. 26 सितम्बर, 1941 को 11 साल, 3 महीने, 18 दिन जेल जीवन बिताने के बाद रिहा हुए। ऐबटाबाद, डेरा इस्माइल खाँ, बरेली, नैनीताल, लखनऊ, अल्मोड़ा और देहरादून की जेलों में गढ़वाली ने खूब यातनाएं झेलीं। नैनी जेल में उनकी भेंट क्रान्तिकारी राजबंदियों से हुई। लखनऊ जेल में नेताजी सुभाष चन्द्र बोस से उनकी गुफ्तगू हुई।

गढ़वाली एक निर्भीक देशभक्त सिपाही थे। वे बेड़ियों को "मर्दों का जेवर" कहते थे। जेल से रिहा होने के बाद कुछ समय पंडित जवाहरलाल नेहरू के कहने पर आनन्द भवन इलाहाबाद में रहने के बाद 1942 में अपने बच्चों के साथ वर्धा आश्रम में रहे। भारत छोड़ो आन्दोलन में उत्साही नवयुवकों ने इलाहाबाद में उन्हें अपना कमाण्डर-इन-चीफ नियुक्त किया। इसी दौरान वे फिर पकड़ लिए गए और 6 अक्तूबर, 1942 को उन्हें सात साल की सजा हुई. 1945 में जेल से छोड़ दिए गए, लेकिन उनके गढ़वाल प्रवेश पर प्रतिबन्ध लग गया। प्रतिबन्ध हटने पर 12 सितम्बर, 1946 को कोटद्वार पहुँचे गढ़वाली का जेल प्रवास में ही क्रान्तिकारी यशपाल से परिचय हो गया था। रिहाई के बाद वह अपने बच्चों को मिलने हल्द्वानी आ गए। पंडित मोती लाल नेहरू ने अपनी विल में लिखा था कि "उन गढ़वालियों को न भूलना" चन्द्रसिंह की बहादुरी पर कहा था कि "चन्द्रसिंह जैसे बहादुर लोग मुझे और मिल जाते तो मैं भारत को बहुत पहले आजाद करा देता

1946 में गढ़वाली ने गढ़वाल में प्रवेश किया, जहाँ स्थान-स्थान पर जनसमूह ने उनका भव्य स्वागत किया। कुछ दिन गढ़वाल में रहने के पश्चात वे किसान कांग्रेस में भाग लेने लुधियाना चले गए और वहां से लाहौर पहुँचे। दोनों जगहों पर उनका भारी स्वागत हुआ। टिहरी रियासत की जनक्रान्ति में भी चन्द्रसिंह गढ़वाली की सक्रिय भूमिका रही। नागेन्द्र सकलानी के शहीद हो जाने के पश्चात गढ़वाली ने आन्दोलन का नेतृत्व किया। कम्युनिष्ट विचारधारा का व्यक्ति होने के कारण स्वाधीनता के बाद भी भारत सरकार उनसे शंकित रहती थी। वे जिला बोर्ड के अध्यक्ष का चुनाव लड़ना चाहते थे, किन्तु सरकार ने उन पर पेशावर काण्ड का सजायाफ्ता होने

का आरोप लगाकर गिरफ्तार कर लिया। सामाजिक बुराइयों के उन्मूलन के लिए वे सदैव संघर्षरत रहे। 1952 में उन्होंने पौड़ी-चमोली निर्वाचन क्षेत्र से कम्युनिष्ट पार्टी की उम्मीदवारी में चुनाव लड़ा, किन्तु कांग्रेस की प्रचंड लहर के समक्ष टिक नहीं सके। विभिन्न सामाजिक और राजनैतिक गतिविधियों में उनकी बराबरी की भागीदारी रही। ऐसे थे गढ़वाल के सपूत "चन्द्रसिंह गढ़वाली"। बैरिस्टर मुकन्दीलाल के शब्दों में -"आजाद हिन्द फौज का बीज बोने वाला वही है। आई.एन.ए.के. जनरल मोहन सिंह का कथन है "पेशावर विद्रोह ने हमें आई.एन.ए. को संगठित करने की प्रेरणा दी थी" धन्य हैं पेशावर-विद्रोह के ये दिलेर-देश भक्त गढ़वाली सैनिक।

सितम्बर 1979 के आरम्भ में गढ़वाली जी अपने निवास स्थान कोटद्वार में अस्वस्थ हो गये। तत्कालीन वित्त मंत्री, भारत सरकार श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा तुरन्त उनके निवास कोटद्वार आये और उनको उपचारार्थ अपने साथ देहली ले गये। राममनोहर लोहिया अस्पताल में भर्ती करवा दिया, किन्तु उनका रोग ठीक नहीं हो सका, बीमारी गम्भीर होती गयी और 1 अक्तूबर, 1979 को विजय दशमी के शुभ पर्व पर उनका देहान्त वहीं अस्पताल में हो गया।

गबर सिंह नेगी

प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान फ्रांस के रणक्षेत्र में वीरता का प्रदर्शन करने वाले गबर सिंह नेगी का जन्म सन् 1895 में ग्राम मंजूड़(चम्बा) पट्टी बमुंड, टिहरी गढ़वाल के एक गरीब किसान परिवार में हुआ था। इनके पिता श्री बद्री सिंह नेगी अपनी खेती-बाड़ी से ही परिवार का भरण-पोषण करते थे। गबर सिंह गरीबी के कारण ज्यादा पढ़-लिख भी नहीं सके। बताया जाता है कि गबर सिंह टिहरी नरेश कीर्तिशाह के प्रताप नगर महल में एक साधारण माली का कार्य करते थे। परिवार की जीविका के लिए उन्होंने 1911 से 1913 तक राजमहल में यह कार्य किया। फौजी वर्दी से उन्हें बड़ा लगाव था। यही लगाव व प्रेम उन्हें गढ़वाल स्थित भर्ती केन्द्र लैन्सडौन खींच लाया और 1913 में वह गढ़वाल राईफल्स में भर्ती हो गए।

विश्व युद्ध प्रारम्भ हुआ था और उनकी बटालियन 2/39 गढ़वाल राईफल्स को फ्रांस के मोर्चे पर जाने का आदेश हुआ। पल्टन के साथ गबर सिंह फ्रांस चले गए। गढ़वाल बटालियन को युद्ध में रणकौशल एवं वीरता दिखाने का अवसर आया और 23 नवम्बर, 1914 को उनकी टुकड़ी ने अदम्य साहस दिखाया। इस युद्ध में अद्भुत वीरता दिखाने के लिए उनके एक साथी नायक दरबान सिंह नेगी को "विक्टोरिया क्रास" से सम्मानित किया गया। विश्वयुद्ध चल ही रहा था, 10 मार्च, 1915 को फ्रांस के न्यूवेशैपल का युद्ध हुआ, सामरिक दृष्टि से यह स्थान जर्मनी के कब्जे वाले प्रसिद्ध नगर का प्रवेश द्वार था, जर्मनी ने वहाँ एक अभेद्य मोर्चा कायम कर रखा था। ब्रिटिश सेना ने इस मोर्चे को तोड़ने के लिए बहादुर गढ़वाली बटालियन को भेजने का निर्णय लिया. 10 मार्च की भारी ठंड, घुप कोहरे की सुबह ब्रिटिश सैन्य अधिकारी व गढ़वाल बटालियन के रणबांकुरे मोर्चे पर आगे बढ़े। जर्मन सेना का अभेद्य दुर्ग भेदने में काफी कठिनाई आई। शत्रुपक्ष की लगातार भीषण गोलाबारी से बड़ी संख्या में सैन्य अधिकारी और सैनिक शहीद हो गये। इस लड़ाई में लगभग 20 अधिकारी और 250 सैनिक खेत रहे। मोर्चे पर मशीनगन की गोलियों की बौछार चारों ओर मृत्यु का ताण्डव दिखा रही थी। गढ़वाल बटालियन के सिपाहियों ने आश्चर्यजनक वीरता दिखाई। जब बटालियन की एक टुकड़ी का नायक वीरगति को प्राप्त हुआ तो उसके स्थान पर गबर सिंह नेगी ने नेतृत्व सम्भाला। साहस, स्फूर्ति और जांबाजी के चलते गबर सिंह नेगी शत्रु की मशीनगन छीनने में सफल हुआ और मशीनगन उल्टे शत्रु की ओर मोड़ दी, ऐसी गोलाबारी की कि शत्रु पक्ष के हौसले पस्त हो गये और उन्हें आत्मसमर्पण करना पड़ा। जब यह टुकड़ी प्रसन्नता और विजय की खुशी में वापस लौट रही थी तभी शत्रु पक्ष की एक गोली इन्हें लगी और गबर सिंह 10 मार्च, 1915 को वीर गति को प्राप्त हो गए। फ्रांस में न्यूवेशैपल नामक स्थान पर जर्मन सेना के विरूद्ध लड़ते हुए युद्ध के मोर्चे पर असीम साहस, अभूतपूर्व वीरता और कर्तव्यपरायणता के लिए ब्रिटिश सरकार ने उन्हें सर्वोच्च सैन्य पदक "विक्टोरिया क्रास"(मरणोपरान्त) से सम्मानित किया।

आचार्य जोधसिंह रावत

आचार्य जोधसिंह रावत दिल्ली स्थित प्रवासी गढ़वालियों में एक जाने-माने व्यक्ति थे। सन् 1935 में वे भी सरकारी कार्यालयों की ही भाँति दिल्ली-शिमला आते-जाते रहते थे तथा पठन-पाठन द्वारा अपनी आजीविका चलाया करते थे। सन् 1938 में आपने दिल्ली में सरस्वती महाविद्यालय की स्थापना की। विद्यालय प्रारम्भ में "गोल मार्किट" तथा उसके बाद लड्डूघाटी पहाड़गंज तथा हनुमान रोड़ में सन् 1969 तक सुचारू रूप से चलता रहा। इस विद्यालय में पंजाब विश्वविद्यालय की हिन्दी-रत्न, भूषण, प्रभाकर, मैट्रिक, एफ.ए.,बी.ए., एम.ए आदि के साथ-साथ राजस्थान, ग्वालियर व उत्तर प्रदेश बोर्ड में मैट्रिक, एफ.ए. एवं हिन्दी साहित्य सम्मेलन के साहित्यरत्न की पढ़ाई का भी सुचारू प्रबन्ध था। प्रारम्भ से ही आपकी रूचि सामाजिक कार्यों की ओर थी। साहित्यिक समारोहों में आप अवश्य सम्मिलित होते थे। हिन्दी के प्रचार व प्रसार में आपका सराहनीय योगदान रहा है। गढ़वाल हितैषिणी सभा के आप सक्रिय सदस्य रहे हैं। जब इस सभा के मंत्री पद का भार आपके ऊपर आया तो तभी से आपने प्रयास शुरू कर दिया कि दिल्ली स्थित सभी गढ़वालियों का सहयोग "गढ़वाल भवन" के निर्माण में लिया जाए। तत्कालीन संसद सदस्य, भक्तदर्शन जी, महीधर डिमरी आदि सज्जनों के अथक प्रयास से "गढ़वाल भवन" के लिए "भूमि" प्राप्त करने में सफलता मिली। सन् 1952 में दिल्ली के विभिन्न क्षेत्रों में स्वयं जाकर स्व. श्री रावत जी ने सदस्यता का एक अभियान चलाया और इस प्रकार आपने कई वृत्तों की विधिवत स्थापना कर कई सदस्य बनाए ।

जोधसिंह रावत गढ़वाल कुमायूँ वालिन्टेयर कोर के प्रधान भी रहे। गढ़वाल साहित्य मंडल के आप कई वर्ष तक सक्रिय सदस्य ही नहीं रहे बल्कि कार्यकर्ता भी रहे। दिल्ली स्थित प्रायः सभी संस्थाओं में आपका निकट का सम्बन्ध रहा है तथा सभी संस्थाओं की ओर से समय-समय पर आपको सम्मान मिलता रहा है। सच तो यह है कि आप स्वयं में भी एक संस्था थे। आज भले ही रावतजी का नश्वर शरीर नहीं है, किन्तु उनसे शिक्षा या मार्गदर्शन पाकर हमारे कई पर्वतीय बन्धु आर्थिक क्षेत्र एवं समाज में अच्छे मुकाम पर हैं, उनका योगदान कभी भुलाया नहीं जा सकता। सरस्वती महाविद्यालय में उन्होंने गरीब उत्तरांचल वासियों को निःशुल्क शिक्षा प्रदान की। इन सबके लिए रात्रि पाठशाला थी। दिनांक 6-3-1969 को आपको विद्यालय छोड़ना पड़ा। विद्यालय छोड़ने पर सबको बड़ा दुःख हुआ। आपने अमर कालोनी में एक वाटिका का कार्य आरम्भ किया जिसमें आप असफल रहे। क्योंकि शरीर बहुत वेदना सहन कर चुका था। आप मूलचंद अस्पताल की शरण में रहे। घाटा खाकर विद्यालय बंद करना पड़ा। दयानन्द कालोनी में एक कुटिया किराए पर ली। 11 अप्रैल, 1970 को आप दिल्ली से अपने गाँव गये। अचानक ही कुछ महीनों पश्चात् तबियत खराब होने के कारण वे गाँव से दिल्ली आ गए और दयानन्द कालोनी में ही छाती में दर्द होने के कारण आपकी मृत्यु का कारण बनी और 9 अगस्त, 1970 की रात्रि आपके लिए भयानक सिद्ध हुई। महाज्योति में अपनी ज्योति को लीन कर दिया और जन्म-मरण के इस खेल से अपने आपको मुक्त कर गए।

डॉ0 पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल

जिस प्रकार जीवन का सम्बन्ध है ठीक उसी प्रकार साहित्य के भी कुछ ऐसे पहलु हैं जो बार-बार उठकर भी कभी पुराने नहीं पड़ते। जिनसे हर पीढ़ी का रचनाकार अनिवार्य रूप से जाने-अनजाने अपना सम्बन्ध जोड़ता है। ऐसे ही प्रश्नों के निराकरण के लिये ही डॉ. पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल का जन्म प्रकृति नटी के प्रांगण में 13 दिसम्बर,1901 में लैंसडौन से 3 मील दूर पट्टी कौड़िया के पाली ग्राम में हुआ था। इनके पिता श्री गौरीदत्त बड़थ्वाल संस्कृत साहित्य और विशेषकर ज्योतिष शास्त्र के प्रकांड विद्वान थे। अतः गढ़वाल गौरव डॉ. बड़थ्वाल की प्रारम्भिक शिक्षा संस्कृत के श्लोकों से प्रारम्भ हुई और पिता की गोद में ही बैठकर इन्होंने कई संस्कृत ग्रंथों का अध्ययन कर लिया। इसके पश्चात् वह आगे की पढ़ाई के लिए गवर्नमेंट हाई स्कूल, श्रीनगर(गढ़वाल) आ गए। सन् 1922 में आपने कानपुर के डी.ए.वी. कॉलेज से एफ.ए. पास किया और तत्पश्चात् अपनी अध्ययनशीलता की आकांक्षा की पूर्ति के उद्देश्य से काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में प्रविष्ट हो गए, इसी अवधि में इनके पिताजी का भी देहान्त हो गया। कुछ पितृ-वियोग के कारण और कुछ अपने स्वास्थ्य की बिगड़ती हुई दशा को देखते हुए डॉ. बड़थ्वाल को कुछ काल के लिए अपनी पढ़ाई छोड़कर अपने गाँव वापिस आना पड़ा। परन्तु "होनहार बिरवान के होत चीकने पात" वाली कहावत को चरितार्थ करने के लिए अपने स्वास्थ्य की विशेष चिंता न करते हुए किशोर बड़थ्वाल दो वर्ष पश्चात् पुनः काशी विश्वविद्यालय में प्रविष्ट हो गए और सन् 1926 में बी.ए. की परीक्षा पास कर, सन् 1928 में एम.ए. की परीक्षा में प्रथम श्रेणी में सर्वप्रथम स्थान प्राप्त कर न केवल गढ़वाल को अपितु समस्त उत्तर भारत को गौरवान्वित किया।

अपने अध्ययन काल में कानपुर तथा बनारस में रहते हुए भी किशोर बड़थ्वाल वहां की साहित्यिक सभाओं में सक्रिय भाग लेते रहे। साहित्यिक कार्यों में इनकी असाधारण लगन को देखते हुए काशी नागरी प्रचारिणी सभा में इस विद्वान युवा को अपने खोज विभाग के अवैतनिक संचालक का उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य सौंपा गया। इस पद पर डॉ. बड़थ्वाल कई वर्षों तक कार्य करते रहे और आपकी कार्यकुशलता के बलबूते अनेक विद्वानों ने काशी नागरी प्रचारिणी की ओर से सहस्रों महत्वपूर्ण ग्रंथों की खोज की। इसी अवधि में डॉ. बड़थ्वाल ने हिन्दी साहित्य के उस विषय पर शोध कार्य करना प्रारम्भ कर दिया जो कि बिल्कुल ही अछूता था और जिस पर तत्कालीन हिन्दी साहित्य के विद्वान अपनी कलम उठाने का साहस नहीं संजो पा रहे थे। वह विषय था "हिन्दी काव्य" की "निर्गुण धारा", जिसके प्रवर्तक थे रामानन्द, कबीर, नानक, दादू, मलूकदास दीन दरवेश, बुल्लेशाह आदि। इस अछूते विषय पर लेखनी उठा कर डॉ. बड़थ्वाल ने हिन्दी जगत को आश्चर्य में डाल दिया। विषय कठिन था, यात्रा दुरूह थी, कविगण उलट बासियों व अटपटी भाषा के मर्मज्ञ थे। इड़ा, पिंगला व सुषुम्ना नाड़ियों का विषय बनाकर परमात्मा के निर्गुण स्वरूप का प्रतिपादन करते थे, परन्तु डॉ. बड़थ्वाल भी एक बेजोड़ अध्यवसायी थे। अपने स्वास्थ्य (जो कि उन दिनों गिरता ही जा रहा था) की चिन्ता न करते हुए कबीर और दादू दयाल का प्रतिरूप बनकर इस कार्य में जुट गए। परीक्षकों ने इसे सर्वथा उपयुक्त बतलाया और मुक्त कंठ से इनके कार्य की प्रशंसा की।

अतः दिसम्बर, 1933 के दीक्षांत समारोह में काशी हिन्दु विश्वविद्यालय ने इन्हें "डी.लिट्." की उपाधि प्रदान की गई। निर्गुण सम्प्रदाय के उपदेशों को जिस सुव्यवस्थित ढंग से डॉ. बड़थ्वाल ने अपने शोध प्रबन्ध के लिए गम्भीर अध्ययन के बाद प्रस्तुत किया, वह भारतीय संस्कृति को समझने में बहुत सहायक है। हमारे सांस्कृतिक विकास की यह एक महत्वपूर्ण कड़ी है।

डी. लिट्. की उपाधि से विभूषित होने के पश्चात् डॉ. बड़थ्वाल काशी हिन्दी विश्वविद्यालय का अध्ययन कार्य छोड़कर लखनऊ, विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में प्राध्यापक होकर चले गए और साहित्य सेवा करते रहे। वहाँ पर भी अपनी विद्वत्ता के कारण विद्यार्थियों व अपने सहयोगियों के बीच इनकी बहुत ऊँची प्रतिष्ठा बन गई। साहित्यिक सभाओं में भाग लेते रहने, अनुसंधान कार्यों को प्रशस्त करते रहने तथा स्वाध्याय में समयासमय का ध्यान न रखते रहने के कारण कुछ ही वर्षों में डॉ. बड़थ्वाल का स्वास्थ्य इतना गिर गया कि उन्हें चारपाई पकड़नी पड़ी। श्री भक्तदर्शन के शब्दों में "........आर्थिक संकट और मानसिक चिंताओं के कारण जम कर इलाज नहीं हो पाया और हालत बिगड़ती ही चली गई । आखिर 24 जुलाई सन् 1944 को अपने पैतृक स्थान पाली में इनकी अमर आत्मा ने इस नश्वर मानवी चोले से विदाई ले ली।"इतनी अल्पायु में इतनी उच्चकोटि के विद्वान् के निधन से न केवल गढ़माता की ही गोद सूनी हुई अपितु हिन्दी साहित्य जगत की भी अत्यधिक क्षति हुई। हिन्दी साहित्य का मर्मज्ञ सधुक्कड़ी भाषा के प्रवर्तकों का प्रेमी, साहित्याचार्यों में श्रेष्ठ डॉ. बड़थ्वाल अपनी कृतियों के माध्यम से आज भी अमर हैं। डॉ. बड़थ्वाल की प्रतिभा बहुमुखी थी, उन्होंने हिन्दी और अंग्रेजी में सत्तर से अधिक शोधपूर्ण निबन्ध लिखे। डॉ. बड़थ्वाल गढ़वाली साहित्य के भी मनज्ञ थे।

भैरव दत्त धूलिया

भैरव दत्त धूलिया का जन्म ग्राम मदनपुर, पट्टी लंगूर मल्ला, गढ़वाल में 1901 में हुआ। स्वराज्य आन्दोलन के महाहस्ताक्षर रहे। मूर्धन्य पत्रकार, लेखक और सम्पादक अनेक गुणों से युक्त रहे। गढ़वाल के सर्वाधिक लोकप्रिय हिन्दी साप्ताहिक "कर्मभूमि" के यशस्वी सम्पादक एवं गढ़वाल में राजनीतिक चेतना जागृत करने वाले जनप्रतिनिधियों में से एक लब्धप्रतिष्ठित व्यक्तित्व इनकी प्रारम्भिक शिक्षा गांव में ही सम्पन्न हुई. 1914 में गढ़वाल के चमेठा गांव के श्री केवलराम जी की सुपुत्री के साथ विवाह बन्धन में बंधे. 1918 में क्वीन्स कालेज(इन्टर कालेज) बनारस में प्रवेश लिया। गांधी जी के आह्वान पर स्कूल छोड़ दिया और तिब्बिया कालेज, दिल्ली में आयुर्वेद की पढ़ाई शुरू की. 1920 में हाईस्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण की। भोलादत्त चन्दोला और जीवानन्द बडोला प्रभृति संस्कृत छात्रों के साथ गढ़वाल आए और कुली-बेगार आन्दोलन में सम्मिलित हो गए। उन दिनों बैरिस्टर मुकुन्दी लाल, अनुसूया प्रसाद बहुगुणा और मथुरा प्रसाद मैठाणी के नेतृत्व में यह आन्दोलन जोर पकड़ चुका था. 1925 में अंग्रेजी और संस्कृत अध्ययन हेतु पुनः बनारस गए। आयुर्वेद कालेज, हरिद्वार से आयुर्वेद शास्त्री की उपाधि ग्रहण की। बी.एससी. तक अध्ययन किया, किन्तु स्वराज्य आन्दोलन में भाग लेते रहने के कारण फाइनल परीक्षा उत्तीर्ण न कर सके. 1935-36 में काशी विद्यापीठ के कुमार विद्यालय में शिक्षक का पद ग्रहण किया, बाद में पटना से प्रकाशित समाचार पत्र नवशक्ति के सम्पादकीय विभाग में कार्य करने लगे. 1937-38 में अपनी मातृ-भूमि गढ़वाल लौट आए और स्वाधीनता आन्दोलन में पुनः सक्रिय हो गए। जागृत गढ़वाल संघ के तत्वाधान में मोटर मार्ग आन्दोलन में उल्लेखनीय भूमिका निभाई.

19 फरवरी 1939 को बसन्त पंचमी के दिन गढ़वाल के कतिपय शिक्षित और जागरूक जनों द्वारा हिमाचल पब्लिशिंग एण्ड ट्रेडिंग कम्पनी के तत्वावधान में कर्मभूमि साप्ताहिक-हिन्दी समाचार पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ उस कम्पनी के उस समय प्रमुख संचालक थे - सर्वश्री भक्त दर्शन सिंह, कुँवर सिंह नेगी कर्मठ, योगेश्वर प्रसाद बहुगुणा, प्रयाग दत्त धस्माणा, हरेन्द्र सिंह रावत और नन्दा दत्त थिल्डियाल। धूलिया जी में देशभक्ति का जजबा तो अध्ययन काल से था ही, कर्मभूमि के माध्यम से उन्हें अपने राष्ट्रवादी विचारों को व्यक्त करने का अवसर मिल गया। अपनी विद्वत्ता, प्रतिभा के बल पर कर्मभूमि के माध्यम से धूलिया जी ने गढ़वाल भर में राष्ट्रीय विचारों का शंखनाद किया। तेजस्वी सम्पादकीय विचारों के कारण कई बार कर्मभूमि को ब्रिटिश सरकार के कोप का भाजन भी बनना पड़ा। पत्र के माध्यम से उन्होंने जन कल्याण, सामाजिक न्याय और राजनीतिक जागरूकता की उल्लेखनीय पैरवी की।

जीवन के अंतिम क्षणों तक धूलिया जी ने एक तपस्वी साधक का जीवन जिया. 1942 के ऐतिहासिक भारत छोड़ो आन्दोलन में धूलिया जी की अग्रणी भूमिका रही। सरकार के प्रति विद्रोह करने के आरोप में धूलिया जी को 10 नवम्बर 1942 को 3 वर्ष और बागियों को शरण देने के अपराध में 4 वर्ष (कुल 7 वर्ष) कारावास की सजा दी गई। गढ़वाल क्षेत्र में आन्दोलनकारियों को दी गई सजाओं में यह सर्वाधिक लम्बी अवधि की सजा थी. 1946 में जेल से मुक्त होने के बाद उन्होंने पुनः कर्मभूमि की बागडोर सम्भाली।

निस्वार्थ भाव और निर्भीकता के साथ उन्होंने जनता की सेवा की। डोला-पालकी आन्दोलन, अस्पृश्यता आन्दोलन, शराबबन्दी और भ्रष्टाचार के विरुद्ध उन्होंने जेहाद छेड़ा था। धूलिया जी जीवन भर सिद्धान्त प्रिय व्यक्ति रहे ।

1962 में घुलिया जी ने उत्तर प्रदेश विधान सभा का चुनाव लड़ा, किन्तु सफल नहीं हुए। पुनः 1967 में चुनाव लड़ा और कांग्रेस के तत्कालीन दिग्गज लीडर और मंत्री जगमोहन सिंह नेगी को ऐतिहासिक पराजय देकर विधान सभा में पहुंचे। तत्कालीन संविद सरकार की जनविरोधी नीतियों से खिन्न होकर उन्होंने 18 दिसम्बर 1967 को विधान सभा की सदस्यता से त्यागपत्र दे दिया। गढ़वाल की पत्रकारिता के पुरोधा, एक संघर्षशील व्यक्तित्व, निर्भीक निराभिमानी, निश्छल, गांधीवाद के प्रबल संवाहक घुलिया जी सत्तासी वर्ष की जीवन यात्रा तय कर सन् 1988 को ब्रह्मलीन हुए।

ठाकुर सिंह नेगी, आई.पी.

ठाकुर सिंह नेगी का जन्म 1902 में ग्राम सूला, असवालस्यूं, पौड़ी गढ़वाल में हुआ। गढ़वाल क्षेत्र से इम्पीरियल पुलिस सर्विस (आइ.पी.) का गौरवपूर्ण पद सुशोभित करने वाले पहले गढ़वाली बने। अपने सेवाकाल में हजारों उत्तराखण्डी युवकों को राजस्थान आर्म्ड कान्सटेबुलरी (आर.ए.सी.) में अकेले प्रयासों से भर्ती करवाने वाले उत्तराखण्डी। अपने समय के बेहद अनुशासन प्रिय पुलिस अधिकारी। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा पौड़ी मिशन स्कूल में हुइ। प्रारम्भिक शिक्षा पूरी करने के पश्चात् उन्होंने आगरा बलवन्त राजपूत कालेज में प्रवेश किया. 1921-22 में उच्च शिक्षा हेतु एडमिनिस्ट्रेटिव कालेज में प्रवेश लिया। प्रशिक्षण पूरा करने पर डिप्टी एस.पी. नियुक्त हुए। उत्तर प्रदेश के कई जिलों-बनारस, इलाहाबाद, मेरठ, बरेली आदि में पुलिस अधीक्षक नियुक्त रहे। ठाकुर सिंह नेगी अपने एक बेमिसाल काम के लिए सैदव याद किए जाते रहेंगे।

1951-53 अवधि में नेगी जी उत्तर प्रदेश काडर से प्रतिनियुक्ति पर राजस्थान सरकार में जयपुर में डी.आई.जी. नियुक्त रहे। वहाँ इन्होंने देखा कि गढ़वाल-कुमाऊँ के हजारों योग्य युवक रोजगार की तलाश में भटक रहे हैं। नेगी जी अन्तःकरण से विशुद्ध उत्तराखण्डी थे। इनसे उत्तराखण्ड के बेरोजगार युवाओं का दर्द नहीं देखा गया। वहां आपने राजस्थान आर्म्ड कान्सटेबुलरी की अतिरिक्त बटालियनें खड़ी कर राजस्थान में रह रहे हजारों बेरोजगार योग्य युवको को सिपाही तथा उप-निरीक्षक (प्लाटून कमाण्डर) के पदों पर भर्ती किया। इस कार्य के लिए इन्हें राजस्थान सरकार की नाराजगी भी झेलनी पड़ी। विधान सभा में प्रश्न उठाया गया गया और इनके इस कार्य के लिए इन्हें सेवानिवृत्त किए जाने की मांग उठने लगी। किसी प्रकार पण्डित गोविन्द बल्लभ पन्त और जोधपुर के तत्कालीन एडमिनिस्ट्रेटर श्री जयकृत सिंह बिष्ट के हस्तक्षेप से मामला रफा-दफा हो सका। नेगी जी का यह उत्तराखण्ड प्रेम, अकेले का प्रयास और साहस लोग कभी नहीं भूलना चाहेंगे।

जगमोहन सिंह नेगी

नेगी जी का जन्म 1905 में उनके पैतृक स्थान ग्राम कौंडी, पट्टी उदयपुर वल्ला, जिला गढ़वाल में हुआ। यह प्रसिद्ध स्वतंत्रता संग्राम सेनानी और गढ़वाल के तत्कालीन राजनीतिक क्षितिज पर चमकता एक सितारा थे। जन-सेवी, राज-नेता, साहित्य-प्रेमी, स्पष्ट-वक्ता और लोकप्रिय जन प्रतिनिधि उनकी विशेषता थी. 1930 के देशव्यापी सत्याग्रह आन्दोलन में भागीदारी कर जेल यात्रा करनी पड़ी और यहीं से इनके राजनैतिक जीवन का शुभारम्भ हुआ। एल.एल.बी.(द्वितीय वर्ष) की परीक्षा भी इन्होंने जेल प्रवास में ही उत्तीर्ण की।

स्वाधीनता संग्राम में प्रविष्ट हुए तो उसकी पूर्ण सफलता पर ही सांस ली. 1930 में सत्याग्रह आन्दोलन में 1 वर्ष कारावास और 500 रू. अर्थदंड की सजा भोगी. 1941 के व्यक्तिगत सत्याग्रह में 1 वर्ष की कैद और अर्थ दंड हुआ. 1942 के ऐतिहासिक भारत छोड़ो आन्दोलन में लगभग 2 वर्ष नजरबन्द रहे। इस दौरान गढ़वाल भर में भ्रमण कर जनता को स्वाधीनता संग्राम में सम्मिलित होने के लिए जागृत किया. 1936 में कांग्रेस की ओर से पहला चुनाव लड़ा। नेगी जी बैरिस्टर मुकन्दीलाल और उमानन्द बड़थ्वाल जैसे दिग्गजों के मुकाबले भारी मतों से प्रान्तीय एसेम्बली के लिए निर्वाचित हुए, यह आपकी लोकप्रियता का प्रत्यक्ष प्रमाण था। दूसरी बार 1946 में हुए चुनाव में नेगी जी ने लैंसडौन क्षेत्र से कांग्रेसी उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़ा और विजयी रहे। इनकी कार्य क्षमता से प्रभावित होकर सन् 1951 में तत्कालीन मुख्यमंत्री पंडित गोविन्द वल्लभ पन्त ने इन्हें सभा-सचिव और अपना निजी सचिव नियुक्त किया। स्वाधीनता के बाद श्री जगमोहन सिंह नेगी ने 1952, 1957 और 1962 में उत्तर प्रदेश विधान का चुनाव लड़ा। यह उनकी लोकप्रियता का प्रतीक है कि वह चारों बार भारी भरकम उम्मीदवारी के मुकाबले उन्हें विजयश्री मिली. 1962 में चुनाव में विजयी होने पर उन्हें उत्तर प्रदेश में खाद्य मंत्री का दायित्व सौंपा गया. 1967 के विधानसभा के चुनाव में भैरव दत्त धूलिया, कर्म भूमि के सम्पादक से यह पराजित हो गए और इसका इन्हें बड़ा अघात लगा। यह अघात वह सह नहीं सके और बिस्तर पकड़ लिया. 30 मई, 1968 को अचानक हृदयगति के रूक जाने से इनका देहावसान हो गया।

नेगी जी की कुछ एक चारित्रिक विशेषताएं थी। उनका अन्य राजनीतिज्ञों जैसा दोहरा चरित्र नहीं था, उनकी कथनी और करनी में कोई अन्तर नहीं था, वे बेहद स्पष्टवादी थे, उनके इन गुणों के कारण उनके आलोचक भी कम न थे। किन्तु प्रशंसकों की भी कोई कमी नहीं थी। शकुन्तला और भरत की पुण्य स्थली कण्वआश्रम को सारे देश में प्रख्यात तथा प्रचारित करने का उन्होंने अनथक प्रयास किया था तथा उसके समीपवर्ती क्षेत्र को मालिनी वन्य-जन्तु-विहार के रूप में विकसित करवाना भी उन्हीं की देन है।

भजन सिंह "सिंह"

भजन सिंह "सिंह" का जन्म 29 अक्तूबर, 1905 ई. को ग्राम कोटसाड़ा, पट्टी सितोनस्यूं पौढ़ी गढ़वाल में हुआ। इनके पिता श्री रतन सिंह साहित्यानुरागी पुरूष थे। अतः पैतृक संस्कारों के कारण श्री सिंह का साहित्य के प्रति प्रेम स्वाभाविक था। राजशाही, सनदों से ज्ञात होता है कि इनके पूर्वज गढ़वाल नरेशों के दरबारी सामन्त रहे। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा अपने पिता के सान्निध्य में पौड़ी में हुई। वे जब छः माह के थे, उनकी माँ परलोक सिधार गई थी। शिक्षा पूरी करने के पश्चात् वह सेना में भर्ती हो गए। सेवा उपरान्त भजनसिंह सामाजिक गतिविधियों में बढ़चढ़ कर भाग लेते रहे। सेना में रहते हुए अंग्रेजों की संदेह दृष्टि से बचते हुए भजन सिंह देश-प्रेम साहित्य एवं समाज सुधार संबंधी लेख लिखते रहे।

सन् 1929 में "सिंह" ने अपनी प्रथम काव्यकृति "अमृत वर्षा" का प्रणयन किया। यह उनका मुक्तक काव्य है। "अमृत वर्षा" के प्रारम्भ में कवि ने ईश्वर के 108 नामों की गणना करते हुए उनकी महिमा का गुणगान किया है :

"जय सच्चिदानन्द ओउम् सुख दाता, सशक्त असंग जय निर्गुण कृपालु असीम वरदाता,
सुपर्ण अनंग जय जय जगन्नाथ,
अगम्य शाश्वत पारब्रह्म नरेश जय जय मूर्तिहीन, अचिन्त्य अद्भुत रूद्ररूप विशेष जय"।

"प्रेम बन्धन" इनका खण्ड काव्य है, इसका प्रकाशन 1940 में हुआ। इसमें मेवाड़ की स्वतन्त्रता और हल्दीघाटी के युद्ध की कहानी है। सन् 1935 में सिंह जी ने "माँ" नामक खण्ड काव्य प्रकाशित किया। इसमें उन्होंने माँ की ममता का चित्रण किया है। "मेरी वीणा" इनका मुक्तक-काव्य संग्रह है, इसमें उन्होंने अपने सैनिक जीवन के दुःखद और सुखद अनुभूतियों को प्रगट किया है। इसके अलावा उन्होंने "मध्य हिमालय (शोध साहित्य) कालीदास के ग्रंथों में गढ़वाल" की रचना की।

श्री "सिंह" ने बहुत सरल भाषा में लिखा है। संस्कृत के तत्सम शब्दों के प्रयोग के साथ-साथ गढ़वाली शब्दों का प्रयोग इन्होंने अपने काव्य कृतियों में किया है। मुहावरों का प्रयोग इनकी भाषा में खूब हुआ है। इन्होंने श्रृंगार, वीर और करूण रसों का विशेष रूप से अपने काव्य में संजोया है। "सिंह" ओजस्वी भावों के कवि रहे हैं उनके काव्य का कलापक्ष भले ही सरल और सहज हो किन्तु उनका राष्ट्र प्रेम और सामाजिक यथार्थ से जुड़ा हुआ काव्य प्रशंसनीय हैं। 1979 में उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा उन्हें साहित्य सेवा के लिए सम्मानित किया गया। दिल्ली, कोटद्वार, गौचर, गोपेश्वर, टिहरी में स्थानीय साहित्य संगठनों, पर्वतीय समाज द्वारा जहां उन्हें सम्मानित किया गया वहीं दूरदर्शन ने उनके जीवन को फिल्मांकित किया। उनका मूल नाम भजनसिंह बिष्ट था। स्वामी श्रृद्धानन्द के पौड़ी पधारने पर आर्य समाज विचार धारा से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने अपने नाम के साथ जुड़े जाति का भान करने वाले शब्द को हटा दिया। बाद में उनकी क्षमता व साहित्य सेवा से प्रभावित गढ़देश के सम्पादक श्री कृपाराम मनहर ने उन्हें "सिंह" उपाधि से विभूषित किया। सिंह सतसई एवं सिंह नाद (प्रगतिशील काव्य) की रचना की, जिसकी साहित्य क्षेत्र में खूब प्रशंसा हुई ।

इन्द्र सिंह "गढ़वाली"

टिहरी गढ़वाल के गांव में सन् 1906 को पैदा हुए स्वाधीनता प्रेमी, अदम्य साहसी, उत्साही, युवा क्रान्तिकारी इन्द्रसिंह गढ़वाली। इन्द्र सिंह 1928-30 में मध्य आजीविका के लिए एक समाचार पत्र विक्रेता के यहाँ अमृतसर में काम करते थे। वह नौजवान भारत सभा के, जो बाद में हिन्दुस्तानी समाजवादी प्रजातान्त्रिक संघ के नाम से प्रसिद्ध हुआ के सक्रिय सदस्य थे. 1929 दिसम्बर में लाहौर में कांग्रेस अधिवेशन हुआ। इन्द्र सिंह ने उसमें सक्रिय स्वयं सेवक के रूप में भाग लिया। इसी वर्ष क्रान्तिकारी शम्भुनाथ आजाद ने इन्हें क्रान्तिकारी दल का सदस्य बनाया।

दिसम्बर, 1930 में एक दिन जब इन्द्र सिंह शम्भुनाथ आजाद के साथ अस्त्र-शस्त्रों का बण्डल लेकर दिल्ली से बनारस जाने का प्रयास कर रहे थे, तो पुलिस ने उन्हें पकड़ लिया। दिल्ली में कश्मीरी गेट थाने में पांच दिनों तक भारी यंत्रणा के पश्चात् इन्हें सात वर्ष कठोर कारावास का दण्ड दिया गया। लाहौर हाई कोर्ट में अपील के बाद सजा घट कर 3 वर्ष हो गई। तीन वर्ष बाद मुल्तान कारागार से मुक्त होकर जब बाहर आए तो नौजवान भारत सभा ने इन्हें स्वाधीनता आन्दोलन के कार्य से दक्षिण भारत भेज दिया.1933 में इन्द्र सिंह मद्रास में सभा के प्रधान कार्यालय में रोशनलाल मेहरा "शहीद" के साथ रहने लगे। उन्हें नौजवान सभा की पंजाब, ग्वालियर, दिल्ली और कलकत्ता की शाखाओं से सम्पर्क का कार्य सौंपा गया। मद्रास में अन्य कार्यों के साथ-साथ मद्रास प्रेसीडेन्सी के गवर्नर को मारने की योजना बनाई गई। गवर्नर की यात्रा सम्बन्धी सूचनाओं को एकत्र करने के लिए इन्द्र सिंह, प्रेम प्रकाश मुनि के नाम से साधु वेश में रहने लगे। किन्तु सूचना पाकर 4 मई 1933 को दोपहर को, सभा के मुख्यालय में, जो मद्रास नगर के मध्य में स्थित तम्बू चट्टी स्ट्रीट के एक मकान में था, इन्द्र सिंह को सशस्त्र पुलिस और सी.आई.डी. दल ने घेर लिया। इन्द्र सिंह ने शीघ्र ही गुप्त कागजात जला डाले। अपनी छह राउंड की पिस्तौल को लेकर वह अपने तीन साथियों के साथ मकान की छत पर चले गए। इन चारों क्रान्तिकारियों ने पांच घंटे तक वीरतापूर्वक पुलिस और गोरा सैनिकों की टुकड़ी के साथ मोर्चा लिया। इन्द्र सिंह पकड़ लिये गए। उन्हें 20 वर्ष काला पानी का दंड मिला। जेल में इनके उग्र व्यवहार के कारण इन्हें वहाँ से हटाकर बेल्लारी सेन्ट्रल जेल भेज दिया गया।

बेल्लारी सेन्ट्रल जेल में बंदी के दौरान एक योजना के तहत कुछ समय बाद कारागार से भाग निकले। फिर पकड़ लिए गए और अंडमान की सेलुलर जेल भेज दिए गए. 1937 में बन्दियों ने सेलुलर जेल में ऐतिहासिक आमरण अनशन शुरू कर दिया। फलस्वरूप राजनैतिक बन्दियों के साथ इन्हें लाहौर सेन्ट्रल जेल भेज दिया गया। अनेक प्रयत्नों के पश्चात सर सिकन्दर हयात खाँ के मंत्रिमण्डल के समय केन्द्रीय सरकार की आज्ञानुसार "मद्रास सिटी बम केस" के अभियुक्त इन्द्र सिंह उर्फ प्रेम प्रकाश मुनि को और "कटी बैंक केस" के अभियुक्त सरदार बंता सिंह और खुशीराम मेहता को 1939 में जेल से मुक्त कर दिया गया, किन्तु पंजाब सरकार ने इन तीनों को पंजाब से निष्कासित कर दिया। पंजाब से आकर इन्द्र सिंह ने मेरठ में "कीर्ति किसान" नामक पत्रिका के कार्यालय में डेरा डाला। मेरठ आकर वह 1962 तक भारतीय साम्यवादी दल(सीपीआई) के कार्यालय में काम करते रहे। फिर सहसा किसी अज्ञात स्थान को चले गए। जहाँ से इनका कुछ अता-पता आज तक नहीं चला। ऐसी थी उस वीर गढ़वाली की अदम्य राष्ट्रभक्ति।

ठाकुर शूरवीर सिंह पंवार

राजकुमार विचित्रशाह के तृतीय पुत्र ठाकुर शूरवीर सिंह पंवार लेखक, भाषाविद् और खोजी इतिहासवेत्ता, हिन्दी साहित्य शोध के सेनापति, सत्यान्वेषी अन्वेषक टिहरी राजवंश में 1907 में जन्मे। प्रारम्भिक शिक्षा घर पर हुई। बी.ए.एल.एल.बी. की डिग्री लखनऊ विश्वविद्यालय से ग्रहण की। शिक्षा समाप्ति के बाद ठाकुर शूरवीर सिंह पंवार तत्कालीन टिहरी राज्य की प्रशासनिक सेवा में नियुक्त किए गए थे। वे टिहरी के विभिन्न क्षेत्रों में एस.डी.एम. भी रहे। टिहरी रियासत के होम सेक्रेट्री के पद को भी इन्होंने सुशोभित किया था। द्वितीय विश्वयुद्ध के समय ठाकुर साहब भारतीय सेना में कमीशन प्राप्त अधिकारी हो गए। भारतीय सेना में कैप्टन पद से लौटकर आप उत्तरप्रदेश शासन की प्रशासनिक सेवा में आ गए। सेवाकाल में उत्तर प्रदेश में अनेक जिलों में प्रशासनिक अधिकारी नियुक्त रहे. 1966 में जिला अलीगढ़ से ए.डी.एम. पद से सेवानिवृत्त हुए।

सेवानिवृत्ति के पश्चात इन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन साहित्य सेवा में अर्पित कर दिया। साहित्यिक प्रवृत्ति इन्हें पिता से विरासत में मिली थी। इनके पिता राजकुमार विचित्रशाह साहित्य प्रेमी और विद्याप्रेमी थे। उस युग में उनका अपना एक निजी पुस्तकालय और चित्रशाला थी । ठाकुर शूरवीर सिंह पंवार, जिन्हें लोग आदर और स्नेह से कैप्टन साहब सम्बोधित करते थे, विद्वान और प्रतिभा के धनी थे। अनेक सामाजिक, शैक्षिक और सांस्कृतिक संस्थाओं से वह सम्बद्ध रहे। ठाकुर साहब ने "पंचदूत" पत्रिका का सम्पादन भी किया था। इस पत्रिका के माध्यम से इन्होंने हिन्दी साहित्य के अनेक दुर्लभ तथा अज्ञात कृतियों की जानकारी दी। ये गढ़वाली भाषा को वैदिक भाषा की ज्येष्ठ पुत्री कहा करते थे। इतिहास सम्बन्धी इनके कुछ दुलर्भ शोध हैं - "सिकन्दर के स्वप्न-भंजन गंगाढ़ी जन", "जब भारतीय सेना से सिकन्दर पराजित हुआ", "सम्राट हर्षवर्धन के पूर्वज-गढ़वाली", "आदि मानव की जन्मभूमि-उत्तराखण्ड", "केदार खण्ड गढ़वाल में नागवंश", "शिवाजी का प्रभाव उत्तरांचल तक था", "देहरादून गाथा, उत्तराखण्ड की महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना", "फतेहपुर के पूर्व मध्यकालीन ऐतिहासिक अवशेष", उत्तराखण्ड के ऐतिहासिक नरपुंगव देशभक्त पण्डित हर्षदेव जोशी, "क्या नाना साहब ने उत्तरकाशी में अज्ञातवास किया था?" हिमालय के इतिहास पर शायद ही किसी ने इतना कुछ शोध किया हो, जितना कैप्टन पंवार ने।

कुछ मूर्धन्य साहित्यकारों और प्रमुख व्यक्तियों ने "ठाकुर साहब" के बारे में अपने विचार यों व्यक्त किए: डा. शिव गोपाल मिश्र--- "मैं कैप्टन शूरवीर की तुलना इतिहास, पुरातत्व तथा साहित्यविद् कर्नल टाड टैसिटरी तथा ग्रॉउज से करता हूं। " डा. हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में ---- " मैं कै. शूरवीर सिंह पंवार के वैदुष्य से ही नहीं, उनके व्यक्तित्व से भी परिचित हूं उनके समान उदार और विनम्र साहित्य-सेवक दुर्लभ है। डा. रामकुमार वर्मा लिखते हैं ----"मैं कै. शूरवीर सिंह पंवार को शोध का सेनापति मानता हूं उन्होंने अनेक शोध-सागर पार किए हैं।" उनके बारे में जे.सी. गैले के विचार कुछ इस प्रकार हैं ---- "You are one of the few fallen Eagle. Those very few are Salt and Gold of this World" कुसुम डोभाल कहती हैं ----"कैप्टन साहब साहित्य के मात्र अध्येता नहीं थे, तार्किक विश्लेषण के पंडित भी थे। " डॉ. गोविन्द चातक उनकी साहित्य साधना की प्रस्तुति कुछ इस प्रकार करते हैं -----"पुराना दरबार की टूटी-फूटी विशाल इमारत में अकेला रहने वाल व्यक्ति, जो यहां धूल-गर्त से भरी चारों तरु बिखरी

किताबों, पाण्डुलिपियों के बीच स्वयं अतीत या अतीतातीत बनकर बैठा है को देखकर कभी लगता है, जैसे कोई भैरवी की साधना में जुटा है। वैसे ही उजड़ा पुराना दरबार का झांकता अतीत वैसे ही जीवन की सांझ, किताबें, पाण्डुलिपियाँ और नीचे टिहरी का ऊंघता-उजड़ता शहर जल समाधि लेने को आतुर।"

कैप्टन साहब को साहित्य, इतिहास और शोध की त्रिवेणी कहा जाता है। इतिहास के रूप में सत्य, साहित्य के रूप में शिवत्व तथा पुरातत्व एवं संस्कृति के रूप में सौन्दर्य तत्व इनके लेखों में एक साथ स्थापित मिलते हैं। इनके कृतित्व में उत्तर वैदिक युग के मानव-जाति के लेखा-जोखा से लेकर आधुनिक अणुयुग की सभ्यता पर्यन्त कई जीवंत चित्रों का मौलिक विवेचन हुआ है। जिससे देश-विदेश के अनेक शोधार्थी लाभान्वित हुए हैं। इनकी समस्त शोध उपलब्धियों को हिन्दी साहित्य संबंधी अनुपम धरोहर माना जा रहा है। साहित्य की अपार सेवा करते-करते वर्ष 1991 में इस महामनीषी का नश्वर शरीर पंचतत्व में विलीन हो गया किन्तु साहित्य में अनेक आयाम जोड़ गया।

भवानी सिंह रावत

भवानी सिंह रावत का जन्म 8 अक्तूबर 1910 को ग्राम नाथूपुर, दोगड्डा, गढ़वाल में हुआ। भारतीय स्वाधीनता संग्राम के महान क्रान्तिकारियों में उनकी गिनती है। प्रारम्भिक शिक्षा लैन्सडौन और बाद के वर्षों में अपनी शिक्षा मुरादाबाद, चन्दौसी और दिल्ली के सराय रोहिला में पूरी की। जवाहरलाल नेहरू के देश सेवा के भाषणों से प्रभावित होकर राजनैतिक जीवन में प्रवेश किया। इनके उग्र क्रिया-कलापों को देखकर क्रान्तिकारी कैलाशपति और जयदेव कपूर ने इनसे सम्पर्क स्थापित किया और क्रान्तिकारी साहित्य पढ़ने को दिया। भवानी जी ने समझ लिया कि क्रांतिकारियों के प्रयत्नों के द्वारा ही स्वराज्य प्राप्ति संभव है और देश सेवा का व्रत लिया। इनकी बढ़ती क्रान्तिकारी भावनाओं को देखकर क्रान्तिकारियों ने इन्हें हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातंत्र संघ का सदस्य बना दिया। बाद में वह प्रख्यात क्रान्तिकारी चन्द्रशेखर आजाद के संपर्क में आए।

एक योजना के तहत 8 अप्रैल, 1929 को ऐसेम्बली में बम फेंका गया जिसमें वह भी सम्मिलित थे। दिल्ली में चाँदनी चौक स्थित गडोदिया स्टोर से सफलतापूर्वक तेरह हजार रुपए लूट लिए। कुछ ही समय पश्चात चन्द्रशेखर आजाद अपने क्रॉन्तिकारी साथियों को पिस्तौल चलाने का प्रशिक्षण देने इनके साथ दोगड्डा आए। इन्हें पकड़ने के लिए इनाम की घोषणा की गई किन्तु ऐसे कान्तिकारी कि पकड़ में ही नहीं आए।

आजाद की शहादत के बाद इन्होंने रूस जाने की योजना बनाई। बम्बई में एक उर्दू पत्रिका के सम्पादक मोहम्मद इस्माइल के घर पर मुसलमान वेष में रहे। वहीं इन्हें पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। किन्तु पुष्ट प्रमाण के अभाव में रिहा कर दिए गए। स्वाधीनता के बाद 14 वर्षों तक पंचायत राज इन्सपैक्टर रहे। कम्युनिस्ट पार्टी के टिकट पर चुनाव लड़ा, किन्तु हार गए। इन्होंने जीवन में कई उतार-चढ़ाव देखे इन्होंने स्वराज्य प्राप्ति के लिए दुस्साहस की पराकाष्ठा पार की। यह क्रॉन्तिकारी 84 बसन्त जीने के बाद 6.5.1986 में इस भवसागर से अपनी अनन्त यात्रा पर चल पड़ा।

भक्त दर्शन सिंह

भक्त दर्शन सिंह - ग्राम भौराड़, पट्टी साबली, गढ़वाल के मूल निवासी थे। कालान्तर में गांव मसेटी, बाद में जयहरीखाल, लैन्सडौन और अन्त के कुछ वर्षों से देहरादून में रहने लगे थे। लोकप्रिय सामाजिक और राजनीतिक कार्यकर्ता। गांधीवाद के सच्चे अनुयायी। मूर्धन्य पत्रकार और लेखक। केन्द्रीय मंत्री परिषद में स्थान पाने वाले गढ़वाल क्षेत्र के पहले सांसद। सच्चरित्र, निरभिमानी,निस्वार्थ नेता, मितभाषी, शान्त एवं सरल स्वभाव वाले जनप्रतिनिधि। गढ़वाल का गांधी नाम से परिचित एक आदरणीय नाम। मूल नाम राजदर्शन सिंह था।

ब्रिटिश काल में इनके पिता श्री गोपाल सिंह रावत जिला बस्ती पूर्वी उत्तर प्रदेश की बांसी तहसील में रजिस्ट्रार नियुक्त थे। वहीं इनका जन्म 12.2.1912 को हुआ। भक्त जी चार भाइयों में सबसे छोटे थे। अपने से बड़ों पर सदैव भक्तिभाव रखने के कारण यह "भक्तदर्शन" परिवर्तित हो गया। प्रारम्भिक शिक्षा अपने पिता के साथ रहते हुए पूरी की। हाई स्कूल और इन्टरमीडिएट डी.ए.वी. कालेज, देहरादून से बी.ए. शान्ति निकेतन और एम.ए. इलाहाबाद विश्वविद्यालय से उत्तीर्ण किया। शिक्षा काल में ही इनके जीवन पर स्वामी दयानन्द के विचारों का गहरा प्रभाव पड़ गया था। 1929 में जब वे दसवीं कक्षा के छात्र थे तो गांधी जी के व्यक्तित्व से अत्यन्त प्रभावित हुए और लाहौर कांग्रेस से स्वयंसेवक बनकर सम्मिलित हुए, 1930 में नमक आन्दोलन के दौरान गिरफ्तार हुए और पहले देहरादून और बाद में आगरा जेल भेज दिए गए। यहीं से इनके राजनीतिक जीवन का शुभारम्भ हुआ।

"कर्मभूमि" का प्रकाशन गढ़वाल की एक ऐतिहासिक घटना है। भक्त जी ने स्व. श्री भैरव दत्त धूलिया के सहयोग से 1939 में इस साप्ताहिक पत्र का संपादन आरम्भ किया। 19 फरवरी, 1939 को बसन्त पंचमी के दिन इसके प्रथम अंक का विमोचन उत्तर प्रदेश के तत्कालीन प्रीमियर श्री गोविन्द बल्लभ पन्त ने किया। इस समाचार पत्र ने गढ़वाल में एक नई राजनीतिक जागृति पैदा की। राष्ट्रीय विचारों का संवाहक था "कर्मभूमि" साप्ताहिक। इसकी संकल्पना पवित्र और अवधारणा ऊँची थी। जनमानस इसके अंकों की प्राप्ति के लिए आतुर रहता था।

स्वाधीनता प्राप्ति के बाद भक्त जी का सार्वजनिक जीवन शुरू हुआ। 1948 में आप गढ़वाल जिला परिषद के निर्विरोध अध्यक्ष चुने गये। 1950-52 में नियोजन अधिकारी, गढ़वाल और देहरादून रहे। 1952 में हुए प्रथम आम चुनाव में कांग्रेस उम्मीदवार के रूप में गढ़वाल क्षेत्र से सांसद चुने गए। नवम्बर, 1963 से मार्च 1971 तक केन्द्र सरकार में शिक्षा उप मंत्री, राज्य मंत्री और इसके बाद परिवहन एवं जहाजरानी मंत्रालय में उप मंत्री रहे। 1972 में स्वेच्छा से राजनीति से सन्यास ग्रहण किया। भक्त जी राजनीतिक दांव पेंचों और छद्म राजनीतिक जैसे हथकंडों से हमेशा दूर रहे, इन्हीं गुणों के कारण प्रतिद्वन्दी भी इन्हें आदर प्रदान करते रहे। राजनीति से सन्यास के पश्चात इन्हें 1972-77 की अवधि में भक्त जी कानपुर विश्वविद्यालय के कुलपति रहे। 1971-72 में उत्तर प्रदेश खादी बोर्ड के उपाध्यक्ष रहे। 1988-90 तक उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के उपाध्यक्ष पद पर रहे। निरन्तर जन सेवा करते हुए 30 अप्रैल, 1991 को उन्होंने इस संसार से विदाई ले ली। भक्त जी की लेखनी सरल थी। उनकी भाषा अत्यंत सरल और बोधगम्य रही। उनकी लिखी पुस्तकें गढ़वाल की चिरस्मरणीय निधि है। "गढ़वाल की दिवंगत विभूतियां", "सुमन स्मृति ग्रन्थ", "कलाविद मुकुन्दीलाल बैरिस्टर स्मृति ग्रन्थ" और स्वामी रामतीर्थ संबंधी प्रकाशन उनकी कालजयी कृतियां तथा ललित निबन्ध हैं।

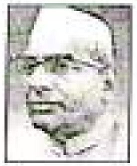

बलदेव सिंह आर्य

बलदेव सिंह आर्य युवावस्था से ही एक निष्ठावान समाजसेवी व हरिजनोद्धार के सच्चे सेवक थे। सन् 1929 में इन्होंने अपनी पढ़ाई के साथ-साथ हरिजन छात्रावास जयहरीखाल में सुपरिन्टेन्डेन्ट का कार्यभार संभाला। स्वतंत्रता आन्दोलनों में बढ़-चढ़कर भाग लेने के कारण उन्हें कई बार कारावास की यातना भी भुगतनी पड़ी। गढ़वाल में हरिजनों के लिए डोला-पालकी के उपयोग पर सामाजिक प्रतिबन्ध था। बलदेवसिंह आर्य ने अन्य समाज सेवकों के साथ मिलकर इस सामाजिक प्रतिबन्ध का डटकर विरोध किया। इस विरोध में उन्हें कई बार मार भी खानी पड़ी।

उत्तराखण्ड की जनजाति एवं दलित वर्ग के मसीहा बलदेव सिंह आर्य का जन्म पौड़ी गढ़वाल की पट्टी सीला, ग्राम उमथ में 12 मई सन् 1912 में हुआ था। सन् 1947 तक लगातार आजादी के आन्दोलनों में भाग लेते रहे। सन् 1949-50 में संसद सदस्य मनोनीत होकर संसद पहुँचे। अपने संसदीय कार्यकाल में कोटद्वार से दिल्ली के लिए रेल का डिब्बा स्वीकृत तथा कोटद्वार रेलवे स्टेशन पर यात्रियों के लिए सुविधाएं उपलब्ध कराने में इनका बड़ा योगदान रहा। सन् 1952 में इन्हें पहली बार पौड़ी-बदरीनाथ क्षेत्र की सुरक्षित सीट से विधान सभा के चुनाव में कांग्रेस पार्टी ने अपना उम्मीदवार बनाया। चुनाव में विजयी होकर इस क्षेत्र से विधायक बने। बाद के विधान सभा चुनावों में इन्होंने अपनी कार्यस्थली के रूप में उत्तरकाशी जनपद को चुना। उत्तरकाशी सुरक्षित सीट से कई बार चुनाव जीतकर उत्तर प्रदेश मंत्रिमण्डल में राज्य मंत्री और कैबिनेट मंत्री के पदों पर आसीन रहे। एक वरिष्ठ नेता के रूप में गढ़वाल की शान और उत्तर प्रदेश के शीर्ष नेताओं के रूप में इनकी विशेष पहचान रही अपनी सामर्थ्य के अनुसार जनता के लिए कई कल्याणकारी कार्य करने में कोई कसर नहीं रखी।

गढ़वाल में विद्यालयों की कमी के कारण क्षेत्र के लोगों को पढ़ने के अवसर नहीं मिल पाते थे। उन्होंने इस कमी को महसूस किया और कठिनाई को दूर करने के प्रति गम्भीरता से विचार किया। परिणामतः इन्होंने दिल्ली जाकर श्री रामकृष्ण डालमिया से 16 प्राइमरी विद्यालयों के लिए अनुदान स्वीकृत कराया। इन विद्यालयों की पिछड़े क्षेत्रों में स्थापना कर इस प्रकार शिक्षा के प्रचार-प्रसार में योगदान दिया। गढ़वाल मंडल में शिक्षा एवं विकास के क्षेत्र में कार्य करने वाला यह महापुरुष 23 दिसम्बर, 1995 को अपनी अनन्त यात्रा के लिए इस संसार से विदा हो गया।

टिंचरी माई इच्छागिरी

थैलसैंण क्षेत्र के मज्यूर गांव के श्री रामदत्त नौटियाल एवं रूपा देवी के घर सन् 1912 में एक बालिका का जन्म हुआ इसका नाम दीपा रखा गया। दीपा मात्र जब दो वर्ष की थी, तब उनकी माँ का देहान्त हो गया और इससे लगभग तीन वर्ष पश्चात् जब दीपा पाँच वर्ष की थी तो पिता का भी स्वर्गवास हो गया। इस अनाथ बालिका को गांव के चाचा ने पाला-पोसा। सात वर्ष की होने पर नन्ही दीपा के विवाह बंधन में बंधना पड़ा। उसके पति गणेश राम, गंवणी गांव के थे तथा उम्र में दीपा से 17 वर्ष बड़े थे। जब दीपा 19 वर्ष की हुई तो उसके पति युद्ध में मारे गये। अपने पति की मृत्यु के समय वह रावलपिंडी में थीं। अंग्रेज सैन्य अधिकारी ने अनाथ, दुखी और किस्मत की मारी दीपा को लैंसडौन उसकी ससुराल पहुँचा दिया। ससुराल में दीपा के साथ बुरा व्यवहार किया जाने लगा। विधवा जीवन में उत्पन्न हुई ससुराल व समाज की यातनाओं से क्षुब्ध दीपा ने घर छोड़ दिया और लाहौर पहुँच गयी। वहां एक सन्यासिन के सम्पर्क में आकर दीक्षा ली और दीपा से इच्छागिरि बन गयी। सन् 1947 में इच्छागिरि हरिद्वार पहुँची और चण्डीघाट में साधु समाज के साथ रहने लगी। उसे साधुओं का पाखण्डी समाज रास न आया। अतः उनका साथ छोड़ कोटद्वार के सिगड्डी, भावर आ गयी और घास-फूस की कुटिया बनाकर रहने लगी।

पारिवारिक-सामाजिक विवशताओं के चलते अनेक महिलायें सुरक्षित जीवन की तलाश में सन्यास लेकर माई (सन्यासिन) बन जाती हैं। इन माइयों को पर्वतीय समाज में सम्मानीय दृष्टि से देखा जाता है। ऐसी ही एक इच्छागिरी माई ने सन्यास लेने के बावजूद समाज के प्रति उत्तरदायित्वों से मुंह नहीं मोड़ा। अपितु अपनी आध्यात्मिक साधना के साथ-साथ समाज में फैली कुप्रथाओं व कुरीतियों के विरूद्ध सदैव लड़ती रही। माई ने देखा कि सिगड्डी गांव में पानी का अभाव है। गांव की महिलाओं की दुर्दशा माई से देखी न गयी। वह डिप्टी कलेक्टर से मिली, परन्तु पानी की व्यवस्था की पुकार अनसुनी कर दी गयी। माई चैन से न बैठी और दिल्ली पहुँच गयी। दिल्ली में जवाहरलाल नेहरू के आवास के बाहर धरने पर बैठ गयी। नेहरू जी जब कार्यालय के लिए निकले तो उनकी गाड़ी के आगे खड़ी हो गयी। सुरक्षाकर्मी माई को खींचकर हटाने लगे। नेहरू जी तत्काल गाड़ी से उतरे, सुरक्षा कर्मचारी को वहां से हट जाने को कहा, माई की बात सुनी। माई को तीव्र ज्वर था ऐसा आभाष नेहरू जी को हुआ। नेहरू जी उसे अस्पताल भिजवाने लगे। माई अड़ गयी और बोली बाबा पहले वायदा करो कि पानी सिगड्डी गांव में आयेगा। नेहरू जी ने आश्वासन दिया और माई को अस्पताल भिजवाया। लौटते वक्त नेहरू जी ने माई को कुछ कपड़े दिए और कहा जल्दी पानी मिल जायेगा। थोड़े दिनों पश्चात् ही कोटद्वार स्थित सिगड्डी गांव को पेयजल की कठिनाई से मुक्ति मिल गयी। अकेली माई ने वह कर दिखाया जो उस वक्त असम्भव सा लगता था। माई पढ़ी लिखी तो न थी परन्तु शिक्षा के महत्व को खूब समझती थी। माई ने जब ठान लिया कि यहाँ पर एक स्कूल होना चाहिए वह स्कूल बनेगा और जरूर बनेगा। माई ने कुछ रूपये अपने पास से दिए और कुछ चन्दा एकत्र कर स्कूल की इमारत खड़ी करवा दी। बताया जाता है कि आज वह स्कूल, इण्टर कालेज तक बन गया है।

मोटा ढंग में जीवन का उद्देश्य पूरा कर माई बद्रीनाथ चली गयी। कुछ वर्ष वहां व्यतीत कर वापस पौड़ी आ गयी। पौड़ी में एक दिन डाकघर के बरामदे पर माई बैठी थी, उसने देखा कि सामने टिंचरी की दुकान से एक व्यक्ति टिंचरी पीकर महिलाओं के साथ अभद्रता का व्यवहार कर रहा है, इस कृत्य को देखकर माई क्रोधित हो गयी। उसने कंडोलिया स्थित कलेक्टर के बंगले की राह पकड़ी।

डिप्टी कलेक्टर को टिंचरी बिक्री के विरूद्ध खरी-खोटी सुनायी और कहा कि अगर तू इस कारोबार को बन्द नहीं कर सकता तो देख मैं टिंचरी की दुकान में आग लगा दूंगी। बताया जाता है कि डिप्टी कलेक्टर ने इस बात पर ध्यान नहीं दिया और फिर वही हुआ, माई ने टिंचरी की दुकान में आग लगा दी। टिंचरी के विरूद्ध उठाये गये अभियान से इच्छागिरि माई अब "टिंचरी माई" के नाम से विख्यात हो गयी।

टिंचरी माई ने गढ़वाल के गांव-गांव जाकर महिलाओं को टिंचरी और सामाजिक कुरीतियों के विरूद्ध एकजुट करने का कार्य आरम्भ किया और इस कार्य में उसे सफलता मिली। समाज में व्याप्त कुप्रथाओं, कुरीतियों सामाजिक विवशताओं के विरूद्ध लड़ते हुए माई ने 19 जून, 1992 को अपना शरीर त्याग दिया। टिंचरी माई की समस्त जीवन यात्रा पर्वतीय नारी के शोषण, उत्पीड़न, व्यथा, कथा, कुरीतियों के विरूद्ध साहस और सत्यता से लड़ी गई लड़ाई संघर्षों का इतिहास है।

डॉ. शिवप्रसाद डबराल

डॉ. शिवप्रसाद डबराल "चारण" जैसे विलक्षण प्रतिभा के धनी व्यक्ति कभी-कभार ही धरती पर अवतरित होते हैं. 12 नवम्बर 1912 को श्री कृष्णदत्त डबराल और श्रीमती भानुमती के घर ग्राम गहली, जिला पौढ़ी गढ़वाल में जन्मे डॉ. शिवप्रसाद की कर्मस्थली दुगड्डा रही. 21 भागों में उत्तराखंड का इतिहास, 2 काव्य संग्रह, 9 नाटक, 8 बालोपयोगी पुस्तकों के अलावा गढ़वाली भाषा के 24 दुर्लभ काव्यों को विस्तृत भूमिका के साथ प्रकाशित करने वाले डॉ. शिवप्रसाद की प्रारम्भिक शिक्षा मॉडई एवं गढ़सिर प्राइमरी स्कूल में हुई। यहीं डॉ. शिवप्रसाद के पिता प्रधानाध्यापक थे। वर्नाक्यूलर एंग्लो मिडिल स्कूल सिलोगी(गुमखाल) से मिडिल की परीक्षा उत्तीर्ण की।

डॉ. शिवप्रसाद डबराल ने हाई स्कूल से बी.ए. तक की शिक्षा मेरठ से की। भूगोल विषय में एम.ए. की परीक्षा आगरा विश्वविद्यालय से तथा बी.एड की परीक्षा हिन्दू विश्वविद्यालय बनारस से उत्तीर्ण की. 1962 में डॉ. डबराल को आगरा विश्वविद्यालय से पी.एच.डी. की उपाधि मिली, जिसका विषय था "अलकनंदा उपत्यका में पोषयात्रा, प्रवजन और ऋतुकालीन प्रवास। इतिहास उनका प्रिय विषय था। बाद में डॉ. डबराल इतिहासविद कहलाए। इसके अलावा उन्होंने अंग्रेजी एवं बंगला से भी कई कविताएं और कहानियां अनुवादित कर प्रकाशित कीं। वे दैनिक प्रयाग, पंच इलाहाबाद और दैनिक नवयुग दिल्ली में सह-संपादक भी रहे। डॉ. डबराल दुगड्डा इंटर कॉलेज के प्रधानाचार्य पद से सेवानिवृत्त हुए। पुस्तक प्रकाशन हेतु वीरगाथा प्रेस खोली और वीरगाथा प्रकाशन के नाम से पुस्तकें प्रकाशित कीं।

घुमक्कड़ प्रवृत्ति के शौकीन डॉ. शिव प्रसाद के नाम के अन्त में "चारण" शब्द जुड़ गया। इन्हें इनसाइक्लोपीडिया ऑफ उत्तराखंड (Encyclopaedia of Uttarakhand) के नाम से भी जाना जाता है। उन्होंने अपने सरूड़ा (दुगड्डा) स्थित घर पर "उत्तराखण्ड विद्या भवन" पुस्तकालय एवं संग्रहालय खोलकर करीब 30 हजार पुस्तकें, दुर्लभ पांडुलिपियां, पुरातत्वीय महत्व के सिक्के एवं बर्तनों आदि का संग्रह किया। यह संग्रहालय आज शोधार्थियों के किसी तीर्थस्थल से कम नहीं है। डॉ. डबराल को उत्तर प्रदेश और बिहार सरकार के पुरस्कारों के अलावा कई पुरस्कार प्राप्त हुए। 24 नवम्बर, 1997 को स्वयं की पूर्व ज्योतिष गणनानुसार, अपना शरीर त्याग कर इस संसार से विदा हो गए।

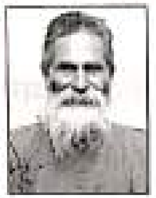

श्रीधर आजाद

श्रीधर आजाद का जन्म ग्राम मिकोना, पट्टी चन्द्रशिला, चमोली में सन् 1915 को एक साधारण परिवार में हुआ. 1935 से 1943 के मध्य सभी राष्ट्रीय आन्दोलनों में वह मुखर रहे, फलस्वरूप कई बार जेल गए और पुलिस व जेल की यंत्रणा सहीं। अपनी पढ़ाई-लिखाई के दौरान ही देश प्रेम की भावना उनके दिल में घर कर गई थी। महात्मा गांधी के अनुयाई श्रीधर आजाद गांधी जी के आह्वान पर सत्याग्रह और भारत छोड़ो आन्दोलन में शामिल हो गये। इस दौरान उन्होंने भारत छोड़ो का नारा गाँव-गाँव तक पहुँचाया। देश की खातिर उन्होंने घर-परिवार की कोई परवाह नहीं की और घर तक त्याग दिया। वह शादी-शुदा थे, किन्तु उनकी कोई संतान नहीं थी। उनका पूरा जीवन देश को समर्पित रहा। वह गढ़वाल जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष भी रहे। चमोली जिले के विकास में इनका सक्रिय योगदान रहा। उनका मानना था कि जिन उद्देश्यों को लेकर देश आजाद कराया गया था आज वे कहीं दिखाई नहीं देते और इस व्यथा को वह अक्सर बयान करते थे।

पृथक उत्तराखण्ड के आन्दोलन में भी वह काफी सक्रिय रहे। पृथक उत्तराखण्ड राज्य बन जाने पर प्रदेश की राजनीति पर उनकी बारीक दृष्टि रहती थी, उनका मानना था कि राज्य की वर्तमान स्थिति सिर्फ नेताओं के अनुकूल है राज्य का निर्माण सिर्फ राजनीतिक दलों के लिए हुआ है। नब्बे वर्ष की आयु में भी वह जनसेवा के कामों में निरन्तर अपना समय व्यतीत करते थे. नवम्बर, 2005 में पाँव फिसलने के कारण उनके पैर की हड्डी टूट गई, जिसके कारण उन्हें 10 नवम्बर, 2005 को दून हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया, किन्तु स्वास्थ्य में लगातार गिरावट के कारण वह उठ नहीं सके और यह स्वतंत्रता सेनानी-सन्यासी इस दुनिया से हमेशा के लिए विदा हो गया।

श्रीदेव सुमन

शहीद श्रीदेव सुमन का जन्म 25 मई, सन् 1916 ई. को टिहरी गढ़वाल की पट्टी बमुण्ड के जौल नामक ग्राम में हुआ था। उनके पिता अपने क्षेत्र के एक लोकप्रिय वैद्य थे। अपने त्यागी कर्मठ पिता के चरण-चिन्हों पर चलकर वीर श्रीदेव ने उनका तथा गढ़देश का भाल उन्नत कर दिया। अपनी शिक्षा-प्राप्ति के उपरान्त आपने पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रवेश किया और सफलतापूर्वक हिन्दू तथा राष्ट्रमत इत्यादि पत्रों में कार्य किया। दिल्ली में उन्होंने अपने कतिपय मित्रों के सहयोग से देवनागरी-महाविद्यालय की भी स्थापना सन् 1935 में की थी। आपके राजनैतिक जीवन का श्रीगणेश सन् 38 से हुआ और थोड़े-से समय में ही आपने अपनी कार्यकुशलता, अनुपम त्याग एवं साहस द्वारा वह कार्य कर दिखाया, जो बड़े-बड़े, साधन-सम्पन्न व्यक्ति अनेक वर्षों में भी नहीं कर सके। आपने गढ़वाल की जनता के राजनैतिक अधिकारों की रक्षा के लिए वहाँ प्रजामण्डल की स्थापना की। राजशाही को समाप्त करने का बीड़ा उठाया।

नवयुवक श्रीदेव सुमन में देश भक्ति की भावना कूट-कूट कर भरी हुई थी। उन्होंने 1930 में सिर्फ 14 वर्ष की आयु में ही देहरादून आकर नमक सत्याग्रह में भाग लिया पकड़े जाने पर उन्हें 15 दिन की जेल हुई। 1938 में इनका परिचय डॉ. जाकिर हुसैन और काका कालेकर से हुआ । इसी वर्ष मई में श्रीनगर गढ़वाल में आयोजित राजनैतिक सम्मेलन में इन्होंने गढ़वाल के दोनों भागों तब का ब्रिटिश गढ़वाल आज पौड़ी गढ़वाल तथा टिहरी गढ़वाल राज्य की अखण्डता पर जोर देते हुए कहा, यदि गंगा हमारी माता होकर भी हमें आपसे में मिलाने की बजाय दो हिस्सों में बांटती है तो हम गंगा को काट देंगे। इस सम्मेलन में श्रीदेव सुमन ने जवाहरलाल नेहरू और विजयलक्ष्मी पंडित को टिहरी राज्य की अत्याचारी नीति से अवगत कराया. 23 जनवरी, 1939 को देहरादून में टिहरी राज्य प्रजामण्डल की स्थापना के पश्चात् श्रीदेव सुमन ने इस संगठन को नई दिशा दी। उनका विचार था कि यदि हमें मरना ही है तो अपने सिद्धान्तों और विश्वास की सार्वजनिक घोषणा करते हुए मरना श्रेयस्कर है। फरवरी, 1939 में जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में लुधियाना(पंजाब) में आयोजित अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद के अधिवेशन में श्रीदेव सुमन ने प्रजामण्डल के प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया। उन्हें इस अधिवेशन में लोक परिषद की स्थाई समिति में हिमालयी प्रान्तीय देशी राज्यों के प्रतिनिधि के रूप में पहाड़ी रियासतों का प्रतिनिधित्व करने वाला सच्चा प्रतिनिधि माना गया।

प्रजामण्डल की सफलता के लिए वह 1942 में महात्मा गाँधी के पास सेवाग्राम, वर्धा गये। वापस आकर 30 अप्रैल, 1942 को टिहरी पहुंचे। ऋषिकेश में मुनि की रेती से पुलिस उनके पीछे चल रही थी और 9 मई को पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। दो दिन हिरासत में रखने के पश्चात् उन्हें फिर मुनि की रेती वापस भेज दिया। जुलाई, 1942 को उन्होंने पुनःराज्य में प्रवेश किया तो पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर कुछ दिन हिरासत में रखने के बाद पुनः राज्य की सीमा के बाहर निकाल दिया। 1942 के आंदोलन में आप नजरबन्द कर लिए गए, जेल से छूटने के पश्चात् तुरन्त फिर गढ़वाल गए और जनजागरण का कार्य प्रारम्भ कर दिया। वे कार्य कर ही रहे थे कि फिर 28 दिसम्बर, 1942 को स्टेट-पुलिस द्वारा गिरफ्तार करके नजरबन्द कर लिए गए। श्रीदेव सुमन के लिए सामंती शासन के विरूद्ध लड़ना और मरना, जीवन का उद्देश्य बन गया था। वे अक्सर कहा करते थे, मैं अपने प्राण दे दूंगा किन्तु टिहरी राज्य के नागरिक अधिकारों को सामंती शासन के पंजे से

कुचलने नहीं दूंगा. 27 दिसम्बर, 1943 को जब उन्होंने टिहरी में प्रवेश के लिए यात्रा प्रारम्भ की तो उन्हें चम्बा में रोक दिया गया और 30 दिसम्बर, 1943 को उन्हें टिहरी कारागार में बंद कर भीषण

यातनाएं दी गई। उन्हें डराया-धमकाया गया और माफी मांगने के लिए बाध्य किया गया किन्तु **सुमन ने उत्तर दिया कि तुम मुझे तोड़ सकते हो, मोड़ नहीं सकते।**

21 फरवरी, 1944 को श्रीदेव सुमन पर राजद्रोह का मुकदमा चलाया गया और किसी भी वकील को उनकी पैरवी करने की स्वीकृति नहीं दी गई। उन्होंने अपने ऊपर लगे झूठे आरोपों की भी खिलाफत की । उन्होंने कहा कि सत्य और अहिंसा के सिद्धान्त पर विश्वास होने के कारण मैं किसी के प्रति घृणा और द्वेष का भाव नहीं रखता हूँ। 29 फरवरी, 1944 को उन्होंने जेल कर्मचारियों के दुर्व्यवहार के विरोध में अनशन प्रारम्भ किया और तीन मांगें राजा के पास भेजी - प्रजा मण्डल को मान्यता दें, मुझे पत्र व्यवहार करने की स्वतंत्रता दी जाये, और मेरे विरूद्ध झूठे मुकदमों की अपील राजा स्वयं सुने। उन्होंने यह भी कहा कि यदि मुझे 15 दिन में इस मांगों का उत्तर न मिला तो मैं आमरण अनशन प्रारम्भ कर दूंगा।

30 दिसम्बर, 1943 से 24 जुलाई, 1944 के दौरान जेल अधिकारियों की नृशंसता एवं बर्बरता से उन पर क्या बीती कौन जानता है । 3 मई, 1944 को उन्होंने जेल में ही अपना आमरण अनशन प्रारम्भ कर दिया। स्वास्थ्य चिंताजनक होने पर उन पर दबाव डाला गया भूख-हड़ताल समाप्त करने का, किन्तु अनशन तोड़ने के लिए इस योद्धा ने इंकार कर दिया और अंततः 25 जुलाई, 1944 को 84 दिन की भूख-हड़ताल के पश्चात् वह हंसते-हंसते देश के लिए शहीद हो गया। वह एक उज्जवल विभूति थे। मूक पद-दलित प्रजा की सेवा करना ही उनका एक-मात्र लक्ष्य था। उनके निधन से सचमुच गढ़वाल की एक अनुपम शख्सियत बहुत ही जल्दी इस संसार से विदा हो गयी, जिसके जिम्मे अभी बहुत कुछ करने को था।

डा. हरि वैष्णव

डा. हरि वैष्णव का जन्म नन्द प्रयाग, जिला चमोली में सन् 1918 को हुआ। चिकित्सा के क्षेत्र में मधुमेह जैसी बीमारी के उपचार के लिए अभूतपूर्व योगदान के लिए विश्व ख्याति अर्जित करने वाले चिकित्सक रहे। प्रारम्भिक शिक्षा लखनऊ में हुई. 1944 में किंग जार्ज मेडिकल कालेज, लखनऊ से स्नातक डिग्री प्राप्त की. 1953 में एडनबर्ग विश्वविद्यालय में एम.आर.सी.पी. और 1972 में एफ.आर.सी.पी. की उपाधियाँ प्राप्त हुई। डा. वैष्णव ने सर्वप्रथम 1957 में निल्लौर के क्रिश्चियन मेडिकल कालेज में शिक्षण कार्य प्रारम्भ किया। तत्पश्चात 1960 में दिल्ली के विलिंगटन (डा. राम मनोहर लोहिया) और लेडी हार्डिंग अस्पतालों में शिक्षण कार्य किया। मौलाना आजाद मेडिकल कालेज में प्रोफेसर ऑफ मेडिसिन पद पर कार्य करते हुए इस विभाग में विभागाध्यक्ष रहे. 1975 में सेवा निवृत्त होने तक अपने विभाग के विकास और उन्नयन के लिए कार्य करते रहे। डा. वैष्णव एसोसिएशन ऑफ फिजीसियन ऑफ इण्डिया के सक्रिय सदस्य रहे। ये डायबिटिक एसो. ऑफ इण्डिया तथा इण्डोकराइन सोसायटी ऑफ इण्डिया के अध्यक्ष भी रहे । डायबैटिक एसोसिएशन ऑफ इण्डिया की दिल्ली शाखा, इण्डियन र्‍यूमैटिक एसोसिएशन, दिल्ली तथा दिल्ली फिजीशियन सोसायटी के वे संस्थापक अध्यक्ष रहे।

निष्पक्षता, कर्तव्यनिष्ठ और ईमानदारी के धनी डा. वैष्णव किसी भी तरह के अन्याय और गलत बात को सहन नहीं करते थे। उन्होंने 300 से अधिक अनुसंधान पत्र, जिनमें मधुमेह, पथरी, गठिया और हड्डियों के रोगों का विश्लेषण है, प्रस्तुत किए। उन्हें मधुमेह के लिए वरिष्ठ "हाक्स्ट" पदक से विभूषित किया गया। किंग जार्ज मेडिकल कालेज, लखनऊ द्वारा आयोजित "कुँवर मेमोरियल लेक्चर माला" का प्रथम व्याख्यान देने का उन्हें गौरव हासिल हुआ। विभिन्न सम्मेलनों में भाग लेने के लिए डा. वैष्णव ने अनेक यूरोपियन एवं एशियाई देशों का भ्रमण किया। ब्यूनसआयर्स स्थित अर्जेन्टीना विश्वविद्यालय के औषधि विभाग द्वारा आमंत्रित डा. वैष्णव पहले भारतीय हैं। 1972 में भौतिक औषधि के संबंध में हुए अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन के डा. वैष्णव आयोजक सचिव रहे। साधारण जनता के लिए उन्होंने मधुमेह से कैसे छुटकारा पाया जा सकता है विषय पर एक पुस्तक लिखी। काल के क्रूर हाथों ने सन् 1981 में उन्हें जनता से हमेशा के लिए दूर कर दिया।

हेमवती नन्दन बहुगुणा

महान क्रांतिकारी राजनेता हेमवती नन्दन बहुगुणा का जन्म 25 अप्रैल सन् 1919 को जनपद पौड़ी, पट्टी चलणस्यूं के बुगाणी गाँव में हुआ था। उनके पिता श्री रेवती नन्दन बहुगुणा, रिवन्यू विभाग में पटवारी थे। बहुगुणा जी की प्रारम्भिक शिक्षा पौड़ी, ऊखीमठ, देवलगढ़ और देहरादून में हुई। उच्च शिक्षा के लिए सन् 1937 में इलाहाबाद चले गये। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से 1946 में बी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। इसी बीच इनका प्रथम विवाह श्री नारायणदत्त चन्दोला की सुपुत्री धनेश्वरी देवी के साथ धूमधाम से हुआ। दूसरा विवाह प्रसिद्ध साहित्यकार राम प्रसाद त्रिपाठी की सुपुत्री कमला देवी के साथ मई, 1946 में सम्पन्न हुआ।

बहुगुणा जी का राजनैतिक जीवन 1942 से प्रारम्भ होता है, जब वे अध्ययन के दौरान जेल गए। इस बीच इन्होंने "विद्यार्थी आन्दोलन" में खुलकर भाग लिय। इलाहाबाद विश्वविद्यालय में "स्टूडेन्ट यूनियन वर्किंग कमेटी" के सदस्य और फेडरेशन के सेक्रेट्री रहे। कई ट्रेड यूनियनें गठित की। इण्डियन नेशनल ट्रेड यूनियन कांग्रेस के सेक्रेट्री और आल इण्डिया डिफेन्स वर्कर्स फेडरेशन के प्रेसीडेन्ट (1953-57) रहे. 1960-69 में मण्डल, जिला और प्रदेश कांग्रेस कमेटियों के सदस्य और महासचिव रहे. 1975 तक अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य, कार्यकारिणी में विशेष आमंत्रित सदस्य और सेक्रेट्री जनरल रहे। बहुगुणा जी में विलक्षण संगठन क्षमता, राजनीतिक जोड़-तोड़ और तिकड़म जुडाने जैसे असाधारण गुण थे। इस महारथीपन से कई दिग्गज नेता इनसे दहशत खाते थे। इसी दहशत में उत्तर प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री चन्द्रभानु गुप्त ने इन्हें "नटवर लाल" नाम दे दिया। प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू और इन्दिरा गाँधी बहुगुणा जी के इन गुणों के कायल थे. 1969 में कांग्रेस(इ) में महासचिव के रूप में पार्टी संगठन में बहुगुणा जी ने अपनी जादुई क्षमता से जान भर दी थी। ग्रामीण जनों, मजदूरों, नौकरी पेशा लोगों, बुद्धिजीवियों और अल्पसंख्यकों (विशेषकर मुसलमानों) के बीच इनकी गहरी पैठ थी। इस छवि का लाभ इन्हें 1974 के चुनाव में मिला, जब इनके प्रतिपक्षी प्रत्याशी चन्द्रभानु गुप्त की लखनऊ में जमानत जब्त हो गई। पत्रकारों ने इन्हें Master operator of Power game (हिन्दुस्तान टाइम्स, 18 मार्च, 89) कहा था।

सन् 1973 में उत्तर प्रदेश में पी.ए.सी. विद्रोह के बाद कमलापति त्रिपाठी की सरकार गिर गई। बहुगुणा जी ने प्रदेश के मुख्यमंत्री का पद भार सम्भाला। अपनी सूझबूझ, साहस, तत्परता और निर्णय लेने की क्षमता से इन्होंने प्रदेश की बिगड़ती स्थिति पर नियंत्रण पा लिया। नारायण दत्त तिवारी के शब्दों में - "वे दूसरे के अनुशासन में नहीं, वरन अपने निर्णयों के आधार पर काम करते थे। सम्पूर्ण देश की राजनीति पर इनके बढ़ते प्रभाव को देखकर राजनेता इनके प्रधानमंत्री बनने के सपने देखने लगे थे। अर्जुन सिंह गुसाईं (सम्पादक: हिलाँस, मासिक, बम्बई) के अनुसार - "यह सर्वथा सम्भव था, यदि वे समझौते वाली प्रवृति अपनाते।" आपातकाल का इन्होंने बाबू जगजीवन राम के साथ मिलकर विरोध किया और लोकसभा की सदस्यता से त्यागपत्र दे दिया। घोर स्वाभिमानी बहुगुणा जी ने एक बार बतौर मुख्यमंत्री के संजय गाँधी की अगवानी करने अमौसी हवाई अड्डा जाने को इसलिए मना कर दिया था कि संजय गाँधी राजनीति में कुछ भी नहीं थे। विपरीत इसके, काँग्रेसी दिग्गज संजय के पैर छूते थे। इन्दिरा गाँधी, बहुगुणा जी से सदैव सशंकित रहती थीं।

बहुगुणा जी ने जमीन से चलकर अपनी विलक्षण योग्यता से राजनीति की छत को छुआ था, किन्तु शिखर नहीं चुन सके। इनका राजनीतिक सफर बेहद पथरीला और घुमावदार रहा, जिसमें लोच का अभाव रहा।

डा. हरि वैष्णव

डा. हरि वैष्णव का जन्म नन्द प्रयाग, जिला चमोली में सन् 1918 को हुआ। चिकित्सा के क्षेत्र में मधुमेह जैसी बीमारी के उपचार के लिए अभूतपूर्व योगदान के लिए विश्व ख्याति अर्जित करने वाले चिकित्सक रहे। प्रारम्भिक शिक्षा लखनऊ में हुई. 1944 में किंग जार्ज मेडिकल कालेज, लखनऊ से स्नातक डिग्री प्राप्त की. 1953 में एडनबर्ग विश्वविद्यालय में एम.आर.सी.पी. और 1972 में एफ.आर.सी.पी. की उपाधियाँ प्राप्त हुई। डा. वैष्णव ने सर्वप्रथम 1957 में निल्लौर के क्रिश्चियन मेडिकल कालेज में शिक्षण कार्य प्रारम्भ किया। तत्पश्चात 1960 में दिल्ली के विलिंगटन (डा. राम मनोहर लोहिया) और लेडी हार्डिंग अस्पतालों में शिक्षण कार्य किया। मौलाना आजाद मेडिकल कालेज में प्रोफेसर ऑफ मेडिसिन पद पर कार्य करते हुए इस विभाग में विभागाध्यक्ष रहे. 1975 में सेवा निवृत्त होने तक अपने विभाग के विकास और उन्नयन के लिए कार्य करते रहे। डा. वैष्णव एसोसिएशन ऑफ फिजीसियन ऑफ इण्डिया के सक्रिय सदस्य रहे। वे डायबिटिक एसो. ऑफ इण्डिया तथा इण्डोक्राइन सोसायटी ऑफ इण्डिया के अध्यक्ष भी रहे। डायबैटिक एसोसिएशन ऑफ इण्डिया की दिल्ली शाखा, इण्डियन र्यूमैटिक एसोसिएशन, दिल्ली तथा दिल्ली फिजीशियन सोसायटी के वे संस्थापक अध्यक्ष रहे।

निष्पक्षता, कर्तव्यनिष्ठ और ईमानदारी के धनी डा. वैष्णव किसी भी तरह के अन्याय और गलत बात को सहन नहीं करते थे। उन्होंने 300 से अधिक अनुसंधान पत्र, जिनमें मधुमेह, पथरी, गठिया और हड्डियों के रोगों का विश्लेषण है, प्रस्तुत किए। उन्हें मधुमेह के लिए वरिष्ठ "हाक्स्ट" पदक से विभूषित किया गया। किंग जार्ज मेडिकल कालेज, लखनऊ द्वारा आयोजित "कुँवर मेमोरियल लेक्चर माला" का प्रथम व्याख्यान देने का उन्हें गौरव हासिल हुआ। विभिन्न सम्मेलनों में भाग लेने के लिए डा. वैष्णव ने अनेक यूरोपियन एवं एशियाई देशों का भ्रमण किया। ब्यूनसआयर्स स्थित अर्जेन्टीना विश्वविद्यालय के औषधि विभाग द्वारा आमंत्रित डा. वैष्णव पहले भारतीय हैं। 1972 में भौतिक औषधि के संबंध में हुए अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन के डा. वैष्णव आयोजक सचिव रहे। साधारण जनता के लिए उन्होंने मधुमेह से कैसे छुटकारा पाया जा सकता है विषय पर एक पुस्तक लिखी। काल के क्रूर हाथों ने सन् 1981 में उन्हें जनता से हमेशा के लिऐ दूर कर दिया।

हेमवती नन्दन बहुगुणा

महान क्रांतिकारी राजनेता हेमवती नन्दन बहुगुणा का जन्म 25 अप्रैल सन् 1919 को जनपद पौड़ी, पट्टी चलणस्यूँ के बुघाणी गाँव में हुआ था। उनके पिता श्री रेवती नन्दन बहुगुणा, रिवन्यू विभाग में पटवारी थे। बहुगुणा जी की प्रारम्भिक शिक्षा पौड़ी, उखीमठ, देवलगढ़ और देहरादून में हुई। उच्च शिक्षा के लिए सन् 1937 में इलाहाबाद चले गय। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से 1946 में बी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। इसी बीच इनका प्रथम विवाह श्री नारायणदत्त चन्दोला की सुपुत्री धनेश्वरी देवी के साथ धूमधाम से हुआ। दूसरा विवाह प्रसिद्ध साहित्यकार राम प्रसाद त्रिपाठी की सुपुत्री कमला देवी के साथ मई, 1946 में सम्पन्न हुआ।

बहुगुणा जी का राजनैतिक जीवन 1942 से प्रारम्भ होता है, जब वे अध्ययन के दौरान जेल गए। इस बीच इन्होंने "विद्यार्थी आन्दोलन" में खुलकर भाग लिय। इलाहाबाद विश्वविद्यालय में "स्टूडेन्ट यूनियन वर्किंग कमेटी" के सदस्य और फेडरेशन के सेक्रेट्री रहे। कई ट्रेड यूनियनें गठित की। इण्डियन नेशनल ट्रेड यूनियन कांग्रेस के सेक्रेट्री और आल इण्डिया डिफेन्स वर्कर्स फेडरेशन के प्रेसीडेन्ट (1953-57) रहे. 1960-69 में मण्डल, जिला और प्रदेश कांग्रेस कमेटियों के सदस्य और महासचिव रहे. 1975 तक अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य, कार्यकारिणी में विशेष आमंत्रित सदस्य और सेक्रेट्री जनरल रहे। बहुगुणा जी में विलक्षण संगठन क्षमता, राजनीतिक जोड़-तोड़ और तिकड़म जुड़ाने जैसे असाधारण गुण थे। इस महारथीपन से कई दिग्गज नेता इनसे दहशत खाते थे। इसी दहशत में उत्तर प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री चन्द्रभानु गुप्त ने इन्हें "नटवर लाल" नाम दे दिया। प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू और इन्दिरा गाँधी बहुगुणा जी के इन गुणों के कायल थे. 1969 में कांग्रेस(इ) में महासचिव के रूप में पार्टी संगठन में बहुगुणा जी ने अपनी जादुई क्षमता से जान भर दी थी। ग्रामीण जनों, मजदूरों, नौकरी पेशा लोगों, बुद्धिजीवियों और अल्पसंख्यकों (विशेषकर मुसलमानों) के बीच इनकी गहरी पैठ थी। इस छवि का लाभ इन्हें 1974 के चुनाव में मिला, जब इनके प्रतिपक्षी प्रत्याशी चन्द्रभानु गुप्त की लखनऊ में जमानत जब्त हो गई। पत्रकारों ने इन्हें Master operator of Power game (हिन्दुस्तान टाइम्स, 18 मार्च, 89) कहा था।

सन् 1973 में उत्तर प्रदेश में पी.ए.सी. विद्रोह के बाद कमलापति त्रिपाठी की सरकार गिर गई। बहुगुणा जी ने प्रदेश के मुख्यमंत्री का पद भार सम्भाला। अपनी सूझबूझ, साहस, तत्परता और निर्णय लेने की क्षमता से इन्होंने प्रदेश की बिगड़ती स्थिति पर नियंत्रण पा लिया। नारायण दत्त तिवारी के शब्दों में - "वे दूसरे के अनुशासन में नहीं, वरन अपने निर्णयों के आधार पर काम करते थे। सम्पूर्ण देश की राजनीति पर इनके बढ़ते प्रभाव को देखकर राजनेता इनके प्रधानमंत्री बनने के सपने देखने लगे थे। अर्जुन सिंह गुसाईं (सम्पादक: हिलॉस, मासिक, बम्बई) के अनुसार - "यह सर्वथा सम्भव था, यदि वे समझौते वाली प्रवृति अपनाते।" आपातकाल का इन्होंने बाबू जगजीवन राम के साथ मिलकर विरोध किया और लोकसभा की सदस्यता से त्यागपत्र दे दिया। घोर स्वाभिमानी बहुगुणा जी ने एक बार बतौर मुख्यमंत्री वे संजय गाँधी की अगवानी करने अमौसी हवाई अड्डा जाने को इसलिए मना कर दिया था कि संजय गाँधी राजनीति में कुछ भी नहीं थे। विपरीत इसके, कॉंग्रेसी दिग्गज संजय के पैर छूते थे। इन्दिरा गाँधी, बहुगुणा जी से सदैव सशंकित रहती थीं।

बहुगुणा जी ने जमीन से चलकर अपनी विलक्षण योग्यता से राजनीति की छत को छुआ था, किन्तु शिखर नहीं चूम सके। इनका राजनीतिक सफर बेहद पथरीला और घुमावदार रहा, जिसमें लोच का अभाव रहा।

डेमोक्रेटिक सोशलिस्ट पार्टी, डी.एम.के.पी. लोकदल, जनता पार्टी, कांग्रेस फार डेमोक्रेसी और कांग्रेस पार्टी इनके राजनीतिक पड़ाव रहे। केन्द्र में बहुगुणा जी केबिनेट मिनिस्टर रहे, किन्तु कोई करिश्मा न दिखा सके। अलबत्ता उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री के रूप में जो काम ये कर गए, दूसरे न कर सके । इनकी मुख्य कर्मस्थली इलाहाबाद रही। बाद में गढ़वाल को चुना इन्होंने। इलाहाबाद की कई शिक्षण संस्थाओं से इनका सम्बन्ध रहा है। "इण्डियननाइज हम" इनकी लिखी चर्चित पुस्तक है। अपने राजनैतिक जीवन में आपने कई देशों की यात्राएं कीं, यथा - यू.के., यू.एस.ए. जर्मनी, फ्रांस, इटली, यू.ए.आर., यू.ए.ई., अल्जीरिया, रोमानिया, यू.एस.एस.आर., लीबिया, बहरीन और सऊदी अरब आदि।

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त राजनेता थे, हेमवती नन्दन बहुगुणा। जतो नाम ततो गुण, बहुगुणा बहुगुणों की खान थे। स्व. श्री सत्यनारायण शास्त्री बाबुलकर के शब्दों में - "कर्म योगेश्वर, जिस पक्ष में रहे, वहीं उनकी विजय हुई। मिट्टी से उगा पेड़ जो यह वृक्ष की शाखाओं की तरह राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के क्षितिज पर छा गया। अदम्य साहस और संकल्प का धनी स्वाभिमानी जो अकेला ही चलता रहा और जिसने कभी हार नहीं मानी, टूट गया लेकिन झुका नहीं। एक अकेला आदमी, सभी का आदमी, जिसके पीछे लोग दीवाने थे । अपने नाम से अपना पंथ चलाने वाला कर्म-योगेश्वर बहुगुणा। "टिहरी से सांसद रहे स्व. त्रेपन सिंह नेगी कहते थे - "उनके चिन्तन, प्रखर बुद्धि, प्रत्युत्पन्नमति एवं कार्य कुशलता की प्रतिपक्षी भी प्रशंसा करते हैं। "जनार्दन ठाकुर लिखते हैं - "एक ऐसा बदमाश, जिस पर प्यार आता है।"

गढ़वाल व कुमायुं मंडलों के विकास में भी इनका बहुत बड़ा योगदान रहा अपने मुख्यमंत्री काल में इन मंडलों में अनेक योजनाओं, शिक्षण संस्थानों की स्थापना की। कुमायूं एवं गढ़वाल विश्व विद्यालय की स्थापना उनकी देन है। गढ़वाल विश्वविद्यालय के नाम के साथ जुड़ा हेमवती नन्दन बहुगुणा शब्द, कर्मयोगी बहुगुणा को सम्मान देने का प्रतीक है। बहुगुणा जी उत्तराखण्ड के विकास के बारे में हमेशा चिन्तित रहते थे। उत्तर प्रदेश में मुख्यमंत्री रहते उन्होंने उत्तराखण्ड के लिए पृथक पर्वतीय विकास विभाग की स्थापना की। विभाग का अलग मंत्री बनाया। इससे उत्तराखण्ड के विकास को गति मिली। बहुगुणा जी के राजनीतिक जीवन का अन्तिम दशक बड़े उतार-चढ़ाव व संघर्षों से परिपूर्ण रहा। चौधरी देवीलाल को हरियाणा का मुख्यमंत्री बनवाने में बहुगुणा जी की भूमिका महत्वपूर्ण रही, यह दीगर बात है कि बाद में चौधरी देवीलाल ने उनके इस उपकार को विशेष महत्व नहीं दिया। देश को तथा भारतीय राजनीति को जब ऐसे दिग्गज राजनेता की बड़ी आवश्यकता थी, तो ऐसे समय पर बहुगुणा का स्वास्थ्य जवाब देने लगा और पर्याप्त एवं अथक प्रयासों के बावजूद उनके स्वास्थ्य में सुधार न आ पाया। अन्ततः 17 मार्च, 1989 को भारतीय राजनीति के इस चाणक्य ने इस संसार से विदाई ले ली।

चन्द्रकुँवर बर्त्वाल

प्रकृति के अनन्य चितेरे कवि चन्द्रकुँवर बर्त्वाल का नाम किसी परिचय का मोहताज नहीं है। साहित्य जगत में उन्होंने बहुत कम समय में अपनी प्रतिभा का ऐसा परिचय दिया कि सम्पूर्ण साहित्य जगत विस्मित-सा रह गया। हिन्दी साहित्य में चन्द्रकुँवर को सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के समकक्ष रखा जाता है। इनकी कविताएं हिमालय का प्रतिनिधित्व करती हैं जिनका कोई सानी नहीं है। ऐसा माना जाता है कि यदि किसी को हिन्दी साहित्य के छायावादी कवियों जैसे: प्रसाद, पन्त, निराला व महादेवी वर्मा के साहित्य संसार को किसी एक कवि में देखना हो तो वह कवि चन्द्रकुँवर है।

चन्द्रकुँवर का जन्म 20 अगस्त, 1919 को केदारनाथ के निकट तल्ला नागपुर पट्टी के गांव मालकोटी में भूपाल सिंह बर्त्वाल के घर में हुआ। कवि का वास्तविक नाम चन्द्रकुँवर बर्त्वाल था। प्राथमिक शिक्षा उखीमाण्डा में हुई। नागनाथ पोखरी से मिडिल पास किया, 1935 में पौड़ी के मिशन स्कूल से हाईस्कूल तथा 1937 में पौड़ी के डी.ए.वी. कॉलेज से इण्टर की परीक्षा उत्तीर्ण की। कठोर परिश्रम की वेदी पर स्वास्थ्य की भेंट भी चढ़ती रही। स्नातक हो जाने के पश्चात् एम.ए. करने के लिए ये लखनऊ गए किन्तु अब तक उनका शरीर मैदानों के कलह-कोलाहल एवं संघर्ष को सहने के अयोग्य और जर्जर हो चुका था । फलतः उन्हें पुनः गढ़माता की गोद में ही जाने को बाध्य होना पड़ा, किन्तु जीवन में अकर्मण्य रहना तो सीखा ही न था। अतः अगस्त्यमुनि के विद्यालय में शिक्षक के रूप में कार्य करने लगे। ज्ञात होता है कि वहाँ भी उन्हें शान्ति से नहीं रहने दिया। हिमगिरि की उपत्यकाओं में विचरण कर प्रकृति के साथ कल्लोल करने वाला मानस काल की गहन छाया का आभास पाकर निराशा का संबल ले बैठा। विधि की विडम्बना। जीवन का इक्कीसवाँ वसंत और पावस देखने की लालसा मन के लिए ही गढ़माता का एक लाल सरस्वती का लाडला निरन्तर सात वर्ष तक मृत्यु से जूझते हुए 14 सितम्बर 1947 को अनन्त यात्रा पर चला गया।

काव्य के अतिरिक्त इनके साहित्य में निबन्ध, लघु कहानियां, एकांकी, आलोचना, गद्यकाव्य, यात्रा विवरण आदि प्रमुख हैं। प्रारम्भ में इनकी कविताएं विद्यालय पत्रिका में छपीं। फिर कर्मभूमि का प्रकाशन प्रारम्भ होने के बाद 1939 से इनकी कविताएं कर्मभूमि में प्रकाशित होने लगीं। कुछ समय बाद इनके सहपाठी शम्भु प्रसाद बहुगुणा ने "नागिनी" शीर्षक से इनके मुखर निबन्धों का संग्रह प्रकाशित किया। 1945 में "हिमवन्त" प्रकाशित हुई, जिसे साहित्य जगत में बहुत सराहना मिली। चन्द्रकुँवर के "काफल पाक्कू" को हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ गीत के रूप में पहचान कर इसे प्रेम चन्द अभिनन्दन ग्रंथ में स्थान मिल।

नागेन्द्र सकलानी

पुजारगाँव सकलाना टिहरी गढ़वाल में वीर क्रान्तिकारी नागेन्द्र सकलानी का जन्म 16 दिसम्बर, 1920 को हुआ। तत्कालीन टिहरी रियासत में राजशाही के जुल्म के विरूद्ध आन्दोलन के दौरान शहीद-क्रान्तिकारी, देशप्रेमी, वामपंथी विचारक, प्रखर वक्ता, टिहरी का यह लाड़ला ज्यादा जीवन न जी सका, यह वेदना समाज को है। उन दिनों रियासत टिहरी में जनता पर सामन्तशाही का दमनचक्र जोरों पर था। दमन-चक्र का एक उदाहरण यहाँ प्रस्तुत है। एक दिन एक व्यक्ति टिहरी बाजार में एक फिल्मी गाना गुनगुना रहा था "दुनिया में गरीबों को आराम नहीं मिलता, रोते हैं तो हंसने का पैगाम नहीं मिलता।" बस, इतने पर ही वह हवालात में बन्द कर दिया गया। पं. दौलत राम के बड़े भाई ने कथा वाचन करते एक समय तुलसी दास जी की यह चौपाई दोहराई "जासुराज प्रिय प्रजा दुखारी, सो नृप अवस नरक अधिकारी", राजा के अफसरों ने उसे जेल में डाल दिया। इस दमन के विरूद्ध युवा नागेन्द्र के दिल में आग लगी थी । एक दिन नागेन्द्र सकलानी बृजेन्द्र गुप्त के साथ कठोर लक्ष्य को प्राप्त करने टिहरी की ओर चल दिए। उन्होंने जनता को सामन्तशाही शासन के विरूद्ध आन्दोलन के लिए तैयार किया। दादा दौलतराम के साथ उन्होंने जगह-जगह जन सभाएं कर जनता को जनान्दोलन के लिए तैयार किया। कड़ाकोट और डांगचौरा क्षेत्र में नागेन्द्र सकलानी को गिरफ्तार कर टिहरी जेल में डाल दिया गया । यहाँ नागेन्द्र ने भूख हड़ताल कर दी। भोजन के लिए उन पर बल प्रयोग किया गया। उन्होंने मुंह नहीं खोला तो दांत तोड़ दिए और मसूड़े छीले गए। इन प्रताड़नाओं का समाचार उन्होंने विद्यासागर नौटियाल के मार्फत रमेश सिन्हा को भिजवाया, जिसे बम्बई में "जनयुग अखबार" में प्रकाशित किया गया।

अभी ये लोग जेल में ही थे कि कड़ाकोट के किसानों ने विद्रोह कर दिया। उसकी शुरूआत सकलानी ने की थी कड़ाकोट डांगचौरा के किसानों की बीच सकलानी बहुत लोकप्रिय हो गये थे। नागेन्द्र तथा दादा दौलतराम की रिहाई की माँग करते हुए सैकड़ों किसान प्रदर्शनकारियों का दल डांगचौरा से पैदल टिहरी शहर की ओर चल दिया। टिहरी से हथियारबन्द पुलिस की टुकड़ियाँ पौखाल की ओर विद्रोही किसानों के उस सैलाब को रोकने चली। लेकिन वह उनके रोके नहीं रूका। करीब आठ बजे रात प्रदर्शनकारियों ने भादू की मगरी में प्रवेश कर लिया। हीवेट पाठशाला के मैदान में फौज को गोली चलाने का हुक्म हुआ। फौजियों ने बन्दूकें जमीन पर रख दी और कहा हम जनता को गोलियों से नहीं भून सकते। गोलियाँ नहीं चली। किसानों को तारबाड़ के घेरे में कैद कर लिया गया। ये नारे याद आते हैं :- "हम बरा बेगार - नहीं देंगे, हम नजराना - नहीं देंगे, हम पौनटोटी - नहीं देंगे, उत्तरदाई शासन - लेके रहेंगे।" कड़ाकोट के किसानों के इस विद्रोह से घबड़ाकर रियासती सरकार ने रियासत के अन्दर प्रजामण्डल को कानूनी मान्यता दे दी थी। टिहरी की राजनीति में नागेन्द्र सकलानी का सबसे बड़ा योगदान यह रहा कि उसने सोते हुए लोगों को जगाया और राजा की निरंकुश गुलामी के बोझ के नीचे दबी हुई भयभीत गुमसुम प्रजा को विद्रोही जनता के रूप में बदल दिया, निर्भीक जनता बन्द कमरों की फुसफुसाहट के बोझिल वातावरण से बाहर सड़कों पर निकल आयी और नारे लगाने लगी। कड़ाकोट के किसान विद्रोह ने राजाशाही की हिम्मत तोड़ दी। उसने "देश राज्य लोक परिषद" के शीर्षस्थ नेताओं से वार्ता की और उन नेताओं ने खुलेआम घोषणा की कि ये कम्युनिस्टों के द्वारा संचालित कड़ाकोट आन्दोलन की भर्त्सना करते हैं। नेताओं ने राजा के प्रति भक्ति की भी शपथ ली और राजा ने टिहरी राज्य में प्रजामण्डल को एक वैधानिक संस्था के रूप में मान्यता दे दी।

टिहरी में "प्रजामण्डल" का विधिवत कार्य शुरू हो गया। नागेन्द्र सकलानी भी उस प्रजामण्डल का "चवन्नी-सदस्य" बन गया और उसी के माध्यम से जनता के अन्दर कार्य करने लगा। बहुत लोगों को सकलानी का प्रजामण्डल के माध्यम से कार्य करना पसन्द नहीं था किन्तु यह एक निर्विवाद सत्य है कि नागेन्द्र सकलानी के बगैर प्रजा-मण्डल की नीतियों को आम जनता में नहीं ले जाया जा सकता था। भारत की आजादी के दिन टिहरी की रियासती हुकूमत ने टिहरी पोलोग्राउन्ड में एक विशेष जलसा करके घोषणा की थी कि विदेश-सम्बन्ध, मुद्रा और डाक-तार के अलावा, अंग्रेजों के भारत से चले जाने के कारण, टिहरी रियासत पूर्ण सार्वभौम व स्वच्छन्द हो गयी। स्वाधीनता भारत की नई सरकार ने टिहरी रियासत की इस घोषणा पर अपनी प्रतिक्रिया प्रकट नहीं की। किन्तु टिहरी की जनता ने इसे बर्दाश्त नहीं किया और राजाशाही के खिलाफ अन्तिम बगावत छेड़ दी। "आखिरी जंग" नागेन्द्र की जन्म भूमि सकलाना से शुरू हुई और उसकी समाप्ति शहीद मोलू भरदारी के क्षेत्र कीर्तिनगर में हुई।

3 दिसम्बर, 1946 को नागेन्द्र सकलानी रिहा कर दिये गए। इसके बाद उन्होंने आन्दोलन का नेतृत्व करने वाली अपनी जन्मभूमि सकलाना में कदम रखे और जन-आन्दोलन कर बगावत का वातावरण बनाया। क्यारा, कीर्तिनगर, ऋषिकेश आदि स्थानों पर सत्याग्रही कैम्पों का गठन किया. 11 जनवरी, 1948 का वह रक्तरंजित दिन, आन्दोलनकारियों ने कीर्तिनगर कचहरी पर आग लगा दी, सभी राज कर्मचारियों को बन्दी बना लिया गया। जवाब में पुलिस ने गोलियाँ चलाई । भगदड़ में कुछ अहलकार भाग निकले। इनमें से नागेन्द्र ने एक का पीछा किया, किन्तु उसकी गोली से वे वहीं शहीद हो गए। उसी दिन, इन्हीं के साथ मोलू भरदारी भी शहीद हुए। नागेन्द्र सकलानी की शहादत ने टिहरी से राजशाही का अन्त करने में अहम भूमिका निभाई।

नरेन्द्र सिंह भण्डारी

नरेन्द्र सिंह भण्डारी का जन्म जनपद चमोली स्थित ग्राम पोखरी, नागपुर में सन् 1920 में हुआ। नरेन्द्र सिंह भण्डारी ने अध्यापक, लेखक, पत्रकार और राजनेता के रूप में जनता की बड़ी सेवा की. 1944 में लखनऊ विश्वविद्यालय से एम.ए.(अर्थशास्त्र) की डिग्री प्राप्त की। तदुपरान्त लगभग 2 वर्ष इसी विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य किया। कुछ और नया करने की लालसा लेकर अपने जनपद चमोली की ओर मुड़े और गृह जनपद में उत्तराखण्ड विद्यापीठ की स्थापना की। इससे वे सन्तुष्ट नहीं हुए और और आगे बढ़े पैमानों की ओर। लखनऊ में कांग्रेस ने उन्हें अपना अखबार "नया भारत" के सम्पादन का दायित्व सौंपा। यहीं से इनके राजनैतिक जीवन का शुभारम्भ हुआ। सम्पादक के रूप में इन्होंने बहुत ख्याति अर्जित की। इनकी लोकप्रियता में उत्तरोत्तर वृद्धि होती चली गई।

राजनीति में प्रवेश करने के बाद चुनाव लड़ा और सब बार सफल रहे। पहली बार 1957, दूसरी बार 1962 और तीसरी बार 1974 में बद्री केदार क्षेत्र से उत्तर प्रदेश विधान सभा के लिए विधायक चुने गये. 1971 से 1977 तक प्रदेश मंत्रिमंडल में कारागार विभाग, शिक्षा, सिंचाई, राजस्व और विभिन्न विभागों में मंत्री पद का कुशलता पूर्वक निर्वहन किया। सन् 1960 में भंडारी जी ने 4, महात्मा गांधी मार्ग, लखनऊ से "हलन्त साप्ताहिक" हिन्दी समाचार पत्र का सम्पादन और प्रकाशन प्रारम्भ किया। 1987 तक यह पत्र नियमित रूप से प्रकाशित हुआ। शासन ने इनके लम्बे और उल्लेखनीय अनुभव और कार्यकुशलता का लाभ उठाने का निर्णय लिया। इन्हें तराई विकास निगम, उत्तर प्रदेश परिवहन निगम तथा उत्तराखण्ड वन निगम का अध्यक्ष मनोनीत किया।

इनकी लिखी पुस्तक "बद्री धाम और गढ़वाल", लोक संस्कृति और साहित्य का वर्णन है। नरेन्द्र सिंह भण्डारी ने जनपद के चमोली के विकास के लिए अथक प्रयत्न किए। प्रदेश तथा जनपद को उनसे और बड़ी अपेक्षाएं थी, किन्तु वह शासन के बीच और ज्यादा न रह सके. 1988 में उन्होंने अपने जीवन की अन्तिम सांस ली और इस संसार से विदा हो गए।

श्री त्रेपन सिंह नेगी

त्रेपन सिंह नेगी का जन्म ग्राम गौंत, पट्टी क्वीली, टिहरी गढ़वाल में 1921 में हुआ। टिहरी जनक्रान्ति के प्रमुख सेनानी के नेता, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, पृथक उत्तराखण्ड राज्य के प्रबल समर्थक, ईमानदार राजनेता, पूर्व विधायक और सांसद नेगी जी जब हाईस्कूल में पढ़ रहे थे, तभी उन्होंने देखा कि श्रीदेव सुमन और दयाराम नेगी टिहरी राजशाही के अत्याचारों के विरोध में आन्दोलन चला रहे हैं. तो वे बीच में ही पढ़ाई छोड़कर क्रांतिकारियों में मिल गए। बाद में उच्च शिक्षा के लिए लाहौर चले गए। वहीं से बी.ए. पास किया। वहाँ से वापस आकर लखनऊ चले गए। बाद में लखनऊ से एल.एल.बी. की डिग्री ली. 1947 में अपने पैतृक स्थान टिहरी गढ़वाल लौटे.

1948 में जब रियासत ने आन्दोलनकारी नेताओं को रियासत छोड़ने के लिए मजबूर किया जा रहा था, तो नेगी जी भूमिगत रहकर रियासत के जन आन्दोलन में कूद गए। कीर्तिनगर में नागेन्द्र सकलानी और मोलू भरदारी के शहीद हो जाने के बाद नेगी जी ने आन्दोलन का नेतृत्व किया। इसी बीच गिरफ्तार कर लिए गए और 52 दिन जेल की सजा काटी। रियासत का भारत संघ में विलीनीकरण के पश्चात् उत्तर प्रदेश की प्रोविजनल विधान सभा के लिए राज्यपाल द्वारा सदस्य मनोनीत किए गए। बाद के वर्षों में नेगी जी ने जनता से आह्वान किया कि पृथक उत्तराखण्ड राज्य के बिना यहाँ का विकास नहीं हो सकता है। इसी भावना से 1977 में उन्होंने दिल्ली में उत्तराखण्ड राज्य परिषद का गठन किया। 1979 में बोट क्लब, दिल्ली में विशाल ऐतिहासिक रैली का आयोजन किया। प्रवासियों में उत्तराखण्ड राज्य के प्रति अलख जगाने में नेगी जी ने अपने ढंग से कार्य किया।

जीवन के अन्तिम क्षणों तक आप उत्तराखण्ड राज्य प्राप्ति के लिए संघर्षरत रहे। आज पृथक उत्तराखण्ड राज्य अस्तित्व में आ गया है। काश ! नेगी जी यह सब देख पाते तो सपना साकार होने की कितनी प्रसन्नता होती। व्यक्तिगत और राजनैतिक जीवन में नेगी जी सदैव चरित्रवान रहे. 75 वर्ष की आयु पूरी करने के पश्चात् सन् 1996 में वह स्वर्ग सिधारे।

इन्द्रमणी बडोनी

23 दिसम्बर, 1924 को जनपद टिहरी के जखोली विकास खंड के अखोड़ी गांव में जन्मे "उत्तराखण्ड के गांधी" के नाम से प्रसिद्ध इन्द्रमणी बडोनी उत्तराखण्ड राज्य आन्दोलन के पुरोधा रहे। उत्तरांखण्ड के आम आदमी में अपनी सरल व सहज पहचान बनाने वाले स्वर्गीय इन्द्रमणी बडोनी राज्य आन्दोलन के शीर्ष लोकनायक और सर्वाधिक प्रतिष्ठा प्राप्त राजनेता थे। अपने छात्र जीवन से ही वह सामाजिक-सांस्कृतिक गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी करने लगे थे।

स्वतंत्र भारत के पहले पंचायत चुनावों में वह 1962 में जखोली विकास खण्ड के क्षेत्र प्रमुख निर्वाचित हुए और इसके बाद उनकी सामाजिक-राजनैतिक सक्रियता लगातार बढ़ती रही. 1967 में वह पहली बार देवप्रयाग विधान सभा से विधायक निर्वाचित हुए। उन्होंने तीन बार उत्तर प्रदेश विधान सभा में देवप्रयाग क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया तथा पर्वतीय विकास मंत्रालय के उपाध्यक्ष भी रहे।

2 अगस्त, 1994 को पौढ़ी में उत्तराखण्ड राज्य की मांग को लेकर आमरण अनशन पर बैठे. 7 अगस्त को प्रशासन ने विरोध के बावजूद बडोनी को गिरफ्तार कर मेरठ मेडिकल कॉलेज भेज दिया। उनकी गिरफ्तारी से सम्पूर्ण उत्तराखण्ड पृथक राज्य आन्दोलन की आंच में झुलस उठा। यद्यपि लगातार आन्दोलन जनता के अथक संघर्ष के फलस्वरूप 9 नवम्बर, 2000 को उत्तरांचल राज्य का गठन हो गया लेकिन राज्य निर्माण से पूर्व उत्तरांचल के निर्माण का पुरोधा 18 अगस्त, 1999 को हमारे बीच से हमेशा के लिए उठ गया और जो कल्पना उनके मन में उत्तरांचल राज्य की थी वह उनके जीते जी पूरी नहीं हो सकी।

गौरा देवी

गौरा देवी का जन्म सन् 1925 के आसपास बताया जाता है। नंदा देवी अभयारण्य के अन्तिम गॉव लाता, जिला चमोली, में उनका जन्म हुआ। अन्तर्राष्ट्रीय जगत में "चिपको वूमन" नाम से प्रसिद्ध हुई। वन संरक्षण से पर्यावरण की शुद्धि और मानव के अस्तित्व की सुरक्षा के लिए विश्व स्तर पर चलाई जा रही जनचेतना की शुरुआत "चिपको" के माध्यम से करने वाली गौरा देवी उन चन्द गुमनाम वन-सेवियों में से हैं जिनकी पहल भविष्य में मानव जाति के लिए प्रेरणा बनी रहेगी । पेड़ों को कटने से बचाने के लिए पेड़ पर चिपक कर कुल्हाड़ी की मार को अपने शरीर पर झेलने का साहसिक कार्य ही "चिपको" है. 12 वर्ष की आयु में चमोली जिले के दूरस्थ सीमान्त रैणी गॉव के मेहरबान सिंह के साथ गौरा देवी का विवाह हुआ। रैणी गॅाव तोलच्छा जाति के भोटियों का गॉव है। गुजर-बसर के लिए पशुपालन, ऊनी कारोबार और थोड़ी सी खेती थी. 22 वर्ष की आयु में ही गौरा देवी पर वैधव्य का कटु प्रहार हुआ और वह भरी जवानी में विधवा हो गई। तब उसका एक मात्र पुत्र चन्द्र सिंह ढाई वर्ष का था।

1969 में अलकनन्दा नदी में आई प्रलयकारी बाढ़ ने एक पर्यावरणीय सोच को जन्म दिया. 1962 में हुए भारत-चीन युद्ध के उपरान्त मोटर मार्गों के बिछते जाल ने पर्यावरणीय समस्याओं को जन्म दिया। बाढ़ से प्रभावित लोगों में संवेदनशील पहाड़ों के प्रति चेतना जागी. 1972 में गौरा देवी महिला मंगल दल की अध्यक्ष बनी. 1973 में और उसके बाद गोविन्द सिंह रावत, चण्डी प्रसाद भट्ट, वासवानन्द नौटियाल, हयात सिंह आदि कई छात्र इस क्षेत्र में आए। आसपास के गांवों तथा रैणी में सभाएं हुई। जनवरी, 1974 में रैणी के जंगल के 2451 पेड़ों की कटान की बोली लगने वाली थी. 15 और 24 मार्च, 1974 को जोशीमठ में तथा 23 मार्च को जिला मुख्यालय गोपेश्वर में रैणी गॉव से लगे जंगल के कटान के विरुद्ध प्रदर्शन के बावजूद मजदूर जंगल कटाने को रैणी गॉव पहुँचने लगे। वन विभाग के कर्मचारियों के संरक्षण में ठेकेदार के मजदूर ऋषिगंगा के किनारे-किनारे जंगल की ओर बढ़े। महिला मंगल दल की अध्यक्षा गौरा देवी पर आज एक सामुदायिक उत्तरदायित्व के निर्वाह का बोझ आन पड़ा था। घर-परिवार के कार्यों में व्यस्त 21 महिलाएं तथा कुछ बच्चे देखते-देखते जंगल की ओर चल पड़े। इनमें बनी देवी, महादेवी, गौरा देवी, भूसी देवी, नृत्यी देवी, नीलामती, उमा देवी, हरकी देवी, बाली देवी, पासा देवी, रूक्का देवी, रूपसा देवी, तिलाड़ी देवी, इन्द्री देवी आदि शामिल थी। आशंका और गजब के आत्मविश्वास के साथ वे आगे बढ़ती चली गई। इन सबने खाना बना रहे मजदूरों से कहा - "भाइयों यह जंगल हमारा-आपका है, इससे हमें जड़ी-बूटी, सब्जी, फल, लकड़ी मिलती है। जंगल काटोगे तो बाढ़ आएगी, हमारे बगड़ (खेत-खलिहान) बह जायेंगे। खाना खा लो और फिर हमारे साथ चलो, जब हमारे मर्द आ जाएंगे, तो फैसला होगा"। ठेकेदार और जंगलात के आदमी उन्हें धमकाने लगा। काम में बाधा डालने पर गिरफ्तारी की धमकी दी। महिलाएं डरी नहीं, कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। मगर उन देवी स्वरूपा महिलाओं के भीतर छिपा रौद्र रूप तब गौरा देवी के मार्फत प्रकट हुआ, जब एक ने बंदूक निकालकर उनकी ओर तानी। आगे बढ़ कर गरजते हुए उन्होंने कहा - " मारो गोली और काट लो हमारा मायका"। ऐसा जवाब सुनकर मजदूरों में भगदड़ मच गई। ठेकेदार के आदमियों ने पुनः गौरा देवी को डराने-धमकाने का प्रयास किया, यहां तक कि उसके मुंह पर थूक तक दिया, किन्तु गौरा देवी ने संयम नहीं खोया। मायका बच गया, प्रतिरोध की सौम्यता और गरिमा बनी रही. 27 और 31 मार्च को फिर रैणी गॉव में सभा हुई और बारी-बारी से वन की निगरानी शुरू हुई।

इस घटना से पूरे तंत्र पर इतना भारी दबाव पड़ा कि डा. वीरेन्द्र कुमार की अध्यक्षता में जांच कमेटी बिठाई गई। रेणी के जंगल के साथ-साथ अलकनन्दा में बांई ओर से मिलने वाली समस्त नदियों-ऋषिगंगा, पातालगंगा, गरुड़गंगा, विरही और मन्दाकिनी के जल संग्रहण क्षेत्रों तथा कुंवारी पर्वत के जंगलों की सुरक्षा की बात उभरकर सामने आई और सरकार को इस हेतु निर्णय लेने पड़े। अब तक सीमांत का खामोश गाँव रेणी दुनिया का एक चर्चित गांव हो गया। गौरा देवी "चिपको" की प्रतीक बन गई। गौरा देवी के नेतृत्व में स्त्रियों ने कुल्हाड़ी से वृक्षों की जो रक्षा की वह घटना पूरे विश्व में पर्यावरण चेतना के नवजागरण का सूत्रपात कर गई। उसके परिणामस्वरूप सरकार ने ठेका प्रणाली समाप्त कर दी। उत्तर प्रदेश वन निगम की स्थापना की। ऐसी थी गौरादेवी। वनों की रक्षा तथा पर्यावरण बचाओं की इस ध्वजवाहक महादेवी ने 4 जुलाई 1991 को हमेशा के लिए इस संसार से विदाई ले ली, किन्तु पर्यावरणविदों की सोच के लिए एक गम्भीर विचार दे गई।

उत्तराखण्ड में शुरू हुआ "चिपको आन्दोलन" उत्तर में हिमाचल, पूरब में बिहार, दक्षिण में कर्नाटक(अप्पिको), पश्चिम में राजस्थान तथा विन्ध्याचल तक फैला। गौरा देवी का इतिहास पत्रकारों, फाइलों, चित्रों, शोधार्थियों के लिए एक विषय मात्र बनकर रह गया है। ठेकेदारों से वनों को बचाने के इस प्रसंग को कैलीफोर्निया और स्वीडन तक के पर्यावरणविदों ने सराहा है। गौरा देवी ने जो फसल बोई थी, आज उसे कई लोग काट रहे हैं। उल्लेखनीय है, ख्यातिप्राप्त पर्यावरणविद् श्री सुन्दरलाल बहुगुणा तब तक सर्वोदयी थे, पर्यावरण के क्षेत्र में वे चिपको के बाद उतरे।

मेजर नरेन्द्रधर जुयाल

मेजर नरेन्द्रधर जुयाल का जन्म 1926 में नरेन्द्र नगर, टिहरी गढ़वाल में हुआ। उनका पैतृक गाँव झाअड़, पट्टी, सितोनस्यूं, पौड़ी गढ़वाल था। अदम्य साहसी और संकटों से जूझने वाला अनोखा पर्वतारोही, टिहरी रियासत के चर्चित दीवान चक्रधर जुयाल के मंझले पुत्र थे। देहरादून के दून स्कूल से सीनियर कैम्ब्रिज पास कर 1946 में सेना में कमीशन प्राप्त अधिकारी बने तथा पदोन्नत होकर मेजर पद तक पहुँचे। प्रकृति तथा पर्वतों से अपको जन्म से ही लगाव रहा। सैन्य जीवन में आपने हिमालय की कई दुरूह, अविजित चोटियों पर अभियान दलों के साथ पर्वतारोहण अभियानों में भाग लिया।

पर्वतारोहण जैसे दुस्साहसिक कार्यों में आपकी रूचि, पर्वतों से अटूट स्नेह, साहस और पूर्व अनुभव को देखकर मात्र 29 वर्ष की आयु में आपको देश के पहले पर्वतारोहण संस्थान "हिमालयन माउण्टेनियरिंग इंस्टीट्यूट", दार्जीलिंग का प्रथम प्रिंसिपल नियुक्त किया गया। आपके सहयोग के लिए प्रथम एवरेस्ट विजेता तेनजिंग नार्के को डायरेक्टर ऑफ फील्ड ट्रेनिंग नियुक्त किया गया। पर्वतारोहण में विशेष प्रशिक्षणात्मक अनुभव प्राप्त करने पर आप और तेनजिंग नोर्के ज्यूरिख(स्विट्जरलैण्ड) गए। वहां से आपको गाइड्स डिप्लोमा और बैज प्राप्त हुआ।

1955 में गढ़वाल मण्डल में अवस्थित कामेट शिखर पर, बंगाल सैपर्स एण्ड माइनर्स के संयुक्त तत्वावधान में, एक अभियान दल के साथ विजय प्राप्त की. 1956 में जम्मू-काश्मीर की सकांग (24,150) चोटी पर सफल आरोहण किया. 1957 में नन्दादेवी चोटी पर चढ़ने का प्रयास किया, किन्तु भयंकर बर्फीले तूफान के कारण चोटी के करीब से ही वापस लौट आना पड़ा. 1958 में एवरेस्ट से लगी विश्व की छठी सबसे ऊँची चोटी चो-ओयू, 26867 फीट पर आरोहण करते प्रथम शिविर पर पहुँचने से पहले ही न्यूमोनिया के कारण 28 अप्रैल, 1958 को मृत्यु की गोद में सो गए। आपकी इच्छानुसार आपके शव को वहीं बर्फ में दफना दिया गया। उत्तराखण्ड का यह महान सपूत महान पर्वत, शैल-शिखाओं का प्रकृति प्रेमी आजीवन अविवाहित रहा। एवरेस्ट पर चढ़ने का उनका स्वप्न उन्हीं के साथ दफन हो गया।

अबोध बन्धु बहुगुणा

अबोध बन्धु बहुगुणा उत्तराखण्ड के कृती साहित्यकार हैं। ये हिन्दी और गढ़वाल भाषा के गणमान्य कवि हैं। इन्होंने काव्य, नाटक, कहानी आदि साहित्य की सभी विधाओं में रचनाएं की हैं, इसमें उनकी गहरी पैठ है। इनके काव्यों में गढ़वाल की बुद्धि झलकती है। इनका भाषा पर अपूर्व और असाधारण अधिकार के रहते आपके समसामयिक विद्वानों ने आपके कार्य की भूरी-भूरी प्रशंसा की है। आपके द्वारा रचित महाकाव्य "भूम्याल" पर ही विद्वान लेखकों ने जितने लेख लिखे हैं, उतने किसी भी पहाड़ी लेखक के कार्य पर शायद ही कभी लिखे गए हों। इस महाकाव्य पर गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर(गढ़वाल) टिहरी परिसर के हिन्दी विभागाध्यक्ष के निर्देशन में वर्ष 1988-89 में "गढ़वाली महाकाव्य भूम्याल में युगीन संदर्भ" नामक 134 पृष्ठ का एक उत्कृष्ट लघु शोध-प्रबंध लिखा गया है।

अबोध बन्धु के बारे में कुछ प्रसिद्ध लेखकों, साहित्यकारों के विचार: ठाकुर शूरवीरसिंह पंवार के शब्दों में "आपकी महान कृतियों में गढ़वाल की दिव्य आत्मा के जितने साक्षात् दर्शन होते हैं और जितना सुन्दर, सरस तथा स्वाभाविक वर्णन इस पुण्य भूमि की समस्त छवि परम्परा एवं ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन उनमें मिलता है उससे स्वतः प्रत्यक्ष प्रकट होता है कि केदार-खण्ड गढ़वाल का सपूत कवि कुल चूड़ामणि कालिदास ही आज दो हजार वर्ष पश्चात् पुनः आपके रूप में, शरीर धारण कर नव सरस्वती के साहित्य सदन के भण्डार की पूर्ति करने को अवतरित हो गया है।" डा. पुरुषोत्तम डोभाल के शब्दों में "हिन्दी भाषा साहित्य और गढ़वाली भाषा साहित्य के क्षेत्र में बहुचर्चित हैं। ये समान रूप से भगवान अर्द्ध-नारीश्वर की भांति एक ओर सुकुमार मधुर करुण काव्य के सृष्टा तो दूसरी ओर आंचलिक भाषा साहित्य के प्रबुद्ध तथा सशक्त मेधा हैं । इन निरंतर चार दशकों में हमें ये देश के प्रतिभाशाली कृतिकारों में अपना गौरवपूर्ण स्थान बनाते दिखे। साहित्य की सभी विधाओं में उन्होंने अब तक जो लिखा है वह उन्हें जीवन्त सारस्वत एवं सर्वांगीण प्रतिभा का देवता सा प्रमाणित करता है।" "सारवान तथ्यों की निबंधना अबोध बन्धु की विशेषता है । उसने पहाड़ को वाणी दी है। उसकी महकती हुई अनुभूतियों की गूंज प्राणवान है।" डा. शिवानन्द नौटियाल। "गढ़वाली लोक भाषा में अबोध बन्धु का सर्वाधिक सक्रिय योगदान रहा है । गीत, कविता, कहानी, नाटक, ललित-निबन्ध और काव्य कृतियों का इन्होंने गढ़वाली लोकभाषा में प्रणयन किया है । ये रचनाएं चिरकाल तक संस्मरणीय रहेंगी। गढ़वाली लोकभाषा के उत्थान के चौथे दशक में, लोकभाषा में काव्य और महाकाव्य के अबोध पहले जन्मदाता हैं" - मोहन लाल बाबुलकर। "हिमवन्त की उत्तुंगता एवं अलकनन्दा-मंदाकिनी की पावन रसवत्ता के प्राणवान प्रकृति परिवेश से संपृक्त बहुगुणा का काव्य कृतित्व व्यापक लोक जीवन के बहुमुखी चित्रण से अभिमण्डित है जो साहित्य की सरस विविध विधाओं में विलसित होकर किसी भी साहित्य को आकृष्ट करने में सर्वथा समर्थ है" - डा. कैलाश नाथ द्विवेदी।

श्री अबोध बन्धु बहुगुणा का जन्म बुधवार 15 जून, 1927 ई0 को उत्तरांचल के जिला पौड़ी गढ़वाल की पट्टी चलणस्यूं के अंतर्गत झाला ग्राम में हुआ। इनका जन्म का नाम नागेन्द्र प्रसाद था। साहित्यिक क्षेत्र में पदार्पण पर "अबोध बन्धु" के नाम से प्रसिद्ध हुए। इनके पिता पं. मित्रानन्द बहुगुणा इलाके के नामी वैद्य थे। अबोध बन्धु की प्रारम्भिक शिक्षा अपने गांव झाला की प्राइमरी पाठशाला में हुई । साथ ही पिता के संरक्षण में वे अमरकोष एवं बालबोध आदि भी पढ़ते रहे। किन्तु मिडिल स्कूल-खिरसू में जाते ही इन्हें लगा कि अपने पुश्तैनी पेशे वैद्यक और ज्योतिष के बजाय अंग्रेजी पढ़ना आज के जमाने में बेहतर रहेगा। इसी लगन से ये पौड़ी के मैसमोर हाईस्कूल में भर्ती हुए और वहाँ इन्होंने अच्छी योग्यता दिखाई। किशोरावस्था तक पहाड़ में ही रहने के कारण इनके मन पर पर्वतीय जन-जीवन, प्रकृति और हिमालय के वनों की छटा का गहरा प्रभाव पड़ा। किशोर मन को महात्मा गाँधी की प्रेरणा ने अछूता नहीं छोड़ा। पौड़ी शहर में "प्रोसेसन" ले जाने वाले अग्रणी छात्रों के साथ रहे। स्कूल जीवन में वे प्रथम पंक्ति के छात्रों में रहे। गढ़वाली भाषा के उन्नायकों में इनका नाम अग्रणी पंक्ति में आता है। इन्होंने

साहित्य की सभी विधाओं को अपने उत्कृष्ट कृतित्व से परिपुष्ट किया, जिससे भाषा का संस्कार हुआ है। पद्य की ही नहीं उन्होंने गद्य की भाषा को भी सचेष्ट भाव से शुद्ध गढ़वाली परागों से संयोजित और सुसज्जित करके भाषा को यथार्थ स्वरूप प्रदान करने हेतु ठोस कार्य किया। "पहाड़ी" जी जैसे कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अपने पत्रों में इनसे भाषा निर्माण की बात करते हैं। तथापि "मोहन लाल बाबुलकर" का कथन है कि पहाड़ी भाषा (गढ़वाली) में अबोध बन्धु बहुगुणा जैसे व्यक्ति ही लिख सकते हैं । इनकी कलम का सानी नहीं है। इसी दृष्टि से देवभूमि के संपादक ने इन्हें पर्वतीय जन-जीवन का व्याख्याता कहा है तो भक्त दर्शन ने गढ़वाली भाषा और साहित्य का सफल उन्नायक।

अपनी बहुमुखी प्रतिभा के कारण अबोध बन्धु ने गढ़वाली भाषा व साहित्य को वह दृढ़ व विस्तृत आकार प्रस्तुत किया कि आने वाले शोधकर्ता उनको गढ़वाल के युग-प्रवर्तक साहित्यकार के रूप में पहचानेंगे। हिन्दी में जो स्थान भारतेन्दु हरिश्चन्द्र व जयशंकर प्रसाद का है वही स्थान गढ़वाली साहित्य में अबोध बन्धु बहुगुणा का है। भाषा और साहित्य के विविध रूपों को उन्होंने अपना सहयोग और समर्थन प्रदान किया है। "गाड म्यटेकि गंगा" में गढ़वाली गद्य का स्वरूप व इतिहास तथा "शैलवाणी" में गढ़वाली पद्य साहित्य का इतिहास व विवरण तो किसी भी साहित्य के इतिहास के लिए एक आदर्श स्तम्भ(माइल स्टोन) के रूप में सदैव शोधार्थियों की प्रेरणा विषय वस्तु रहेगी। इनके द्वारा रचित "गढ़वाली भाषा व्याकरण" भी विद्वानों को आगे कार्य करने के लिए चुनौती बना ही रहेगा। भाषा पर बहुगुणा का जबरदस्त अधिकार है फिर चाहे वह गढ़वाली हो या हिन्दी उनकी भाषा के बीच-बीच में लोकोक्ति और मुहावरों की झड़ियां एक ओर भाषा के स्वरूप में चार चांद लगाती हैं, तो दूसरी ओर इनसे भाषा का अर्थ प्रवणता में चौगुनी शक्ति आ जाती है। "अरण्य रोदन" की कुछ कविताओं की भाषा छायावादी कवियों की भाषा से टक्कर लेती हुई दिखाई पड़ती है तो "अंख-पंख" तथा अन्य गढ़वाली ग्रंथों की भाषा स्वर्गीय घनश्याम बहुगुणा व पं0 जयदेव बहुगुणा के लोक गीतों के समकक्ष हैं ।

विभिन्न साहित्यिक संस्थाओं द्वारा अबोध बन्धु बहुगुणा को दिए गए सम्मान इस प्रकार हैं:-लोक भारती चमोली द्वारा "अभिनन्दन", गढ़वाली भाषा परिषद् देहरादून द्वारा "मानपत्र" व "जय श्री पुरस्कार", गढ़वाली भाषा संगम टिहरी द्वारा "अभिनन्दन"। गढ़वाल भ्रातृ मंडल बम्बई द्वारा "गढ़रत्न-सम्मान", उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा "डा.पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल पुरस्कार", गढ़वाल हितैषिणी सभा दिल्ली द्वारा "मानपत्र", जैमिनी अकादमी पानीपत द्वारा "आचार्य की उपाधि", सुरभि-साहित्य-संस्कृति, मध्य प्रदेश द्वारा "साहित्य शिरोमणी अलंकरण", भारतीय संस्कृति एवं साहित्य संस्थान इलाहाबाद द्वारा - "काव्य भूषण" की उपाधि प्रदान की गयी। अबोध बन्धु ने काव्य, लोक गीत, लोक कथा, नाटक, एकांकी, निबन्ध, कहानी-संग्रह, उपन्यास, सम्पादन, भाषा-विज्ञान आदि कई विधाओं के माध्यम से रचनाएं सृजित कर साहित्य की बड़ी सेवा की है। उन्होंने अपने जीवन काल में 20 से भी अधिक ऐसी कालजयी कृतियों की रचना की जो साहित्य की अक्षुण सम्पत्ति बनी रहेंगी। जीवन के अन्तिम पड़ाव पर उनका स्वास्थ्य खराब रहने लगा था, किन्तु साहित्य सृजन के प्रति निरन्तर तनमयता उनमें दिखाई देती थी। उनकी कई रचनाएँ प्रकाशित होनी अभी बाकी हैं। जीवन के 78 बसंत पूरा करने के बाद 5 जुलाई, 2005 को उन्होंने अन्तिम सांस ली।

पद्मश्री रणवीर सिंह बिष्ट

चित्रकला के क्षेत्र में एक गौरवशाली नाम। संवेदनशील कलाकार। चित्रों में मुख्यतः पर्वतीय जन-जीवन का अंकन। निम्न मध्य वर्ग के संघर्षों की बोलती तस्वीरें हैं इनके चित्र । प्रख्यात चित्रकार निकोलस रोरिक, फ्रैंक वैसुइन और ललित मोहन सेन से प्रभावित चित्रकार हैं श्री बिष्ट। रंगों के मिश्रण में सिद्धहस्त अकेला कलाकार। कल्पना और यथार्थ का संगम इनके चित्रों से परिलक्षित होता है।

पद्मश्री से सम्मानित उत्तरांचल का अकेला चित्रकार। रणवीर सिंह बिष्ट का जन्म गढ़वाल स्थित लैन्सडौन क्षेत्र के एक मध्यवर्गीय परिवार में हुआ। उनके चित्रों की पहली प्रदर्शनी लखनऊ विश्वविद्यालय के यूनियन हाल में 1954 में लगी। चित्र, "अंतिम यात्रा", "मकबरा" और "शरणालय" पर प्रथम पुरस्कार मिला। मैसूर में आयोजित अखिल भारतीय चित्र प्रदर्शनी में "विक्षिप्त तरुणी" और "मातृरक्षा" चित्रों को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। भारतीय ललित कला अकादमी में इनके चित्रों की प्रदर्शनी लगाई गई और उसमें "उत्तरप्रदेश का एक गाँव" चित्र पुरस्कृत हुआ। आस्ट्रेलिया, रूस, चेकोस्लोवाकिया, रूमानिया, आस्ट्रिया, मिस्र, बुल्गारिया और पोलैण्ड आदि देशों में इनके चित्रों को सर्वश्रेष्ठ घोषित किया गया है।

इनके सर्वाधिक चित्र भारतीय ग्रामों की दरिद्रता को प्रदर्शित करते हुए निराशा को आशा में बदलते हैं। "जाड़े की रात" और "घसियारी नृत्य" इनके सर्वश्रेष्ठ, चर्चित और प्रशंसित चित्र हैं। इनकी नवीन शैली पिछड़ी जातियों की संस्कृति पर आधारित है। बिष्ट का लखनऊ के कला एवं शिल्प महाविद्यालय से 41 वर्षों का अभिन्न रिश्ता रहा है। पहले इसके छात्र, फिर अध्यापक और 21 वर्षों तक प्राचार्य रहे। कला के क्षेत्र में भी बिष्ट निःसंदेह मील के पत्थर हैं. 70 वर्ष की आयु पूरी करने के पश्चात् 1998 में वह इस संसार से चल बसे।

डॉ. शिवानन्द नौटियाल

हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध लेखक, कुशल राजनीतिज्ञ डा.शिवानन्द नौटियाल का जन्म 18 जून 1936 को पौड़ी जनपद के ग्राम कोठला में हुआ था। शिक्षा, साहित्य एवं राजनीति ही इनका जीवन रहा। सन् 1967 में इन्होंने सक्रिय राजनीति में पदार्पण किया। डा. शिवानन्द ने दिल्ली में केन्द्रीय गढ़वाल सभा का गठन कर, देश के अनेक प्रान्तों/शहरों में उस माध्यम से गढ़वाल सभा के गठन में बड़ा योगदान किया। सन् 1969 में पौड़ी गढ़वाल क्षेत्र से विधायक निर्वाचित हुए। पुनः सन् 1974 तथा 1979 के विधान सभा चुनावों में विजयश्री प्राप्त की। सन् 1979 में डॉ. नौटियाल को उत्तर प्रदेश में उच्च शिक्षा एवं पर्वतीय विकास मंत्रालय का दायित्व सौंपा गया. अपने मंत्रित्व काल में सम्पूर्ण उत्तराखण्ड क्षेत्र में विद्यालयों को प्रोन्नत करने के साथ-साथ नये विद्यालयों की स्थापना में उल्लेखनीय भूमिका निभाई।

नौटियाल जी एक कुशल राजनीतिज्ञ, ओजस्वी वक्ता के साथ-साथ सफल साहित्यकार रहे। इनका शोध प्रबन्ध "गढ़वाल के लोकनृत्य गीत" है। जिसमें गढ़वाली लोक मानस, गढ़वाल के नृत्य, गढ़वाल के लोकगीत, गढ़वाल के खुदेण गीत, गढ़वाल के नृत्य गीत, छम घुंघरू बाजला, नेफा की लोक कथायें, कुमाऊँ दर्शन, बदरी-केदार की ओर, इनकी श्रेष्ठ शोधात्मक रचनायें हैं। नौटियाल जी को उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान की ओर से आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी नामित पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। डॉ. नौटियाल ने आयु के 68 बसंत पूरे करने के बाद मार्च, 2004 को अंतिम सांस ली और स्वर्ग सिधार गए।

चन्द्रमोहन सिंह नेगी

चन्द्रमोहन सिंह नेगी का जन्म ग्राम कांडी उदयपुर, विकास खण्ड यमकेश्वर में एक संभ्रान्त परिवार में 7 फरवरी 1938 में हुआ था। उनके पिता स्व: जगमोहन सिंह नेगी एक स्वतन्त्रता सेनानी थे। वे सन् 1952 से 1968 तक उत्तर प्रदेश में विभिन्न विभागों के कैबिनेटमंत्री रहे।

चन्द्रमोहन सिंह नेगी ने इण्टर तक की शिक्षा भृगुखाल से की तथा बी. एस.सी. लखनऊ विश्वविद्यालय से की। इसके बाद उन्होंनें एल.एल.बी. कानपुर से उत्तीर्ण की।

नेगी जी में अनेक प्रेरणादायक गुण थे। उनका पहला गुण था समय का सदुपयोग, उनका दूसरा महत्वपूर्ण गुण था दूसरों को उपदेश देने से पहले स्वंय उस उपदेश को अपने जीवन में क्रियान्वित करना। पिता की मृत्यु के बाद श्री चन्द्रभानु गुप्त उन्हें राजनीति में लाये। सन् 1971 में वे सिंडिकेट कांग्रेस में शामिल हुए। इसके पश्चात चुनाव जीतने के बाद उन्हें परिवहन मंत्री बना दिया गया। इस विभाग को उन्होंने अपनी जिम्मेदारी के साथ बहुत अच्छी तरह से संभाला, फिर उन्हें पर्वतीय विकास मंत्री बना दिया गया, जिसके माध्यम से उन्होंने पर्वतीय क्षेत्र का चहुंमुखी विकास किया। उन्होंनें पहाड़ों में कई स्कूल खुलवाये। और दुगड्डा-लक्ष्मण झूला रोड़ उन्हीं के प्रयास से बना। उन्होंने तत्कालीन शिक्षा मंत्री से निवेदन किया कि वे अपने स्कूली पाठ्यक्रम में उत्तरांखण्ड की विभूतियों की जीवनी व जीवन दर्शन को भी सम्मिलित किया करें, अपने मंत्री काल से उन्होंने भरत नगर में एक सहकारी उद्योग विभाग की स्थापना की जो अब काम नहीं कर रहा है। पर्यटन मंत्री के बतौर उन्होने जगह-जगह पर्यटकों के लिए विश्राम स्थल निर्मित किए। श्री चन्द्रमोहन सिंह जब राठ क्षेत्र में गये तो उन्होने कई शिल्पकार भाइयों को आठ-आठ, दस-दस नाली जमीन आवंटित की। वे लोग आज भी उन्हें याद करते हैं।

जन्मभूमि कांडी से लेकर सांसद के सफर तक उन्होने निष्ठा, सत्य व न्याय की प्रतिष्ठा की तथा गढ़ प्रदेश का मस्तक भारत के समक्ष सम्मान से ऊँचा किया।

हे चन्द्रमोहन तू है गढ़वाल का लाल
तूने ही चमकाया है इसका भाल
तेरे सकृत कार्यों का करेगें अनुसरन
तेरे गढ़वाल के लाल

उनकी राजनीतिक विचारधारा बिल्कुल सटीक और स्पष्ट थी उन्होने हमेशा कांग्रेसी नीतियों पर अमल करते हुए पूर्व प्रधान मंत्री इन्दिरा गांधी का हाथ मजबूत किया और बीस सूत्रीय कार्यक्रम पर सभी को अमल करने के लिए कहा।

एक समय था जब कोटद्वार भाबर क्षेत्र में कोई बसना नहीं चाहता था। श्री चन्द्रमोहन सिंह नेगी ने यहां सड़कों का जाल बिछाया और आज यहां बसने को जगह नहीं मिल पा रही है। कोटद्वार महाविद्यालय की स्थापना में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा।

उनके माता-पिता बिल्कुल सरल हृदय के थे। माँ साधारण गृहणी थी और उनके पिता कांग्रेस के प्रतिष्ठित नेता थे। वे उत्तर प्रदेश में खाद्य मंत्री भी रहे और जब बाकि क्षेत्रों में अकाल पड़ा था उस समय गढ़वाल में भरपूर अनाज उपलब्ध था। सन् 1967 में पिता की हृदय गति रुकने के कारण मृत्यु हो गई। तब श्री चन्द्रमोहन ने न चाहते हुए भी लोगों के विवश करने पर राजनीति की बागडोर संभाली।

नेगी जी की एक पुत्री, जो नवीं श्रेणी में थी अचानक सोये हुए ही चल बसी। उनकी दूसरी पुत्री का विवाह, उनके पुत्र रवि ने पिता के देहान्त के बाद कानपुर में करवाया। उनकी पत्नी जहरीखाल के कर्नल कुवंर सिंह की पुत्री थी। जिसकी मृत्यु भी नेगी जी से पहले हो चुकी थी। 5 अक्टूबर 1992 को लखनऊ रेलगाड़ी में जाते हुए हृदयगति रुकने के कारण गाड़ी में ही इनका निधन हो गया। उनकी आकस्मिक मृत्यु के कारण गढ़वाल को अपार क्षति हुई जिसकी भरपाई आजतक नहीं हो पाई है।

उत्तराखण्ड वंदना

राम कृष्ण जोशी "रसिक"

ब्वै का सौं।
मेरू मन करदु, मैं उत्तराखण्ड मॉ ही रौं।

हरि कु द्वार हरिद्वार जख।
पंच-बदरि, पंच-केदार जख।

क्या नि ह्वै अर ह्वै सकदु यख।
देवतौं कु धाम च जख।

सीढ़ीदार पुंगड़ियों का बीच बस्यॉं गौं का-गौं।
ब्वै का सौं...।

बाँज-बुराँश,चीड़-देवदार जख।
देवतौन बि करि वास यख।

ऊँचि-निसि डांडि-कांठि जख।
गाड़-गदनि छन लाणि मांगळ यख।

किलै न मैं बि गीत दगड़ि गौं।
ब्वै का सौं..........................।

छन साधन प्रचुर जख
खेत-खलियान, वन-सम्पदा भरपूर यख।

यख च अग्यों बि थौड़ि जाया तख।
टग्यां-सा रै जाला क्या च धर्‌यूं यख।

जै कि बसावा यख भी को भौं।
ब्वै का सौं..........................।

शरम्यालो आँखो, मयालु प्राण जख।
रामी-बौराणि, सुमन, माधु अर वीर गढ़वाली यख।

भारत कु भाल उत्तराखंड कू ताल 'पर्वतराज' जख।
उत्तराखण्ड-सी मिसाल देश मॉ और च कख।

अपणु मुल्क छोड़ी किलै कखि मैं जौं।
ब्वै का सौं..................................।

सभा द्वारा मार्च 2002 से मार्च 2006 तक किए गये कार्यों का विवरण

1. दि० 24 अगस्त 2002 को सभा एवं दिल्ली नगर निगम द्वारा सम्मिलित रूप से आयोजित कार्यक्रम में गढ़वाल भवन के समीप वाले गोल चौक का नाम 'वीर चंद्र सिंह गढ़वाली चौक' रखा गया। दिल्ली मैट्रो रेल के निर्माण कार्य पूरा होने पर इस चौक का सौंदर्यकरण डी एम सी द्वारा किया जाना है।

मंच पर स्व० श्री गढ़वाली के पुत्र एवं पुत्रवधुओं और पौते के साथ डॉ० प्रेम सिंह (विधानसभा अध्यक्ष दिल्ली)

श्री गढ़वाली जी को श्रद्धांजली देते हुए अध्यक्ष विक्रम अधिकारी एवं डॉ० प्रेम सिंह (विधानसभा अध्यक्ष दिल्ली)

2. 16 अक्टूबर 2002 को उत्तरांचल की महिला जूनियर हाकी टीम की खिलाड़ीयों को सभा की ओर से एक-एक ट्रेक सूट भेंट कर प्रोत्साहित किया गया।

3. 13 सितंबर 2001 को संसद पर हुए आतंकवादी हमले में शहीद हुए मातबर सिंह नेगी के नाम पर मंदिर मार्ग की सड़क का नाम रखने हेतु एन डी एम सी से समय-समय पर प्रभावी ढंग से पत्राचार किया गया।

महिला हाकी टीम के साथ कार्यकारिणी के पदाधिकारी एवं सदस्य गण

4. दि० 25 से 31 दिसम्बर 2002 तक गढ़वाल भवन में इण्डोर गेम सप्ताह का सफल आयोजन किया गया। 25 दिसम्बर 2002 को बच्चों के विभिन्न आयु वर्ग के लिए कला प्रतियोगिता आयोजित की गई इसमें 125 प्रतियोगियों

पुरस्कार वितरित करते हुए श्री प्रीतम सिंह खेल मंत्री (उत्तरांचल)

पुरस्कार वितरित करते हुए श्री राजेन्द्र द्विवेदी तत्कालीन वरिष्ठ उपाध्यक्ष

ने भाग लिया। 5 जनवरी 2003 को आयोजित एक सफल आयोजन में विजेताओं को पुरुस्कार एवं प्रमाण-पत्र वितरित किये गये।

5. जनवरी 2003 में एक 11 सदस्यीय संविधान संशोधन उपसमिति का गठन किया गया। 21 सितंबर 2003 को संपन्न हुई महासमिति की बैठक में कुछ संशोधनों के पश्चात उपसमिति द्वारा प्रस्तुत नियमावली संशोधन प्रारूप को स्वीकृति हेतु जमा करवाया गया। प्रथम बार नियमावली संशोधन को महा समिति में रखने से पूर्व बैठक की कार्यसूची के साथ सभी आजीवन सदस्यों को प्रेषित किया गया।

6. उत्तरांचल में विधान सभा क्षेत्रों के पुनर्सीमांकन/परिसीमन जनसंख्या के बजाय क्षेत्रफल के आधार पर करने हेतु भारत सरकार, उत्तरांचल सरकार एवं चनाव आयोग को समय-समय पर पत्राचार द्वारा अपने विरोध से अवगत कराया गया। संख्या 4(2)/2003 विधाई-1 के अंतर्गत मामले को विधि एवं न्याय मंत्रालय द्वारा विधायी विभाग को प्रेषित किया गया। सभा द्वारा समय-समय पर स्मरण पत्र भेजने के पश्चात भी विधायी विभाग से कोई प्रतिउत्तर कभी भी प्राप्त नहीं हुआ।

7. नवम्बर 2001 में आयोजित उत्तरांचल उदय दिवस नामक एक दो दिवसीय समारोह/ कार्यशाला की रिपोर्ट तैयार कर भारत सरकार जनजाति मंत्रालय में जमा करायायी गई इस कार्यशाला के आयोजन हेतु जो एक लाख रु० की राशि अनुदान स्वरूप स्वीकृत हुई थी उसमें से शेष दस हजार रु० की राशि प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रिपार्ट का जमा होना जरूरी था, इस अवसर पर प्रकाशित स्मारिका के कुछ विज्ञापनों की राशि इसी कार्यकारिणी के विशेष प्रयासों से प्राप्त की गई।

8. हरिद्वार/ऋषिकेश में सभा के लिए गढ़वाल धर्मशाला हेतु उपयुक्त जमीन आवंटन के लिए उत्तरांचल सरकार के माननीय मुख्यमंत्री से मिलकर अनुरोध किया गया जिसके फलस्वरूप मुख्यमंत्री जी ने सभा के एक पत्र में अपनी संस्तुति जिला अधिकारी हरिद्वार को प्रेषित कर दी है। इस विषय में सभा का एक प्रतिनिधिमंडल जिला आधकारी हरिद्वार से व्यक्तिगत रूप से मिलकर अनुरोध भी कर चुका है।

9. 13 अप्रैल 2003 को गढ़वाल भवन में स्वामी सुन्दरानन्द के सहयोग से हिमालय दर्शन नाम से एक सफल आडियो विजुअल कार्यक्रम किया गया इस कार्यक्रम में समाज के अनेकानेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित हुए।

10. गढ़वाल भवन में बिजली का स्वीकृत लोड़ भवन बनाने के समय से ही सिर्फ आधा किलो वाट था जो भवन के लिए नाकाफी था। अब बिजली का स्वीकृत लोड़ 23 किलो वाट एन डी एम सी के एक्जिक्यूटिव इंजीनियर विद्युत के दि० 7-7-2003 के पत्र संख्या बी-75/01/डी/2057/ईई/डी/एन के अंतर्गत स्वीकृत किया गया तथा बढ़े हुए लोड से बिजली की आपूर्ति भवन में दि० 5-3-2004 से बखूबी की जा रही है।

11. भवन मे शुरू से ही पानी की समस्या रही है भवन ऊँचाई पर स्थित है इसलिए पानी का प्रेशर कम रहता है फिलहाल इस समस्या को कैंटीन के समीप बोरिंग कराकर निपटा दिया गया है। इसके लिए एन डी एम सी और माननीय मुख्यमंत्री जी को जो इस क्षेत्र से विधायक भी हैं को पानी की उचित सप्लाई हेतु प्रार्थनापत्र दिया जा चुका है।

12. दि० 23 अगस्त 2003 को गढ़वाल हीरोज के सभी 23 खिलाड़ियों को क्लब की 50वीं वर्षगांठ पर एक-एक ट्रेक सूट प्रदान कर प्रोत्साहित किया गया। आप सब की जानकारी के लिये बताते हैं गढ़वाल हीरोज फुटबाल क्लब दिल्ली में हमारे समाज का सबसे पुराना एवं प्रतिष्ठित क्लब है।

13. दि० 8 फरवरी 2004 को गढ़वाल भवन मे गढ़वाली कवि सम्मेलन का सफल एवं शानदार आयोजन किया गया।

कवि गणों के साथ श्रीकृष्ण सेमवाल तथा राजेन्द्र द्विवेदी वरिष्ठ उपाध्यक्ष

कवि गणों के साथ कुलानन्द भारतीय पू० शिक्षा मंत्री दिल्ली

जिसकी सभी उपस्थित व्यक्तियों ने मुक्त कंठ से प्रसंशा की इसमें दिल्ली एवं गढ़वाल के जाने माने कवियों ने कविता पाठ किया।

14. दि० 29 फरवरी 2004 को गढ़वाल भवन में एक रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम का सफल आयोजन किया गया जिसमें दर्शकों की अपार संख्या थी।

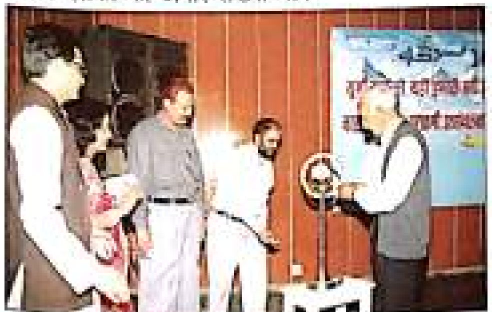

सांस्कृतिक कार्यक्रम शुभारंभ (दीप प्रज्वलन)

रंग रंग कार्यक्रम का मोहक दृश्य

श्री बच्ची सिंह रावत सांसद, श्री महाराजा मानवेन्द्र शाह सांसद, श्री केदार सिंह फोनिया, पे०ज०(से.नि.) श्री भुवन चंद खंडूड़ी सांसद जैसे गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति उत्साह वर्धक रही

15. भवन के मुख्य द्वार और उसके आस-पास प्रकाश की उचित व्यवस्था, सफाई और बरसाती पानी की निकासी के लिए उचित प्रबंध तथा सड़क की मरम्मत रैलिंग एवं साइडों पर टाइल लगा दी गयी है।

16. सभा द्वारा आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों, खासकर विधवाओं को 5000 रुपये प्रति आवेदन के हिसाब से मामले के गुण एवं दोषों के आधार पर आर्थिक सहयोग दिया गया। यह सहयोग अबतक सिर्फ बीमार व्यक्तियों को दिया जाता रहा है। यद्यपि 5000 की राशि आज के संदर्भ में अधिक मायने नहीं रखती, किन्तु सभा का उद्देश्य अधिक से अधिक जरूरतमंद व्यक्तियों को सहयोग करना है। विशेष परिस्थितियों में यह राशि बीमारी की गम्भीरता के हिसाब से बढ़ाई भी जाती है।

पिछले लग-भग चार वर्षों के अनुभव के आधार पर मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि इस प्रकार की दयनीय परिस्थितियों में व्यक्ति को समुचित आर्थिक सहायता की जा सके इसके लिए एक विशेष सहायता फंड बनाया जाना चाहिए। इस फंड के निष्पक्ष संचालन के लिए सभा की कार्यकारिणी के सदस्यों के अतिरिक्त समाज के कुछ गणमान्य व्यक्तियों को भी नामित किया जा सकता है। इस मद में कुल 54 व्यक्तियों को आर्थिक सहायता दी गई है।

17. सभा को आयकर एक्ट 1961 की धारा 80 जी के अंतर्गत आयकर छूट का नवीनीकरण दि० 31-3-2007 तक की अवधि के लिए विभाग द्वारा 28-10-2004 को कर दिया गया है।

18. पिछली कार्यकारिणी के समय की कुछ देनदारी के उलझे हुए मामलों को वर्तमान कार्यकारिणी ने प्रेम पूर्वक निपटा दिया है।

19. सभा द्वारा डा० हरि वैष्णव धर्मार्थ चिकित्सालय का संचालन प्रशिक्षित चिकित्सकों द्वारा सफलता पूर्वक किया जा रहा है। इन चिकित्सकों को यात्रा भत्ते के रूप में रु० 5000 प्रति माह दिया जा रहा है। तथा चिकित्सालय में औषधि आदि पर भी चार पाँच हजार रुपये मासिक व्यय आता है।

20. सभा द्वारा अपने मुख्य सभागार के लिए 250 स्टील की कुर्सियाँ खरीदी गई।

स्व० कन्हैया लाल डंडरियाल को श्रद्धांजलि देते हुए सदस्य

21. जाने माने गढ़वाली कवि कन्हैया लाल डंडरियाल जी के अस्वस्थता के दौरान सभा द्वारा आर्थिक और अन्य प्रकार से सहयोग किया गया। दि० 20-6-2004 में गढ़वाल भवन में उनके निधन पर शोक सभा का आयोजन किया गया।

22. गढ़वाल भवन में मुख्य सभागार एवं कार्यालय को वातानुकूलित करने, ध्वनि व्यवस्था को सुधारने हेतु माननीय मुख्यमंत्री दिल्ली सरकार तथा माननीय सांसद अजय माकन से चर्चा कर सभा की ओर से एक मांग पत्र प्रस्तुत किया जा चुका है। इस दिशा में कार्य प्रगति पर है।

23. स्वामी माधवाश्रम धर्मार्थ ट्रस्ट द्वारा कोटेश्वर, जिला रुद्रप्रयाग में एक विशाल धर्मार्थ चिकित्सालय का निर्माण कार्य चल रहा है सभा ने इस कार्य में 11000 रुपये का सहयोग किया है।

वरिष्ठ सदस्यों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित करते हुए

24. सभा के नाम का एक ग्लो साइन बोर्ड भवन के ऊपरी भाग में लगाया गया है।

25. भवन के आंगन का फर्श अनेक जगहों से टूट-फूट गया था उसको 3,12,336 रुपये लागत पर दुरुस्त कर लिया गया है।

26. गढ़वाल भवन के निर्माण तथा सभा के विकास में समय-समय पर विभिन्न (पूर्व)वरिष्ठ पदाधिकारियों एवं कार्यकारिणी के सदस्यों का सक्रिय सहयोग प्राप्त होता रहा है। इन सभी का सम्मिलित रूप से सभा ने

वरिष्ठ सदस्यों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित करते हुए

प्रथम बार सम्मान दि० 19-12-2004 को आयोजित एक समारोह में किया, इसमें कुल मिलाकर 20 पूर्व पदाधिकारी

वरिष्ठ सदस्य कार्यालय में अध्यक्ष व अधिकारी के साथ

वरिष्ठ सदस्य वर्तमान कार्यकारिणी के साथ

एवम् 22 कार्यकारिणी सदस्यों को आमंत्रित किया गया था। जिसमें से कुल 15 पूर्व पदाधिकारी, व 15 ही पूर्व कार्यकारिणी सदस्य उपस्थित हुए सभा में श्री कुलानन्द भारतीय पूर्व महानगर पार्षद तथा सभा के वरिष्ठ कार्यकर्ताओं द्वारा आमंत्रित वरिष्ठ सदस्यों को एक-एक शाल तथा स्मृति चिन्ह भेंट किए गए। इस कार्यक्रम की समाज के सभी वर्गों ने भूरी-भूरी प्रशंसा की।

27. प्रत्येक स्वतंत्रता दिवस पर भवन पर नियमानुसार झंडारोहण कार्यक्रम किया गया।

हितैषिणी के सदस्य श्री किशोर उपाध्याय से दिल्ली बीच विसंगतियों के विषय में चर्चा करते हुए

28. सभा के कार्यालय हेतु एक कंप्यूटर खरीदा गया है ताकि सभा के विभिन्न कार्यों को शीघ्रता से निपटाया जा सके।

29. इस कार्यकाल में सभा ने उत्तरांचल खासकर गढ़वाल मंडल की मुख्य-मुख्य समस्याओं पर भारत सरकार एवं उत्तरांचल सरकार के संबंधित मंत्रालयों/विभागों से समय-समय पर पत्राचार कर पुरानी परंपराओं का सम्मान किया है। सभा द्वारा किए गए इन प्रयासों की इस कड़ी के अंतर्गत दिल्ली-देहरादून, हरिद्वार-ऋषिकेश, मेरठ,

कोटद्वार, रामनगर एवं अन्य राष्ट्रीय राजमार्गों के उच्चीकरण दिल्ली-देहरादून मार्ग को एक्प्रेस मोटर मार्ग बनाने, उत्तरकाशी जनपद मुख्यालय में वरणावत पर्वत में हुए भू स्खलन, रेल मार्गों का उच्चीकरण, वायु सेवाओं का विस्तार सामाजिक विषयों पर प्रभावी ढंग से पत्राचार किया गया। इन्ही प्रयासों के अनुक्रम में सभा के सदस्यों तथा दिल्ली एवं इसके समीपवर्ती नगरों में निवास करने वाले सदस्यों की व्यक्तिगत अथवा सामूहिक समस्याओं से भी सभा को जोड़ने का सार्थक प्रयास किया गया। भविष्य में इन प्रयासों का विस्तार किया जायेगा।

30. सभा द्वारा दि० 13 अक्टूबर 2005 को दस लाख रुपये की राशि के पाँच-पाँच लाख रुपये की फिक्स डिपॉजिट के रूप में रख दी है। इस फिक्स डिपॉजिट से प्राप्त ब्याज की राशि प्रयोग समाज की गरीब कन्याओं के विवाह, शिक्षा व समाज में उपेक्षित महिलाओं के सहायतार्थ किया जायेगा।

31. 15 मई 2005 को सभा द्वारा कक्षा नौवीं से बारहवीं तक के बच्चों के सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया

पुरस्कार देते हुए अजय कुमार लोहनी

पुरस्कार देते हुए डा० मौसाल

गया तथा 29 मई को विजेताओं को पारितोषिक वितरण किया गया जिसमें प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान पर आये बच्चों को मोमेंटो प्रमाणपत्र व पेन वितरित किये गए। पुरस्कार वितरण प्रख्यात शिक्षाविदों व समाज के गणमान्य व्यक्तियों द्वारा किया गया। जिसमें सर्व श्री डा० बी. एस. मौशाल, (प्रो० जाकिर हुसैन कॉलेज), डा० बी. एस. रावत (प्रिंसिपल दिल्ली आर्ट एण्ड कामर्स कॉलेज), श्री मनवर सिंह रावत चेयरमैन (मयूर पब्लिक स्कूल) व श्री वीरेन्द्र जुयाल नेता भ०ज०पा० आदि थे।

32. सुनामी पीड़ितों के लिए 26 अप्रैल 2005 को सभा के अध्यक्ष के नेतृत्व में सभा के शिष्ट मंडल द्वारा दिल्ली के मुख्यमंत्री राहत कोष में 51000 रुपये की राशि भेंट की गई।

सुनामी पीड़ितों के लिए मु० मंत्री कोष में चैक भेंट करते हुए प्रतिनिधि मंडल

33. 24 अप्रैल 2005 को पेशावर कांड के नायक व इतिहास पुरुष स्व० वीर चंद्र सिंह गढ़वाली की जयन्ती के अवसर पर एक श्रद्धांजली सभा आयोजित की गई।

34. मुख्य सभागार भागीरथी हाल के मंच का सौंदर्यकरण किया गया।

35. 3 जुलाई 2005 को अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त 'चिपको जननी' स्व० श्रीमती गौरा देवी की चौदहवीं पुण्य तिथि

'चिपको जननी' गौरा देवी को श्रद्धांजली देते श्री जोशी जी

न्यूज लेटर का विमोचन करते श्री जोशी जी

पर्यावरण अभियान दिवस के रूप में मनाई गई। जिसमें पूर्व मानव संसाधन विकास मंत्री माननीय मुरली मनोहर जोशी के कर कमलों से भवन के प्रांगण में वृक्षारोपण व सभा के न्यूज लेटर (समाचार पत्र) का अनावरण किया गया। इस अवसर पर सभा ने एक भव्य सांस्कृतिक रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया। समाज के लोगों की उपस्थिति सराहनीय थी।

पर्यावरण दिवस के अवसर पर समाज कार्यकर्ताओं श्री जोशी जी के साथ

36. हितैषिणी सभा का अपना लोगो डिजाइन कर इस्तेमाल शुरू किया जा चुका है।

37. समाज के वरिष्ठ एवं बुद्धिजीवी वर्ग के संकेतों पर ध्यान देते हुए कार्यसमिति इस निष्कर्ष पर पहुँची कि बहुत से आजीवन सदस्य जो अब दिल्ली से दूर अपने पैतृक स्थानों पर चले गए हैं उन्हें भवन की गतिविधियों से अवगत कराए रखने के लिए सभा का अपना न्यूज लेटर प्रकाशित करना अति आवश्यक हो गया है। इसी की कड़ी में तीन जुलाई 2005 को न्यूज लेटर का प्रकाशन प्रारंभ किया गया।

38. राष्ट्रीय जूनियर शतरंज चैम्पियनशिप में भाग लेने वाली उत्तरांचल की टीम का सभा ने भव्य स्वागत किया।

39. बहुत लम्बे समय से एन डी एम सी द्वारा भवन पर लगाए जा रहे बिजली के मिसयूज की समस्या अंततः निपटा ली गई।

40. उत्तरांचल सरकार से हितैषिणी सभा को धर्मशाला हेतु देहरादून-ऋषिकेश के बीच शीघ्र ही जमीन उपलब्ध होने की आशा है। इस संदर्भ में फरवरी 2006 के अंत में एक शिष्ट मंडल एस डी एम ऋषिकेश से संपर्क कर भूमि का अवलोकन कर चुका है।

वृक्षारोपण श्री जोशी के कर कमलों द्वारा

तेजस्वी मन

अगली अर्धशती में भी
उत्कृष्टता की ओर

ऑयल एण्ड नेचुरल गैस कॉरपोरेशन लिमिटेड

14 अगस्त, 1956 को स्थापित
भारत का सर्वाधिक मूल्यवान कॉरपोरेट

ओएनजीसी ONGC
बनाए सुखतर भविष्य

equus red cell.0/g

गढ़वाल के चार धाम

प्रताप सिंह राणा

श्रद्धालु और धर्म प्रेमी भारतीय जनता सदियों से दिव्य ज्ञान की खोज में गढ़वाल के चार धाम श्री गंगोत्री, श्री यमुनोत्री, श्री केदारनाथ व श्री बद्रीनाथ की यात्रा दुर्गम मार्गों से पारकर करती रही है। चिरंतनकाल से यह चार धाम मनोरथ, आस्था और प्रेरणा के अखण्ड स्रोत रहे है। इनकी यात्रा और परिक्रमा पुराणों में सर्वश्रेष्ठ कर्म के रूप में वर्णित है। इन पावन तीर्थ स्थलों की परम धार्मिकता का अभिन्न-अंग भारत की वैभवशाली संस्कृति एवं असंख्य पौराणिक गाथाओं की पृष्ठभूमि युक्त-पवित्र गंगा हिन्दु धर्म में पवित्रता की परिभाषा और आत्मव्यापी भक्ति का प्रयाय है। पुराणों के अनुसार पृथ्वी पर जीवन को पापमुक्त करने के लिए गंगा जी ने नदी के रूप मे प्रकट होकर धरती को कृतार्थ किया था। चार धामों में गंगा के कई रूप और नाम हैं। जैसे गंगोत्री में भागीरथी, केदारनाथ में मंदाकिनी, और बद्रीनाथ में अलकनन्दा।

गढ़वाल हिमालय अपनी गगनचुम्बी श्रृंखलाओं और प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर, विहंगम वातावरण, सुरम्य दृश्यों के साथ-साथ आलौकिक शक्ति के लिए भी विख्यात है। एक आदर्श श्रद्धालु के लिए यह पवित्र स्थल जीवन के अनमोल अनुभव का प्रतीक है। परम्परा के अनुसार चार धाम की यात्रा पश्चिम से पूर्व दिशा की ओर होती है। इसलिए यह यात्रा यमुनोत्री से प्रारम्भ होकर गंगोत्री, केदारनाथ के पश्चात बद्रीनाथ में जाकर संपन्न होती है।

बद्रीनाथ (भगवान विष्णु का दरबार)

चारों धामों मे सर्वश्रेष्ठ हिन्दु धर्म का सबसे पावन तीर्थ, हर श्रद्धालु की मंजिल नर और नारायण पर्वत श्रृंखलाओं

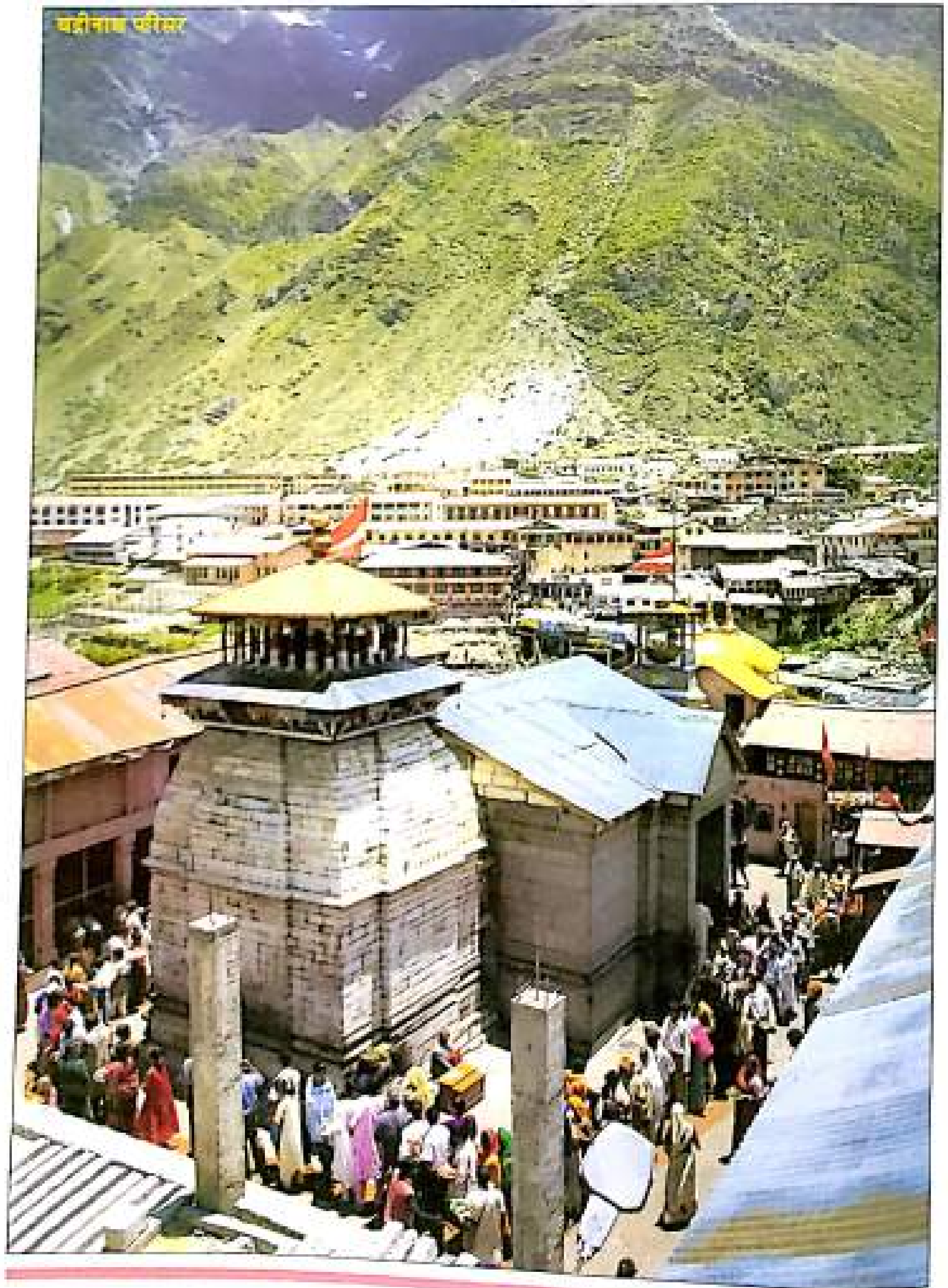
बद्रीनाथ परिसर

से घिरा बद्रीनाथ, अलकनंदा नदी के बाएँ तट पर नील कंठ श्रृंखला की पृष्ठ भूमि पर स्थित है। ऐसी मान्यता है कि प्राचीन काल में यह स्थल बदरियों (जंगली बेरों)से भरा रहता था और इसको बद्री वन भी कहा जाता था।

3,133 मी. की ऊँचाई पर स्थित बद्रीनाथ मंदिर भगवान विष्णु को अर्पित है। 15 मी० ऊँचे इस मंदिर का निर्माण 8वीं सदी के बुद्धिजीवी संत आदिगुरू शंकराचार्य द्वारा किया गया था। यह मंदिर बर्फीले तूफानों के कारण कई बार क्षति ग्रस्थ हुआ और पुनः निर्मित किया गया है। सजीव सिंहद्वार इस प्राचीन मंदिर को एक नवीन छवि प्रदान करता है। मंदिर तीन भागों में विभाजित है, गर्भगृह, दर्शनमण्डप और सभामंडप। मंदिर परिसर में 15 मूर्तियां है, इनमें सब से प्रमुख है भगवान विष्णु की एक मीटर ऊँची काले पत्थर की प्रतिमा जिसमें भगवान विष्णु ध्यान मग्न मुद्रा में सुशोभित हैं।

आदि गुरू शंकराचार्य द्वारा एक मठ की भी स्थापना की गई थी। विशाल बद्री के नाम से बद्रीनाथ पंच बद्रीयो में से एक है। बद्रीनाथ का श्रद्धेय मंदिर पौराणिक गाथाओं, कथनों और घटनाओं का अभिन्न अंग होने के फलस्वरूप देश भर के श्रद्धालुओं की आस्था का केन्द्र बना हुआ है। इसकी पवित्रता धर्मशास्त्रों मे स्पष्ट शब्दों मे अंकित है। स्वर्ग धरती और पाताल में तीर्थ स्थल है लेकिन बद्रीनाथ जैसा न कोई है न कोई होगा।

कहा जाता है कि जब गंगा देवी मानव जाति के दुःखों को हरने के लिए पृथ्वीपर अवतरित हुई तो पृथ्वी उनका प्रबल वेग सहन न कर सकी। अतः गंगा की धारा बारह जल मार्गों में विभक्त हुई। उसमें से एक है अलकनंदा का उद्गम। यही स्थल भगवान विष्णु के निवास स्थान के गौरव से शोभित होकर बद्रीनाथ कहलाया।

बद्रीनाथ मंदिर में जाने से पहले श्रद्धालुगण अलकनंदा के तट पर गर्म जल तप्त कुंड मे स्नान करते है। यह कुण्ड अपने औषधि गुणों के लिए भी प्रसिद्ध है। यहां पर दूसरा महत्वपूर्ण स्थान ब्रह्मकपाल है। इस सपाट चबूतरे पर हिन्दु अपने पूर्वजों की आत्मा की शांति के लिए हिन्दु धर्मप्रथा के अनुसार पिंडदान करते हैं। पंचबद्रीः बद्रीनाथ, योगध्यानबद्री, भविष्यबद्री, वृद्धबद्री, एवं आदिबद्री-यह पंचबद्रीयों का समूह श्रद्धालुओं की भक्ति का प्राचीन समय से महत्वपूर्ण केन्द्र रहा है।

बद्रीनाथ से चार किलोमीटर की दूरी पर माणागाँव इन्डो-मंगोलियन जाति के लोगों का भारत-तिब्बत सीमा पर स्थित मात्र अन्तिम गांव है। यह गाँव भारत-तिब्बत का व्यापारिक केन्द्र भी रहा है। इस गाँव के निकट व्यास गुफा है जहाँ पर ऋषि वेदव्यास जी ने महाकाव्य 'महाभारत' लिखा। सरस्वती नदी पर भीम पुल (प्राकृतिक पुल) है, दंतकथा के अनुसार पाण्डवों के द्वितीय भाई भीम ने इसे बनाया था।

अलकनंदा और धौलीगंगा के संगम से दूर स्थित जोशीमठ एक महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल है जहां शीत काल में बद्रीनाथ के कपाट बंद होने के पश्चात भगवान बद्रीनाथ की मूर्ति की पूजा की जाती है। शंकराचार्य की तपस्थली के अतिरिक्त भगवान नृसिंह का अत्यन्त प्राचीन मन्दिर स्थल है। प्रसिद्ध पंच प्रयाग, (देवप्रयाग, नंदप्रयाग, रूद्रप्रयाग, कर्णप्रयाग और विष्णुप्रयाग) मुख्य नदीयों के संगम पर स्थित है जो बद्रीनाथ के रास्ते में पड़ते है। जोशीमठ रोपवे 4 कि.मी. दूर, 2500-3050 मी० की ऊँचाई पर स्थित शीतकालीन खेलों के लिये विश्व विख्यात स्थल औली, स्की (रड़ पसद) विश्व के सर्वोत्तम ढ़लानों के लिए प्रसिद्ध है। अलकनंदा और लक्ष्मण गंगा नदियों के संगम स्थल पर स्थित गोविन्दघाट फूलों की घाटी एवं हेमकुंड साहिब पैदल यात्रा का महत्वपूर्ण पड़ाव है।

आदि गुरू शंकराचार्य की व्यवस्था के अनुसार बद्रीनाथ मन्दिर का मुख्य पुजारी दक्षिण भारत के राज्य केरल से होता है। अप्रैल-मई से अक्टूबर -नवम्बर तक मंदिर दर्शनों के लिये खुला रहता है। बद्रिनाथ, ऋषिकेश से 300 कि०

मी०, कोटद्वार से 327 कि० मी० हरिद्वार, देहरादून तथा कुमाँऊ और गढ़वाल के सभी पर्यटन स्थलों के सुविधाजनक मार्गों से जुड़ा हुआ है।

केदारनाथ:

भगवान शिव के 12 ज्योतिर्लिंगों में से सबसे महत्वपूर्ण पर्वत-मण्डलों के मध्य एकचित ध्यान लीन केदारनाथ तीर्थ 3581 मी० की ऊँचाई पर मंदाकिनी नदी के तट पर स्थित है। हिन्दु धर्म में केदारनाथ की आस्था और मान्यता का कोई पार नहीं है। इस पावन तीर्थ स्थल का उद्गम महाभारत के पृष्ठों में अंकित है। पौराणिक मान्यतानुसार केदारनाथ में शिवलिंग, तुंगनाथ में बाहु, रूद्रनाथ में मुख, पदमहेश्वर में नाभि तथा कल्पेश्वर में जटा के रूप में शिव

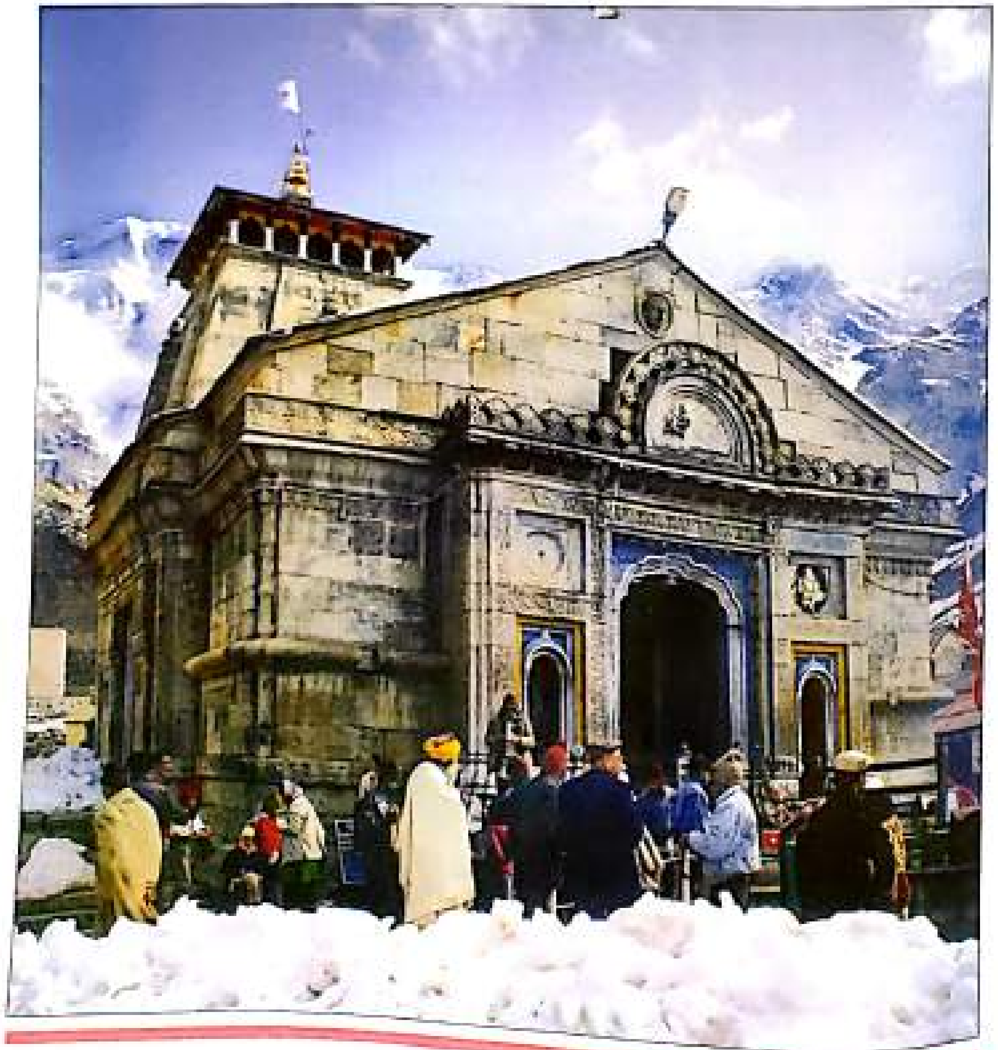

अर्चना की जाती है।

8वीं सदी में आदि गुरु शंकराचार्य द्वारा निर्मित वर्तमान मंदिर पाण्डवों के प्राचीन मंदिर के समीप है। मंदिर की दीवारों पर देवताओं और पौराणिक गाथाओं के चित्रण बड़े सजीव ढंग से अंकित हैं। मुख्य प्रवेश द्वार पर नन्दी बैल की मूर्ति, पूजा के लिए गर्भगृह, श्रद्धालुओं और आगन्तुकों के लिए मण्डप, यही केदारनाथ मंदिर का स्वरूप है। सर्दियों में केदारनाथ बर्फ से ढके होने के कारण श्रद्धालुओं के लिए बंद रहता है। मई से अक्टूबर के बीच केदारनाथ के दर्शन के लिए उपयुक्त समय है।

पौराणिक मतानुसार पांडव ने कुरुक्षेत्र महायुद्ध के पश्चात हस्तिनापुर का राज्य, राजा परीक्षित को सौंप कर अपने परिजनों की मृत्यु का प्रायश्चित करने के लिए उत्तराखण्ड की ओर चल दिये। पर्वत-मंडलों के मध्य इस पावन स्थल पर पहुँचने के बाद पाँडवों ने यहाँ पर केदारनाथ मंदिर की स्थापना की। चोराबाड़ी (गांधी सरोवर) एक छोटी झील है जहां तैरती बर्फ एक सुरम्य आकर्षण है। कहा जाता है कि इस झील से पांडवों के ज्येष्ठ युधिष्ठिर सशरीर स्वर्ग गए थे।

आदि गुरु शंकराचार्य की समाधि केदारनाथ मंदिर के पीछे है। जनश्रुति के अनुसार चार धामों की स्थापना के पश्चात गुरु शंकराचार्य 32 वर्ष की आयु में यहाँ पर समाधिलीन हो गए।

केदारनाथ मंदिर के प्रमुख देव शिव का सर्दियों का निवास उखीमठ है जो केदारनाथ के पुजारी (रावल) का स्थान भी है। ऋषिकेश से केदारनाथ 223 कि० मी० दूरी पर है। केदारनाथ के पावन दर्शनों के लिए 14 कि० मी० की पद यात्रा गौरीकुण्ड से आरंभ होती है। यहां के मुख्य आकर्षक गौरी देवी का मंदिर और गर्म पानी के कुंड हैं। हरे भरे जंगलो के बीच मनमोहक प्राकृतिक दृश्य मन में अलौकिक आनन्द के साथ श्रद्धालु आगे बढ़ते हैं, हर चार-पांच कि० मी० के बाद चट्टीयां आती है जहाँ पर खाने-पीने की चीजें उपलब्ध होती हैं। जैसे-जैसे श्रद्धालु आगे बढ़ते है 'जय भोले' की गुंज के साथ घाटी खिल उठती है। जब तीर्थयात्री पहाड़ से निकलते झरनों का अद्‌भुत दृश्य देखते हैं तो उन्हें लगता है कि वास्तव में हम स्वर्ग में पहुच गये हैं। अंत में गरूड़ चट्टी आती है जहां से केदारनाथ मंदिर के पीछे की बर्फीली श्रृखलाएं नजर आने लगती है और आप अपनी मंजिल तक पहुंच जाते हैं।

गंगोत्री:

हिमालय की गोद उत्तरकाशी से 104 कि० मी० की दूरी पर स्थित यह तीर्थ स्थल श्रद्धालुओं के लिए अति महत्वपूर्ण है। मान्यता यह है कि इसी स्थान पर अवतरित होकर माँ गंगा ने धरती माता को कृतार्थ किया था। यह स्थल समुद्रतल से 3140 मी० की ऊँचाई पर स्थित है। युगों-युगों से मई से अक्टूबर तक लाखों श्रद्धालु इस पवित्र स्थल की यात्रा करते हैं। शीतकाल में यह स्थल पूर्ण रूप से बर्फ से ढक जाता है। पुराणों में कहा है कि स्वर्ग की

बेटी गंगा देवी ने गंगा का रूप लेकर राजा भागीरथ के पूर्वजों का उद्धार किया था। शताब्दियों की कड़ी तपस्या के बाद ही गंगादेवी ने भागीरथ की मनोकामना पूरी की थी। गंगा को इसी लिए भागीरथी के नाम से भी जाना जाता है।

भागीरथी के दाएँ तट पर गंगा देवी को समर्पित गंगोत्री मंदिर है। 18वीं शताब्दी में गोरखा कमांडर अमर सिंह थापा द्वारा इसका निर्माण हुआ था। भागीरथी या गंगा का मुख्य स्रोत गौमुख है जो गंगोत्री से 18 कि० मी० दूर पैदल के रास्ते पर है। कई श्रद्धालु गौमुख को ही पूरी यात्रा मानते हुए वहाँ जाना आवश्यक समझते हैं और वहाँ पर स्नान कर अपने को धन्य समझते हैं।

जलमग्न शिवलिंग दिव्य शक्ति और अलौकिक आस्था का सजीव चित्रण है। पुराणों के अनुसार इसी स्थान पर भगवान शिव ने गंगा को अपनी जटाओं में धारण किया था। पूर्ण शिवलिंग केवल शीत ऋतु में ही दिखाई देता है जब पानी का स्तर कम हो जाता है।

गंगोत्री ग्लेशियर से 6 कि० मी० दुर्गम चढ़ाई के बाद नन्दनवन तपोवन ऐसा प्रकट होता है जैसे क्षितिज पर सूर्य। यहाँ पर गुफाओं में अनेक साधु-संत तपस्या में लीन हैं। यह स्थल हिमालयी पर्वतमालाओं की मनोहारी दृश्यों के लिए भी अति प्रसिद्ध है।

भागीरथी पीक

गंगोत्री यात्रा मार्ग के कुछ विशेष स्थल:- हरिद्वार, ऋषिकेश, नरेन्द्रनगर, कुञ्जापुरी, चम्बा, नई टिहरी, चिन्याली सौड़, धरासू, डुण्डा, उत्तरकाशी, मनेरी, भटवाड़ी, हर्षिल, भैरोघाटी आदि हैं।

भागीरथी के दाँए तट पर, वरुणावत पर्वत की तलहटी में उत्तरकाशी 1150 मी० की ऊंचाई पर स्थित एक महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल है। विश्वनाथ मंदिर, एकादश रुद्र मंदिर, ज्ञानेश्वर मंदिर और कुटेटीदेवी मंदिर के होने से यह एक महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल भी है। प्रति वर्ष माघ के महीने में यहाँ मेला लगता है। जिसमें हजारों की संख्या में श्रद्धालु लोग यहाँ पर स्नान करने पहुँचते हैं। विगत दो वर्षों में वरुणावत पर्वत में भू-स्खलन के कारण इस नगरी को बहुत नुकसान पहुँचा है। नजदीक ही नेहरू पर्वतारोहण संस्थान है, जहाँ से प्रशिक्षित होकर सुप्रसिद्ध महिला पर्वतारोही बछेंद्री पाल ने एवरेस्ट शिखर पर पहुँचकर विश्व की प्रथम महिला का गौरव प्राप्त किया।

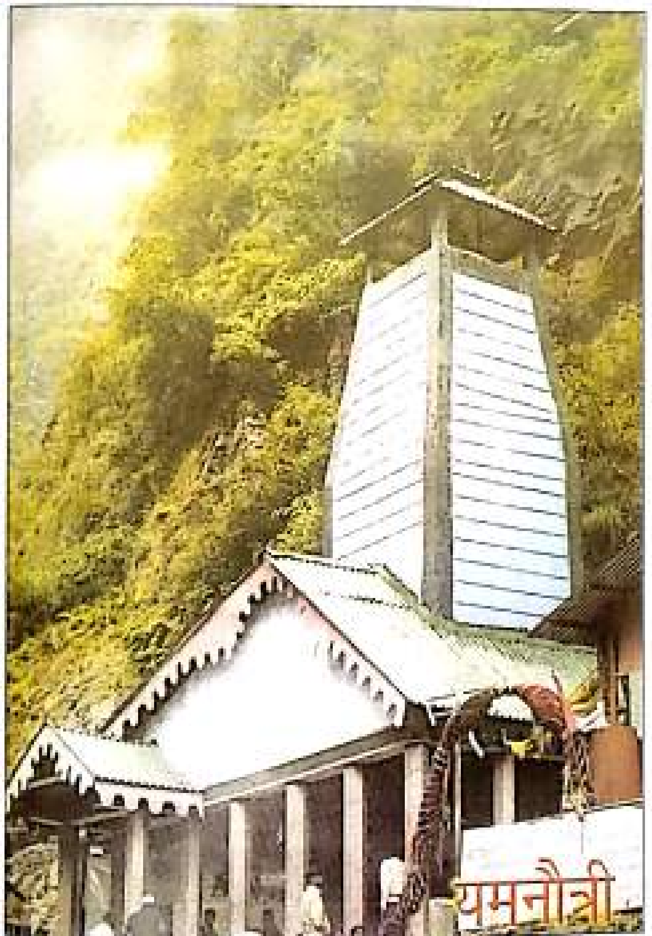

यमुनोत्री:

गढ़वाल हिमालय की पश्चिम दिशा में उत्तरकाशी जिले में स्थित यमुनोत्री चार धाम यात्रा का पहला पड़ाव है। यमुना पावन नदी का स्रोत कालिंदी पर्वत है। तीर्थ स्थल से एक कि० मी० दूर यह स्थल 4421 मी० ऊँचाई पर स्थित है। दुर्गम चढ़ाई होने के कारण श्रद्धालु इस उद्गम स्थल को देखने से वंचित रह जाते हैं। यमुनोत्री का मुख्य मंदिर यमुना देवी को समर्पित है। एक पौराणिक गाथा के अनुसार यह असित मुनी का निवास था। वर्तमान मंदिर जयपुर की महारानी गुलेरिया ने 19वीं सदी में बनवाया था। भूकम्प से एक बार इसका विध्वंस हो चुका है, जिसका पुर्ननिर्माण कराया गया। यहाँ पर गरम पानी के कुण्ड में स्नान कर श्रद्धालु अविभूत हो जाते हैं और अपनी सारी थकान को भूल जाते हैं।

सूर्यकुण्ड गरम पानी के मुख्य स्रोतों में से एक है जिसका तापमान भी काफी अधिक होता है। श्रद्धालु कपड़े में चावल या आलू बाँधकर इस कुण्ड में डालते है जो थोड़ी देर में पक कर उपर आ जाता है इसी का भोग मंदिर मे लगता है और यही यहाँ का प्रसाद भी है। मंदिर प्रांगण में एक विशाल शिला स्तम्भ है जिसे दिव्यशिला के नाम से जाना जाता है। यमुनोत्री मंदिर परिसर 3235 मी० ऊँचाई पर स्थित है। यहाँ भी मई से अक्तूबर तक श्रद्धालुओं का अपार समूह हरवक्त देखा जाता है। शीतकाल मे यह स्थान पूर्णरूप से हिमाच्छादित रहता है। मोटर मार्ग का अंतिम बिंदु हनुमानचट्टी है जिसकी ऋषिकेश से कुल दूरी 200 कि० मी० के आसपास है। हनुमान चट्टी से मंदिर तक 14 कि० मी० पैदल ही चलना होता था किन्तु अब हल्के वाहनों से जानकीचट्टी तक पहुँचा जा सकता है जहाँ से मंदिर मात्र 5 कि० मी० दूर रह जाता है। हनुमान गंगा और यमुना के संगम पर बसे जानकीचट्टी से सुरम्य डोडीताल के लिए भी पैदल रास्ता आरम्भ होता है। यमुनोत्री के लिए देहरादून, मसूरी, नौगाँव के रास्ते भी पहुँचा जा सकता है।

देवभूमि उत्तरांचल की कर्मयोगिनी नारी

पवन कुमार मैठानी

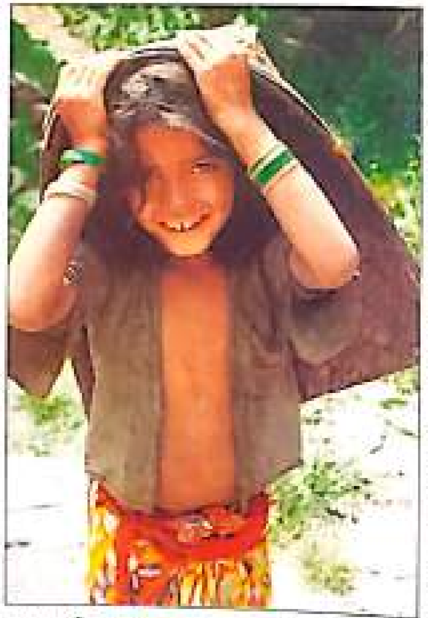

देवभूमि उत्तरांचल धरती का स्वर्ग तथा साहसी पर्यटन का परीक्षा केंद्र के साथ-साथ श्रद्धालुओं का परमधाम और जीवन की ऊर्ध्वमुखी साधनास्थली भी है। अतः इसकी उपत्यकाओं एवं तलहटी में पलता-संवरता लोकजीवन भी स्वयं एक साधना ही है। यहाँ मैदानों की सैर नहीं, पहाड़ों की ऊँचाइयों में पहाड़ सी चढ़ाइयाँ हैं। पहाड़ में चढ़ना, सचमुच शत्रु पर चढ़ाई करने के सदृश ही है। यहाँ सुस्वादु शीतल जल है तो बर्फीली हवाओं के कंटीले थपेड़े भी, अंधेरे गुफा-गह्वर हैं तो चमकते विशाल हिम शिला खंड भी। जिन गिरि-कन्दराओं का कोई ओर-छोर न हो, पहाड़ का कंटकाकीर्ण पथरीला कलेवर जहाँ पग-पग पर चुनौती बनकर खड़ा हो, जहां नदी नालों के अवरोध, हिंस्र वन्य-जीवों के घने जंगल, उल्टे पाँव लौटने को विवश करते हों, उसका लोक जीवन कितना कष्टकर, चुनौतीपूर्ण, अद्भुत और रोमांचकारी होगा, इसका सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। जहाँ हर कदम बढ़ाने के लिए नई राह बनती हो, पत्थर तोड़कर अन्न उपजाना हो, सिर एवं पीठ पर आवश्यकताओं का बोझ लादकर दिन रात चढ़ना व उतरना हो जहाँ की माटी पल-पल का हिसाब माँगती हो, माटी के एक-एक कण की कीमत खून-पसीने से चुकानी पड़ती हो, प्राण हथेली पर रखकर चलना पड़ता हो, वह लोक जीवन किसी युद्ध भूमि से कम कष्टकर नहीं हो सकता। ऐसे लोकजीवन की धुरी है-यहाँ की नारी जिसके कंधों पर टिका है पहाड़ का पहाड़ सा जीवन। जिस नारी के जन्म लेने पर माँ-बाप से लेकर घर-परिवार के सदस्य तक नाक-भौंह सिकोड़ते हों वही नारी हिमालय की आर्थिक एवं पारिवारिक भरण-पोषण की रीढ़ है। होश सँभालने से लेकर मृत्यु पर्यन्त उसका जीवन यंत्रवत् चलता रहता है। वह चाहे माँ-बाप के आश्रय में बेटी के रूप में रह रही हो या बहू के रूप में,पति और सास-ससुर के अधीन हो या नाती-पोतों वाली होकर दादी अथवा सास के रूप में हो, उसके जीवन में आराम-हराम है। उसकी सामाजिक स्थिति जो भी हो, कार्यक्षेत्र भले ही बदल जाता हो, परन्तु घर-बाहर के कामों में दिन-रात खटते तथा पिसते रहना ही उसकी नियति है। कृषि कर्म से भले ही वर्ष भर के खाने के लिए अन्नोत्पादन न होता हो, परन्तु पहाड़ की नारी को वर्ष-भर कृषि कार्यों में ही जुटा रहना पड़ता है।

बड़ा ही विरोधाभास है हिमालय के यशोगान और हिमालय की गोद में पलने वाले नारी जीवन में, हिमालय की पुत्री उमा की यह तपोभूमि, संभवतः तपः स्थली ही है। यहाँ की नारी का जीवन भी किसी तपोसाधना से कम नहीं है। वह भले ही एकांतिक गुफावासिनी तपस्विनी न हो, परन्तु उसका कर्म जीवन ही तपोजीवन है, उसका घर-परिवार एवं खेत-खलिहान ही उसकी तपोभूमि है। परिवार का भरण-पोषण ही उसकी तपस्या का मकसद है। ऊँचे-ऊँचे पहाड़, नदी-घाटी जंगल उसका संसार है। उसे नहीं पता कि इसके परे भी कोई मानव जीवन होता है।

उसका परदेशी सैयाँ भले ही शहरी चकाचौंध की गाथा से उसे कभी-कभी चमत्कृत करता हो। किसी खुशकिस्मत नारी को ही कभी कभार अपने पति के साथ शहरी अथवा मैदानी क्षेत्रों को देखने का सुअवसर प्राप्त हो पाता है, अन्यथा जिनके पति घर में बेरोजगार हैं, या मेहनत मजदूरी करके अपनी गुजर-बसर करते हैं, उन्हें तो जिंदगी भर घर से बाहर जाने, देखने-सुनने का अवसर ही नहीं मिल पाता, लेकिन जीवन संग्रह की यह योद्धा अपने मोर्चों पर हमेशा डटी रहती है और जीवन संघर्ष में कभी हार नहीं मानती। वह अपने कर्म पथ पर अविचल भाव से बढ़ती रहती है। वह कट सकती है मर सकती है परन्तु अपने पथ से कभी विचलित नहीं होती। देश की सीमा पर यदि उसका पति मोर्चा सम्भाले है तो घर परिवार का मोर्चा उसने संभाला है। युद्ध की विभीषिका में सबसे अधिक त्रासदी पहाड़ की नारी को झेलनी पड़ती है। इस हिमालय के सपूत ही आनुपातिक दृष्टि से सबसे अधिक संख्या में भारतीय सेना में हैं। पहाड़ी भू-भाग का होने के कारण सीमा की पहाड़ी चौकियों में यहाँ के रणबाँकुरों को ही अपनी शहादत देनी पड़ती है, जिससे पहाड़ की अधिकांश नारियों को ही पुत्र का शोक एवं वैधव्य की मार सहनी पड़ती है, फिर भी उसे अपने पुत्र व पति की शहादत पर गर्व होता है कि उसकी कोख व उसका सौभाग्य देश के काम आया। भले ही वह पढ़ी लिखी न हो पर जीवन की समझ की उसमें कमी नहीं। हिमालय सी सोच से लबालब भरा है उसका विशाल हृदय-पथ ही उसकी जीवन की राह है और उसी राह पर उसे चलते जाना है।

संघर्षमयी जीवन जीते हुये भी यहां की नारी ने अपनी पहचान को हिमालय पुत्री के रूप में बरकरार रखा है। शिक्षा को अपनी प्रगति का शस्त्र बनाकर स्वयं आभावों में रहकर अपनी पुत्रीयों को स्वालंबन का रास्ता दिखाया। सन् 2001 की जनगणना के अनुसार उत्तरांचल राज्य की जनसंख्या 84,79,349 है। जिसमें 41,63,425 महिलायें हैं। अर्थात एक हजार पुरूषों पर 964 महिलायें हैं तथा कुल साक्षरता दर 71.6 प्रतिशत है। जिसमें महिला साक्षरता दर 59.6 प्रतिशत है। वैसे भी महिला साक्षरता की दृष्टि से देश में उत्तरांचल का स्थान अठारहवाँ है। उत्तरांचल में सर्वाधिक महिला साक्षरता वाला जनपद देहरादून है जबकि सबसे कम महिला साक्षरता वाला जनपद उत्तरकाशी है। अपने घर परिवार देखने के साथ-साथ उत्तरांचल की नारी सामाजिक सरोकारों में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रही है। जल जंगल व जमीन से जुड़े सभी आन्दोलनों में उत्तरांचल की नारी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। चाहे सन् 1974 का चिपको आन्दोलन हो या सन् 1994 का उत्तरांचल राज्य निर्माण का आन्दोलन। सभी में उत्तरांचल की नारी की विशेष भूमिका रही। राज्य प्राप्ति आन्दोलन को ऊर्जा 1994 में हंसा धनाई व बेलमती चौहान ने सीने पर गोली खाकर दी। आज चिपको वूमन गौरा देवी, एवरेस्ट विजेता बछेन्द्री पाल, मीडिया में अधिपत्य जमाये पद्मश्री मृणाल पाण्डे, उत्तरांचल की पहली महिला आई० ए० एस० ज्योति राव पाण्डे, पद्मश्री कहानीकार गौरापन्त 'शिवानी' स्वतन्त्रता संग्राम सैनानी सरला बहन, तुलसी रावत, बिशनी देवी शाह, कुन्ती वर्मा, शराब माफिया के विरूद्ध लड़ने वाली टिंचरी माई इच्छा गिरी, पद्मश्री चन्द्रप्रभा, प्रथम महिला मेजर जनरल माया टम्टा जैसी अनेकों हिमालय पुत्रियाँ अपनी प्रतिभा के

बल पर राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपना अधिपत्य जमाये हुये हैं।

लेकिन प्रश्न फिर वहीं आकर अटकता है कि उत्तरांचल के गांवों में रह रही महिलाओं की स्थिति जस की

तस है। आखिर, भारत के मस्तक कहे जाने वाले इसी हिमालयी क्षेत्र के दूर दराज के गाँवों में रहने वाली नारी को उत्तरांचल राज्य निर्माण के बाद क्या मिला? राज्य निर्माण से पूर्व जैसी उसकी स्थिति एवं दिनचर्या थी, आज भी वैसी ही है। हिमालय की तलहटी में रहनें बसने वाली महिला के लिए विकास जैसी चीज आज भी एक सपना ही है। स्वास्थ्य की दृष्टि से अधिकतर महिलायें कमजोर हैं। उत्तरांचल में 46 प्रतिशत महिलायें एनिमिया से पीड़ित हैं। आज भी पहाड़ में सबसे अधिक मौतें प्रसव के दौरान होती हैं। क्योंकि गांवों में चिकित्सा एवं जच्चा-बच्चा केन्द्रों का सर्वथा अभाव है। उत्तरांचल में स्वास्थ्य विभाग में चिकित्साधिकारी संवर्ग में महिलायें तेरह प्रतिशत ही हैं। पर्वतीय जनपदों में महिला उत्पीड़न की घटनायें कम होती हैं। परन्तु इन क्षेत्रों की विशिष्ट भौगोलिक स्थिति के कारण महिलायें अपने पर हो रहे शोषण एवं अन्याय का प्रतिरोध तुरन्त एवं अधिक व्यापकता से नहीं कर पाती हैं।

भारतीय संविधान में 73 वाँ व 74 वाँ संशोधन करके भारत सरकार द्वारा पंचायतीराज व्यवस्था में महिलाओं के लिए एक तिहाई आरक्षण व्यवस्था का सही लाभ भी यहां कि महिलाओं को नहीं मिल पा रहा है। महिला आरक्षित सीट होने के कारण केवल नाम के लिये महिलायें प्रधान, ब्लाक सदस्य व सरपंच चुनी तो जा रहीं है लेकिन सत्ता के केन्द्र महिलाओं के पति बन रहें हैं। अर्थात सही प्रशिक्षण व जानकारी के अभाव में अधिकांश पुरुष वर्ग के हाथों की कठपुतलियां बनकर रह गयी हैं।

अंतत: कहा जा सकता है कि हिमालयी लोकजीवन में नारी का वही स्थान है जो शरीर में प्राणों का। नारी के बिना निष्प्राण है हिमालय की हरी-भरी गोद। आज जबकि उत्तरांचल की आधे से अधिक पुरुषों की जनसंख्या पलायन कर चुकी है, तो इन रूखे-सूखे पहाड़ों को यहाँ की नारी ने ही आबाद किया है। पहाड़ से पलायन कर शहरों में रहने वाली महिलाओं को जहाँ पहाड़ और उस पर पहाड़ी गाँव का नाम सुनते ही पसीना छूटने लगता है, जहाँ की कष्ट गाथा व पहाड़ी चढ़ाई को सुनकर रोंगटे खड़े होने लगते है, वहीं पहाड़ की नारी तमाम कष्टों एवं अभावों में भी पहाड़ सी अटल अविचल खड़ी रहकर बहादुरी के साथ संघर्ष करती हुई स्वावलंबी और स्वाभिमानी जीवन जी रही हैं इस आस में कि फिर सुबह होगी। राज्य बनने को लेकर जो सपने उसने देखे हैं वे कभी तो सच होंगे।

जल समाधि में विलीन टिहरी शहर

महीपाल सिंह नेगी

पानी भरने पहले टिहरी शहर और बाँध बनाने में लगी कंपनियों के परिसर

29 अक्टूबर 2005 को जब टिहरी बाँध की आखिरी डाइवर्जन सुरंग बंद की गई तो ऐतिहासिक नगर टिहरी के डूबने का निर्णायक समय भी आ गया। इससे पूर्व यद्यपि बरसात में टिहरी शहर तक पानी आया था लेकिन बरसात कम होते ही पानी वापस उतर जाता। शहर में आखिरी समय तक डटे रहे करीब 70-80 परिवारों को जुलाई 2005 में पानी भरने पर अपने घरों व शहर को छोड़कर जाना पड़ा था।

ऐतिहासिक टिहरी अब पूरी तरह बांध के जलाशय के नीचे अदृश्य है। सबसे आखिर में डूबा घंटाघर जो कि ऊँचाई वाली जगह धनाखेत में था और स्वयं भी इसकी ऊँचाई थी 110 फीट। यद्यपि राजमहल कौशल दरबार और भी ऊँचाई पर है लेकिन यह पूरी तरह खण्डहर हो चुका है और किसी भी तरह यहां पर कभी राजमहल स्थित होने का आभास भी नहीं होता, अप्रैल तक यह स्थल भी डूब जायेगा।

टिहरी का अधिकांश भाग डूबने में चार महीने लग गये। धीरे-धीरे डूबने का दृश्य इस शहर के निवासियों के लिये हृदय-विदारक घटना से कम नहीं रहा। यह सिर्फ एक शहर का डूबना भर नहीं है। एक शहर के अलावा और भी बहुत कुछ था टिहरी। भागीरथी, भिलंगना का संगम, पौराणिक मंदिर और तीर्थ, पंवार वंश के शासकों की अंतिम राजधानी, किंवदंतियों परम्पराओं का नगर, कई ऐतिहासिक जनांदोलनों का साक्षी, स्वामी राम तीर्थ से लेकर श्रीदेव सुमन जैसे तपस्वियों-कर्मयोगियों की तप व कर्मभूमि।

जल भराव की शुरुआत का दृश्य, पुरानी टिहरी अब यादें ही बाकी रह गई

टिहरी एक छोटा सा ही नगर था लेकिन इसका इतिहास इसकी परम्परा और इसकी विरासत बड़ी, बहुत बड़ी कही जा सकती है। गढ़वाल के पंवार वंश के राजा सुदर्शन शाह ने सन 1815 में यहां राजधानी बसाई थी। इससे पहले गढ़वाल रियासत की राजधानी श्रीनगर गढ़वाल थी जिस पर 1803 में नेपाल के गोरखों ने आक्रमण कर कब्जा कर लिया था और फिर गोरखों के ईस्ट इण्डिया

कम्पनी से युद्ध में पराजित होने पर 1815 में कम्पनी ने राजा सुदर्शन शाह को श्रीनगर गढ़वाल लौटाने से इन्कार कर दिया। दरअसल यह अंग्रेजों का छल था। सुदर्शन शाह के पिता प्रद्युम्न शाह गोरखायुद्ध में वीरगति को प्राप्त हुए थे। गढ़वाल के इतिहास में इसे गोरख्याणी कहते हैं।

30 दिसम्बर 1815 को टिहरी में राजधानी स्थापित हुई। इससे पूर्व टिहरी एक छोटा सा गांव था जिसमें धुनार जाति के आठ-दस परिवार रहते थे। ज्ञात इतिहास के आधार पर कहा जा सकता है कि धुनार टिहरी के प्राचीन निवासी थे। धुनार टिहरी में कई शताब्दियों से रह रहे थे और इनका काम तीर्थ यात्रियों व अन्य लोगों को नदी आर-पार कराना था। नदी पर पुल बन जाने के बाद इन्होंने खेती करनी शुरू कर दी और काश्तकार हो गये। टिहरी डूबने पर धुनारों के 30 परिवार भी विस्थापित हो गये हैं। टिहरी से विस्थापित होने वाले परिवारों की संख्या सरकारी रिकार्ड के अनुसार 5291 है जबकि ग्रामीण क्षेत्र के लगभग इतने ही परिवार पूर्ण रूप से तथा करीब 4000 परिवार आंशिक रूप से विस्थापित हुऐ हैं। पंवार वंश की राजधानी और धुनारों की बस्ती से भी पूर्व टिहरी के इतिहास की ज्यादा जानकारी नहीं मिलती लेकिन स्कन्ध पुराण के केदारखण्ड में भागीरथी व भिलंगना के संगम को गणेश प्रयाग कहा गया है। इसके निकट शेषतीर्थ, धनुषतीर्थ, लक्ष्मणकुण्ड, गणेश्वर लिंग व सत्येश्वर शिवलिंग का स्थित होना भी बताया गया है। अर्थात स्पष्ट है कि इस स्थान का पौराणिक महत्व रहा है।

17वीं शताब्दी में गढ़वाल के पंवार वंशीय राजा महीपत शाह के सेनापति रिखोला लोदी टिहरी की धुनार बस्ती में आये थे और उन्होंने धुनारों को खेती के लिये कुछ जमीन दी थी। टिहरी शहर का एक हिस्सा इसी जमीन पर बसा था। 1815 में जब सुदर्शन शाह ने यहां राजधानी बसाई तब धुनारों को थोड़ा दूरी पर दूसरी जगह बसाया गया जिसे बाद में धुनार खोला कहा जाने लगा।

सुदर्शन शाह चाहते तो यह थे कि श्रीनगर गढ़वाल को पुनः राजधानी बनाया जाय लेकिन अलकनंदा पार का सारा क्षेत्र और कुमांऊ तक ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने हड़प लिया। सुदर्शन शाह के पास बची रह गई एक छोटी सी रियासत। और इसी रियासत की राजधानी बनी टिहरी। गढ़वाल के पंवार वंशीय राजाओं की यह चौथी राजधानी थी। पहली चांदपुर गढ़ी, दूसरी देवलगढ़ी तथा तीसरी श्रीनगर गढ़वाल।

टिहरी के बाद भी सुदर्शन शाह के उत्तराधिकारियों ने प्रतापनगर, कीर्तिनगर व नरेन्द्रनगर बसाये लेकिन इनमें नरेन्द्रनगर को कुछ समय तक व प्रतापनगर को भी कुछ समय तक ही ग्रीष्म कालीन राजधानी का दर्जा तो मिल पाया लेकिन राज-काज की सारी गतिविधियों का केन्द्र टिहरी ही बना रहा।

राजधानी की स्थापना के बाद सन 1815 में जब टिहरी नगर बसना शुरू हुआ तो शुरू में पहले 30 मकान राजकोष से 700 रू खर्च कर बनाये गये थे। सुदर्शन शाह यहाँ खानाबदोष जैसी परिस्थिति में आये थे लेकिन 1859 में अपनी मृत्यु से पूर्व ही वे टिहरी को नगर की शक्ल दे चुके थे। 1858 में भागीरथी नदी पर लकड़ी का पुल बनाया गया जिससे रियासत में भागीरथी के आर-पार के गांवों में जाना आसान हो गया।

सुदर्शनशाह की मृत्यु के बाद सन 1859 में उनके पुत्र भवानी शाह टिहरी की राजगद्दी पर बैठे। प्रसिद्ध कुमांऊनी कवि गुमानी पंत सुदर्शनशाह के शासनकाल के दौरान जब टिहरी आये तो टिहरी की बसावट पर एक कविता लिखी- 'सुरगंगी तटी रसखान महो..........' टिहरी पर लिखी गई यह पहली रचना थी।

टिहरी के राजकोष में अंग्रेज ठेकेदार विल्सन को जंगल कटान का ठेका दिये जाने के बाद अच्छी-खासी वृद्धि होने लगी। पुराना राजदरबार का निर्माण पहले ही हो चुका था। इसके बाद टिहरी में नये-नये भवन व महल बनते

चले गये। सन 1871 में भवानी शाह की मृत्यु हो गई और उनके पुत्र प्रतापशाह राजगद्दी पर बैठे। टिहरी में प्रताप स्कूल की स्थापना व भिलंगना नदी पर झूला पुल उन्हीं के शासन काल में बना। उन्होंने टिहरी से करीब 15 कि०मी० दूर (पैदल) ऊँची पहाड़ी पर प्रतापनगर बसाया जहां से ग्रीष्म काल में राज-काज चलाया जाता।

सन 1887 में प्रतापशाह की मृत्यु हो गई तब उनका पुत्र कीर्तिशाह गद्दी पर बैठा। उनके शासन में नया राजदरबार कौशल दरबार तथा घन्टाघर जैसी भव्य इमारतें बनाई गई राजमाता गुलेरिया ने टिहरी में बद्रीनाथ व केदारनाथ धाम के डिजाइन पर बद्रीनाथ व केदारनाथ मंदिर बनाये ताकि बदरी-केदार के दर्शन प्रतिदिन यहीं हो सकें।

सन 1902 में प्रसिद्ध वेदांती संत स्वामी रामतीर्थ टिहरी आये और फिर 1906 में महाप्रयाण तक यहीं रहे। कीर्तिशाह ने उनके लिये जो भवन बनाय उसे गोलकोठी कहा गया, यह कोठी भी अब पानी में समा गई। 1913 में कीर्तिशाह की मृत्यु हुई और उनके पुत्र नरेन्द्रशाह गद्दी पर बैठे। 1924 में भागीरथी पर बना लकड़ी का पुल बाढ़ से बह गया और फिर नया पुल बनाना पड़ा। सन 1940 में टिहरी तक सड़क और गाड़ी पहुंच गई और प्रताप स्कूल इण्टरमीडिएट तक उच्चीकृत कर दिया गया। 1942 में टिहरी में प्रथम कन्या पाठशाला खुली। अक्टूबर 1946 में नरेन्द्रशाह ने स्वेच्छा से राजगद्दी छोड़ अपने पुत्र मानवेन्द्र शाह का राजतिलक कर दिया। लेकिन जल्दी ही टिहरी मे राजशाही का खात्मा हो गया। जनवरी 1948 में जनक्रान्ति ने तख्ता पलट दिया और आजाद पंचायत की सरकार बनी। फिर अगस्त 1948 में टिहरी रियासत का संयुक्त प्रांत में विलीनीकरण कर दिया गया। आजादी के बाद भी टिहरी राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक व शैक्षिक गतिविधियों का केन्द्र बना रहा यद्यपि जिला मुख्यालय नरेन्द्रनगर में रहा तब भी जिला न्यायालय व जिलापरिषद सहित अधिकांश जिलास्तरीय कार्यालय टिहरी में रहे जो 1989 में जिला मुख्यालय नरेन्द्रनगर से नई टिहरी शिफ्ट होने के बाद ही क्रमशः नई टिहरी ले जाये गये।

1963 में बांध निर्माण की घोषणा से टिहरी के विकास में गतिरोध आ गया। यद्यपि 1969 में यहां डिग्री कालेज खुला लेकिन बांध निर्माण के कारण 30 साल तक यह कालेज महज टिन-शेड में चलता रहा। ऐसा कई और संस्थाओं के साथ हुआ और साथ ही टिहरी के वाशिंदों के साथ भी। जन सुविधाओं का विस्तार सालों पहले बांध निर्माण के नाम पर रोक दिया गया। पुनर्वास से पहले टिहरी से पलायन शुरू हो गया। 1976 में टिहरी के बदरीनाथ मंदिर की वे मूर्तियां चोरी चली गई जिन्हें कभी राजमाता गुलेरिया ने अपने गहने बेचकर तक बनवाया था।

टिहरी का ऐतिहासिक घंटाघर डूबने के करीब

टिहरी के साथ बहुत कुछ डूब गया। बात राजाओं के महल या घण्टा घर की ही नहीं है, रियासत की वह जेल जिसमें श्री देव सुमन ने 84 दिन की विश्व की दूसरी सबसे लम्बी भूख हड़ताल की और जिसमें तिलाड़ी काण्ड के दर्जन भर कैदी बिना इलाज दम तोड़

देश की उन्नति का यह द्वार खुलने को बाता है, जिसके लिये सब कुछ त्यागना भी मंहगा नहीं लगा। यही अथाह जल देश को बिजली की कमी से निजात दिला सकता है

गये थे, स्वामी रामतीर्थ के बमसेरो गुफा, रामतीर्थ स्मारक, सुमन स्मारक, अनेक प्राचीन मन्दिर, आछरियों का घाट, अठुर पट्टी के अत्यन्त उपजाऊ खेत, भागीरथी भिलंगना पर बने दर्जन भर पैदल व मोटर पुल, सड़कें, हजारों खेत खलियान, पितृ कुड़ा, गौचरान, पनघट, घाट और घराट, आम-अमरूद के बगीचे, सेमल बड़ और पीपल, तीन धारा, श्रीचन्द की चौरी, भादों की मगरी, दयारा का बाग क्या क्या डूब गया पीढ़ियों की संचित विरासत सब कुछ देश के विकास के नाम पर छीन लिया गया।

पुनर्वास का बड़ा शोर हुआ लेकिन अधिकांश परिवारों को दस बीस हजार रूपयों से ज्यादा मुआवजा नहीं मिला हाँ चकदैत किस्म के दलालों ने यहाँ भी खूब फायदा उठाया और विस्थापितों का हक भी छीना। अब विस्थापित जगह-जगह बिखर गये हैं। एक भाई नई टिहरी दूसरा देहरादून, कोई ऋषिकेश तो कोई पथरी-हरिद्वार। टिहरी शहर के ज्यादातर विस्थापितों ने पहले नई टिहरी बसने की सोची लेकिन यहाँ की जलवायु, हजारों सीढ़ियों की खड़ी चढ़ाई, पानी की कमी और रोजगार के साधनों का अभाव, इस नये नवेले शहर से भी सैकड़ों परिवारों को देहरादून व अन्य जगह पलायन के लिए मजबूर कर दिया। पुरानी टिहरी के आधे परिवार ही नई टिहरी में हैं बाकि आधा देहरादून, ऋषिकेश, हरिद्वार, श्रीनगर, उत्तरकाशी आदि जगहों पर बिखर गये। मिट्टी से, मातृभूमि से उखड़ने के बाद विस्थापितों का तमगा लगाये हिसाब किताब लगा रहें हैं कि उन्होंने क्या-क्या खो दिया। नई टिहरी उन्हें वह सुकून वह पहचान नहीं दिला पाई। नई टिहरी नया नगर जरूर है पर इसमें टिहरी जैसा कुछ भी नहीं।

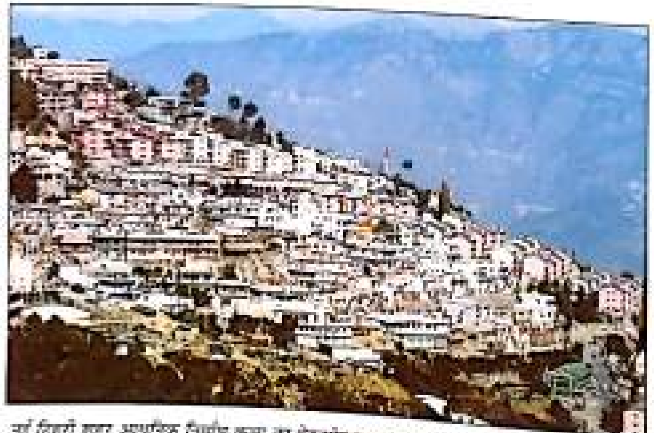

नई टिहरी शहर आधुनिक निर्माण कला का बेहतरीन नमूना पर पुरानी टिहरी जैसा यहाँ कुछ भी नहीं

With Best Complements
From:

RELAXO

RELAXO FOOTWEARS LIMITED

Manufactures and Traders
of all Kinds of
Footwear and Allied Products

Regd. & Sales Office : 316-319, Allied House, Inderlok Chowk, Old Rohtak Road, Delhi-110035
Phones : 23658354, 23658365, 23658366, 23658570. Fax : 011-23658431, 23658773
Web site : www.relaxofootwear.com
E-mail : relaxo_corp@satyam.net.in

Works (Unit-I) : 327, M.I.E., Bahadurgarh - 124507 (Haryana)
(Unit-II) : 326, M.I.E., Bahadurgarh - 124507 (Haryana)
Phones : 01276-268391-94. Fax : 01276-268395.
(Unit-III) : A-1130 & 1130 (A), Indl. Area, Phase - II, Bhiwadi - 301019 (Rajasthan)
Phones : 01493-224881-83. Fax : 01493-224884.
(Unit-IV) : 30, Mooja Hasanpur, Tikri Border, Bahadurgarh - 124507 (Haryana)
Phones : 01276-268091, 268092, 268093, Fax : 01276-268094

AN ISO 9001 : 2000 CO.
(Certificate No. FM69121)

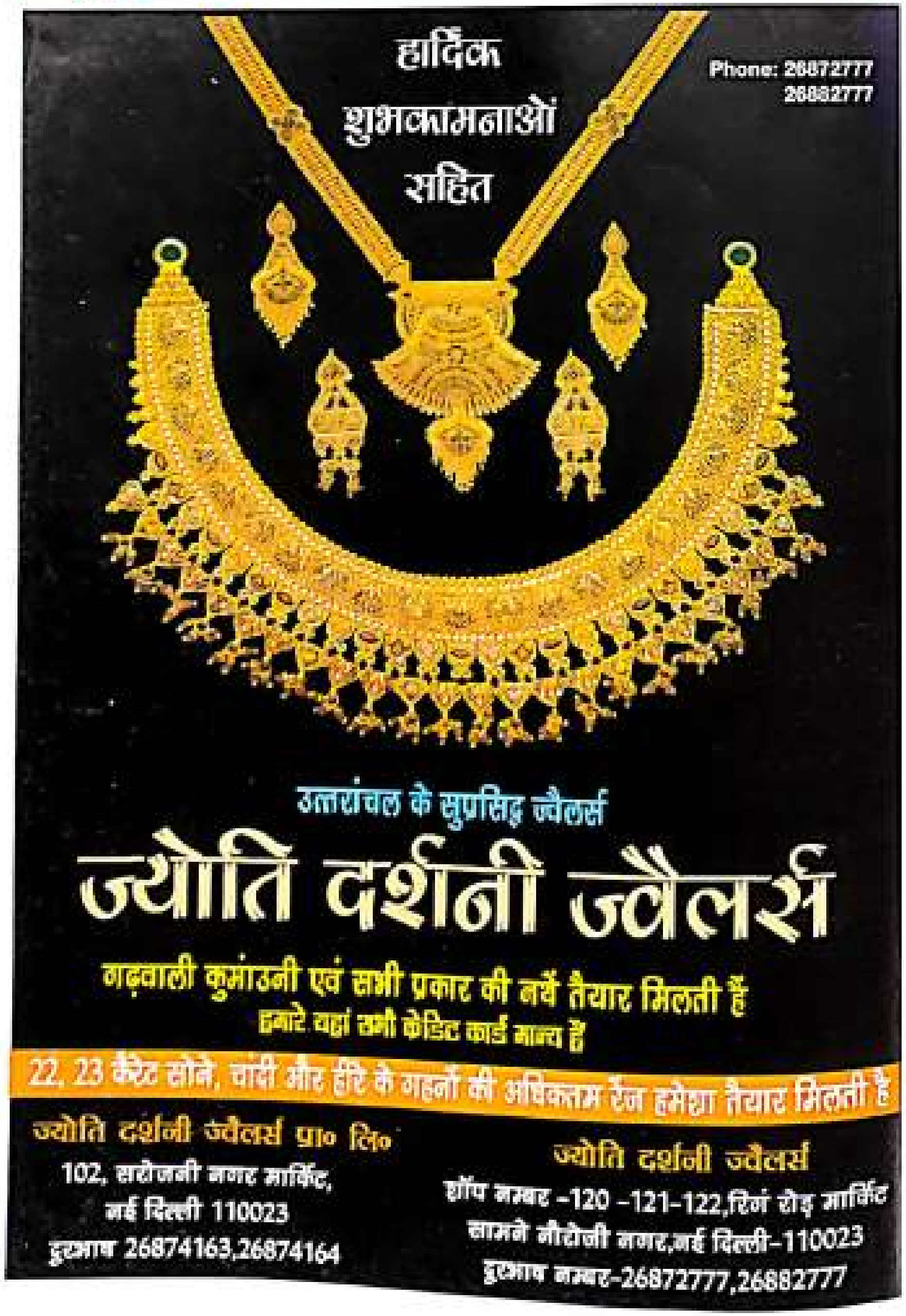

हम हिमालय है

विक्रम सिंह अधिकारी

हर तरफ षड्यंत्रों के
अनगिनत तूफान है
बह रही पागल हवाएं
किंतु हम चट्टान है।
हम नहीं भयभीत होते
समर में संग्राम में
प्राण की बाजी लगाते
देश के हर काम में
अन्याय, अत्याचार के
सम्मुख कभी झुकते नहीं
राह है। अंगार की पर
हम कभी रुकते नहीं,
देश की इन सरहदों के
नाम है जीवन हमारा
देश है आराध्य अपना
देश है पूजन हमारा।
देश की महिमा सुनाते
गीत सारे आरती के
बढ़ रहे हम सिर उठाए
पूत भारत-भारती के।
चाहते हम हर घड़ी
हर दिवस हो उत्कर्ष का
चाहते हैं विश्व
सम्मान भारत वर्ष का।

प्लीज मम्मी

दिनेश ध्यानी

मुझे भी देखने दखने दो
स्वपनिल आकाश, छिटकी चाँदनी
उगता सूरज, खुली धरती,
वसंत बहार, ऋतु परिवर्तन।
होने दो मुझे भी परिचित
जगत की आबोहवा से
जिन्दगी की धूप और छाँव से।
मैं भी लेना चाहती हूँ साँस
खुली हवा में,
प्लीज मम्मी जी, पापा जी
दादा जी, दादी जी
आने दो मुझे भी संसार में
गिड़गिडा रही थी एक लड़की
जब की जा रही थी उसकी
भ्रूण हत्या।

प्रेम करने वाला पड़ोसी दूर रहने वाले भाई से कहीं उत्तम है। — चाणक्य

* * *

जो दिन हमें प्रसन्नता प्रदान करते हैं, ये हमें बुद्धिमान बनाते हैं। — जान मैसफील्ड

* * *

कुण्ठित विद्या विष है। असाध्य रोग विष है। दरिद्रता का रोग विषय है और वृद्ध पुरुष के लिए तरुणी विष है। — अज्ञात

* * *

सफलता का पहला सिद्धांत है अनवरत काम — रामतीर्थ

दिल्ली में गढ़वाली समाज का स्थायत्व

व

गढ़वाल हितैषिणी सभा (पंजी)

वीरेन्द्र सिंह रावत

गढ़वाल से कौन व्यक्ति सबसे पहले दिल्ली आया यह तो मालूम नहीं, अपितु स्व० भक्तदर्शन जी की पुस्तक ''गढ़वाल की दिवंगत विभूतियां'' के अनुसार दिल्ली में गढ़वाल से सबसे पहले उल्लेखित रूप में श्री पूर्णिया नैथानी टिहरी नरेश के प्रतिनिधि के रूप में मुगल काल में औरंगजेब के दरबार में आये थे। यह तो इतिहास की बात हुई और कौन कब आये यह यहाँ संदर्भ भी नहीं, दिल्ली में गढ़वाली समाज का विशेष रूप में आना देश विभाजन के पश्चात ही हुआ। 1947 के पश्चात गढ़वासियों की बड़ी संख्या पाकिस्तान के क्वेटा करॉची व लाहौर शहरों से दिल्ली आने को मजबूर हुई। स्वतंत्रता के पहले अधिकांश गढ़वाली, रोजी के लिये, पाकिस्तान के इन शहरों की ओर ही रूख करते थे और वहाँ गढ़वाल सभायें भी गठित थी। दिल्ली में अपेक्षाकृत कम ही लोग थे। विभाजन के पश्चात दिल्ली ही एक मात्र ऐसा शहर रह गया जहाँ रोजगार के अवसर तथा टिकने के लिये अपने लोग मिल जाते थे, साथ ही यह गढ़वाल से सबसे नजदीकी बड़ा शहर भी ठहरा।

पचास के दशक के आरंभिक वर्षों में दिल्ली में गढ़वासियों की संख्या में काफी वृद्धि हुई। उस समय का प्रवासी पूर्ण रूप से अपने अपने गाँवों के प्रति समर्पित था। दिल्ली उसके लिए बसने की नहीं मात्र रोजी-रोटी का साधन थी। यदि हम कुछ लोगों की बात न करें तो आम गढ़वाली तब छोटी-मोटी नौकरियों पर ही निर्भर था। द्वितीय विश्व महायुद्ध के पश्चात कुछ लोग केन्द्र सरकार के कार्यालयों में छोटे मोटे पदों पर नियुक्ति पाने में सफल रहे। गाँवों के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित होने के कारण आरम्भिक वर्षों में ही सामाजिक स्तर पर संगठित होना शुरू कर दिया था।

पचास के दशक के पहले भी दिल्ली में दो चार सभायें मौजूद थी। इनमें मुख्य 'गढ़वाल हितैषिणी सभा' थी जिसका गठन 1923 में शिमला में हुआ था। शिमला तब भारत की ग्रीष्मकालीन राजधानी हुआ करती थी। कार्यालय गर्मियों में शिमला स्थानान्तरित हो जाते थे। स्वतन्त्रता के कुछ ही पहले गढ़वाल हितैषिणी सभा दिल्ली में ही केन्द्रित हो गई। एक अन्य संस्था चौदकोट, सेवा-संघ की स्थापना भी 1950 से पहले ही हो चुकी थी, इस सभा के योगदान से एक अनूठे तरीके से जन-श्रम द्वारा बनायी गई सतपुली-नौगाँव खाल तथा शनूधार-नौगाँवखाल मार्गों का निर्माण हुआ था। स्थानीय जनता के श्रमदान तथा सभा की प्रेरणा के फलस्वरूप यह कार्य संपन्न हुआ।

गढ़वाल हितैषिणी सभा अपनी सामाजिक सांस्कृतिक तथा अन्य कार्यों के लिए दिल्ली में अपना एक भवन निर्माण के लिए संघर्षरत थी, सभा के कुछ कर्मठ व्यक्तियों विशेषतया श्री आनन्द सिंह नेगी, श्री गोविन्द राम चन्दोला, आचार्या जोध सिंह रावत आदि सज्जनों के प्रयासों से गढ़वाल भवन के लिये जमीन का आवंटन करा लिया गया जो तीन बार स्थान परिवर्तन के बाद वर्तमान स्थल पर 1953 में स्थाई रूप से स्थापित हो पाया।

पचास के दशक में दिल्ली में विभिन्न गढ़वाली संस्थाओं का गठन मूल रूप में गढ़वाल के क्षेत्रों, परगना, और पट्टियों के आधार पर हुआ। दिल्ली में रहने वाले अपनी मूल समस्याओं के प्रति जागरूक हो गये थे और इन संस्थाओं ने अपने अपने मूल क्षेत्रों में विशेषतया स्कूलों की स्थापना, सड़क, पेयजल आदि के लिए विशेष योगदान किया। यह क्रम साठ के दशक तक तीव्रता से चला गढ़वाल-मण्डल में कई स्कूल इन्हीं संस्थाओं की देन हैं। संस्थाओं

ने अन्य सार्वजनिक कार्यों के लिये भी पहल की। इन्हीं में प्रमुख थे नागपुर चमोली विकास मण्डल, टिहरी उत्तरकाशी जन विकास परिषद, खाटली विकास मण्डल, गुजड़ू विकास मण्डल, ढनगढस्यूं प्रगति मण्डल, असवालस्यूं सेवक समाज आदि।

सांस्कृतिक व साहित्यिक क्षेत्र में दिल्ली साहित्य कला समाज, जो कि बाद में 'जागर' के नाम से जाना गया सक्रिय था। इसके माध्यम से कई साहित्यिक गोष्ठियाँ और गढ़वाली नाटकों का भी मंचन हुआ करता था। गढ़वाली साहित्य को इस संस्था के द्वारा काफी प्रोत्साहन मिला जहाँ गढ़वाली नाटकों का लेखन में श्री ललित मोहन थपलियाल व श्री राजेन्द्र धस्माना अग्रणी रहे वहीं साहित्य में स्व० अबोध बंधु बहुगुणा और स्व० कन्हैया लाल डंडरियाल सशक्त हस्ताक्षर थे।

इन सबसे अलग दिल्ली में एक सांयकालीन सरस्वती महाविद्यालय हनुमान मंदिर कनाट प्लेस में चालीस के दशक से चुपचाप अपने अनूठे तरीके से गढ़वाली समाज की सेवा में जुटा रहा। आचार्य जोध सिंह रावत का यह निजी शिक्षा संस्थान गढ़वाल से आये कम पढ़े सैकड़ों युवकों को सांयकालीन कक्षाओं में पढ़ा कर मैट्रिक व उच्च परीक्षायें उत्तीर्ण करवाई तब गढ़वाल में स्कूलों की कमी थी और वहाँ के अधिकांश युवक प्राइमरी या मिडिल तक ही शिक्षा पा सकते थे, माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्कूलों की गढ़वाल में उस समय नितांत कमी थी। वहाँ से आये युवक समुचित शिक्षा के अभाव में चतुर्थ श्रेणी या अन्य वर्गों में छोटे पदों पर ही रोजगार पा सकते थे।

आचार्य जोध सिंह रावत ने इन युवकों को आगे पढ़ने के लिये तो प्रेरित किया ही और सुना है वे निशुल्क भी पढ़ाते रहे थे। उच्च शिक्षा प्राप्त कर कई युवक सरकारी कार्यालयों में पदोन्नत हुए उनमें से ही कई अवर सचिव और उससे भी बड़े पदों तक पहुँचे। दिल्ली में गढ़वाली समाज की उन्नति व स्थायीत्व की यह भी एक महत्वपूर्ण कड़ी थी। आचार्य गढ़वाल हितैषिणी सभा के एक महत्व पूर्ण स्तम्भ थे वे कई वर्षों तक इसके महासचिव के पद पर भी रहे।

सरस्वती महाविद्यालय उनके निधन के पश्चात बंद हो गया। उनके पुत्रों विशेष कर श्री चंद्रपाल सिंह रावत जो स्वयम् एक अच्छे शिक्षक व सामाजिक विभूति हैं, यदि थोड़ा व्यवसायिक रुचि लेते तो सरस्वती महाविद्यालय आज तक अच्छे पब्लिक स्कूल के रूप में होता।

साठ के दशक में गढ़वाली समाज दिल्ली में अपने आप को स्थापित करने की दिशा में अग्रसर होने लगा, इधर गढ़वाल हितैषिणी सभा ने इसी बीच संघात्मक (फेडरेटिंग बॉडी) संस्था का रूप ले लिया। साठ व सत्तर के दशकों में गढ़वाल की लगभग चालीस छोटी बड़ी संस्थायें गढ़वाल हितैषिणी सभा से सम्बन्धित रहीं। इससे पहले सभा का स्वरूप थ्री टीयर था। आम महासमिति व कार्यकारिणी दिल्ली में गढ़वाल हितैषिणी सभा के क्षेत्रानुसार वृत थे जो एक अनुपात में महासमिति में अपनी-अपनी तरफ से सदस्य भेजते थे। परन्तु तृतीय प्रणाली सफल न हो सकी।

साठ के ही दशक में देश के विभिन्न शहरों में विशेषतया उत्तर भारत के कार्यरत गढ़वाल सभाओं की एक संघात्मक संस्था केन्द्रीय गढ़वाल सभा का संयोजन स्व० शिवानन्द नौटियाल ने किया, कुछ वर्षों तक यह सभा काफी सक्रिय रही इसका एक बड़ा अधिवेशन गढ़वाल हितैषिणी के तत्वावधान में हुआ जो बहुत सफल भी रहा। केन्द्रीय गढ़वाल सभा के शिमला, कोटद्वार, मेरठ व सहारनपुर के अधिवेशन भी उस समय उल्लेखनीय रहे। श्री शिवानन्द के पश्चात श्री सुल्तान सिंह भंडारी इसके अध्यक्ष बने परन्तु केन्द्रीय गढ़वाल सभा अपना स्वरूप आगे ले जाने में असफल रही।

इधर गढ़वाल हितैषिणी सभा दिल्ली ने अपने सांस्कृतिक सामाजिक स्वरूप को बनाये रखा, परन्तु शुद्ध प्रशासनिक आवश्यकता को मानते हुए उत्तराखंड राज्य की मांग का खुलकर समर्थन किया, इसी समय सभा के दिल्ली नगर निगम में मनोनीत किये जाने वाले छः एल्डरमैनों में एक पर अपने वरिष्ठ सदस्य श्री घनश्याम नौटियाल को मनोनीत कराने का भरसक प्रयास किया। यद्यपि यह कार्य सफल न हो सका फिर भी गढ़वाली समाज ने दिल्ली की राजनीतिक गतिविधियों में दस्तक देनी शुरू कर दी थी। श्री कुलानन्द भारतीय पहले नगर निगम फिर दिल्ली मैट्रोपोलिटन कॉउंसिल में लगातार निर्वाचित होते रहे। बाद के वर्षों में वे कार्यकारी पार्षद शिक्षा भी बने। भारतीय जी का गढ़वाल हितैषिणी सभा से निरंतर लगाव बना रहा, वे सभा के लिए अब भी प्रेरणास्रोत हैं।

एक संदर्भ और, पचास के दशक के अंत में दिल्ली राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की स्थापना काफी संख्या में हुई उसी समय श्री बी० डी० भट्ट दिल्ली में शिक्षा निदेशक के पद पर आये उनके कार्यकाल में प्रशिक्षित गढ़वाली अध्यापकों की एक बड़ी संख्या दिल्ली के विद्यालयों में नियुक्त हुई। यद्यपि भट्ट जी के कार्यकाल के बाद भी दिल्ली में कई उत्तराखण्डी नियुक्त होते रहे अपितु उनका योगदान सराहनीय योग्य है, परिणाम स्वरूप हमारा समाज उच्च शिक्षा की ओर तीव्रता से अग्रसर होने लगा। दिल्ली विश्वविद्यालय में उत्तराखण्ड छात्र संगठन की स्थापना साठ के दशक में ही हुई।

सत्तर का दशक आते आते दिल्ली का गढ़वाली समाज स्थायीत्व की ओर अग्रसर हो चला था, शिक्षा और आर्थिक क्षेत्र में सुधार के कारण यह ठोस कदमों से आगे बढ़ चला था। इधर गढ़वाल भवन का निर्माण चारदीवारी सहित पूर्ण हो चुका था, अब मात्र साज-सज्जा ही बाकी रह गयी थी। भवन बनाने की दिशा में श्री उमेद सिंह रावत के अध्यक्षीय कार्यकाल में उल्लेखनीय काम हुआ, श्री महिशानन्द कण्डवाल पूर्व अध्यक्ष थे और उस समय पूर्व और वर्तमान सभी पदाधिकारियों में अच्छा सामंजस्य सभा के कार्यक्रमों में रहा। इसके पश्चात गढ़वाल हितैषिणी का नेतृत्व कुछ कारणों से बरकरार नहीं रह पाया सभा की गतिविधियां शिथिल होती गयी और 80 के दशक में तो 7-8 साल तक नगण्य ही रही, यहाँ तक कि भवन का रखरखाव भी ढंग से न हो सका। सहयोगी संस्था भी ढीली पड़ती चली गयी। दूसरी तरफ अस्सी के दशक के आते आते हमारा समाज दिल्ली में अच्छी तरह से रच बस गया, और गढ़वाली लोगों की एक बड़ी संख्या बड़े पदों पर आसीन हो चुकी थी, समाज में शिक्षा का भी अच्छा प्रसार हो गया जिससे लोग अपने को ठीक तरह से स्थापित करने में सफल होने लगे। देश विभाजन के समय या उसके कुछ पहले सरकारी सेवाओं में आई पीढ़ी सेवा निवृत होने लगी, इन लोगों में से अधिकांश ने दिल्ली को ही स्थाई निवास बना लिया। उधर गढ़वाल भवन कुछ-कुछ वीरान सा हो गया था, लोग अपने को व्यवस्थित करने लगे थे सभाओं की सुध कम ही रह गई थी। पर जागृत समाज कब तक चुप रहता अस्सी के दशक के अंतिम वर्षों में कुछ युवक सम्मिलित रूप से आगे आये और भवन में गतिविधियां आरम्भ हो गयी। भवन के एक हिस्से को मोटर गैराज वाले ने कब्जाया हुआ था उससे मुक्त कराने में सफलता भी प्राप्त की। श्री मुरारी सिंह पंवार को सर्व सम्मति से अध्यक्ष चुन लिया गया वे दूसरे टर्म के लिए भी चुन लिए गये। वे लगभग चार साल तक अध्यक्ष पद पर रहे। इस समय भी भवन के रख रखाव व छोटी-मोटी तब्दीलियों के अलावा कुछ अधिक न हो सका उनके कार्यकाल में मोटर गैराज का हटना ही उल्लेखनीय रहा, हाँ सभा की विलुप्त होती गतिविधियों को दिशा मिलनी शुरू हो गयी थी।

इनके बाद 1995 में श्री महिमा नन्द द्विवेदी आम राय से अध्यक्ष चुन लिये गये। उनके कार्यकाल में भवन का नवीनीकरण हुआ, सभा की गतिविधियां भी बढ़ी। नवीनीकरण के लिए धन मुख्यतया भवन से ही अर्जित हुआ हालांकि कुछ दानी महानुभावों का भी भरपूर सहयोग मिला। आरम्भ में श्री द्विवेदी सफल दिखे उन्हे भरपूर सहयोग और सम्मान

भी समाज से मिला, पहला द्विवार्षिक कार्यकाल सफल ही रहा, इसके बाद वे विवादों से घिरते चले गये यह सब दुर्भाग्यपूर्ण था।

2002 में चुनाव द्वारा श्री विक्रम सिंह अधिकारी अध्यक्ष निर्वाचित हुए। इनका प्रथम कार्यकाल कुछ उपलब्धताओं को लेकर डैमेज कंट्रोल में गुजरा, इस बीच उन्होंने अपनी पूरी टीम के साथ सभी ओर सामंजस्य स्थापित करने का भरसक प्रयास किया और सफल भी रहे। अब वे अपने दूसरे कार्यकाल में हैं। सभा के पास आज एक अच्छी खासी धन-राशि उपलब्ध है। अभी हाल ही में सभा का एक प्रतिनिधि-मंडल देहरादून उत्तरांचल सरकार से ऋषिकेश में सभा द्वारा प्रस्तावित एक आधुनिक धर्मशाला के निर्माण हेतु जमीन आवंटन करवाने के लिए गया। उत्तरांचल सरकार के बुलावे पर ही उक्त प्रतिनिधि मंडल ने देहरादून प्रस्तावित भू-खण्ड का अवलोकन भी किया। सभा के सदस्यों ने मुख्यमंत्री तथा उनके कुछ अन्य मंत्रिमंडल के मंत्रियों से भी भेंट की। सदस्यों को मंत्रियों के सद्भाव को देखकर काफी प्रसन्नता हुई। सभा ऋषिकेश में केन्द्र सरकार द्वारा प्रस्तावित 'अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान' की शाखा के नजदीक ही आने वाले रोगियों के अविभावकों के ठहरने के लिये एक सुसज्जित धर्मशाला का निर्माण करना चाहती है। श्री अधिकारी को महासचिव आर० के० शर्मा (द्विवेदी) सहित अन्य समस्त पदाधिकारियों और कार्यकारिणी सदस्यों का भरपूर सहयोग मिल रहा है। समस्त कार्य एक टीमवर्क के रूप में आगे बढ़ रहा है।

दिल्ली से इस समय दो अन्य संस्थायें 'उत्तराखण्ड मानव सेवा समिति' व 'हितकर हिमालय' गढ़वाल के सुदूर क्षेत्रों में चिकित्सा शिविर लगाकर निःशुल्क सेवा कर रहे हैं। श्री बी० एन० शर्मा के नेतृत्व में उत्तराखण्ड मानव सेवा समिति ने लगभग चालीस चिकित्सा शिविर में निःशुल्क नजर के चश्में तथा विकलांगो को कृत्रिम अंग भी प्रदान किये हैं। इधर श्री एच० एस० रूपरवाण वाटर हारवेस्टिंग की ओर सक्रिय हैं। गढ़वाल में स्थायित्व के रूप में आज हम दिल्ली में पूर्ण रूप से रच बस गये है। जनसंख्या के अनुपात से देखें तो काफी अच्छी संख्या में गढ़वाली/उत्तराखण्डी सरकारी व गैर सरकारी उच्च पदों पर आसीन है अब हमारे पास प्रोफेशनल की एक लंबी सूची है,कुछ लोग व्यवसाय की ओर भी बढ़े है लेकिन अभी भी सरकारी और गैरसरकारी सेवायें ही हमारी प्राथमिकता में हैं। आर्थिक प्रगति के साथ साथ आशा है इस ओर भी झुकाव बढ़ेगा।

गढ़वाल हितैषिणी सभा अब इस स्थिति में आ गई है कि वह दिल्ली व गढ़वाल में एक मजबूत गैर सरकारी संगठन का रूप ले सकती है, सभा को अब एक-दो बिन्दुओं पर केन्द्रित न रहकर नित्य बदलते हुए परिवेशों के अनुसार दिल्ली व गढ़वाल में आगे आना चाहिए। एक एजुकेशन सोसायटी गठित कर गढ़वाल में आधुनिक शिक्षा की पृष्ठ-भूमि तैयार की जानी चाहियें। आवश्यकता है सभा से अधिक से अधिक प्रोफेशनल व बुद्धिजीवियों के जुड़ने की।

*****

संत बोनिफस ने आजीवन औरों की सेवा की, पर कभी किसी से कुछ मांगा नहीं। कई बार उन्हें लम्बे समय तक उपवास करना पड़ जाता था। इसी तरह एक बार उन्हें कई दिनों तक कुछ भी खाने को नहीं मिला। एक स्त्री दूध निकाल रही थी। उन्हें ऐसा लगा कि उनके भीतर न मांगने का अहंकार उठ रहा है, सो उन्होंने तुरंत उस स्त्री से थोड़ा दूध मांगा। उसके पति ने दूध देने से इन्कार कर दिया। बोनिसिफ बिना किसी दुर्भाव के आगे बढ़ गये, पर भूख सहन न होने के कारण जमीन पर गिर पड़े। कहते हैं वहाँ एक झरना फूट पड़ा, जो आज तक बोनिसिफ निर्झर के नाम से विख्यात है।

उत्तरांचल का ऐतिहासिक परिचय एवं बलिदान

जय सिंह नेगी

भारत माता का शीर्ष भाग उत्तरांचल के नाम से जाना जाता है। जिसका उल्लेख वेदों, पुराणों विशेषकर केदारखण्ड में पाया जाता है। देवताओं की आत्मा हिमालय के मध्य भाग में गढ़वाल अपने ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्व तथा प्राकृतिक सौंदर्य में अद्भुत है। 55845 वर्ग कि०मी० में फैला उत्तरांचल जहाँ 80 लाख जनसंख्या निवास करती है, 13 जिलो में विभक्त है। इसी उत्तरांचल में आदि शंकराचार्य ने स्वर्गीय आभा वाले बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री, यमुनोत्री चारों धामो की स्थापना करके भारतीय संस्कृति के समन्वय की अद्भुत मिसाल कायम की है। ये चारों धाम भारत वासियों के ही नहीं विश्व जनमानस के श्रद्धा, विश्वास के धर्म स्थल हैं। यहाँ भिन्न-भिन्न जातियों के पशु-पक्षी, छोटी-छोटी नदियां, पानी के प्राकृतिक झरने, बाँज, बुराँस, देवदार के हरे पेड़, ऊँची-ऊँची चोटियों पर सिद्धपीठ तथा अल्मोड़ा, नैनीताल, ग्वालदम, बागेश्वर, सोमेश्वर जैसे स्थानो की प्राकृतिक सुन्दरता, हरिद्वार, ऋषिकेश जैसे धार्मिक नगर, माँ गंगा, यमुना जैसी पवित्र नदियाँ अपनी कल-कल ध्वनि करती हुई युगों से लाखों जीवों की प्राण रक्षा का भार उठाते हुए सम्पूर्ण मलिनताओं को धोते हुए अंतिम गंतव्य तक पंहुचती हैं।

हिमालय पर्वत की बर्फ से आच्छादित चोटियाँ देश की रक्षा की दीवार बनकर दृढ़ निश्चय एवं अडिग रहने की शिक्षा दे रहे हैं। ऋतुओं का परिवर्तन हमेशा गतिशील रहने की प्रेरणा प्रदान करते हुए अपनी अनुपम छटा बिखेरती हैं। इस अद्वितीय सौंदर्य को देखकर मानव, देवता, किन्नर, गंधर्व ही नहीं पशु-पक्षी भी यही अभिलाषा रखते हैं कि वे अपना निवास इसी पवित्र धरती को बनाएं। प्रकृति के इस रचनाकार की कलाकृति को कोई कैसे भूल पायेगा। भारत में जितने भी महान संत, ऋषि, मुनि, योगी, तपस्वी, ईश्वरीय अवतार, पीर पैगम्बर हुए हैं उन्होंने अपने जीवनकाल में कुछ समय के लिए इस पवित्र भूमि को अपनी साधना स्थली बनाकर शान्ति प्राप्त करते हुए ईश्वर का अनुभव किया है। इसीलिए यह भूमि देव भूमि के नाम से विख्यात है। इस भूमि की पवित्रता एवं प्राकृतिक विशेषता के कारण यहाँ के निवासियों में भी इसका प्रभाव परिलक्षित होता है अर्थात् प्रकृति प्रदत्त शिक्षण द्वारा यहाँ के निवासी ईमानदार, सत्यवादी, शांत स्वभाव, निश्छल हृदय, कर्मशील एवं ईश्वर प्रेमी होते हैं। इन गुणों को किसी शिक्षक द्वारा सिखाने की आवश्यकता नहीं होती है वे स्वाभाविक रूप से उक्त गुणों के धनी होते हैं।

उत्तरांचल का परिवेश एवं राजवंश:- उत्तरांचल का इतिहास उतना ही पुराना है जितना कि मानव जाति का। यहाँ कई शिलालेख, ताम्रपत्र व प्राचीन अवशेष भी प्राप्त हुए हैं। जिसमे गढ़वाल की प्राचीनता का पता चलता है। गोपेश्वर में शिव-मंदिर में एक शिला पर लिखे गये लेख से ज्ञात होता है कि कई सौ वर्ष पूर्व से यात्रियों का आवागमन इस क्षेत्र में होता आ रहा है। मार्कण्डेय पुराण, शिव पुराण, मेघदूत व रघुवंश महाकाव्य में यहाँ की सभ्यता व संस्कृति का वर्णन हुआ है। बौद्धकाल, मौर्यकाल व अशोक के समय के ताम्रपत्र भी यहाँ मिले हैं। इस भूमि का प्राचीन ग्रन्थों में देवभूमि या स्वर्गद्वार के रूप में वर्णन किया गया है। पवित्र गंगा हरिद्वार में मैदान को छूती है। प्राचीन धर्म ग्रन्थों में वर्णित यही मायापुर है। गंगा यहाँ भौतिक जगत में उतरती है। इससे पहले यह सुर-नदी देवभूमि में विचरण करती है। इस भूमि में हर रूप शिव भी वास करते हैं, तो हरि रूप में बद्रीनारायण भी। माँ गंगा का यह उद्गम क्षेत्र देव संस्कृति का वास्तविक क्रिड़ा क्षेत्र रहा है जो पौराणिक आख्याओं के रूप में आज भी धर्म-परायण जनता के मानस में विश्वास एवं आस्था के रूप में जीवित है।

उत्तरांचल की प्राचीन जातियों में किरात, यक्ष, गंधर्व, नाग, खस, नाथ आदि जातियों का विशेष उल्लेख मिलता है। आर्यों की एक श्रेणी गढ़वाल में आई थी जो खस (खसिया) कहलाई। यहाँ की कोल भील, जो जातियाँ थी कालांतर में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हरिजन कहलाई। देश के विभिन्न क्षेत्रों से लोग यात्री के रूप में बद्रीनारायण के दर्शन के लिए आये उनमें से कई लोग यहाँ बस गये और उत्तरांचल को अपना स्थायी निवास बना दिया। ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य, मुस्लिम, सिख, ईसाई सभी यहाँ रहने लगे। हरिजन बहुत कम संख्या में निवास करते हैं। मुख्य रूप से इस क्षेत्र में ब्राह्मण एवं क्षत्रिय जाति के लोगों का निवास अधिक है। उत्तरांचल राज्य बनने के बाद हरिद्वार, उधमसिंह नगर एवं कुछ अन्य क्षेत्रों को मिलाने से अन्य जाति के लोगों में अब बढ़ोत्तरी हो गई है। इस क्षेत्र की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि धरातल पर यदि कहीं समाजवाद दिखाई देता है तो वह इस क्षेत्र में देखने को मिलता है इसलिए यहाँ की संस्कृति संसार की श्रेष्ठ संस्कृतियों में मानी जाती है। सातवीं सदी के गढ़वाल का ऐतिहासिक विवरण प्राप्त है। 688 ई० के आसपास चाँदपुर, गढ़ी (वर्तमान चमोली जिले में कर्णप्रयाग से 13 मील पूर्व) में राजा भानुप्रताप का राज्य था। उसकी दो कन्यायें थीं। प्रथम कन्या का विवाह कुमाऊं के राजकुमार राजपाल से हुआ तथा छोटी का विवाह धारा नगरी के राजकुमार कनकपाल से हुआ इसी का वंश आगे बढ़ा।

महाराजा कनकपाल:- कनकपाल ने 756 ई० तक चाँदपुर गढ़ी में राज किया। कनकपाल की 37वीं पीढ़ी में महाराजा अजयपाल का जन्म हुआ। इस लम्बे अंतराल में कोई शक्तिशाली राजा नहीं हुआ। गढ़वाल छोटे-छोटे ठाकुरी गढ़ों में बंटा था, जो आपस में लड़ते रहते थे। कुमाऊं के कत्यूरी शासक भी आक्रमण करते रहते थे। कत्यूरियों ने ज्योतिर्पुर (वर्तमान जोशीमठ) तक अधिकार कर लिया था।

महाराजा अजयपाल:- राजा कनकपाल की 37वी पीढ़ी में 1500 ई० के आसपास अजयपाल नाम के प्रतापी राजा हुए। गढ़वाल राज्य की स्थापना का महान श्रेय इन्ही को है। इन्होंने 52 छोटे-छोटे ठकुराई गढ़ों को जीतकर एक शक्तिशाली गढ़वाल राज्य की स्थापना की। गढ़वाल का अर्थ है, गढ़-किला, वाल-वाला अर्थात किलों का समूह।

राजधानी परिवर्तन:- कुमाऊं के राजा कीर्तिचन्द व कत्यूरियों के आक्रमण से त्रस्त होकर महाराजा अजयपाल ने 1508 ई० के आसपास अपनी राजधानी चाँदपुर गढ़ी से देवलगढ तथा 1512 ई० में देवलगढ से श्रीनगर में स्थापित की। इनके शासनकाल में गढ़वाल की सामाजिक राजनैतिक व धार्मिक उन्नति हुई।

शाह की उपाधि:- महाराजा अजयपाल की तीसरी पीढ़ी में बलभद्रपाल हुए। ये दिल्ली के शहंशाह अकबर के समकालीन थे, कहते हैं कि एक बार नजीबाबाद के निकट शिकार खेलते समय बलभद्रपाल ने शेर के आक्रमण से दिल्ली के शहंशाह की रक्षा की। इसीलिए उन्हे शाह की उपाधि प्राप्त हुई, तबसे 1948 तक गढ़वाल के राजाओं के साथ शाह की उपाधि जुड़ी रही।

गढ़वाल का विभाजन:- 1803 में महाराजा प्रद्युम्न शाह संपूर्ण गढ़वाल के अंतिम नरेश थे जिनकी राजधानी श्रीनगर थी। गोरखों के आक्रमण और संधि-प्रस्ताव के आधार पर प्रति वर्ष 25000/- रुपये कर के रूप में गोरखों को देने के कारण राज्य की आर्थिक स्थिति दयनीय हो गई थी। इसी अवसर का लाभ उठाकर गोरखों ने दूसरी बार गढ़वाल पर आक्रमण किया और पूरे गढ़वाल को तहस-नहस कर डाला। राजा प्रद्युम्न शाह देहरादून के खुड़बुड़ा के युद्ध में लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। और गढ़वाल में गोरखों का शासन हो गया। इसके साथ ही गढ़वाल दो भागों में विभाजित

हो गया।

गढ़वाल रियासत (टिहरी गढ़वाल):- महाराजा प्रद्युम्न शाह की मृत्यु के बाद इनके 20 वर्षीय पुत्र सुदर्शन शाह इनके उत्तराधिकारी बने। सुदर्शन शाह ने बड़े संघर्ष और ब्रिटिश शासन की सहायता से, जनरल जिलेस्पी और जनरल फ्रेजर के युद्ध संचालन के बल पर गढ़वाल को गोरखों की आधीनता से मुक्त करवाया। इस सहायता के बदले अंग्रेजों ने अलकनंदा व मंदाकिनी के पूर्व दिशा का सम्पूर्ण भाग ब्रिटिश साम्राज्य में मिला दिया, जिससे यह क्षेत्र ब्रिटिश गढ़वाल कहलाने लगा और पौड़ी इसकी राजधानी बनी।

टिहरी गढ़वाल:- महाराजा सुदर्शन शाह ने भागिरथी और भिलंगना के संगम पर अपनी राजधानी बसाई, जिसका नाम टिहरी रखा। राजा सुदर्शन शाह के पश्चात् क्रमशः भवानी शाह (1859-72) प्रताप शाह (1872-87) कीर्ति शाह (1892-1913) नरेन्द्र शाह (1916-46) टिहरी रियासत की राजगद्दी पर बैठे। महाराजा प्रताप शाह तथा कीर्ति शाह की मृत्यु के समय उत्तराधिकारियों के नाबालिग होने के कारण तत्कालीन राजमाताओं ने क्रमशः राजमाता गुलेरिया तथा राजमाता नैपालिया ने अंग्रेज रिजेडेन्टों की देख-रेख में (1887-92) तथा (1913-1916) तक शासन का भार संभाला। रियासत के अंतिम राजा मानवेंद्र शाह के समय सन् 1949 में रियासत भारतीय गणतंत्र में विलीन हो गई।

रियासत के स्वतंत्र भारत में विलीन होने पर राजमाता नैपालिया ने टिहरी गढ़वाल में कन्याओं की शिक्षा के लिए कन्या इन्टर कालेज की स्थापना करके बहुत महत्वपूर्ण कार्य किया। यह विद्यालय महारानी नैपालिया इन्टर कालेज के नाम से जाना जाता है। इस विद्यालय ने टिहरी में 2002 तक मातृ शिक्षा की सेवा की। यह वर्तमान में भागीरथीपुरम में सेवारत है। टिहरी शहर के डूबने के कारण यह विद्यालय भागीरथीपुरम में शिफ्ट कर दिया गया। महारानी नैपालिया के इस पुनीत कार्य के लिए भारत सरकार ने उन्हें पद्मभूषण एवार्ड भी प्रदान किया है। महाराजा मानवेन्द्र शाह विगत 20 वर्षों से टिहरी संसदीय क्षेत्र से सांसद के रूप में क्षेत्र का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। इन्होंने जनता के हित में कोई कार्य किया हो, या न किया हो, परन्तु अब तक ईमानदारी से कार्य करते हुए संसदीय पद की गरिमा बनाकर रखी है।

टिहरी की जल समाधि:- टिहरी रियासत की राजधानी टिहरी शहर सन् 1815 से लेकर अक्टूबर 2005 तक भौतिक रूप से कई उतार-चढ़ाव झेलते हुए 190 वर्ष की उम्र तक सक्रिय रहने के पश्चात अक्तूबर, 2005 में जल समाधि लेकर अंतिम सांस ले चुका है। टिहरी रियासत के रूप में समस्त चिन्हों को समेटते हुए राजवंश का पटाक्षेप भी हुआ।

देश की रक्षा हेतु सैनिकों का बलिदान:- ब्रिटिश शासन से लेकर अब तक देश की रक्षा में औसतन उत्तरांचल के एक परिवार से एक नौजवान सैनिक के रूप में सेवा कर रहा है। देश की आजादी के लिए पूर्व में भी यहाँ के नौजवानों ने विदेशी धरती में भी सुभाष चन्द्र बोस की आजाद हिन्द फौज में सम्मिलित होकर कई वर्षों तक जर्मन और जापान की जेलों तक कष्ट भोगे। दोनों विश्वयुद्धों से लेकर 1948, 1962, 1971, 1988 के युद्धों में हजारों सैनिकों ने अपने जीवन का बलिदान किया। कारगिल के आपरेशन विजय में 10 गढ़वाल, 17 गढ़वाल, 18 गढ़वाल की यूनिटों ने भाग लिया जिसमें गढ़वाल के 2 अफसर, एक जे०सी०ओ० तथा 46 अन्य सैनिक शहीद हुए, 6 अफसर 7 जे०सी०ओ० और 110 सैनिक घायल हुए। नायक दरबान सिंह नेगी जिला चमोली तथा राइफलमैन गब्बर सिंह नेगी, चम्बा, टिहरी गढ़वाल को पूर्व युद्धों में मरणोपरांत अप्रतिम साहस व बहादुरी के लिए सर्व श्रेष्ठ मिलिट्री सम्मान 'विक्टोरिया क्रास' दिया गया।

उत्तरांचल में शक्तिपीठ:- उत्तरांचल की ऊँची-ऊँची पर्वत मालाओं में अनेकों देवी, देवताओं का निवास स्थान है। इसमें देवियों के स्थान प्रमुख हैं। पूर्वांचल में नैनादेवी, पूर्णागिरी पीठ, कौशिकीदेवी, नन्दादेवी, कालिकादेवी, बाराहीदेवी, देवीधुरा, पुष्टिदेवी, रीठा साहब, उल्कादेवी, ज्वालादेवी आदि प्रमुख सिद्ध-पीठ हैं। इसी प्रकार से माँ जगदम्बा के सिद्ध पीठों में जिला चमोली का स्थान सर्वोपरि है। यहाँ के कालीमठ, शाकम्बरीदेवी, हेमवतीदेवी, अनसूयादेवी, नन्दादेवी, चाड़िकादेवी आदि शक्तिपीठ हैं।

1. टिहरी जिले में कुंजापुरी:- ऋषिकेश से 29 कि० मी० ऋषिकेश गंगोत्री राष्ट्रीय राज मार्ग पर टिहरी गढ़वाल की कुंजणी पट्टी के ऊँचे शैल शिखर पर कुंजापुरी देवी का मंदिर सुशोभित है। आश्विन मास के शारदीय नवरात्रों में यहाँ मेले का आयोजन किया जाता है। भण्डारी बंधु यहाँ के पुजारी हैं जो देवी की पूजा अर्चना का कार्य अपने पुरोहित बहुगुणाओं से करवाते हैं। इन भण्डारी बंधुओं का मूल स्थान ग्राम कुड़ी के नाम से जाना जाता है।

श्रीकण्डा (सुरकण्डा):- चम्बा-मसूरी मोटर मार्ग पर 10,000 फुट की ऊँचाई पर अवस्थित प्रमुख कद्दूखाल से मात्र 2 कि० मी० दूरी पर स्थित है। श्रीकण्डा, सुरकण्डा या सुरकण्ठा नाम से प्रसिद्ध यह शक्तिपीठ भक्तगणों की मनोकामना पूर्ण करने वाली है। जन-श्रुति के अनुसार सती का कंठ यहाँ गिरा था। अतः इसे सति -कण्ठा भी कहते हैं। वर्तमान में यहाँ पर पूरे सालभर पूजा-अर्चना का कार्य चलता रहता है। शारदीय नवरात्रों में यहाँ पूजा अर्चना का कार्य निर्बाध गति से चलता रहता है। गंगा दशहरे के पर्व पर माँ के दर्शन करने को विशेष फलदायक माना जाता है। इस दिन यहाँ भव्य मेला लगता है। मंदिर की पूजा का कार्य पुजाल्डि के लेखवार बन्धु करते हैं। परन्तु रख-रखाव व देख-रेख का कार्य देवी के मैती जड़धार गाँव के जड़धारी बन्धुओं के पास है।

चंद्रबदनी शक्तिपीठ:- टिहरी-देवप्रयाग मार्ग पर अंजनीसैण के पास कैथोली से चंद्रबदनी माँ के दर्शनार्थ पैदल तथा जामणीखाल से हल्के वाहनों से जाया जा सकता है। जो अंजनीसैण से 8 कि० मी० दूर है। 8,000 फुट की ऊँचाई पर यह शक्तिपीठ अवस्थित है। यह पर्वत चन्द्रकूट के नाम से जाना जाता है। यहाँ पर सती माँ का बदन गिरा था, यह मान्यता है। अतः चन्द्र बदनी नाम से प्रसिद्ध हुआ। यह मंदिर अठारहवीं सदी में पंवार वंशीय राजाओं ने बनवाया था। यहाँ भी प्रतिवर्ष शारदीय तथा बसंतीय नवरात्रों में पूजा-अर्चना होती है। यहाँ पूजा पुजारगाँव के भट्ट ब्राह्मणों के द्वारा की जाती है। अपनी मनौती मनाने हेतु दूर-दूर से श्रद्धालु यहाँ बारह महीने आते रहते हैं।

रथी-देव मंदिर अलेरू:- यह मंदिर चम्बा-उत्तरकाशी मुख्य मार्ग किल्वाखाल पर स्थित है। इस मंदिर का निर्माण अलेरू के अधिकारी बंधुओं के द्वारा किया गया है। यहाँ प्रति वर्ष अप्रैल माह में निश्चित तिथि को मेला लगता है। यहाँ दूर-दूर से भक्तजन मेले में सम्मिलित होने आते हैं। रथी देव से आप जो मनोती करेंगे वह पूरे हुए बिना नहीं रह सकती। गाँव के लोग पूरे गाजे बाजे के साथ मेले के दिन यहाँ पहुचते हैं। यह देवस्थान आसपास के समस्त ग्रामीणों का श्रद्धा एवं आस्था का प्रतीक है। अधिकारी बंधु विगत कई वर्षों से इसके प्रचार-प्रसार के लिए विशेष प्रयत्नशील हैं।

*****

दहेज का दानव

बहुगुणा विचित्र

कितनों को बरबाद किया, इस दहेज के दानव ने,
फिर भी गले लगा रखा है, इस दानव को मानव ने
लाखों घर बर्बाद हो गए इस दहेज की बोली में,
अर्थी चढ़ी हजारों कन्या, बैठ न पाई डोली में

ये कैसा व्यापार जहाँ पर बेटे बेचे जाते है
गाय भैंस, बकरी की तरह, मुल्य चुकाये जाते है
कितनों ने अपनी कन्या के पीले हाथ करने में
कहां कहां तक मस्तक टेके, आती शर्म बताने में
अर्थी चढ़ी हजारों कन्या बैठ न पाई डोली में

इस दहेज के कारण ही, लाखों घर बर्बाद हुए
इस दहेज के कारण ही, लाखों के नहीं पीले हाथ हुए
जिस पर बीती वही जानता, बात नहीं है कहने की
जीवन भर को कर्ज लद गए सीमा टूटी सहने की
गहने खेत मकान बिक गऐ सिर्फ मांग की रोली में
अर्थी चढ़ी हजारों कन्या बैठ न पाई डोली में,

टूट गए परिवार रोज ही फूट रही हैं तकदीरें
लोभी फिर भी खोज रहे है, नित शोषण की तदबीरें
नौजवान गुणवान भुवन क्यों, बनता अरे भिखारी है
खून कलेजों का पी जाती, ये कैसी बीमारी है।
ऐसी क्रूर प्रथा को आओ आज झोंक दे होली में
अर्थी चढ़ी हजारों कन्या, बैठ न पाई डोली में

ये मत सोचो पुत्र जनकर, अपनी झोली भरनी है
आज नहीं तो कल तुमको कन्या की शादी करनी है
अपने पुत्रों और कन्याओं का आदर्श विवाह करो
आडम्बर के दिखलावे को मत आने दो बस्ती में
अर्थी चढ़ी हजारों कन्या, बैठ न पाई डोली में॥

पति पत्नी के बीच की खाई, खोदी इस शैतान ने
सास बहू को शत्रु बनाया देखो इस हैवान ने
बेमतलब की बातों पर भी, रार मचाई जाती है
क्रूर कर्म कर कहीं कहीं तो, बहू जलाई जाती है
दानवता आ घुसी कहां से, मानवता की खोली में
अर्थी चढ़ी हजारों कन्या, बैठ न पाई डोली में

सहन मत करो क्रूर प्रथा को, इसे सदा को दूर करो
दानवता के अहंकार को, अब संकल्पों से चूर करो
बहुत हो चुका नाच शर्म का, अब सभ्यता अपनाओ
छोड़ रूढ़ियों सद्‌विवेक संग, निर्भय हो आगे आओ
पापों का मत भरो खजाना अब तो अपनी झोली में
अर्थी चढ़ी हजारों कन्या, बैठ न पाई डोली में॥

*****

With Best Compliments
From
MAC DECOR LIMITED
(For All Kind of blinds, Curtains Rods, Awnings etc.)
5, Community Centre,
East of Kailash, New Delhi - 110065
Tel No. : 011-26413610, Mob. : 98102-80306

With Best Compliments
from :-
off : 22478967
Res : 55307754
Mob : 9810668298
GARHWAL TENT HOUSE
Caterers & Decorators
B-29/1, Gali No. 1 , West Vinod Nagar
Delhi-110092

मनुष्य और पर्यावरण

भगवती प्रसाद नौटियाल

मनुष्य प्रकृति पुत्र है। वह भी पृथ्वीतल पर विद्यमान अन्य सभी जड़ और चेतन के समान प्रकृति की ही देन है। प्रकृति तथा आसपास के वातावरण में परिवर्तन होने से चेतन प्राणियों के लिए पृथ्वी पर और अधिक उत्तम परिस्थितियाँ बनती गई । धीरे-धीरे विकसित हो कर इनका वर्तमान स्वरूप बना। मनुष्य हमारे ग्रह का सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। जिस पर्यावरण में उसका विकास हुआ है तथा जिस वातावरण में वह इस समय रहता है वह उसके लिए सबसे उपयुक्त है। जो भोजन वह करता है, जिस हवा में वह सांस लेता है तथा उसके सामान्य विकास के लिए जिन खनिजों की आवश्यकता होती है वे सब उसके जीवन के आरम्भ (माँ के दूध के साथ-साथ) से ही उसके आस-पास के वातावरण में उपलब्ध हैं।

पृथ्वी के अन्य प्राणियों के समान मनुष्य भी प्रकृति का एक अभिन्न अंग है अथवा अपने पर्यावरण की उपज है। जो प्राणी प्रकृति अथवा पर्यावरण में होने वाले परिवर्तनों से तारतम्य नहीं रख सके वे पृथ्वी से सदैव के लिए समाप्त हो गए। इस सम्बन्ध में डायनासोर (एक दीर्घकाय रेंगने वाला जानवर) का उल्लेख कर सकते हैं, जो सरिसृप युग में विद्यमान थे। वैज्ञानिकों तथा भू-गर्भ शास्त्रियों के अनुसार सरीसृप युग का आरम्भ 23 करोड़ वर्ष पहले हुआ और समाप्ति 16.50 करोड़ वर्ष बाद अर्थात अब से 6.50 करोड़ वर्ष पहले। वर्तमान में भी विश्व के अनेक वैज्ञानिक सरीसृप तथा ऐसे ही अन्य युग में जीवित और अब लुप्त प्राणियों के जीवाश्म की खोज में लगे हुए हैं। इससे स्पष्ट होता है कि पृथ्वी रूपी इस ग्रह पर सभी प्राणी अनुकूल पर्यावरण में प्रकट हुए और अनुकूल पर्यावरण न रहने पर लुप्त हो गए। यह इस तथ्य को भी दर्शाता है कि औद्योगीकरण और अणुत्व के इस युग में जहाँ मनुष्य के लिए दमघोंटू पर्यावरण के तंतु बुने जा रहे हैं, मनुष्य अपने ही विवेक के द्वारा प्रजनित इस वातावरण के कारण एक दिन लुप्त हो जाएगा ।

मानव की आयु अभी 20 लाख वर्ष भी नहीं हुई है। अन्य पशुओं के विपरीत इन 20 लाख वर्षों में मानव ने बुद्धि और प्रतिभा का विकास किया। परन्तु जैसा कि पूर्व पंक्तियों में कहा है कि बुद्धि और प्रतिभा का विकास भविष्य में उसे या तो और भी श्रेष्ठ बना सकता है या उसे हमेशा के लिए समाप्त भी कर सकता है क्योंकि मानव इस समय उस पर्यावरण और पारिस्थितिकीयता को ही बदलने में दत्त-चित्त है, जिसमें वह इस पृथ्वी पर जन्मा तथा जिससे उसका अब तक पोषण हुआ। मानव की प्रतिभा व बौद्धिक शक्ति भी इस बात की गारंटी नहीं कि उसका अस्तित्व इस पृथ्वी पर हमेशा बना रहेगा।

जब हम सुपरिचित पर्यावरण की बात करते हैं तो उससे तात्पर्य होता है वन और मानव जीवन में उसका महत्व। हमारे देश में जब हिमालय खल्वाट हो गया और हिमालय के ग्लेशियर अनेक मीटर पीछे सरकते चले गये जिसके फलस्वरूप गंगा-यमुना की धारा में पानी की मात्रा घटने लगी, तब जीवन में वनों के महत्व को समझा गया। आखेट और भोजन एकत्र करने के युग में, जो हमारे देश के कुछ भागों में अब भी विद्यमान हैं, वन ही मानव को जीवन यापन के लिए आवश्यक साधन जुटाते हैं। कृषि युग आने पर मानव ने वनों की उपेक्षा कर दी तथा अब यह ज्ञान हुआ कि कृषि भी बड़ी सीमा तक वनों पर निर्भर है। सबसे पहले वन मिट्टी में नमी बनाये रखने में मदद करते हैं। यह नमी सभी प्रकार के पेड़-पौधों और कृषि उपज को बढ़ाने के लिए आवश्यक है। इसके अतिरिक्त जब मिट्टी पानी को सोख लेती है तो वह भूमिगत जल की मात्रा को बढ़ाती है और इससे नदी नालों, धारा-मगरों तथा कुओं आदि में हमेशा पानी रहता है । वन वर्षा के जल के बहाव को रोककर भू-स्खलन तथा बाढ़ को रोककर देश की अर्थव्यवस्था तथा फसलों के उत्पादन में वृद्धि करते है।

भागीरथी गंगा के सम्बन्ध में एक मिथक है कि जब राजा भगीरथ की वर्षों की तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान विष्णु ने अपने कमण्डल से गंगा को भूमि पर उतारने का आश्वासन दिया तो गंगा ने राजा भगीरथ से पहला प्रश्न यह किया कि भगवान विष्णु की इच्छानुसार मैं भूमि पर तो उतर जाऊँगी पर भूमि पर मेरे वेग को कौन थामेगा। यदि मेरा वेग नहीं थामा गया तो मैं भूमि में समा जाऊँगी और आप अपने पुरखों को मोक्ष पद नहीं दिला पाएंगे। तब राजा भगीरथ ने भगवान शिव की आराधना की जिन्होंने गंगा के वेग को भूमि पर गिरने से पूर्व अपनी जटाओं में थामने का वचन दिया और इस प्रकार गंगाजी पृथ्वी पर आई। कहने को तो यह एक मिथक है पर सत्य यह है कि यदि गंगा के मार्ग पर हिमालय वनाच्छादित नहीं होता तो गोमुख से निसृत गंगा निश्चितत: पृथ्वी में समा जाती। शिव की जटा के रूप में वनाच्छादित धरती ने गंगा को सुगमता से बहने दिया और उसमें प्रलयंकारी बाढ़ और भूमि कटाव तब प्रारम्भ हुआ जब मनुष्य ने हिमालयी रूपी शिव की उस जटारूपी वृक्षावली को अनियोजित ढंग से काट कर हिमालय का खल्वाट बना दिया। बाढ़ पर्वतीय क्षेत्र में भूमि कटाव, भू-स्खलन और पारिस्थितिकीय प्रदूषण का यही सबसे बड़ा कारण है।

मैदानों में भी वन न होने के कारण भूमि का कटाव हुआ है। क्योंकि वहां भी तेज हवाओं के करण मिट्टी उड़ जाती है। यही कारण है कि राजस्थान, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, मध्य भारत और हरियाणा सहित देश के अन्य भागों में भी रेगिस्तान की स्थिति पैदा होती जा रही है।

वन और हरी वनस्पति प्रकाश संश्लेषण प्रक्रिया के द्वारा वायु से कार्बन-डाई-आक्साइड लेने में भी सहायता करते हैं। पेड़-पौधों द्वारा किए जाने वाले अति विशिष्ट कार्य के आभाव में मानव सहित सभी प्रकार के प्राणियों के लिए घुटन पैदा हो जाएगी और पृथ्वी से प्राणी मात्र का अस्तित्व ही समाप्त हो जायेगा। औद्योगिक ईकाइयाँ भी जहरीले धुएं से कार्बन-डाइ-आक्साइड की मात्रा में इजाफा करती है।

यह बात जानने योग्य है कि वैज्ञानिकों के अनुसार कोयला, पेट्रोल और भोजन पकाने वाली गैस, जिसका उपयोग हम ईंधन ऊर्जा के साधन के रूप में करते है, करोड़ों वर्ष पूर्व पैदा हुए पेड़-पौधों के ही अवशेष है, यद्यपि इनमें से कुछ उन पशुओं के अवशेष भी हो सकते है जो वनों से प्राप्त अपने भोजन पर जीवित रहते थे।

वर्तमान में वनों का जिस प्रकार से उपयोग किया जा रहा है वह हमारे पर्यावरण के साथ अविवेकपूर्ण हस्तक्षेप है। वनों की सुरक्षा और वन रोपण के द्वारा उस पर्यावरण को पुन: जागृत किया जा सकता है जिसमें प्राणियों का जीवित रहना सम्भव हो सके। यद्यपि कुछ लगनशील व्यक्ति, वृक्ष मानव, मैती, आदि के रूप में डांडी, कांठ्यूं को हरा-भरा बनाने में जुटे हुए हैं पर सरकारों को भी अपना दायित्व निभाना होगा। जहाँ चाहे वहाँ औद्योगिक इकाइयों की स्थापना कर मानव स्वयं अपने पर्यावरण को नष्ट कर रहा है। आधुनिक उद्योगों के द्वारा पृथ्वी में उपलब्ध जल के साधन नष्ट किये जाने की ओर, गंगा-जमुना जैसी पवित्र नदियों के जल को अनेक कारणों के द्वारा कलुषित करने के ओर विश्व भर के राष्ट्रों और लोगों का ध्यान तो जा रहा है पर जल प्रदूषण पर और अधिक ध्यान देना अत्यावश्यक हो गया है।

मानव के सामने पर्यावरण सम्बन्धी समस्याएं इतनी अधिक हैं कि इस छोटे से लेख में केवल उन्हीं की चर्चा की गई है जो अहम् है। वायु, जल, और भूमि प्रदूषण, विशेषकर औद्योगिक देशों तथा भारत जैसे विकासोन्मुख देशों के लिए गहन चिंता का विषय हो गया है। हमारा भोजन इतना स्वास्थ्यकर नहीं रह गया है जितना पहले कभी था। जल अत्याधिक दूषित होता जा रहा है तथा जिस वायु में हम साँस ले रहें हैं, हानिकारक गैसों के बढ़ने के कारण वह दम घोटने वाली होती जा रही है। आवश्यकता है कि ऐसे योजनाबद्ध नियोजन की जो इन सब दम घोटू कारकों से मुक्ति दिलाकर पृथ्वी रूपी इस ग्रह में प्राणियों के जीने का अधिकार प्रदान करने में सक्षम हों।

नारायण दत्त तिवारी के बढ़ते कदम

चंद्रपाल सिंह रावत

जिन कार्य-योजनाओं पर उत्तरांचल में कार्य आरम्भ है, मुझे लगता है कि उत्तरांचल मन्थर गति से आगे बढ़ रहा है। तिवारी जी को नई औद्योगिक नीति की घोषणा और केन्द्रीय व्यापार एवं वाणिज्य मंत्रालय द्वारा उत्तरांचल को दी गई विशेष सुविधाओं के कारण यह उम्मीद है कि राज्य नये संसाधनों के साथ कुछ प्रगति अवश्य करेगा। नई नीति के आधार पर औद्योगिक विकास केन्द्रों, औद्योगिक संस्थानों, खाद्य प्रोसेसिंग पार्क, साफ्टवेयर टैक्नोलॉजी पार्क आदि के विकास की ओर जोर दिया जा रहा है और निजी क्षेत्रों को आमंत्रित किया गया है। सरकार ने घोषणा की है कि नए एवं वर्तमान औद्योगिक संसाधनों को करों तथा उत्पादन यूनिट शुरू होने के शुरुआती दस वर्षों में इसे एक्साइज ड्यूटी में 100 प्रतिशत की छूट भी दी जायेगी। इसके अतिरिक्त अगले 5 वर्षों में कम्पनियों को आयकर में 30 प्रतिशत और अन्य संस्थानों को 25 प्रतिशत तक की छूट दी जायेगी । राज्य सरकार केन्द्रीय सरकार द्वारा दी गई मदद् से भी कई कार्यक्रम शुरू करेगी जैसे दीनदयाल हथकरघा प्रोत्साहन योजना, प्रधानमंत्री रोजगार योजना आदि द्वारा स्थानीय उद्योगों को प्रोत्साहित किया जायेगा।

गत वर्ष जहाँ बजट की धनराशि 1807.75 करोड़ स्वीकृत हुई थी। वहाँ केन्द्रीय सरकार ने भी 300 करोड़ की अतिरिक्त सहायता प्रदान की है। यही नहीं 100 करोड़ बाजार से प्रतिभूतियों के रूप में लिए जाने की भी अनुमति दी थी । इस प्रकार वर्ष 2004-05 की आर्थिक योजना लगभग 2000 करोड़ हुई, जब कि इससे पूर्व वर्ष यह राशि केवल 1604 करोड़ की थी। इस समय उत्तरांचल में वन, उर्जा और पर्यटन तीन बड़े संसाधन आर्थिक प्रगति के आधार है। यदि इन तीनों का समुचित रूप से विदोहन हो तो राज्य के साथ-साथ पूरा देश लाभान्वित होगा। राज्य में वनों का 67 प्रतिशत क्षेत्र है। राज्य सरकार प्रदेशवासियों को सतत विकास में भाग लेने की रणनीति बना रही है। उत्तरांचल के विभिन्न क्षेत्रों में औषधीय एवं सुगन्धित प्रजातियां उगाने हेतु नर्सरियां भी शुरू की गई हैं। अब तक ये औषधियां व सुगन्धित प्रजातियाँ 1178 हेक्टर के वन क्षेत्रों में उगाये जा चुके हैं। कृषकों की 62 हेक्टर भूमि में भी ये प्रजातियाँ उगाई जा चुकी हैं। राज्य में 250 वांस पौधशालाओं में 12 लाख से अधिक पौध तैयार की गई है। वन विकास के लिए अब तक 9000 वन पंचायतों का गठन किया जा चुका है। जैविक ईंधन के विकास हेतु वर्ष 2004-06 में 17 लाख जैट्रोफा पौध रोपण का प्रावधान है। उत्तरांचल देश का एक ऐसा प्रदेश है जिसका अधिकांश भाग पर्वतीय है, वन एवं गैर वन क्षेत्रफल भी अधिक है। कृषि भूमि में खेती करना घाटे का ही सौदा है ऐसी स्थिति में जैट्रोफा की नर्सरी अधिक उपयोगी एवं लाभप्रद है। राज्य को हर्बल स्टेट का स्तर प्रदान करने के लिए औषधि पादप उत्पादन योजना पर कार्य आरम्भ हो चुका है तथा हर्बल रिसर्च डेवलपमेंट इन्स्टीट्यूट के साथ इसका समन्वय किया गया है। यह एक प्रसन्नता की बात है कि उत्तरांचल में 175 दुर्लभ प्रजाति के औषधीय पौधे हैं। इनकी सुरक्षा और विकास की ओर सरकार का ध्यान गया है ऐसा मालूम हुआ है कि यहाँ से दुर्लभ औषधियाँ विदेशों को भेजी जाती हैं। सरकार वनों पर आधारित उद्योगों की स्थापना कर रही है, ताकि सभी जड़ी-बूटियाँ निर्यात होने से बचाई जा सकें। राज्य में कुटीर उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए बांस, रिंगाल के रोपण हेतु देहरादून वन प्रभाग के अन्तर्गत लच्छीवाला में बम्बू सेक्टर की स्थापना की गई। इसमें चुनिन्दा 26 विभिन्न प्रजातियों का रोपण किया गया है। वनों के विकास हेतु बायोस्फेयर प्राधिकरण गठन किया गया है। वन्य जन्तुओं द्वारा मारे जाने वाले लोगों को आर्थिक सहायता देने का फैसला किया गया है। सरकार ने वनों के विभिन्न स्रोतों से 6214 लाख रूपये का वन राजस्व प्राप्त कर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया।

सरकार ने अपनी पर्यटन नीति घोषित करते हुए निजी और सरकारी क्षेत्र के सहयोग से पर्यटन विकास के लिए पिछले तीन वर्षों में उल्लेखनीय कार्य किया है। इसी का परिणाम है कि उत्तरांचल ने केरल, राजस्थान, मध्य प्रदेश जैसे प्रदेशों को पीछे छोड़ते हुए वर्ष 2004 का बेस्ट परफार्मिंग स्टेट का पुरस्कार प्राप्त करने के साथ-साथ पिछले तीन वर्षों में दो राष्ट्रीय पुरस्कार भी प्राप्त किए। सरकार द्वारा पौड़ी, खिर्सू-लैन्सडाऊन, कण्वाश्रम, पर्यटन सर्किट तथा पिथौरागढ़, मुनस्यारी, बेरीनाग बिनसर पर्यटक सर्किट के विकास की योजना तैयार की है, जिनके लिए भारत सरकार ने क्रमशः 4.57 और 4.18 करोड़ की स्वीकृति प्रदान की है। इसी प्रकार धार्मिक और तीर्थाटन पर्यटन को प्रोत्साहित करने के लिए एक महायोजना तैयार हुई है जिसके लिए केन्द्र ने 700 करोड़ रूपये स्वीकृत किये हैं। भारत सरकार ने साहसिक पर्यटन को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर लाने के लिए 5.36 करोड़ की योजना स्वीकृत की है। देहरादून में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के होटल मैनेजमेंट तथा कैटरिंग संस्थान की स्थापना के लिए भी योजना बनी है। इससे रोजगार के अवसर भी उपलब्ध होंगे। वीर चंद्र सिंह गढ़वाली पर्यटन स्वरोजगार योजना के आरम्भ होने से गत वर्षों में 555 लाभार्थियों को 35 करोड़ का बैंक ऋण उपलब्ध कराया गया है। इको पर्यटन के माध्यम से स्थानीय लोगों की सहभागिता सुनिश्चित करने के लिए रामनगर हेमपुर में निजी क्षेत्र के साथ किए गए एम.ओ.यू. के फलस्वरूप क्रियान्वित होने वाली 512 करोड़ रूपये की कार्बेट कंट्री गंतव्य योजना आने वाले समय में इस प्रदेश के आर्थिक विकास में एक मील का पत्थर साबित होगी। गत दो वर्षों में पर्यटन अवस्थापना विकास के लिए निजी क्षेत्र से 1000 करोड़ रूपये की पूंजी से कई योजनाएं संचालित की गई हैं।

प्रदेश में पर्यटन विकास के लिए सरकार द्वारा हवाई रेल तथा रोड़ कनेक्टीविटी को सुदृढ़ करने का कार्य भी किया गया है। दिल्ली, देहरादून के बीच मे डेक्कन एयरवेज की दैनिक सेवाएं शुरू की गई हैं। वर्ष 2003-04 में पर्यटकों की संख्या 100 लाख से अधिक रही और वर्ष 2004-05 में 140 लाख से अधिक पर्यटक उत्तरांचल में पहुँचे। चिन्याली सौड़, गौचर तथा नैनी-सैंण हवाई पट्टियों से नियमित उड़ान इस वर्ष आरम्भ हो जायेगी। अगस्त्यमुनि से केदारनाथ की हवाई सेवा शुरू हो चुकी है और इसी वर्ष यहाँ से हेमकुण्ड और केदारनाथ के लिए भी हवाई सेवा आरम्भ हो जायेगी। आवासीय सुविधाओं के विस्तार के अन्तर्गत यमुनोत्री (फुलचट्टी) गरूड़चट्टी, सोनप्रयाग एवं रामबाड़ा में 20-20 शैय्याओं के एफ.आर.सी. हट्स का निर्माण कार्य पूर्ण हो चुका है। हरिद्वार व ऋषिकेश में सौन्दर्यकरण व विकास कार्य हेतु भारत सरकार 1500 करोड़ रूपये की वित्तीय सहायता स्वीकृत कर चुकी है। इस समय पर्यटन की 300 योजनाओं पर कार्य प्रगति पर है, जिनमें 19 रज्जू मार्ग भी प्रस्तावित है। वृहद पर्यटन केन्द्रों की स्थापना के अन्तर्गत रामनगर के निकट 802 एकड़ भूमि पर इकोपार्क व रिसोर्ट्स, टिहरी डाम पर पर्यटन सेन्टर द्वारा धुग्याल, उत्तरकाशी में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर एक नवीन रिसोर्ट का प्रावधान है। वीर चन्द्र सिंह गढ़वाली स्वरोजगार योजना के अन्तर्गत 215 परियोजनाओं पर काम शुरू हो चुका है। इसमें 500 से अधिक व्यक्तियों को 400 करोड़ रूपये बैंक ऋण व अनुदान स्वीकृत किये गये हैं। पौड़ी, खिर्सू, लैन्सडाऊन, पिथौरागढ़ व मुनस्यारी को नवीन पर्यटन-स्थल के रूप में विकसित करने हेतु कार्यवाही प्रारम्भ हुई है।

राज्य को ऊर्जा प्रदेश के रूप में परिवर्तित करने के लक्ष्य के साथ वर्तमान मे 4171.30 मेघावाट क्षमता की परियोजनाएं और आवंटित की गई हैं। राज्य में उत्पादन 17 लघु जल विद्युत परियोजनाओं के माध्यम से सुदूरवर्ती क्षेत्रों में विद्युत व्यवस्था तथा दो लघु जल विद्युत एवं 6 माइक्रो हाइड्रोजन परियोजनाओं पर काम पूरा हो चुका है। उत्तरांचल जल विद्युत निगम द्वारा मनेरी द्वितीय चरण को 1200 करोड़ लागत एवं 304 मेघावाट की पाला मनेरी, 132 मेघावाट की सादला-नन्दप्रयाग, 42 मेघावाट की आराकोट त्यूंणी जल विद्युत परियोजनाएं आरम्भ की गई हैं। राज्य सरकार तथा एन.टी.पी.सी. के मध्य 520 मेघावाट की लोहारी नागपाल तथा 360 मेघावाट की तपोवन विष्णुगाड़ जल विद्युत परियोजना आरम्भ करने का समझौता हुआ । सरप्लस विद्युत लगभग 200 मेघावाट दिल्ली और पंजाब को विक्रय करने पर प्रदेश को 70 करोड़ का राजस्व प्राप्त होगा।

मुख्यमंत्री नारायण दत्त तिवारी ने भारतीय उद्योग परिसंघ के उत्तरी क्षेत्र द्वारा आयोजित सत्र के अवसर पर उत्तरांचल के औद्योगिकीकरण के सम्बन्ध में बोलते हुए कहा कि उत्तरांचल को औद्योगिक प्रदेश के रूप में देखना होगा। उन्होंने कहा कि उत्तरांचल की परिस्थितियों के अनुरूप ही यहाँ औद्योगीकरण होगा। यहाँ एग्रोकृषि व फल संरक्षण, वन, जड़ी-बूटी, पुष्प, शहद, सब्जी, मशरूम आदि पर आधारित उद्योग फल-फूल सकते हैं। प्रदेश के मुख्य सचिव ने बताया कि कृषि, बागवानी, पर्यटन बायोटैक, सूचना प्रौद्योगिकी व वनीकरण, जड़ी-बूटी आदि के क्षेत्र में विकास हेतु कई कदम उठाए गए हैं तथा परियोजनाएं स्थापित करने हेतु स्थलों का चयन किया गया है। उन्होंने कहा कि उत्तरांचल में विभिन्न स्थलों पर इकॉनामिक जोन विकसित किये जा रहे हैं तथा आवागमन सुगम करने हेतु चिन्याली सौड़, गौचर, नैनी-सैंण में हवाई सेवायें प्रारम्भ करने हेतु कार्यवाही प्रारम्भ कर दी गई है और राष्ट्रीय राजमार्गों का कार्य तेजी से चल रहा है। उत्तरांचल सरकार द्वारा राज्य में एक नियोजन विकास प्राधिकरण का गठन किया जा रहा है। प्राधिकरण का प्रमुख कार्य विभिन्न विभागों, प्रशासनिक इकाईयों व संस्थाओं के मध्य समन्वयक एवं कार्य सुनियोजन का होगा। यह प्रस्तावित प्राधिकरण राज्य की नगरीय और ग्रामीण आबादियों के अतिरिक्त घोषित नियोजन क्षेत्रों के विकास को दिशा देने के साथ-साथ उन्हें आवश्यक तकनीकी तथा भौतिक एवं आर्थिक संसाधन उपलब्ध कराने में सहायता प्रदान करेगा।

यह माना जा रहा है कि आने वाले दशकों में राज्य की जनसंख्या डेढ़ करोड़ तक पहुँच सकती है, जिसका एक तिहाई हिस्सा नगरों में होगा। इसलिए विकास का नियोजन आने वाली जनसंख्या को ध्यान में रखते हुए किया जाना है। नगरीकरण की प्रकृति के चलते मैदानी क्षेत्रों के नगरों पर जनसंख्या का दबाव बढ़ेगा। वर्तमान में राज्य की लगभग 85 लाख जनसंख्या का एक चौथाई हिस्सा राज्य के एकमात्र नगर निगम, 30 नगर पालिकाओं 7 नगर परिषदों एवं इतनी ही नगर पंचायतों एवं लगभग नौ छावनी क्षेत्रों में केन्द्रित है जो कि उत्तरांचल के कुल भौगोलिक क्षेत्र का 16 प्रतिशत है। आवश्यकता इस बात की है कि गाँवों से नगरों की ओर पलायन रोका जाए। इसलिए रोजगार के अवसर गांवों के आसपास ही उपलब्ध हों। कई नवयुवकों को उद्यमिता विकास कार्यक्रमों के अधीन प्रशिक्षित किया गया है। इनमें से 60.72 प्रतिशत स्व रोजगार की योजना पर कार्य कर रहे हैं । किसी क्षेत्र के समग्र विकास में उद्यमिता विकास प्रक्रिया का सक्रिय रूप में उपस्थित रहना एक अनिवार्य तथ्य है यही समय है जब उत्तरांचल में परम्परावादी ढांचे की कमियों को दूर किया जाए और एक नवीन परिवेश में नीतियों एवं कार्य योजनाओं को सोचने एवं क्रियान्वयन करने के लिए स्वतंत्र हैं। भविष्य में आवासीय समस्या से निपटने के लिए शहरी विकास मंत्रालय की देहरादून, हरिद्वार बाईपास पर एक वृहद योजना को अंजाम देने की आवासीय संस्थागत, मनोरंजन एवं कार्यालय के लिए भूमि और भवनों को विकसित करने की योजना पर कार्य आरम्भ होगा। सूत्रों ने बताया है कि इसके लिए भूमि के अधिकरण का कार्य आरम्भ कर दिया गया है। आज उत्तरांचल श्री तिवारी जी के नेतृत्व में चहुँमुखी विकास की ओर बढ़ रहा है, चाहे शिक्षा का क्षेत्र हो चाहे लोक निर्माण का या सूचना प्रौद्योगिकी की बात हो योजनाबद्ध रूप से कार्य शुरू हैं। परिवहन में 21 करोड़ का घाटा अब 11 करोड़ रह गया है। उत्तरांचल सीड्स एण्ड तराई डेवलपमेन्टस कारपोरेशन को आई.एस.ओ. 2000-01 प्रमाण पत्र प्राप्त करने वाला देश का पहला राज्य बीज निगम होने का गौरव प्राप्त हो गया है।

उत्तरांचल जहाँ एक ओर धार्मिक व आध्यात्मिक दृष्टि से गौरवपूर्ण रहा है, वहाँ इसकी एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत भी रही है। कला, संस्कृति और साहित्यिक गतिविधियों से भरपूर यह प्रदेश गौरवशाली सैन्य परंपरा का भी साक्षी रहा है। अब सवाल यह है कि जिस प्रदेश के पास भरपूर पानी रहा हो, वन-सम्पदा हो, असीम प्राकृतिक सौन्दर्य हो, अनगिनित तीर्थ स्थान एवं पर्यटन स्थल हों, जिसके निवासी कर्मठ, ईमानदार और कर्तव्य परायण हों, वह प्रदेश द्रुत-गति से प्रगति पथ पर क्यों नहीं बढ़ रहा है? जहाँ तिवारी जैसे अनुभवी, दूरदर्शी, सफल प्रशासनिक व जुझारू नेता हों, वह राज्य उत्तरांचल वासियों की आकांक्षा के अनुरूप क्यों नहीं बढ़ रहा है? जब सत्ता की डोरी हमारे अपने लोगों के हाथों में हो तो विकास की गति मंथर क्यों है? कहीं ऐसा तो नहीं कि विकास की राशि खर्च तो हो रही हो,

किन्तु विकास के नाम पर हो रहा खर्च दृष्टिगोचर नहीं हो रहा हो। ऐसा तो नहीं की विज्ञापन माध्यमों व मिडिया पर खर्च की जा रही राशि, विकास की राशि को मात दे रही हो ऐसा कदापि नहीं हो सकता। आखिर प्रदेश कई विकास कार्यों पर पारितोषिक प्राप्त कर चुका है। बीस सूत्री कार्यक्रम ने तो उत्तरांचल में तहलका मचा रखा है। वास्तविक स्थिति से आप समय पर अवगत हो जायेंगे।

राज्य के विकास की चर्चा खोखली होगी अगर रोजगार के अवसर उपलब्ध नहीं होते तो सरकार बार-बार जनता की आँखों में धूल नहीं झोंक सकती। अतः चाहे राज्य में औद्योगिक प्रगति की बात हो, पर्यटन की खुशहाली की बात हो या ऊर्जा प्रदेश बनाने की बात हो, इनके मूल में रोजगार उपलब्ध कराना नितान्त आवश्यक है। अब जब कि प्रदेश निरन्तर विकास की ओर अग्रसर है, यह जरूरी है कि प्रदेशवासियों का जीवन स्तर बढ़े। उनका आर्थिक जीवन खुशहाल हो। नवयुवकों को रोजगार मिले, जहाँ इतनी राशि विकास के विभिन्न योजनाओं पर खर्च नहीं हो रही है। मीडिया, समाचार पत्र और पत्रिकाओं के माध्यम से पता चलता है कि उत्तरांचल दिन दुगुनी रात चौगुनी तरक्की कर रहा है। वही प्रत्यक्ष रूप से यह सब कुछ हमें दिखाई भी देना चाहिए। कहीं ऐसा तो नहीं कि जो पूंजी योजनाओं के क्रियान्वयन के लिए निर्धारित की गई है वह उन योजनाओं पर खर्च नहीं हो रही है। तिवारी एक विकास पुरुष के रूप में उभरकर हमारे सामने आये हैं। वे राजनीति के एक चतुर खिलाड़ी हैं। वे एक लम्बी पारी राजनीति के मैदान में खेल चुके हैं। अतः समय की गति से वे क्या लाभ उठाते हैं। यह भविष्य के गर्त में है किन्तु मेरा विश्वास है कि उत्तरांचल के मुख्यमंत्री के रूप में उनकी मति विकास की गति प्रदान करे अन्यथा उन्हे दुर्गति से निवारण पाना मुश्किल होगा।

*****

With Best Compliments
From:-

Ph. : 9810369029
9810497314

Radhey Shyam Upreti
Insurance & Investment Consultant
Chairman's Club member
Life Insurance Corporation Of India

Jeevan Tarang
Jeeevan shree
Komal Jeevan
Jeevan Anand
Jeevan Surbhi
Amulya Jeevan
Bima Bachat

Office: Branch Unit no. -116, Asaf Ali Insurance Building, Asaf -Ali Road, New Delhi -110002, Tel. : 2323338 Ext. 38
Resi. : E-503, West Vinod Nagar, Street No. 9, Delhi 110092
E-mail: [illegible]@yahoo.com

शुभ कामनाओं सहित:
Ph. 20061271
Mob. 9313741560
गढ़वाल एम्पोरियम
एक भव्य शोरूम
[illegible] C-215 [illegible]
विशेष आकर्षण :-
- [illegible] तागा चुन्नी व दाम वही
- [illegible] पैन्ट शर्ट के जोड़े व लेने देने की अच्छी क्वालिटी की साड़ियाँ थोक रेट पर
गढ़वाल की सूती धोती व कुमाऊँ का पिछौड़ा उपलब्ध है।
एक बार सेवा का मौका अवश्य दें।

जरूरी है उत्तराखण्ड की अपनी भाषा

दिनेश ध्यानी

अपनी बोली, भाषा और संस्कृति के विकास के बिना किसी भी समाज को विकसित नहीं कहा जा सकता। चाहे अन्य क्षेत्रों में वह समाज कितना भी सुदृढ़ क्यों न हो। भाषाई और साँस्कृतिक विकास उस समाज की खुशहाली और सम्पन्नता का दर्पण होता है। अपने ज्ञान और विज्ञान, रीति-रिवाजों को वह समाज अपनी बोली और भाषा और संस्कृति के माध्यम से दूसरे लोगों तक आसानी से संप्रेषित कर सकता है। मानव सभ्यता के साथ-साथ ही बोलियों-भाषाओं का विकास क्रम आगे बढ़ता गया सभ्य मानव ने जो सबसे महत्वपूर्ण अविष्कार किया वह है लेखन कला का अविष्कार। इससे पहले मानव के पास अपनी बोलियाँ तो रही होंगी जिनमें सांकेतिक बोलियाँ और चिन्ह आदि जिसके माध्यम से अपनी बात दूसरों तक पहुंचाने के तरीके पाषाण काल में मानव ने विकसित कर लिये थे लेकिन उन्हें सुरक्षित रखने के लिए उसके पास लिपि नहीं थी इसी कारण वह अपनी भाषा संस्कृति और कला आदि को आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित नहीं रख पाये। तब अपनी बात कहने के लिए उसने चित्रों का सहारा लिया और संकेतात्मक हाव-भाव से आपस में विचारों का आदान प्रदान किया होगा। ऐसा पुरातत्व वेत्ताओं का मानना है। जैसे आज भी हमारे समाज में एक मुहावरा है गाँठ बाँधकर रखना। आज हम इसे मुहावरे के रूप में लेते हैं और किसी बात को पक्का करने या ठीक से दिमाग में बिठाने, समझने के अर्थ में प्रयोग करते हैं परन्तु पुरातत्व वेत्ताओं का कहना है कि तब किसी घटना या बात को चिरस्थाई बनाये रखने के लिए मानव रस्सी पर गाँठ बाँधकर उसे सुरक्षित रखता था। उदाहरणार्थ पेरू के क्विपु विधि के द्वारा एक मोटी रस्सी से विभिन्न लम्बाई की और नाना रंगों की छोटी-बड़ी रस्सियां बांधी जाती थी, स्पेनी लोगों के आगमन से पहले पेरू के इंका लोग इन क्विपुओं की सहायता से अपना हिसाब-किताब रखते थे कुछ विद्वानों का मत है कि इन क्विपुओं के द्वारा पेरू के इंका लोग अपना इतिहास और पंचाग भी सुरक्षित रखते थे। इसी प्रकार चीन के प्रसिद्ध दार्शनिक लाओत्से (ई. पू. पाँचवीं शताब्दी) के हिरादातस ग्रंथ में उल्लेख मिलता है कि हरवामनी सम्राट दारयवुश (डेरियस) ने आयोनिया के निवासियों को चमड़े की पट्टी का एक ऐसा पंचाग भेंट किया था जिसमें साठ गाँठे थीं इसी आधार पर वे लोग अपने तीज-त्यौहार व व्रत आदि का अनुमान लगाते थे। हमारे देश के संथाल लोगों में भी गांठ बांधकर घटनाओं को याद रखने का रिवाज देखने में आता है। आज भी गाँव देहात के जनपदों में लोग लकीरें खींचकर हिसाब किताब रखते हैं। ये सब तरीके याददाश्त के लिए अपनाये जाते है। कहने का तात्पर्य है कि किसी भी समाज में जब उसकी अपनी भाषा-लिपि आदि प्रचलन मे नहीं रहीं होगी तो उन्होंने अपनी बातें एक दूसरे तक पहुँचाने के लिए सांकेतिक भाषा और चिन्हों का प्रयोग किया होगा और इसी के आधार पर धीरे-धीरे समाज में बोलियों और लिपियों का विकास हुआ होगा।

आज विश्व में लगभग चार सौ से अधिक लिपियाँ अस्तित्व में है। साहित्य के क्षेत्र में काफी कुछ लिखा जा रहा है लेकिन शुरू-शुरू में मानव ने लिखना कैसे शुरू किया होगा? इस विषय पर शायद कभी चिंतन होता हो। मनुष्य के विकास क्रम में वाणी के बाद लेखन का ही सबसे अधिक महत्व है। अन्य पशु-पक्षियों से मानव को इसीलिए श्रेष्ठ और उत्तम माना गया है क्योंकि वह वाणी के द्वारा अपने विचारों का संप्रेषण आसानी से कर सकता है। मानव का बहुमुखी विकास इसी वाणी को लिपिबद्ध करने के बाद ही हुआ है। मुँह से कही गई बात या हाव भावों से व्यक्त किये गये विचार चिरस्थायी नहीं रह सकते हैं लेकिन लिपिबद्ध करने के बाद उसे चिरस्थाई रखा जा सकता है। इसीलिए आज हमारा समाज जो विकास कर पाया है और आगे भी जो करेगा उसमें उसकी भाषा और लिपि का अहम योगदान रहेगा। चाहे आज के कम्प्यूटर युग में कितनी ही तकनीकें ईजाद हो जायें लेकिन भाषा और लिपि के बिना विकास की कल्पना करना भी मूर्खता होगी।

भाषाई सम्पन्नता और साँस्कृतिक खुशहाली कभी-कभी स्थान विशेष की भौगोलिक सीमाओं को भी प्रभावित करती हैं और इतिहास पर इन सबका दूरगामी प्रभाव देखने में आता है। जब भारत को अंग्रेजों की सदियों की दासता से मुक्ति मिली तो देशी रियासतों के विलय के बाद यह समस्या सामने आई कि देश में राज्यों का पुर्नगठन किस आधार पर किया जाय? उस समय भी भाषाई आधार पर राज्यों का गठन किया गया था। भाषाई आधार पर राज्यों का पुनः गठन देश के इतिहास में एक मील का पत्थर साबित हुआ। कहने का तात्पर्य है कि जब राज्यों का पुनर्गठन हुआ, यदि तब उत्तराखण्डी भाषा भी अस्तित्व में होती तो शायद हमें उत्तराखण्ड राज्य तब ही मिल गया होता। और आज जो कुर्बानी और संघर्ष हमारी जनता ने इस राज्य को पाने के लिए किया यह सब न करना पड़ता और हमारा राज्य विकास की दौड़ में भी आज देश के सम्पन्न राज्यों में से एक होता। इतनी ताकत होती है भाषा और संस्कृति में। इस आधार पर हम देखते हैं कि भाषाई और सांस्कृतिक सम्पन्नता किसी भी क्षेत्र विशेष के इतिहास और भविष्य पर किस तरह से अपनी छाप छोड़ती है।

जहाँ तक गढ़वाली और कुमाऊनी भाषाओं और बोलियों का प्रश्न है तो हम देखते हैं कि इन दोनों बोलियों में काफी कुछ लिखा जा रहा है, इन्हें संविधान की आठवीं अनुसूची में दर्ज कराने के प्रयास यद्यपि पुर्व में हुए होंगे लेकिन इसमें सफलता नहीं मिली। आज भी दोनों बोलियाँ अपने विकास-क्रम में काफी पीछे हैं कारण इनका पाठक वर्ग और क्षेत्र काफी सीमित है और सच्चाई तो यह है कि अपने पाठकों में भी दोनों बोलियाँ बेगानी सी हो गई हैं। हमारे लोग अपनी बोली में बात करना पंसद नहीं करते हैं यदि कभी कोई पहाड़ी बोली में बात करता है तो दूसरा हिन्दी या अंग्रजी आदि बोलकर उस लय को तोड़ देता है। यह हमारी अपनी बोलियों के प्रति उदासीनता को ही दर्शाता है और हम अपने साथ-साथ अपनी आने वाली पीढ़ियों को भी भाषाई आधार पर पंगु बनाने का ही काम कर रहे हैं।

जहाँ तक उक्त दोनों बोलियों की लिपि का प्रश्न है तो आमतौर पर यह माना जाता है कि इनकी अपनी कोई लिपि मौजूद नहीं है। लेकिन सच्चाई अध्ययन और शोध से सामने आ सकती है। लेकिन इतना तो तय है कि दोनों बोलियाँ आज मौजूद हैं और इनका साहित्यिक विकास भी क्रमोत्तर विकास के पथ पर अग्रसर है हालांकि जितना सम्मान इन बोलियों को मिलना चाहिए था उतना नहीं मिल पाया है। यदि विस्तार से देखें तो पूरा उत्तराखण्ड क्षेत्र साहित्य की दृष्टि से काफी पिछड़ा है। जबकि इसने देश को कई नामी साहित्यकार और विद्वान दिये हैं जिन्होंने हिन्दी और अंग्रेजी साहित्य की तो खूब सेवा की लेकिन अपनी आँचलिक बोलियों को भाषा का दर्जा दिलाने के लिए कुछ भी प्रयास नहीं किया। कारण एक तो यह रोजगार परक बोलियाँ नहीं हैं और दूसरे इसकी गोद से आगे बढ़े पढ़े तथा कथित साहित्यकार और विद्वानों को इन बोलियों को बोलने में उसी तरह की शर्म महसूस होती रही है जैसी शर्म एक आधुनिक और तथाकथित सभ्य समाज में अपने गंवार और ग्रामीण पृष्ठभूमि के माता-पिता का अपने तथाकथित सभ्य समाज में अपने परिचितों के आगे परिचय कराने में होती है। यही कारण रहा है इन बोलियों को बोलने वाले पहाड़ में ही नहीं अन्यत्र भी कम हो गये हैं। और यही कारण है कि यद्यपि इन बोलियों का अपना थोड़ा बहुत साहित्य और व्याकरण भी मौजूद है लेकिन तथाकथित विकासवादी हमारे लोग अपनी बोलियों की जगह आपस में हिन्दी, अंग्रेजी आदि भाषाओं में बात करना शान समझते हैं। और तो और अलग राज्य बनने के बाद भी इन बोलियों को लिपिबद्ध करने के लिए शासन की तरफ से कोई भी सकारात्मक प्रयास इन पाँच वर्षों में दिखाई नहीं दिया। संस्कृति और साहित्य के नाम पर चन्द लोगों को शासन की ओर से आर्थिक सहायता व दान दी गई लेकिन पहाड़ी भाषा-लिपि के विकास के लिए कुछ भी नहीं किया जा रहा है। हमारे साहित्यकार जो गढ़वाली और कुमांऊनी में लिख रहें हैं उनके सामने तो बहुत ही कठिनाइयाँ हैं एक तो उनका पाठक वर्ग नहीं है दूसरा उन्हें अपनी प्रति छपवानें के लिए काफी संघर्ष करना पड़ता है लेकिन हिन्दी लेखकों और अंग्रेजी लेखकों की स्थिति आँचलिक लेखकों की बजाय ठीक मानी जा सकती है। इसलिए हमें अपने समाज को इस दिशा में जागरूक करना होगा और सरकार को भी इस दिशा में प्रयास

करने होंगें तभी जाकर गढ़वाली-कुमाऊंनी को एक संयुक्त भाषा का दर्जा दिया जा सकता है।

अकेले गढ़वाली या कुमाऊंनी भाषा की बात करना यद्यपि इन दोनों बोलियों के अलग अस्तित्व को बनाये रखने के लिए ठीक माना जा सकता है लेकिन यदि हमने उत्तराखण्ड राज्य के लिए एक भाषा की बात करनी है तो हमें उपरोक्त दोनों या जौनसारी आदि जो भी बोलियाँ इस राज्य में बोली जाती हैं उन्हें मिलाकर एक सयुंक्त पहाड़ी भाषा की आवश्यकता होगी इससे हमारे आपसी संबंध भी काफी सुदृढ़ होंगे और हमारी जो भाषा होगी वह हमारे प्रदेश का भाषाई प्रतिनिधित्व भी कर सकेगी और आने वाले समय में यह भाषा रोजगार परक भाषा का स्थान भी स्वतः ही प्राप्त करेगी। इस दिशा में यद्यपि समय-समय पर कई विद्वानों ने अपने स्तर पर काफी प्रयास किये लेकिन संयुक्त रूप से इस दिशा में प्रयास करने की आवश्यकता आन पड़ी है। गढ़वाली और कुमाऊंनी दोनो बोलियों के लेखकों और साहित्यकारों को इस बात के भी प्रयास करने होंगें कि आगे जो भी साहित्य इन दोनों बोलियों का आये उसमें एक दूसरे के तत्सम तथा तद्भव शब्दों को भी उचित स्थान दिया जाय ताकि पाठकों को दोनो बोलियों को समझने में आसानी रहेगी तथा रचनाकारों को भी आसानी होगी।

हम जानते हैं कि गढ़वाली-कुमांऊनी बोलियों की संयुक्त भाषा का निर्माण एक बहुत ही दुरूह कार्य है और इसमें समय के साथ-साथ काफी मेहनत और समाज की सक्रिय भागीदारी भी जरूरी है, लेकिन मुझे विश्वास है कि हम अपने लक्ष्य में जरूर कामयाब होंगे और यही समय की भी मांग है कि इस नये राज्य की अपनी भाषा हो। भाषाई आधार पर जब हमारा उत्तराखण्ड समृद्ध और सुदृढ़ होगा तो हमारे आपसी सम्बन्धों और विकास को भी नई दिशा मिलेगी।

*****

With Best Compliments From

O.P. Lakhotia

SHREE RAM LIME PRODUCTS LTD.

Manufacturer :

Quick Lime, Hyd. Lime, Dolomite Lime & Minerals

e-mail : shreeshubham@satyam.net.in

WORKS: Borunda Gotan Road, Borunda-342 604 (Raj.)
Ph.: 02930-244165, 244076, Fax : 2546421

OFFICE : "SHREE KUNJ"
29/A, Dharamnarayan ji ka Hatha Paota,
Jodhpur-342 006 (Raj.)
Ph.: 2545832, 2547876, Mob.: 98290-26421

With Best Compliments from

Ratan Lakhotia
Mobile : 98101-16108
9312943585

Lakhotia Associates

SPECIALISTS IN : INDUSTRIAL BEARINGS

73, 1st FLOOR, SHARDANAND MARG, (G.B.ROAD),
DELHI-110006
Ph. : 23956563 Telefax : 23945289
Res. : 27136834, 27420735

E-mail : ratan_lakhotia@hotmail.com

Strategy for Higher Education Development in Uttranchal

Dr. M.S. Rawat
Professor, D.C.A.C
University of Delhi

Creation of Uttranchal as a separate state has fulfilled the emotional feelings and aspi-rations of its people. Hope lie ahead to develop strategies on various fronts and stablise its economy by providing action plans based on foresightedness and rationality of judgement. Uttranchal state very much needs dynamic leadership potentials to shape and sharpen it's future by taking due consideration of its unique geographical, social and cultural values. Question of economic vaiability so far published and propagated will have to be answered by providing SOFT analysis. It is quite evident that the state has ample opportunities to strengthen its economy by deputing a large number of bureaucrats to shape the future of the state, whereas, selected experienced and professionals of its own state be given the chance to deal and decide.

Education is the core facility for every human society. Educational facilities should be so decentralized to the extent possible to deliver it to them near to the homes of the prospec-tive youth / student population. It is advisable that in Uttranchal educational facilities should be provided more on the basis of distance rather than minimum threshold population. It is alarming that neither the population nor distance norm of providing educational facilities in the State have been followed.

Higher Education-institutions in Uttranchal

Higher Education is often meant as an institution which provides a set of programme of various related activities that leads to credit or an award through full time, part time and con-tinuing education to undergraduate, postgraduate and research courses. The institutional education has so far been regarded as a provider of educational services to the society's needs and create multifold values among youths. Higher education providers have basical-ly been regarded as Universities, institutions providing professional diplomas or degrees. Uttranchal State as a provider of higher education does not enjoy a comfortable position in terms of quality and number of institutions engaged in promoting and providing required educational standard and facilities to the needers. It is evident from the fact that the number of Universities are few. At the same time there is a cluster, i.e. most of the institutions and Universities are either centered at Nainital, Dehradun or nearby places. to these locations.

Table -A

Universities	No. University
Nainital	2
Srinagar, Pauri Garhwal	1
Deharadun	3
Open Distance Learning (Haldawani)	1
Haridwar	2
Total	9

Table-B

Engineering College

University Constituents

- College of Technology, University of Agricultural and Technology, Pantnagar
- College of Technology, Gurukul Kangri Vishwavidyalay, Haridwar, Government

Colleges

- G.B. Pant Engineering College, Pauri Garhwal.
- Kumoun Engineering College Dwarahat.

Private College

- Birla Institute of Applied Science, Bhimtal, Nainital.
- College of Engineering, Roorkee.
- Dehradun Institute of Technology, Dehradun.
- Graphic Era Institute of Technology, Dehradun.

Table-C

Polytechnics

Government Institutes

- Govt. Polytechnic, Dehradun.
- Govt. Polytechnic, Uttarkashi.
- Govt. Polytechnic, Gauchar.
- Govt. Polytechnic, Nainital.
- Govt. Polytechnic, Lohaghat.
- Govt. Polytechnic, Shakti Farm
- Govt Polytechnic, Thalnadi.
- Govt. Polytechnic. Almora.
- Govt. Polytechnic, Narendra Nagar.
- Govt. Polytechnic, Srinagar.
- Govt. Polytechnic, Kashipur.
- Govt. Polytechnic, Dwarahat.
- Govt. Polytechnic, Sult.
- Govt. Polytechnic, Takula.
- Govt Polytechnic, Dehradun.
- Govt.Polytechnic, Kotabagh (Ramnagar)

Government Aided Institutes

- K.L. Polytechnic, Roorkee.

Private Institutes

- ONGC Girl's Polytechnic, Dehradun (Now named as D.S. Negi Girls Polytechnic)
- Academy of Management Studies, Dehradun

Table-D

Hotel Management Colleges

Government Colleges:

Diploma in Hotel Management and Catering Technology

- Government Hotel Management Institute, Almora
- Government Hotel Management Institute, Dehradun

Private Colleges

Degree in Hotel Management and Catering Technology

- Amrapali Institute of Management and Computer Application Haldwani, Nainital

- Ram Institute of Hotel Management and Catering Technology Dehradun.

Table-E

Pharma College

Degree in Pharmacy (B.Pharma)

University Constituents

- H.N.B. Garhwal University, Srinagar
- Kumaon University, Nainital

Private Colleges

- S.G.R.R. Institute of Technology and Science, Dehradun
- Sardar Bhagwan Singh Institute of Bio Medical Science Dehradun

Emerging Trend of Higher Education - A Worked-Wide View:

Uttranchal State cannot side track itself from the world-wide trends taking place throughout the globe for adopting strategy regarding higher education for its youth.

The dimensions and approaches of institutional higher education is viewed differently and undergoing changes. Jane Knight rightly puts "the world of higher education and the world in which higher education plays a significant role is changing for many reasons." For more than 20 years higher education has gone through a process of internationalization. The word internationalization is being used in a variety of ways and different connotation are being assigned to it for various purposes. Internatioalization of higher education has been interpreted and given various dimensions such as - international education, Comparative education, Global education, multilevel education, Cross boarder education, Trans national education, and Boarderless education so on.

During 200 in U.K. the Commitee of Vice-Chancellors and Principals(C.V.C.P) provided the term boarderless education to refer conceptual disciplines education across the geographic boarders. Transnational educational as used by UNESCO meant all types of higher education studies whereby the learners are located in country different from one in which the awarding institute is located. Similar meaning has been assigned by the Council of Europe in the Code of Practice on Transnational Education.

Factors Responsible for changes in Higher Education:

There are various factors responsible for the present day changes in Higher educations, are enumerated as under:-

1. Liberalisation, Globalisation of trade.
2. Technological advancement particularly in the field of Communication network and systems.
3. Governments increasing emphasis on Market Economy.
4. Increased international labour mobility.
5. Ever increasing focus on knowledge of society.
6. Increased private investment in the field of education and decreased public support for Government funding for Universities.
7. Growing importance of life-learning.

Patricia Kovel Jarbe, of University of Minnesota Observes-'Theses factors are primarily external to higher education, but some are internal. These can be thought of as drivers of changes and potential change. Not every higher education institutions will be affected to the same degree by the drivers. Educational institutions cannot choose whether or not to be affected by these drivers; they can however, choose how they will respond.'

Therefore, the State will need to plan strategically so as to respond to these emerging changes.

Impacts and Challenges of Higher Education:

The impact of above factors on higher education is turbulent and the resultant outcome is becoming more complex in transforming social, legal, ethical values among students. There are many changes and new challenges in terms of how present environment is affecting internationalization and how the growing international dimension of higher education is an agent of change itself. Globalization has been regarded as a powerful and pervassive factor for changing the overall environment.

Higher education will have to find out ways of dealing with, responding, and ideally, benefiting from these trends. Those institutions which are able to satisfy needs created or exacerbated by demographic changes will almost certainly find a large market for their programmes and services.

The world is witnessing various factors operating inversely and generating impacts on manifold aspects in an economy and leaving behind complex challenges to be faced with. The national and international dimension of higher education is therefore becoming increasingly important and at the same time more complex. It is the rational analytical judgement on the part of Central/State governments to frame and follow higher educational policies for its and other nationalists.

1) Education Programmes are being Commercially Oriented:

Government policy of providing liberal view of trade has provided the platform for internationalization of higher education. New trade agreements have decreased barriers of trade. Therefore, there relative impact of liberalization has been resulting into the import and export of educational services to attract international students in their countries to boost their foreign exchange reserve. Most of the educational programmes are commercially oriented. The annoying fact is that very less emphasis is being given to national/international development project and programmes for a better world.

By adopting the formula of market economy for economy for higher education has led to the everlasting impact of treating education increasingly as a commodity to be commercialised.

However, funding and support for higher education by government is at cross roads and private investment in education is rising more rapidly. This reason has attributed for privatization and Commercialisation of higher education.

Government is on its search for alternative to provide higher education either from social foundations, private corporate sector fee based education to complete with private institu-

tions. Trade in higher education services is expected to be highly competitive Commercial providers are generating income from importing and exporting education programmes.

2) Changed Attitude of Education Providers:

The newer types of educational providers have fielded themselves in the form of private persons, multinational corporational corporations, media companies, network of public and private institutions. These new provider such as Pearson of U.K., Thomson of Canada, Appolo of United States, Informatics of Singapore, Aptech of India are in search of new global markets. Even Corporate Universities are being run by Motorola and Toyota. It is evident that these providers are mostly Commercial providers and therefore their attitude regarding higher education is to complement and complete public and private institutions. The old concept of University attitude of higher education-the trinity of teaching, research and services is being replaced-by education a saleable product rather than useful services to the society. Their educational programmes are market oriented and more active than public Universities.

Student academicians and training programmes have become mobile and crossing national regional regional regional boundaries to create wealth. These providers do not much emphasis on research and national priorities for further development.

3)Increased Rate of Intellectual Diversification and Migration

The increasing mobility for higher education and job search is resulting into temporary and permanent migration, further leading to brain drain in the country. Moreover, great number of students are moving for academic purposes joining classrooms and campuses in other countries and are being affected by diverse culture and ethics. It may be taken as an opportunity to develop greater intellectual understanding and Communication skills for the better learning environment. The change process of higher education is leading to provide it an international dimension in all respects to enhance the quality of teaching and learning to achieve the desired competencies. However, nationalistic values and ethics among youth are undergoing changes to respond to and build multicultural and intercultural environment.

4) Education Delivery Methods Changing:

Fast changing information and communication technologies system demands new education delivery methods to be installed to compare with these using especially on line and stellite based methods. Innovational approach of delivery methods such as e-learning franchises and satellite campuses require attention of the Universities in regard to funding for its colleges and campuses on ultra-modern basis. Apart from class-room lecturers, further more attention has to be given to the accreditation for domestic and cross boarders education.

Strategy for Higher Education in Uttranchal

The changed Higher education scenario is keenly demanding Central/State Governments and Universities to play active role in regard to governance. Government role of framing educational policies at the time when great transformation is taking place needs rational decision making. National Institute of Educational Planning and

Administration(NIEPA) head Mr.S. Bhusan observes - "The scenario in the field of higher education has changed drastically over the last few years. And with what is called knowledge revolution on full swing, our policy makers and administrators need to be taught about the new relations"(Sunday Times of India, New Delhi, December 4, 2005). It has never been felt so important to be congnizent of how higher education system is being affected by these changes itself. It would be prudent to think of long term effects of such intended consequences of changes in of higher education.

The new commercial providers are likely to leave impact on nonprofit earning institutions engaged in higher education. Therefore Government needs to provide considered plans for good governance within and outside the State. Policies and frame works be provided after considering following important strategies of higher education in the State of Uttranchal.

1.Emphasis on vocational and Professional Education

It has been observed that 80% of the professional education imparted in India is in private hands. There has been a flexibility in the attitude of AICTE to give certification for private professional education. Therefore, the State should take advantages of such policy and encourage to establish:-

a) Skill based / vocational and professional educational institutions:

It is the need of the hour for the uttranchal State's development. This policy would assist unemployed educated youth to find the relevent jobs in their related field of specialization. At the same time this will also provide opportunities for self employment.

b) Industry Based Education:

Uttranchal State is presently looking for industries to be established so as to generate income and provide employment. It is suggested that professional institutions providing higher tech intensive knowledge be encouraged and main focus should be on generating jobs.

c) Regular Updating of Courses:

For providing need based professional education it is necessary that course curriculum be updated on alternative years. Professionally and technically qualified people from industry be also included in the process of updating and designing the course curriculum.

d) Compulsary Refresher Courses:

Faculty members of the Colleges, institutions and Universities be updated and upgraded through training programmes within or outside the State to ensure the quality of education.

e) Latest Technology:

Latest methods, equipments and technology should be used in these institutions to generate trained and qualified job seekers on the pattern of I.I.T's. To create brands in education - the basic requirements are - curriculum design, student- staff selection processes,

research agenda and need based infrastructure to be provided.

2. Entry of Private Sector in Higher Education

Role of private sector in the field of higher education has drastically changed in its size shape, pattern and programme in 20th century. As compared to 90's where most of the private institutions were affiliated to Universities and left to run the programme as per the guidelines given to them by Universities.

One of the newly created States Chattisgarh, introduced its own Private Universities Act in 2002, which opened new vistas for private sector to enter the field of higher education. But Supreme Court Judgement in the year 2005 declared 112 such Universities as illegal. Uttranchal govt. should not allow such private Universities to come up without pre-planned thought. State needs to properly lay down the legislature for the management and control of such private Universities to offer quality and need based education. Haste in this direction may have serious impacts on ascertain that no disregard is being made to the needs of the State in terms of educational standards, norms, values and qualifications. It should be noted that privatization of education can not be the substitute of state's responsibility of imparting higher education.

However, entry of private sector in higher education can not be stopped now, as Government funding is being restricted. Moreover, being the era of liberalization and privatization in other sectors as well, education can no longer remain in isolation.

3. Open Distance Learning (ODL)

Open distance learning is equally important to impart higher education and concept of ODL has been well accepted in this Country and other countries. It has been observed that there are 13 Open Universities in India till 2005.Uttranchal State has recently launched one such university. Out of 360 existing Universities in India, about 120 Universities are offering distance education as a part of their regular department/ wing.

ODL University in Uttranchal should be a need based life long quality University. The prime objective of the ODL higher education should be easy access to its customer and such education be provided at a subsidized cost with quality. ODL should impart education through a mix of printed and media including audio, video, tele-conferencing, Exclusive Satellite programmes. Quality based best reading material is to be made available to the learners. An innovative and constructive suggestion has been put forward for providing best material to the ODL students is the creation of nation pool of best material from different institutes under the auspicious of Distant Education Council(DEC). Any institution can approach DEC, identify a programme and offer it. This would save time, cost and other logistics. The Govt. is thinking on making DEC an autonomous body by an Act of Parliament. This would empower DEC to be the sole authority to monitor, regulate, standardize and fund distance education programmers. On line education is to be encouraged to open new vistas for those, who want to pursue a programme to upgrade their skills and knowledge.

4. Research and Development Programmes

Most foreign Universities are engaged in pursuing researches and developmental

projects for the private sectors, who in turn finance such departments of the universities. It has been observed that very little is being done in the field of research in India and it is disappointing. It is suggested to create a hub of research and development. The State should encourage research on an inter-University basis, where the resources could be pooled. State Govt. business and industry can assign special projects of their needs to the Universities for research and development. This would also give opportunities to develop expertise in the various selected fields. The important factor to be taken care of is that of quality research work be of a unique standard. Entry of scholars in the research be encouraged but with appropriate qualification and merit. In order to enhance quality research work in the Universities / institutions infrastructural facilities ought to be upgraded by providing development grants for updating lifetime laboratories, physical facilities water, uninterrupted power supply, safety requirements for international students.

5. Foreign Universities Campuses in the State on Bilateral Basis

Central Govt. is in the process of framing rules to monitor the entry of foreign Universities in the Country.A serious and considered plan is necessary to be evolved by the Central / State Govt. by framing policies and rules to monitor the entry of foreign Universities in Uttranchal. This does not mean that the government should be against the idea of allowing foreign Universities to establish their campuses in this Country. It may be allowed on bilateral basis.

However, foreign Universities enjoy huge Universities enjoy huge financial base and may attract best student and faculty. Under such situations the interests of the student need to be taken into consideration before foreign Universities are allowed to set up their Campuses in Country.

In India the All India Council for Technical Education(AICTE) regulates, the entry and operations of foreign Universities in the country. There are certain foreign Universities already offering technical programmes at diploma, undergraduates, post-graduate and doctoral levels, either directly or through Collaborative arrangements, in India after seeking approval from AICTE.

6. Collaborations and Tie Up Processes of Exporting Education:

It has been correctly observed that the flow of foreign students coming to india has risen from 5841 international students in 1996-97 to 7753 in 2003-04. This rise raises a question. If they can come all the way to india, would not indian institutions find a ready market in their countries? Education is the third largest industry in the World after health and defence. At present India has minuscule share in the #3 trillion global education market. But the possibilities are immense. Education could be India's best export. "We can take the lead in providing professional education/training in I.T, healthcare, humanities and pure sciences in addition to engineering. "An intergrated policy for managing and exporting knowledge is the need of the hour and government should set up special economic zones focused on education. Unless, we improve the quality of our institutions, we will be short of knowledge manpower, and demand will outstrip supply. (Sunday Times of India, New Delhi,22January, 2006). All educational institutions must go by a caution that they are under the obligation to

provide academic standards in the delivery of quality education. Competition will deal and decide the fate of higher educational institutions on world wide basis.

To SUM UP

Higher education in Uttranchal will have to find ways and means of dealing with the present day challenges and changes. It will have to respond to and ideally benefiting from these trends to satisfy the needs of the State. Restructuring the present system is very much needed to provide the educational quality assurance.It is the crucial time - through which higher education is passing. Survival of the fittest will soon prove alright, because globalisation process has already set in. Governments at Centre and State level come and go but the educational institutions remain as continuous entities.

The challenges ahead are for the policy makers of higher education as to what interests of the student communities are not being server? In order to adequately protect students interests the rigorous measures have to be laid down. A complete revamping of approaches in regard to financial aids, programme approval and assessment of the Universities is the dire need of the time.

*****

With Best Compliments from :-
HARI TENT HOUSE
Specialist in :
PIPE PANDAL
All Kinds Of Decoration, Illumination & Food Catering
C-27,Acharya Niketan ,Opp. Mayur Vihar
Pocket -I, Phase -I,Delhi-110091

ॐ
With Best Compliments from :-
Ram Krishan Joshi 'Rasik'
Admission Open
22474389
Mob.: 9868401201
GREAT MISSION CONVENT SCHOOL
ग्रेट मिशन कॉन्वेंट स्कूल
RECOGNISED * मान्यता प्राप्त
Proposed upto Sr. Secondary
English Medium * Play-Way Method
Computer Education * Transport Facilities
B-26, West Vinod Nagar (Badrinath Mandir)
I.P. Extn. Delhi-92
B-29, Kaushik Enclave (Badrinath Mandir)
Burari, Delhi-84

अनेक नामों से विभूषित-गढ़वाल हिमालय

मदन बल्लभ डोभाल

वर्तमान गढ़वाल हिमालय क्षेत्र को अति प्राचीन काल से अनेक नामों से पुकारा गया है। देवों ऋषि-मुनियों और चिन्तकों ने भौगोलिक, आध्यात्मिक एवं राजनैतिक दृष्टि से समय-समय पर मध्य हिमालय के इस क्षेत्र को विभिन्न नामों से सम्बोधित किया है।

भारतीय संस्कृति के उन्नयन में इस अँचल का विशेष योगदान रहा है। यहीं से गंगा जमुना का जन्म हुआ, देश को गंगा संस्कृति मिली। स्वर्ग का मार्ग यहीं के पर्वत श्रेष्ठ सुमेरू शिखर से जाता है। यही वह गढ़वाल हिमालय है जिसके दुर्गम मार्गों से पांडव स्वर्ग की ओर बढ़े थे। यही वह गढ़वाल हिमालय है जिसकी भव्यता देख कर स्वयं श्री कृष्ण ने अपने को गीता में हिमालय के रूप में व्याख्यायित किया था। जलप्लावन के पश्चात मनु द्वारा सृष्टि की रचना इसी भू-भाग पर हुई। देव दानवों की उत्पत्ति स्थान भी इसी क्षेत्र को माना गया है।

आदि काल से देव, दानव, यक्ष, गंधर्व, नाग, ऋषि मुनियों एवं आर्यों की यह निवास स्थली रही है। महाकवि कालिदास ने गढ़वाल हिमालय को देवताओं की आत्मा माना है। भारतीय संस्कृति, ज्ञान-विज्ञान का कोषागार भी यह क्षेत्र रहा है। इस क्षेत्र में ऋषि मुनियों ने घोर तपस्यायें की। ज्ञान यज्ञों का सम्पादन किया तथा वेद, पुराण, उपनिषद और महाकाव्य आदि शाश्वत रचनाओं को मानव मात्र के लिये सुलभ बनाया।

यह क्षेत्र धार्मिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से ही श्रेष्ठ नहीं अपितु अपने प्राचीन गौरवशाली इतिहास और प्राकृतिक छटा के लिये भी विख्यात है। आज भी इसे योगियों की तपोभूमि और सैलानियों का स्वर्ग कहा जाता है। इसके दर्शन मात्र से मानव रोमांचित एवं आह्लादित हो उठता है। इसके विविध रूपों के कारण ही प्राचीन काल से आज तक इस क्षेत्र को कई नामों से पुकारा गया है। संक्षिप्त में इसका उल्लेख इस प्रकार है:—

1. प्रालेय-प्रलयकाल में मनु की नाव की रक्षा गढ़वाल-हिमालय के जिस भू-भाग में हुई वह प्रालेय कहलाया।

2. स्वर्गभूमि-विष्णु, लक्ष्मी एवं अन्य देवताओं का वास होने, सभी मनोकामनायें पूरी होने, वेदना विषाद न होने, जरा से जीर्ण न होने और सौन्दर्य की पराकाष्ठा रखने वाली देवियों के कारण इसे स्वर्ग कहा गया है। आजीवन स्वास्थ्य, निर्भयता, सम्पन्नता, अशोक एवं प्रमोद यही स्वर्ग की स्वर्गीयता थी। स्वर्ग एक साम्राज्य था जहाँ ये सारी सुविधायें उपलब्ध थी। राजनैतिक, पारिवारिक और आर्थिक सम्पूर्णता ही स्वर्ग था। आज भी हम अपने किसी प्रिय जन की मृत्यु के उपरान्त सद्भावनावश यह कहते है कि वह स्वर्गवासी हो गये। परिवार की चिन्ताओं से मुक्त होकर स्वर्ग जाकर निश्चिंत हो गये। मृत्यु के पश्चात् हम अपने प्रियजन के लिये इसी स्वर्ग की कामना करते हैं।

3. देव-भूमी- देव, नाग, यक्ष, गन्धर्व, किन्नर और अनेक तत्वदर्शी मुनियों के इस क्षेत्र में वास करने के कारण इसे देवभूमि कहा गया है। तब श्रेष्ठ कार्य या एक यज्ञ करने के बाद किसी आर्य नरेश को स्वर्ग (देवभूमि) का राजा बनाया जा सकता था।

4. पंचजन- देव, नाग, यक्ष, गन्धर्व, किन्नर इन पांच वर्गों का निवास होने के कारण इस क्षेत्र को पंचजन की व्याख्या यों की है:- ''चत्वारो वर्णा पंचमो निषाद''। चार वर्ण और पांचवा निषाद वर्ग मिल कर पंचजन हुये। तत्कालीन समाज में इन वर्गों का एक-एक प्रतिनिधि मिल कर निर्णय किया करते थे। आगे चलकर इसी शब्द से पंचायत और पंच परमेश्वर शब्द बना।

5. कैलाश-महादेव शंकर की निवास स्थली होने के कारण कैलाश से केदार तक का क्षेत्र कैलाश खण्ड में ही आता है। हिमालय के इस अगम्य क्षेत्र में शिव ने कैलाश विश्वविद्यालय की स्थापना की थी। वेद्, तंत्रशास्त्र, योग, संगीत

और आयुर्वेद की शिक्षा यहाँ दी जाती थी। महाकाली योग विद्या की आचार्या थीं। तीन प्रकार की लिपियों का आरम्भ गणेश के द्वारा यहीं हुआ।

(1.) दक्षिण गामिनी लिपि - को आर्यों तथा सुरों ने
(2.) वाम गामिनी लिपि को असुरों एवं म्लेच्छों ने और
(3.) अधोगामिनी लिपि को नागेतर जातियों ने अपनाया।

6. केदार खण्ड- पौराणिक ग्रन्थों में हिमालय को पांच खण्डो में विभक्त किया गया है। - (1) कूर्मांचल (2) केदार खण्ड (गढ़वाल) (3) नेपाल (4) जालन्धर (5) कश्मीर। कूर्मांचल और केदार खण्ड को मध्य हिमालय कहते हैं। केदार खण्ड के नाम से गढ़वाल-हिमालय को अधिक ख्याति मिली। यह क्षेत्र हिन्दुओं का आराधना मन्दिर है।

7. रूद्र हिमालय- अंधकासुर का वध करने के पश्चात् भगवान शंकर रूद्रनाथ में रहने लगे थे, भगवान शंकर के रूद्र रूप के कारण इस क्षेत्र का नाम तब रूद्र हिमालय और भूतेश गिरि पड़ा।

8. मुक्तिप्रद- आध्यात्मिक महत्व की अधिकता के कारण इस क्षेत्र का नाम मुक्तिप्रद पड़ा।

9. बिनशन- सरस्वती नदी जहाँ अन्तर्ध्यान हो गई थी उसे विनशन प्रदेश कहते हैं। माणा गांव से आगे और व्यास गुफा के नीचे सरस्वती अलकनन्दा में समा गई थी।

10. तपोभूमि/योग सिद्ध- गढ़वाल हिमालय क्षेत्र में तपस्या करने वालों को थोड़े समय तक तपस्या करने पर ही सिद्धि प्राप्त हो जाती है। इसके दर्शन मात्र से ही सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। इसलिये इसे तपोभूमि और योग सिद्ध कहा गया है।

11. बद्रीविशाल- द्वापर में इस क्षेत्र में देवता, ऋषि-मुनि एवं तीर्थों की अधिकता होने से यह क्षेत्र अन्य क्षेत्रों से विशाल हो गया था। इस बद्री क्षेत्र को बद्रीविशाल भी कहा जाने लगा।

12. उत्तर कुरू- उत्तर कुरु में असुरों का शासन था, अर्जुन ने इस क्षेत्र के कुछ भाग को बाहरी लुटेरों से छुड़ाया था। तब से इस क्षेत्र का नाम उत्तर कुरू प्रसिद्ध हुआ। अब इसका कुछ हिस्सा चीन के पास है।

13. सुमेरू- गढ़वाल हिमालय की उत्तर पश्चिम दिशा में सुमेरू पर्वत है, जिसे देवताओं का पर्वत कहा जाता है। केदार खण्ड में गंगा को सुमेरू कहा जाता है।

14. नारदीय क्षेत्र- इस क्षेत्र में नारद निरन्तर भगवान विष्णु की उपासना में तल्लीन रहते थे। इसलिये इसे नारदीय क्षेत्र कहा गया है।

15. हेमखण्ड/मानस खण्ड- वैदिक काल में उत्तरांचल का पर्वतीय भाग मध्य हेमवत् नाम से प्रसिद्ध था। पुराणों में हेमवत् तीन खण्डो में विभाजित था — (1) हिमवत खण्ड (2) मानस खण्ड (कूर्मांचल) (3) केदार खण्ड। यह क्षेत्र प्राचीन काल से ही भारतीय साहित्य, संस्कृति और ज्ञान-विज्ञान का कोषागार रहा है।

16. स्वर्णभूमि / सौन गोत्र- महाभारत के 52 वें अध्याय में पाण्डवों के राजसूय यज्ञ में गढ़वाल तब हिमवंत के खस और तंगड़ो ने यहीं से ''पिपीलिक'' नामक सोना भेजा था। ह्वेनसांग ने उत्तराखण्ड के इस भू-भाग को सौन गोत्र नाम से वर्णित किया है। इस भूमि में तब सोना अधिक होता था।

17. सप्त सिन्धु- अलकनन्दा, धौली, सरस्वती, पिण्डर, मंदाकिनी, गंगा (भागीरथी) और नावालिका (नयार) इन सात नदियों के कारण इस क्षेत्र को सप्त सिन्धु कहा गया।

18. ब्रह्मावर्त- अल्कापुरी के निकट ब्रह्मावर्त या ब्रह्मपुरी क्षेत्र है। इसी स्थान से मानव जीवन आरम्भ हुआ।

19. परलोक- मध्य हिमालय में स्थित स्वर्ग जहाँ तत्कालीन शर्तों एवं नियमों के पालन के बिना कोई प्रवेश नहीं कर सकता था उसे परलोक कहा गया है।

20. बद्रीकाश्रम- महाभारत काल में उत्तराखण्ड में चार प्रसिद्ध आश्रम थे—(1) बद्रीकाश्रम (2) कण्वाश्रम (3) भारद्वाज आश्रम (4) वशिष्ठाश्रम, इन आश्रमों में वेद, वेदांगों तथा सदाचार की शिक्षा दी जाती थी। इनमें बद्रीकाश्रम अत्यन्त मशहूर था। यहाँ मन को अत्यन्त शान्ति प्राप्त होती थी। सूर्य की किरणे भी यहाँ किसी को संताप नहीं पंहुँचाती थी। भगवान नारायण का निवास होने के कारण इसकी महत्ता अन्य आश्रमों की अपेक्षा अधिक थी। अत: इसी के नाम से यह क्षेत्र सम्बोधित होने लगा।

21. गिर्य्यावली- एक के बाद दूसरी अनेक पर्वत श्रृंखलायें होने के कारण इसे गिर्य्यावली के नाम से पुकारा गया है।

22. उत्तरापथ / उत्तराखण्ड- स्वर्ग राष्ट्र का ह्रास होने के बाद इस क्षेत्र को विद्वानों ने उत्तराखण्ड या उत्तरापथ के नाम से सम्बोधित किया। आज भी इस क्षेत्र को उत्तराखण्ड नाम से ही जाना जाता है। धार्मिक आध्यात्मिक दृष्टि से यह क्षेत्र आज भी अन्य क्षेत्रों से श्रेष्ठ माना गया है।

23. हिमान्त / हिम प्रान्त- प्राचीन काल में गढ़वाल को हिमवन्त और हिमप्रान्त से जाना जाता था। हिमप्रान्त का राजा हिमालय पर्वत था। शिव पत्नी उमा (पार्वती) हिमालय की पुत्री थी।

24. कर्तृपुर/कार्तिकेयपुर- वर्तमान जोशीमठ को कहते थे। खस तथा कत्यूरी राजाओ की राजधानी होने के कारण इस क्षेत्र को तब इन नामों से पुकारा गया।

25. खस देश- ईसा पूर्व लगभग पांचवी शताब्दी तक इस क्षेत्र में खस बहुत प्रबल थे। इनका राज्य गढ़वाल से लेकर नेपाल, कश्मीर तक था। संस्कृत साहित्य में इस क्षेत्र को ''केदार खस मण्डले'' के नाम से भी जाना गया है। गढ़वाल के खस अत्यन्त शक्ति सम्पन्न थे। खसिया या खस शब्द मोटे तगड़े तथा मोटी बुद्धि के लिये प्रयोग किया जाता है। इस लिए इस क्षेत्र को खस देश कहा गया है।

26. श्रीक्षेत्र- श्रीनगर में अलकनन्दा के तट पर एक बड़े पत्थर पर अति प्राचीनकाल से श्री यन्त्र खुदा होने के कारण इस क्षेत्र को श्री क्षेत्र या श्री पुर के नाम से पुकारा गया है।

27. वीर भूमि- एक समय गढ़वाल क्षेत्र को वीरों की भूमि माना जाता था। यहाँ के प्रत्येक राजा के पास माल (योद्धा) होते थे। राजा के इशारे पर ये भड़ या माल अपना करतब दिखाया करते थे। सेना का नेतृत्व भी ये करते थे और युद्ध जीत कर आते थे। इन वीरों के कारनामें आज भी लोक गीतों व पंवाड़ों के रूप में मिलते हैं। वैसे भी आदि काल से गढ़वाली वीर परम्परा न झुकने और न टूटने वाली परम्परा है। आज भी गढ़वाली सैनिकों की अपनी एक विशिष्ट परम्परा है।

28. गढ़देश / बावनी- ऋग्वेद में असुरों के राजा शम्बर के 100 गढ़ों का उल्लेख मिलता है। ये गढ़ गढ़वाल हिमालय क्षेत्र में ही थे। इन गढ़ों को इन्द्र और सुदास ने नष्ट किया। कालांतर में यह क्षेत्र अलग-अलग छोटे-छोटे बावन गढ़ों में बंटा होने के कारण बावनी नाम से प्रसिद्ध हुआ।

29. गढ़वार / गढ़राज- लगभग सन् 1500-1510 के बीच पवांरवंशी महाराजा अजयपाल नें गढ़वाल के सभी बावन गढ़ों को जीत कर अपने अधीन किया और इनका एक नाम गढ़वार रखा कुछ समय बाद इसे 'गढ़राज' सम्बोधित किया जाने लगा, सन् 1780 के आस-पास स्व० मौलाराम, गढ़राज्य के प्रसिद्ध चित्रकार और कवि द्वारा लिखित 'गढ़राज वंश' के इतिहास में इस क्षेत्र का नाम 'गढ़राज' और 'गढ़वार' लिखा मिलता है।

30. गढ़वाल- सन् 1804 से 1815 तक गढ़वाल में गोरखों का राज रहा। अंग्रजों की सहायता से सन् 1815 में उन्हें

यहां से भगाया गया किन्तु इसके एवज में अंग्रेजो नें गढ़वाल के एक भाग को आधीन कर लिया। उच्चारण की सुविधा से उन्होंने गढ़राज को गढ़वाल नाम से पुकारना शुरू किया। तब से अब तक समस्त गढ़वाल क्षेत्र को इसी नाम से पुकारा जाने लगा।

वैसे इस क्षेत्र को हिरण्यमाया, इलावृत, पुण्य भूमि शिवालिक और रूपालदक्ष आदि नामों से भी पुकारा गया है। वास्तव में गढ़वाल हिमालय भारत का मुकुट है। युग-युग से इसका सम्बन्ध भारत के महापुरुषों, ऋषियों और तपस्वियों के नाम से जुड़ा है। इसकी कन्दराओं और उपत्यकाओं में शंकराचार्य जैसे तत्व दर्शियों ने साधना की है। आज भी हिमालय गढ़वाल की कन्दराओं में अनेक योगी और महात्मा एकान्तवास कर रहे हैं । यह क्षेत्र शैव, वैष्णव, शाक्त मतों का केन्द्र भी रहा हैं। इस क्षेत्र में भारत के कोने कोने से लोगों का आना जाना युग युगों से रहा है। भारतीय संस्कृति का निर्माण करने वाले ऋषि मुनियों की निवास स्थली यही गढ़वाल-हिमालय क्षेत्र रहा है। यहीं से ज्ञान का सूर्य उगा और उसने भारत माता को संसार भर में एक विशिष्ट स्थान दिलाया।

32. उत्तरांचल- दिनांक 9-11-2000 से यह क्षेत्र अब उत्तराखंण्ड के बजाए उत्तरांचल के नाम से पुकारा जाने लगा है। सदियों से पिछड़े इस क्षेत्र को विकसित करने के लिये उत्तरांचल राज्य सरकार ने कुछ योजनायें बनाई हैं। आने वाला समय ही बतायेगा कि कहाँ तक सरकार इस क्षेत्र की संस्कृति एवं पर्यावरण को बचाते हुये इस क्षेत्र की युवा पीढ़ी के लिये रोजगारोन्मुख योजनाओं को कार्यान्वित करती है और पलायन को रोकती है।

आदमी

खेमराज कोठारी

आँसुओं को सिसक-सिसक
के पी रहा है आदमी
अश्रु जल को घुट-घुट के पी रहा है आदमी
गमों के अम्बर को दामन में छुपा रहा है आदमी ॥
पीड़ा की पावक में झुलस रहा है, आदमी
तभी तो अर्ध चेतना में जी रहा है, आदमी ॥
लाशों के गोदाम से अपनी ही लाश उठा रहा है आदमी,
अर्थी में सजा, कफन से ढका, चिता में लिटा,
आदमी को शमशान में जला रहा है आदमी ॥
सृष्टि के संहार से वेदना के महल में, मातम मना रहा है आदमी।
भूख प्यास से तड़पता दर्द की दास्तान सुना रहा है आदमी।
नील नभ तले ठिठुर-ठिठुर के झोपड़ियों में जिन्दगी जी रहा है आदमी
मुर्दे के कफन से भी पैसा बटोर रहा है आदमी
शमशान में भी राजनीति की रोटी पका रहा है आदमी ॥
स्वार्थ की धुन्ध में आज समा पका रहा है आदमी
फिर भी बुद्धिजीवी, इज्जतदार बना हुआ है आदमी ॥
राग-द्वेष तृष्णा के वैभव में मग्न हुआ है आदमी
धर्म जाति भाषा राज्य के नाम पर खून की होलियाँ खेल रहा है आदमी ॥
फिर भी कीड़े मकोड़ो की तरह पैदा हो रहा है आदमी
समझ में कुछ आता नहीं क्या तरक्की कर रहा है आदमी ॥

उत्तरांचल राज्य की शिक्षा व्यवस्था

डा० नागेन्द्र ध्यानी

भौगोलिक स्थिति

84 लाख से अधिक आवादी वाले नवगठित उत्तरांचल में 13 जिले, 49 तहसीलें, 95 विकास खण्ड, 16 हजार गाँव व 71 नगरीय क्षेत्र है। भौगोलिक संदर्भ में उत्तरांचल 28, 37, 31 एवं 20 उत्तरी अक्षांश व 70, 35 और 80, 55 पूर्वी देशान्तरीय विस्तार में स्थापित प्रशासकीय भू-भाग है। यह मध्य हिमालय का एक हिस्सा है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह राज्य अपनी उत्तरी तथा दक्षिणी सीमाओं मे जहाँ भूमि से आवद्ध है, पूर्वी और पश्चिमी सीमाओं में यह नदियों से आवद्ध है। उत्तरांचल की पूर्वी अन्तर्राष्ट्रीय सीमा नेपाल से उत्तर-सीमा का निर्धारण हिमाचल प्रदेश से टोंस नदी से होता है। उत्तरी सीमा के दक्षिण-पूर्व में हुम्ला(नेपाल) उत्तर पश्चिम से हिमालय प्रदेश, उत्तर की ओर तिब्बत तथा पूर्व की ओर नेपाल से लगने वाली अन्तर्राष्ट्रीय सीमा इस समूचे भू-भाग का सामाजिक व सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण तथा सामरिक दृष्टि से संवेदनशील बना दिया है।

उत्तरांचल राज्य में नदियों और वनों की अपार सम्पदा है। उत्तरांचल के पास लगभग 60 प्रतिशत वन हैं जो राज्य को एक समृद्ध दिशा दे सकते हैं। उत्तरांचल की विशिष्ट संस्कृति इस राज्य की बहुमूल्य धरोहर है। उत्तरांचल का पर्यटन क्षेत्र ऐसा है जो आने वाले समय में राज्य की समृद्धि के लिए एक सुनहरा मार्ग प्रशस्त करेगा। यहाँ के रमणीय एवं सुरम्य-स्थलों, मनमोहक-बुग्यालों, घाटियों और उपत्यकाओं ने फिल्म उद्योग को अपनी ओर आकर्षित किया है। इस राज्य में जड़ी-बुटी एवं फल उत्पादन को भी अपार सम्भावनाएँ हैं।

संस्कृति, इतिहास गाथा

लोक-साहित्य, लोक-कला, चित्रकला, धर्म और संस्कृति की दृष्टि से उत्तरांचल अत्यन्त समृद्ध है। इस अंचल को पौराणिक संस्कृति का उद्गम स्थल माना जाता है। अपने समृद्ध संसाधनों और विशिष्ट सांस्कृतिक विशेषताओं के कारण उत्तरांचल की पहचान समृद्धतम राज्यों की श्रेणी में होगी। 60 हजार वर्ग किलोमीटर क्षेत्र के उत्तरांचल की गणना जम्मू कश्मीर के बाद दूसरे बड़े हिमालयी राज्यों में की जाती है। उत्तरांचल, भारतीय दर्शन, चिन्तन-मनन, आध्यात्मिक व सांस्कृतिक महत्ता की संजीवनी शक्ति रहा है। इसने देश को गंगा-जमुनी सांस्कृतिक व धार्मिक गरिमा दी है। प्राचीन काल में कारूपथ, उत्तरपथ, हिमवत, उत्तरकुरु केदार-मानस खण्ड नाम से पहचाना जाने वाला यह क्षेत्र वर्तमान में उत्तराखण्ड एवं उत्तरांचल नाम को धारण किए हुए है। यह पौराणिक काल में यक्ष, किन्नर, गन्धर्व, नाग और सुर-असुरों की भूमि रहा है। पौराणिक देवासुर संग्राम इसी की मन्दाकिनी उपत्यका में लड़ा गया। प्रख्यात कालीमठ इसका साक्षी है। महाभारत युद्ध में यहाँ के पर्वतीय योद्धा राजा सुबाहु के नेतृत्व में पांडव पक्ष से लड़े थे। इन वीरों के युद्ध कौशल का वर्णन महाभारत में ग्यारह ओजस्वी श्लोकों में हुआ है। मध्यकाल में भी तैमूरलंग से टक्कर लेने, तथा नजावत खाँ की नेतृत्व वाली लड़ाकू मुगल सेना के छक्के छुड़ाने में यहाँ के वीर पीछे नही रहे। यह वीरभूमि, शान्ति और अहिंसा में भी विश्वास रखती है। कालसी (देहरादून) में स्थित सम्राट अशोक का शिलालेख इसका प्रमाण है। सन् 780 में आदि गुरू शंकराचार्य उत्तराखण्ड आये थे। चौथी से दसवीं शताब्दी तक उत्तराखण्ड में कत्यूरी राजाओं और उसके पश्चात् चन्द राजाओं का आधिपत्य रहा। सन् 1791 में यहाँ गोरखों का शासन रहा। संग्रोली संधि के बाद 1815 में यहाँ अंग्रेजी शासकों ने अपना साम्राज्य स्थापित किया। देश की आजादी की लड़ाई में उत्तरांचल के वीरों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय पहचान बनाई है। देश की एकता और अखण्डता के लिए यह

प्रदेश सदैव आगे रहा है। आज भी उत्तरांचल के सैनिक, सीमा पर शत्रुओं के छक्के छुड़ा रहे हैं। उनके सम्मुख आतंकवादियों के हौसले पस्त हैं। 9 नवम्बर, 2000 को उत्तरांचल राज्य के अस्तित्व में आ जाने पर अब यहाँ की शिक्षा और सुरक्षा व्यवस्था को प्रशासन चुस्त-दुरस्त करता जा रहा है। शिक्षा किसी भी देश की समृद्धि, प्रगति और सुख-शान्ति में अहम भूमिका निभाती है। उत्तरांचल की शिक्षा व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने और उससे अच्छे नागरिकों के निर्माण की स्वपनिल कामना की सम्पूर्ति के लिए 17 जनवरी, 2002 को नरेन्द्र नगर, टिहरी गढ़वाल में राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद की स्थापना की गई।

उत्तरांचल राज्य की शिक्षा व्यवस्था का एतिहासिक परिदृश्य

जनश्रुति के अनुसार वैदिक-काल में यहाँ वेदविद्या और शास्त्रविद्या के चार विश्वविद्यालय थे। 1. गंगाद्वार (हरिद्वार) में भारद्वाज ऋषि का विश्वविद्यालय 2. शिवालिक पर्वत की तलहटी में कण्व का (कण्वाश्रम विश्वविद्यालय), 3. विश्वामित्र आश्रम और 4. अगस्त्य आश्रम। ये आश्रम वेद-वेदांग विद्या के विश्वविद्यालय ही थे। सामान्य आवास नहीं। इनके विषय में महाभारत और पुराणों में उल्लेख मिलता है लेकिन इनका पुरातत्व न मिलने से वर्तमान इतिहासकार कैसे मानें? आज तो प्रमाण चाहिए।

अत: प्रमाणिक शैक्षिक इतिहास उन्नीसवीं सदी के प्रारम्भ से प्राप्त होता है। स्वांत्रता पूर्व ब्रिटिश शासन काल में उत्तरांखण्ड की शिक्षा को तीन भागों में बाँटा गया था:

1. प्राइमरी, 2. माध्यमिक (क) निम्न माध्यमिक (ख) उच्च-उच्चतर माध्यमिक,

3. महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय

प्राथमिक शिक्षा

1911 ई. तक ब्रिटिश गढ़वाल व अल्मोड़ा की सभी पट्टियों मे एक-एक प्राइमरी पाठशाला थी। इसी प्रकार नैनीताल जिले की पर्वतीय भाग की प्रत्येक पट्टी में एक-एक प्राइमरी पाठशाला थी। मगर मैदानी भाग काशीपुर में पर्याप्त स्कूल थे। भाभर व तराई भाग की जनसंख्या कम होने के कारण यहाँ स्कूल भी कम थे 1912 व 1921 के बीच प्रत्येक जिले में इन स्कूलों की संख्या दुगनी हो गई। इनमे अधिकांश लोअर प्राइमरी (कक्षा 2 तक) ही रहे तथा ऐसे विद्यालय ब्रॉच स्कूल कहलाए। साक्षरता की दिशा में यह पहला कदम था। 1922 से 1937 के मध्य प्राइमरी स्कूलों की संख्या में पर्याप्त वृद्धि हुई। लोअर प्राइमरी स्कूलों का स्तर ऊँचा उठाया गया। इस प्रकार जनपदों की प्रत्येक पट्टी में लगभग 4-5 स्कूल खोले गये। 1933 ई० तक गढ़वाल जिले में 4, अल्मोड़ा में 4, नैनीताल में 4, तथा देहरादून में 2 स्कूल थे। 1937 में प्राथमिक शिक्षा में सुधार लाने के लिये मई 1939 में मेरठ व बरेली में अध्यापकों को बेसिक शिक्षा का प्रशिक्षण दिया गया। 1942 तक अल्मोड़ा में 90, गढ़वाल में 60, नैनीताल में 45, देहरादून में 30 बेसिक स्कूल प्रारम्भ किये गये। प्रान्तीय सरकार का ध्यान प्रौढ़ शिक्षा, ग्राम पुस्तकालय व वाचनालयों की ओर भी गया। अल्मोड़ा जिले में 4, गढ़वाल में 22, नैनीताल में 12 व देहरादून में 6 ग्राम शिक्षा प्रसार पुस्तकालय, मुख्य बेसिक पाठशालाओं के साथ खोले गए। कुछ जिलों में प्रौढ़ शिक्षा अध्यापकों की नियुक्ति भी की गई। प्रौढ़ शिक्षा व्यवस्था की विफलता के कारण सन, 1947-48 में यह योजना बन्द कर दी गई। सन, 1942 तक जिला गढ़वाल में लगभग 460 प्राइमरी स्कूल, 17 हरिजन ट्रस्ट, एक मिशन तथा 2 इस्लामिया मदरसे थे। द्वितीय महायुद्ध के बाद पोस्टवार, रिकंस्ट्रक्शन स्कीम के अन्तर्गत गढ़वाल में 60 मिश्रित प्राइमरी, 5 प्राइमरी, 2 मिडिल एवं नार्मल स्कूल व एक इण्टर

कालेज सरकार से स्वीकृत हुए। इन स्कूलों को तब **एम.आर.ए.** कहा जाता था।

उच्च/उच्चतर माध्यमिक शिक्षा

सन, 1922 से 1937 के मध्य उच्चतर शिक्षा-प्रसार में प्रगति हुई। इस काल में लैन्सडाउन, जयहरीखाल में एक राजकीय हाईस्कूल की स्थापना हुई तथा नैनीताल में हैम्फो स्कूल को हाईस्कूल में परिणित कर दिया गया। सन. 1923 में देहरादून में उत्तराखण्ड के प्रथम निजी इण्टर कालेज डी.ए.वी. कालेज की नींव पड़ी व कुछ समय बाद कन्या गुरुकुल की स्थापना भी हुई । महादेवी कन्या हाईस्कूल व मिशनकन्या हाईस्कूल की स्थापना देहरादून में की गई। 1937 से 1946 की अवधि में द्वितीय विश्व-युद्ध की समाप्ति के पश्चात जिला गढ़वाल को एक राजकीय इण्टर कालेज की स्वीकृति मिली। यह तत्कालीन प्रान्त का नवां इण्टर कालेज था। वर्ष 1945 में पौड़ी मेसमोर हाईस्कूल की स्थापना हुई। 1946 में अशासकीय घनानन्द इण्टर कालेज मसूरी को सरकार ने अपने हाथों में ले लिया।

उच्च शिक्षा

सन, 1937 से 1946 तक देहरादून तथा हरिद्वार में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय को छोड़कर उत्तराखण्ड के अन्य जिलों में कोई महाविद्यालय नहीं था। तब तक देहरादून शहर में डी.ए.वी. डिग्री कालेज व एम.के.पी. डिग्री कालेज की स्थापना हो चुकी थी। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद रियासतों के विलीनीकरण के साथ उत्तरप्रदेश की शिक्षा नीति के अनुसार रियासत के महाविद्यालय को भी सरकार ने अपने अधीन ले लिया। जो बाद में राज्य महाविद्यालय कहलाए गए। स्वतंत्रता के पश्चात साक्षरता में उत्तरोत्तर वृद्धि होती रही। बेसिक, जूनियर और उच्च माध्यमिक विद्यालयों की संख्या जो 1950-51 में क्रमशः 247, 260, तथा 74 थी यह संख्या 1972-73 के अन्त तक क्रमशः 5325, 749 तथा 350 हो गई। डिग्री कालेजों की संख्या जो 1968-69 में 11 थी, 1934-74 में बढ़कर 20 हो गई। 1973-74 में गढ़वाल और कुमाऊँ में विश्वविद्यालय की स्थापना की गई। कृषि अनुसंधान के क्षेत्र में कार्य करने के लिये पन्तनगर कृषि विश्वविद्यालय की स्थापना एक सराहनीय कार्य था। व्यावसायिक शिक्षा प्रदान करने के लिये उत्तरांचल में पोलीटेक्नीक तथा आई. टी. आई. स्थापित किए गए। शिक्षा के क्षेत्र में प्राथमिक शिक्षकों को सेवापूर्व प्रशिक्षण देने के लिए राजकीय दीक्षा विद्यालयों की स्थापना की गई। चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में योगी (स्व. स्वामीराम) द्वारा स्थापित हिमालयन मेडिकल इंस्टीट्यूट तथा इंजीनियरिंग के लिए रुड़की विश्वविद्यालय के अतिरिक्त इंजीनियरिंग कालेजों की स्थापना की गई।

<u>उत्तरांचल का वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य एक झलक</u>

उत्तरांचल में साक्षरता	72.28 प्रतिशत	
पुरुष	84.1 प्रतिशत	
महिला	60.26 प्रतिशत	
प्राथमिक विद्यालय	12203	मान्यता प्राप्त
उच्च प्राथमिक विद्यालय	3144	
उच्चतर माध्यमिक विद्यालय	652	
संस्कृत विद्यालय	63	
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान	09	
विश्वविद्यालय	06	
महाविद्यालय	42	
मेडिकल कॉलेज	03	
इंजीनियरिंग कॉलेज	04	
पोलीटेक्नीक संस्थान	17	
आई. टी. आई	81	

नोट: सम्प्रति 2005 में उपरोक्त संख्याएं बढ़ गई हैं ये आँकड़े 2 वर्ष पूर्व के हैं ।

प्रदेश की शिक्षा व्यवस्था की अधिकृत परिषदें।

1. <u>उत्तरांचल शिक्षा एवं परीक्षा परिषद्-</u> इसका मुख्य कार्यालय रामनगर जिला नैनीताल में स्थापित है।
2. <u>उत्तरांचल राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्-</u> यह उत्तरांचल की माध्यमिक शिक्षा के सुचारू निर्देशन और संचालन, प्रशिक्षण और शिक्षानुसंधान के लिए उत्तरदायी संस्था है। इसका कार्य शासन को शैक्षिक नीतिनिर्धारण और क्रियान्वयन में सुझाव देना है। यह राज्य की सर्वोच्च अकादमिक संस्था है।
3. <u>जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डायट्स)-</u> राज्य की शिक्षा हेतु शैक्षिक सर्वेक्षण, पुनर्बोध प्रशिक्षण और न्याचारों के क्रियान्वयन हेतु एन. सी. ई. आर. टी. के निर्देशन में शैक्षिक गुणात्मक सम्प्राप्ति हेतु सम्बद्ध संस्थान, डायट कहलाते हैं। उत्तरांचल में अभी इनकी संख्या 9 है।
4. <u>तकनीकी शिक्षण संस्थान-</u> आई. आई. टी. रुड़की, जी. बी. पन्त इंजीनियरिंग कॉलेज पौड़ी, कुमाऊँ इंजीनियरिंग कॉलेज द्वाराहाट, इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग पन्तनगर, इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलोजी देहरादून, ग्राफिकइरा इंजीनियरिंग इन्स्टीट्यूट देहरादून।
5. <u>चिकित्सा शिक्षण संस्थान-</u> गुरुकुल आयुर्वेदिक कॉलेज हरिद्वार, ऋषिकुल स्नातकोत्तर आयुर्वेदिक कॉलेज हरिद्वार, हिमालयन इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल कॉलेज जौलीग्रान्ट देहरादून, सीमा डेन्टल कॉलेज ऋषिकेश।

उच्च शिक्षा- 1946 तक जनपद देहरादून में डी. ए. वी. डिग्री कालेज तथा एम. के. पी.(महिला) डिग्री कॉलेज के अतिरिक्त उत्तरांचल के अन्य जनपदों में कोई महाविद्यालय नहीं था। सन् 1951 में नैनीताल में डी. एस. बी. राजकीय महाविद्यालय तथा 1960 में गुरुराम राय डिग्री कॉलेज खोला गया। इसी प्रकार 1966 में मसूरी नगर पालिका द्वारा एक डिग्री कॉलेज की स्थापना की गई थी। तब से अब तक आशातीत परिवर्तन हुआ है।

निष्कर्ष: हिमालयी राज्यों में हिमाचल, जम्मू-कश्मीर और नेपाल प्राकृतिक सांस्कृतिक और ऐतिहासिक दृष्टि से भारत के मानचित्र पर साधिकार पदस्थापित होने वाले राज्यों की अपेक्षा उत्तरांचल राष्ट्र के अनबूझे प्रश्नों का उत्तर देता है। समस्याओं में रहते हुए समस्याओं से उभरना उसकी परिणति है।

यह अकुतोभय; सजग; राष्ट्र प्रहरी है।
सीमान्त रक्षक है। गिरि गौरव है!

कवियों की वाणी में यह भारत माता का मुकुट है।

*****

राजधानी का सच

केदार सिंह फोनिया

पिछली बार बाबा उत्तराखण्डी की शहीदी मौत के पश्चात गैरसैंण को राजधानी बनाने की माँग जोर पकड़ने लगी। लेकिन सोचने की बात यह है कि बाबा की मौत से पूर्व और एक हलके उबाल के पश्चात इस विषय पर फिर खामोशी क्यों थी। अब जब चुनाव नजदीक आ रहे हैं तो कुछ राजनैतिक दलों को इस मुद्दे में अपने लिए ऊर्जा मिलने की संभावना नजर आ रही है। अब तो समाजवादी पार्टी के नेता भी कहने लगे कि उत्तरांचल की राजधानी गैरसैंण ही होनी चाहिये। जब कि वे जानते हैं कि समाजवादी पार्टी की सरकार द्वारा रामपुर तिराहा का जघन्य कांड अभी लोग भूले नहीं लेकिन पार्टी ने अपने पांव पसारने के लिए इस प्रकार के निष्काम वक्तव्य देना आवश्यक समझा है। स्थानीय दलों के पास तो राजधानी के अलावा और कोई मुद्दा है ही नहीं। ज्यों-ज्यों चुनाव के दिन नजदीक आयेंगे राजधानी का शोरगुल बढ़ता जायेगा। यह सब इसलिए हो रहा है कि वर्तमान सरकार के पास किसी भी स्थल को स्थायी राजधानी घोषित करने की इच्छा-शक्ति नहीं है। बात जो भी हो उत्तरांचल के बुद्धिजीवियों एवं राजनीतिज्ञों को राजधानी के सच पर विचार करना चाहिये ताकि राजधानी के प्रश्न लंबे समय तक अनिश्चितता की स्थिति को लेकर जनता गुमराह न हो और राज्य के विकास में यह मामला आड़े न आये। राज्य की बेहतरी को देखते हुए सरकार अगर स्थाई राजधानी पर निर्णय शीघ्र ले लेती है तो किसी को और अधिक राजनीति करने का अवसर नहीं मिलेगा। स्थाई राजधानी कहीं भी बने, प्रारम्भ में कुछ पक्ष-विपक्ष की बातें अवश्य उठेंगी लेकिन समय के साथ लोगों को निर्णय स्वीकार हो जाएगा। आम जनता राजनीति नहीं चाहती है स्थाई राजधानी चाहती है और काम चाहती है।

राजधानी का सच यह है कि उत्तरांचल राज्य का प्रस्ताव संसद मे पारित हो जाने के पश्चात केन्द्र सरकार ने अपने पत्र दिनांक 12 अगस्त 1999 द्वारा अस्थाई राजधानी चुनने का अधिकार उत्तर प्रदेश सरकार को दे दिया था । उत्तर प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री रामप्रकाश गुप्ता ने 9 सितम्बर 1999 को लखनऊ में एक बैठक का आयोजन किया जिसमें सभी सांसद, विधायक एवं वरिष्ठ अधिकारी बुलाये गये। इस बैठक में केवल राजधानी के प्रश्न पर ही विचार किया गया था विभिन्न जन-प्रतिनिधियों ने देहरादून, नैनीताल, रामनगर और हरिद्वार के नाम राजधानी के लिए प्रस्तावित किये लेकिन आश्चर्य की बात यह थी कि किसी ने भी गैरसैंण को राजधानी बनाने का प्रस्ताव नहीं रखा. कारण यह था कि दो माह के अन्दर राजधानी के लिए किसी नये स्थान पर भवन आदि उपलब्ध कराना सम्भव नहीं था। इसलिए सभी ने इसी बात पर ध्यान दिया कि तुरन्त से नये राज्य के कार्य संचालन हेतु अवस्थापना सुविधाएं जहाँ उपलब्ध हो सकती है, वही स्थान अस्थाई राजधानी के लिए उपयुक्त होगा। आवासीय एवं अवस्थापनात्मक सुविधाओं के अभाव को देखते हुए, चाहते हुए भी किसी को गैरसैंण का सुझाव देने की हिम्मत नहीं हुई। अत: बैठक में प्रशासन को अधिकार दे दिया गया था कि देहरादून, नैनीताल और हरिद्वार में जहां भी कार्यालयों एवं निवास के लिए अधिकतम व्यवस्था उपलब्ध हो वहीं अंतरिम राजधानी स्थापित कर दी जाय। क्योंकि दो माह पश्चात 9 नवम्बर 1999 को राज्य का गठन होना निश्चित हो चुका था इसलिए प्रशासन ने हमेशा की तरह अपनी सुविधा को देखते हुए कम से कम समय में तैयारियां पूरी करने हेतु देहरादून को अंतरिम राजधानी बनाने का निर्णय लिया। यह सत्य है कि राजधानी के लिए जो भी न्यूनतम सुविधाएं थे सब देहरादून के अतिरिक्त अन्य कहीं भी उपलब्ध नहीं थी। उस समय गैरसैंण को अन्तरिम राजधानी बनाना व्यवहार संगत नहीं था क्योंकि वहां पर स्थापना व्यवस्थायें कुछ भी नहीं थी। अत: देहरादून को अंतरिम राजधानी बनाने का निर्णय लिया गया जो न भाजपा सरकार का था न किसी राजनैतिक दल का। यह तो पूर्ण रूप से प्रशासनिक निर्णय था जो यदि आज के राजनेता चाहें तो योजनाबद्ध तरीके से बदल भी सकता है।

यह सच है कि पिथौरागढ़ और चम्पावत जनपदों सहित खटीमा सीतारगंज के लोगों के लिए देहरादून बहुत दूर पड़ता है। पिथौरागढ़ के कई क्षेत्रों के लोगों को तो दो दिन की यात्रा के पश्चात ही राजधानी पहुंचना संभव हो पाता है। उनकी दृष्टि से देहरादून को राजधानी बनाना निसन्देह असुविधाजनक और अनुपयुक्त निर्णय था। लेकिन यह भी सच है कि अगर गैरसैंण या रामनगर को राजधानी बनाया जाता तो त्यूनी, चकराता और उत्तरकाशी के लोगों के लिए राजधानी पहुंचने में वही कठिनाईयाँ होती जो आज पिथौरगढ़ के लोगों की है। यह मान लिया जाना चाहिए कि राजधानी कहीं भी हो कुछ क्षेत्रों के लिए यह कठिनाई हमेशा के लिए बनी रहेगी। आवश्यकता तो यह देखने कि होनी चाहिए कि राज्य के चहुंमुखी विकास के लिए क्या राजधानी की भौगोलिक स्थिति ही सहायक हो सकती है या कुछ अन्य बातें।

12 अगस्त 1991 को उत्तर प्रदेश विधान सभा में प्रथम बार उत्तरांचल राज्य बनाने का प्रस्ताव पारित हुआ था। उसके पश्चात अधिकांश लोग गैरसैंण को राजधानी बनाने के पक्ष की बात करने लगे। किसी भी राजधानी को नये स्थान पर स्थापित करने के लिए कुछ प्रारम्भिक संसाधनों का होना अति आवश्यक है। इन्हीं संसाधनों के अभाव में अभी भी पंजाब और हरियाणा की राजधानियां प्रस्तावित स्थानों पर नहीं जा पा रही हैं। उस समय उत्तर प्रदेश में भाजपा की सरकार थी और भाजपा गैरसैंण के पक्ष में थी। जन-समुदाय की इस भावना को दृष्टिगत करते हुए यह सोचा गया कि गैरसैंण में कुछ ऐसे मुख्यालय भवनों का निर्माण कर दिया जाय जो आने वाले दिनों में राजधानी बनाने में सहायक हो सकें। इसलिए 19 नवम्बर 1991 को भाजपा द्वारा गैरसैंण में एक वृहद जनसभा का आयोजन किया गया था। तत्कालीन पर्वतीय विकास मंत्री श्री पूरन चंद शर्मा के साथ मैं और गढ़वाल-कुमाऊ के कई विधायक उपस्थित थे। इस दिन गैरसैंण में अपर निदेशक शिक्षा और जिला निदेशक शिक्षा और जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षक संस्थान (डायट)के विशाल भवनों का शिलान्यास किया गया। भवन परिसरों के लिए उपयुक्त भूमि की व्यवस्था की गई। मन्तव्य यही था कि राज्य बन जाने के पश्चात राजधानी यहीं बनेगी और ये भवन काम आयेंगे। ऐसी सोच उस समय उत्तर प्रदेश की भाजपा सरकार की थी। अपनी बात कहने में सब को कठिनाई होती है, लेकिन यहाँ पर मैं निसंकोच भाव के साथ कहना चाहता हूँ कि उत्तर प्रदेश के पर्यटन मंत्री के रूप में मैंने अपने भाषण में कहा था कि हम लोग गैरसैंण क्षेत्र के लोगों के लिए एक तोहफा ले कर आये हैं, जो एक लिफाफे में बंद है। यह लिफाफा उत्तरांचल राज्य बन जाने के पश्चात खुल जायेगा। जो लोग इस संकेत को समझ गये थे उन्होंने तालियों से इसका स्वागत किया। लेकिन दुर्भाग्य से यह लिफाफा न अभी तक खुल पाया और न इसके खुलने की संभावना ही दिखती है, क्योंकि बाद की सरकारों ने इस पर न केवल ध्यान ही दिया बल्कि प्रस्ताव को हमेशा के लिए ठंडे -बस्ते मे डाल दिया। हुआ यह कि जब अतिरिक्त भूमि खरीदने के लिए और भवनों पर कार्य प्रारम्भ करने का समय आया तो 6 दिसम्बर 1992 को उत्तर प्रदेश की भाजपा सरकार भंग हो गयी। 6 माह के राष्ट्रपति शासन में, जब श्री रोमेश भंडारी राज्यपाल थे, भवनों के निर्माण की कोई शुरूआत नहीं की गयी लेकिन प्रस्ताव जीवित रहा। 6 माह बाद जब समाजवादी पार्टी की सरकार बनी तो उम्मीदें जागी कि अब गैरसैंण को राजधानी बनाने की प्रक्रिया में तेजी आयेगी क्योंकि मुलायम सिंह की सरकार को उत्तराखंण्ड क्रान्ति दल का समर्थन था और श्री काशी सिंह ऐरी सत्ता में भागीदारी निभाने वाली उक्रांद के एक मात्र विधायक थे। उत्तराखंड क्रान्ति दल हमेशा गैरसैंण को राजधानी बनाने के पक्ष में रहा। उन्होंने तो राजधानी का नाम भी गैरसैंण से बदलकर वीर चन्द्र सिंह गढ़वाली नगर रख दिया था। उस समय अगर उत्तर प्रदेश सरकार पर समर्थक क्रान्ति दल का दवाब बनता और इन स्वीकृत भवनों का निर्माण कार्य प्रारम्भ कर दिया जाता, अन्य भवनों की भी शुरुआत हो जाती तब गैरसैंण का राजधानी बनने का मार्ग प्रशस्त हो जाता। यह समझना कठिन है कि जो उक्रांद गैरसैंण को राजधानी बनाने के लिये समय-समय पर आन्दोलित रहा, और अब फिर आन्दोलन की राह पर है उसी उक्रांद

ने सत्ता में भागीदारी होते हुए भी गैरसैंण को राजधानी बनाने की पहल को सरकार को ठंडे बस्ते में डालने से क्यों नहीं रोका। इससे तो सोचना पड़ सकता है कि क्या गैरसैंण का नारा महज एक अवसरवादिता का मुद्दा है या राजधानी का सत्य। इस निर्णायक मोड़ पर सकारात्मक कार्य नहीं किया गया और इसी के पश्चात गैरसैंण का दावा कमजोर पड़ गया। अब जो राजधानी के नाम पर देहरादून में करोड़ों रूपयों की लागत से इतने काम किये जा चुके है कि राजधानी का गैरसैंण जाना असम्भव सा लगता है। उत्तरांचल की सरकार भी इस तथ्य को क्यों छुपाती है कि उनके पास अब राजधानी को देहरादून से बाहर ले जाने की न साधन-शक्ति है न इच्छा-शक्ति।

राजधानी देहरादून में रहे या अन्यत्र यह प्रश्न इसलिए उठाया जाता है कि अभी भी देहरादून को अन्तरिम राजधानी माना जा रहा है। अगर राज्य गठन के समय राजधानी के साथ अन्तरिम शब्द जुड़ा हुआ था इसलिए स्थाई राजधानी के लिए उत्तरांचल राज्य बन जाने के साथ-साथ भाजपा सरकार को राजधानी आयोग का गठन करना पड़ा। इरादा यह था कि आयोग की सिफारिश को लेकर शीघ्र राजधानी के प्रश्न पर हमेशा के लिए निर्णय ले लिया जायेगा। कुछ महीने बीत जाने पर भी जब आयोग की कोई सिफारिश नहीं आई तो मुख्यमंत्री नित्यानन्द स्वामी ने आयोग की अवधि समाप्त होने पर आगे विस्तारीकरण नहीं देकर यह सन्देश दिया कि आयोग की कोई आवश्यकता नहीं है और मसले का हल सरकार स्वयं ढूंढ लेगी। स्वामी जी चाहते थे कि नई विधान सभा के माध्यम से स्थाई राजधानी का हल निकाला जाय। लेकिन चुनाव के बाद जब भाजपा की जगह कांग्रेस की सरकार बन गई तो राजधानी स्थापना की प्राथमिकता टल गई और आयोग को पुन: जीवनदान दिया गया। तब से आयोग ने चार वर्षों की सुनहरी वर्षगांठ भी मना ली है लेकिन अभी तक कोई ठोस सुझाव प्रस्तुत नहीं कर पाया। हाँ आयोग द्वारा यह अवश्य कहा गया है कि भूगर्भ एवं खनिकर्म इकाई गैरसैंण की भू-संरचना को निर्माण कार्यों के अनुपयुक्त करार दे चुकी है। तत्पश्चात आयोग द्वारा आई. आई. टी रुड़की से भू-सर्वेक्षण भी कराया गया। कुछ संस्थाओं द्वारा गैरसैंण को राजधानी के लिए उपयुक्त भी पाया गया। लेकिन मुद्दे को लटकाये रखने से आयोग की जिन्दगी और लम्बी रखना भी आवश्यक समझा गया है। लंबी सुखी जिंदगी जीने की योजना बनाकर आयोग इस मामले को लम्बे समय तक उलझा कर रखना चाहेगा। लेकिन उत्तरांचल राज्य के भाग्य का क्या होगा? इस बात की चिन्ता न सरकार को है न आयोग को। अब फरवरी 2006 में आयोग की अवधि दिसम्बर 2006 तक बढ़ा कर यह सन्देश दिया जा चुका है कि वर्तमान सरकार अपने कार्यकाल तक राजधानी के मामले को लटका कर ही रखना चाहती है और इसी बहाने किसी को लालबत्ती वाली सरकारी गाड़ी का लाभ भी देते रहना चाहती है। यह इस नवजात राज्य के साधनों का दुरूपयोग है।

स्थायी राजधानी कहीं बने यह एक महत्वपूर्ण मुद्दा है और पूरे प्रदेश का विकास भी इसी प्रश्न से जुड़ा हुआ है। प्रदेश को लंबे समय तक राजधानी के प्रश्न पर उलझाकर रखने से प्रदेश में अनिश्चितता का वातावरण पनप रहा है। बार-बार अन्तरिम राजधानी बताकर पूंजी निवेशकों को भी खुलकर काम करने का अवसर नहीं मिल पा रहा है। विकास के अन्य कार्यों में भी शिथिलता आ रही है सरकार के पास जनता को भरोसे में लेने के लिए निर्णय लाने की और घोषणा करने की हिम्मत होनी चाहिये कि किन कारणों से स्थायी राजधानी देहरादून में ही रहेगी या देहरादून से अन्यत्र ले जायी जायेगी। मात्र आयोग बनाकर जनता की आंखों में धूल झोंकना सरासर बेईमानी की बात होगी।

अब राजधानी के नाम पर अनिश्चितता का वातावरण समाप्त करने के लिए राज्य सरकार को दृढ़ता के साथ कुछ निर्णय ले लेने चाहिये। सर्व प्रथम तो राजधानी आयोग भंग हो जाना चाहिए क्योंकि इसकी न तो कार्य करने की क्षमता नजर आ रही है न इसकी कोई सार्थकता ही है। नवजात राज्य के संसाधनों को आयोग की अपेक्षा विकास कार्यों की ओर मोड़ना उचित होगा।

इसके साथ ही शासन ईमानदारी के साथ इस बात में पारदर्शिता दिखाये कि सरकार चाहती क्या है। क्या अस्थाई राजधानी देहरादून में रहेगी या कहीं अन्यत्र जायेगी या राजधानी आयोग की छाया में इस महत्वपूर्ण प्रश्न को अपने कार्यकाल तक लटका कर रखा जायेगा। अगर शासन यह निर्णय ले लेती है कि स्थाई राजधानी देहरादून में ही रहेगी तो विरोध के स्वरों में न कमी आयेगी न बढ़ोतरी। क्योंकि लोगों ने पाँच साल के लम्बे समय से देहरादून को राजधानी देखते-देखते यह मान लिया है कि सम्भवत: अब राजधानी देहरादून में ही रहेगी। पंजाब व हरियाणा की राजधानी चंडीगढ़ इसका उदाहरण है। इसके विपरीत यदि सरकार अभी भी राजधानी को गैरसैंण, रामनगर या किसी अन्य स्थान पर ले जाना चाहती है तो उसकी भी दृढ़ता से घोषणा हो जानी चाहिए और साथ ही उस स्थान को राजधानी के लिए उपयुक्त बनाने की कार्यवाही भी प्रारम्भ कर दी जानी चाहिए। ऐसा करने में भी विरोध एवं समर्थन के दोनों स्वर अवश्य उठेंगे। मुद्दे को लटकाकर रखने की बात को छोड़कर अगर सरकार उन विकल्पों पर कोई निर्भीक निर्णय लेती है तो सरकार में लोगों का विश्वास पनपेगा, राजधानी के प्रश्न पर स्थिरता का वातावरण बन जायेगा और पूरे राज्य की अर्थ-व्यवस्था उसी दिशा में काम करेगी। उत्तरांचल की जनता इस मामले में सरकार से निर्णय चाहती है। राज्य में निर्वाचित विधानसभा है जो पूर्ण रूप से निर्णय लेने के लिये सक्षम है कि स्थाई राजधानी कहां बने। राजधानी जहां भी बनेगी लोग धीरे-धीरे उसी में रम जायेंगे। राज्य की जनता उत्तरांचल राज्य के मामले में बहुत लटक चुकी है। राजधानी के स्थाई निर्णय से लोगों को अपने भविष्य के लिए एक सुनिश्चित मार्ग पर चलने का अवसर मिल जायेगा।

*****

वृक्ष

विजय सिंह नेगी

पेड़ है रक्षक हमारे,
इनको मत काटिये।
यह संदेश भी नारा भी,
एक दूजे को कहते रहिये ॥1॥

देवभूमि उत्तरांचल को,
हरा-भरा बनायेंगे।
बच्चा हो जवान,
सभी यह कसम खायेंगे ॥2॥

वृक्षों से मिलती है हवा,
वृक्षों से मिलते है फल।
इसलिये तो साथ में,
मिलता है शीतल-शीतल जल ॥3॥

देवभूमि की शान,
अगर हमें बचानी है।
वृक्ष लगाओ वृक्ष बचाओ,
यह आवाज उठानी है ॥4॥

पेड़ यदि कटते जायेंगे,
जंगल बंजर हो जायेगा।
प्राकृतिक आपदाओं से,
फिर कोई नहीं बच पायेगा ॥5॥

गाँव-गाँव में शहर-शहर में
यही संदेश फैलाना है,
मेड़ खेत की हो या खलिहान की
वृक्ष ही वृक्ष लगाना है ॥6॥

उत्तरांचल के जल प्रबंधन में समुदाय एवं गैर-सरकारी संस्थानों की भूमिका

डा० एस० के० बन्दूनी

सम्पूर्ण भारत में जल संसाधन की दृष्टि से हिमालय पर्वत एक सुरक्षित स्थान रखता है। वर्षा ऋतु में पर्याप्त वर्षा (100-400 से.मी) व शीतकाल में वर्षा एवं हिमपात (10-30 से.मी.) इसे वर्ष भर जल से परिपूर्ण रखते हैं। यहाँ का जल संसाधन हिमनदी, हिमतोपी, झील, सदाप्रवाहिनी सरिता, आदि के रूप में सम्पूर्ण भारत को वर्ष भर जल प्रदान करता है। इस दृष्टि से हिमालय पर्वत क्षेत्र का उत्तरांचल भी अछूता नहीं है और यहाँ से निकलने वाली टौंस, यमुना, भागीरथी, अलकनंदा, गंगा, रामगंगा, कोसी, शारदा, इत्यादि नदियाँ उत्तरी भारत की जीवनदायिनी रेखा कहलाती हैं। इसके उपरांत भी उत्तरांचल के अनेक हिस्से जल संकट का सामना कर रहे हैं। विशेषकर मध्य हिमालय के शिवालिक के वृक्ष विहीन, तीव्र ढ़ाल, नग्न पहाड़ व ऊँचे भाग/सतहों जल की विशाल मात्रा इन क्षेत्रों को तरसाती हुई मैदानों की ओर प्रवाहित होती रहती हैं। गढ़वाल की एक कहावत इस कथन को सत्य सिद्ध करती है - गढ़वाल का नौना अर पाणी ऐकी सेवा कबि भी नी कैर सकदा (गढ़वाल का पुत्र और पानी इसकी सेवा कभी भी नहीं कर सकते) इन विषम परिस्थितियों में पिछले कई सालों से एक विचार जनमानस में तेजी से प्रसार कर रहा है कि जल संसाधन प्रबंधन में समुदाय व गैर-सरकारी संस्थाओं को गम्भीरता से अपनी भूमिका निभानी चाहिए। इस तरह का एक प्रयास उत्तरांचल के गढ़वाल स्थित राठ क्षेत्र में पिछले 25 साल से चल रहा है।

गढ़वाल हिमालय का राठ क्षेत्र कुमाऊँ सीमा पर पौड़ी गढ़वाल के उत्तरी-पूर्वी भाग में स्थित है। प्रशासनिक दृष्टि से यह थैलीसैंण तहसील व पौड़ी तहसील के कुछ भाग में है। यहाँ समुद्र सतह से औसत ऊँचाई 1100 मीटर से लेकर 3100 मीटर तक है। राठ क्षेत्र पूर्णतया नंदादेवी पर्वत से निकली हुई दूधातोली श्रृंखला के अन्तर्गत आता है। यहाँ की सबसे ऊँची चोटी मूसा का कांठा (3104 मी.) है। यह सम्पूर्ण क्षेत्र घने शीतोष्ण वन, जल, कृषि व मानव संसाधन के लिए काफी प्रसिद्ध हैं। लेकिन उत्तरांचल के अन्य क्षेत्रों की तरह इस क्षेत्र में भी कई जगह जल संसाधन का संकट है। जल संसाधन का यह संकट प्राकृतिक एवं मानव जीवन क्रियाओं के कारण है। राठ के उफरैंखाल क्षेत्र में इन समस्याओं को सुलझाने में श्री सच्चिदानन्द भारती के नतृत्व में दूधातोली लोक विकास संस्थान (गैर सरकारी संस्था) व आसपास का समुदाय पिछले कई सालों से सफलतापूर्वक कार्यरत है। इस संघर्ष का जन्म 1980 में हुआ। दुर्गम क्षेत्र होने के कारण यहां पर वन संपदा का दुरुपयोग सन् 1960 तक नहीं हुआ। इसके बाद जनसंख्या दबाव व सरकारी नीतियों के कारण वनोन्मूलन में वृद्धि हुई। वर्ष 1978 में सरकार ने 2300 मीटर से लेकर 3100 मीटर तक मिलने वाले बहुमूल्य रांगा (सिल्वर फर) को काटने की निविदा दी। इस समय तक उफरैंखाल के आसपास के गडखरक, डुलमोट, इत्यादि गाँवों के वनोन्मूलन के कारण जल, ईंधन व चारा संकट गहरा चुका था। सरकारी निविदा की घोषणा ने इसमें जले पर नमक छिड़कने का कार्य किया। इसी समय वन व अन्य संसाधनों के दुरुपयोग के विरोध में उत्तरी गढ़वाल में चिपको आन्दोलन एक समुदाय की पहचान के रूप अपनी जगह बना चुका था। उफरैंखाल के गडखरक गाँव के निवासी श्री सच्चिदानंद भारती उस समय गोपेश्वर में अध्ययनरत थे। उन्होंने चिपको आन्दोलन में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया और शनिवार क्लब की स्थापना की, जिसमें-शिक्षक, छात्र, महिला, किसान, आन्दोलनकारी

इत्यादि के बीच गहन चर्चायें होती थीं व योजनाएं बनाई जाती थी। राठ क्षेत्र में 1978 के बाद सरकारी नीति के विरोध में जनसमुदाय एकत्रित होने लगा तो उसे सफलतापूर्वक दिशा-निर्देशन प्रदान करने में श्री सच्चिदानंद भारती, जो कि उफरैंखाल, इंटर कालेज में शिक्षक थे की महत्वपूर्ण भूमिका रही। उन्होंने समस्त लोगों के सहयोग से ऐसा दबाव बनाया कि सरकार को 6000 रांगा के वृक्षों में से केवल 700 ऐसे रांगा वृक्षों को ही काटने की अनुमति प्रदान करनी पड़ी जो कि बीमारी से ग्रस्त थे या सूख गये थे। यह सारा आन्दोलन दूधातोली लोक विकास संस्थान ने चलाया। आज यहाँ के कई गाँवों के वन क्षेत्र में पुनः वृद्धि हुई है तथा ईंधन एवं चारे की समस्या से निजात मिलने लगी है।

वर्ष 1989-91 के दौरान इस संस्था को एक और संकट का सामना करना पड़ा इस समय उत्तरांचल के पर्वतीय क्षेत्र में भीषण सूखा पड़ा और समस्त क्षेत्र में विशेषकर अल्मोड़ा, पौड़ी गढ़वाल व टिहरी गढ़वाल में जल का भारी संकट उत्पन्न हो गया। लोगों को पानी पिलाने वाला क्षेत्र खुद ही प्यासा बन गया। इस संकट की घड़ी में दूलोविस (गैर सरकारी संस्था) ने जल प्रबंधन की ओर कदम बढ़ाया। इस संस्था का पहला लक्ष्य इस क्षेत्र के वन क्षेत्र में बढ़ रहे छोटे-छोटे वृक्षों को जल प्रदान करना था। इसके लिये उन्होंने ऊपरी पहाड़ी ढ़ाल पर छोटे-छोटे गड्ढे बनाने प्रारम्भ किये। ये सामान्यतः दो मीटर लम्बे, एक मीटर चौड़े व एक मीटर गहरे थे। इनसे निकली मिट्टी से इन्होंने इसके ही चारों ओर मेढ बनाकर उसमें स्थानीय घास लगाई और जगह-जगह उतीस (एल्डर) के वृक्ष उगाये जो जल संचयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन गड्ढों के बीच में गड्ढे भर कर स्थानीय फर के वृक्ष भी लगाये। इन सभी गड्ढों के निचले हिस्से में सीमेंट की दीवार की सहायता से एक जलाशय भी बनाया गया। इस जलाशय में एकत्रित जल से शुरु में इन वृक्षों को शुष्ककाल में सिंचित करने के लिए जल प्राप्त होने लगा। लेकिन सबसे आश्चर्यजनक बदलाव वर्ष 1994-95 के बाद देखने को मिला। गड्खरक नाला जो कभी सदाबहार नाला था, वनोन्मूलन के कारण सूख गया था उसमें पुनः जल प्रवाहित होने लगा। श्री सच्चिदानंद भारती के नेतृत्व में दूधातोली लोक विकास संस्थान और स्थानीय जन समुदाय की यह एक बड़ी विजय थी। वर्तमान समय में इस नाले में 2 लीटर/मिनट की दर से प्रतिवर्ष जल प्रवाहित होता रहा है। वर्षाकाल (वर्ष 2004) में इसमें प्रवाहित होने वाले जल की मात्रा 14 लीटर/मिनट की दर से मापी गई। इस नदी के ढाल क्षेत्र में लगभग 500 गड्ढे जल संचयन में मदद करते हैं। इसके फलस्वरूप गड्खरक गाँव में सिंचाई के द्वारा फसलों व सब्जियों का उत्पादन भी बढ़ा है। इसी तरह डुलमोट ग्राम में लगभग 30 हैक्टियर वन क्षेत्र में जल संग्रहण के लिए लगभग 1500 छोटे-छोटे गड्ढे बने हुए हैं।

इन समस्त जल तलयों ने वन, जल व कृषि प्रबन्धन में अद्‌भुत कार्य किया है। सन् 2005 से दो जलाशयों में मत्स्य पालन का विकास कर इस कार्यक्रम को आर्थिक विकास की दृष्टि से भी जोड़ने का प्रयास किया है। पिछले दो वर्षों में लोक विकास संस्था (देहरादून) व अमेरिका की एक संस्था की सहायता से डुलमोट व सिमखोली में एक-एक तथा भरडधार व बमोला में दो-दो सूखे नौलां (जलकुंड) को पुनर्जीवित करने का कार्य प्रारम्भ किया गया है। आश्चर्य जनक रूप से भरड़धार के नौले में जून 2005 में ही पानी भर गया है। यद्यपि यह एक छोटा सा कार्य है तथापि इसने यह सिद्ध कर दिया है कि ईमानदारी और मेहनत से कार्य करते हुए स्थानीय समुदाय और गैर सरकारी संस्थायें किसी भी कार्य को सफलतापूर्वक पूर्ण करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकती हैं।

सुहाग की नथ

यात्रा संस्मरण **कुलानन्द भारतीय**

मैं सन् 1988 में चार धाम की यात्रा पर गया था। यज्ञ, पूजा, तीर्थयात्रा में सहधर्मिणी का साथ होना आवश्यक होता है। पत्नी के बिना पूजा-यज्ञ पूर्ण नहीं माना जाता है। मेरी पत्नी सदैव एसे शुभावसर पर मेरे साथ होती हैं। इस यात्रा में भी वह मेरे साथ थी। छोटा बेटा संजय और मेरा पुलिस सुरक्षा गार्ड भी साथ में थे। हरिद्वार में गंगास्नान के पश्चात हमने तीर्थयात्रा शुरू की। मसूरी होते हुए हम सर्वप्रथम यमुनोत्री गये और तत्पश्चात हम गंगोत्री की यात्रा पर गये। यहाँ तो मैं केवल केदारनाथ की यात्रा का ही वर्णन कर रहा हूँ।

रूद्रप्रयाग से केदारनाथ की दूरी लग-भग 80 कि० मी० है। रूद्रप्रयाग में अलकनन्दा एवं मंदाकिनी का संगम होता है। संगम पर भगवान रूद्रनाथ का बहुत प्राचीन मंदिर है। यह स्थान पौड़ी, टेहरी एवं चमोली, तीन जिलों का संगम स्थल है। अलकनन्दा छोटी बहिन है, थोड़ी चंचल हैं, अठखेलियाँ अधिक करती हैं, कहीं-कहीं उछल कूद मचा लेती है, किन्तु मन्दाकिनी न तो बहुत तेज चलती हैं, न बहुत धीमे चलती हैं अपनी संतुलित और मर्यादित चाल से चलती हैं। उसमें माधुर्य है, सौंदर्य है, गति भी मन्द-मन्द है, नाम भी इसका मंदाकिनी है। इसी मंदाकिनी नदी के विषय में कहा गया है।

मन्दाकिनी, सलिलचन्दनचर्चिताय
नमः शिवाय, नमः शिवाय।

इसी मंदाकिनी नदी के किनारे-किनारे केदारनाथ जाने का मार्ग है। गौरी कुंड से केदारनाथ मन्दिर का सीधा-ऊँचा चढ़ाई का मार्ग है ओर यह भी चौदह कि० मी० पैदल पथ है। यहाँ से जाने के लिए घोड़ों का समुचित प्रबन्ध है। कंडी, डाँडी का प्रबन्ध भी है। एक डाँडी पर बारी-बारी से चार मजदूर होते हैं। एक डाँडी का किराया तब आन-जाने का आठ सौ रु० के लगभग था। यात्रा, और वह भी, तीर्थ यात्रा, पैदल ही अच्छी मानी जाती है। जप-तप एवं कठिन व्रत से भगवान की प्राप्ति होती है। हम कष्ट सहन कर, पीड़ा, आपदा को सहन कर, भगवान के अधिक समीप पहुंच सकते हैं, हृदय से भगवान से जुड़ जाते हैं। लेकिन हमारे लिए यह सब असंभव था, पैदल चढ़ाई चढ़ना कठिन था। मैंने देखा वहाँ बहुत से लोग तो भक्त बनकर नहीं, सैलानी बनकर पिकनिक मनाने पहुंचे थे, बड़े ठाट-बाट और श्रृंगार के साथ घोड़ों में बैठकर, डाँडियों में बैठकर काला एनक पहनकर सब पर अपना प्रभाव जमा रहे थे। लेकिन बहुत से भक्तगण पैदल थे, तो कुछ लोग रुग्ण, वृद्ध, शिथिल लोग घोड़े-डाँडियों में बैठकर यात्रा कर रहे थे चौदह कि० मी० की चढ़ाई पर पैदल चलना अधिकांश लोगों के लिए बहुत कठिन था। मैंने और श्रीमती ने भी अपने लिये दो डाँडियों का प्रबन्ध किया। बेटा संजय ने पैदल जाना पसन्द किया। सुरक्षा गार्ड भी पैदल चल पड़ा।

डाँडी में बैठने पर मेरा हृदय में पीड़ा थी, व्यथा थी, ग्लानी थी किन्तु हमारे लिये कोई दूसरा उपाय भी तो नहीं था। हम चौदह कि० मी० की लम्बी यात्रा पैदल नहीं कर सकते थे। कहीं घिस-पिट कर जाते भी तो सम्भवतः बीमार भी पड़ सकते थे या फिर थक कर वापस गौरी कुंड नहीं आ सकते थे।

मैंने डाँडी में बैठकर सैकड़ों उन पैदल यात्रियों को देखा जिनके पांवो में जूते भी नहीं थे। उनके सिर पर भरी-भरी गठरी भी थी, उनमें उनका सामान था। भारत देश के पूर्व, पश्चिम, दक्षिण, उत्तर, पता नहीं कहां-कहाँ के यात्री थे। सचमुच वे धन्य थे और बहुत भाग्यशाली थे जो भगवान के नाम की पैदल यात्रा कर रहे थे। भले ही वे निर्धन ही सही किन्तु हृदय के बहुत धनी थे, विचारों के ऊँचे थे। गहन कठिन मार्ग की कठिनाइयों को सहन करके भी भगवान के दर्शन करने पहुंचे थे। मार्ग में नंगे पाँव के पद यात्रियों के मैं दर्शन करता तो अपना सिर झुका लेता था, उनके नंगे पाँवों को देखकर नतमस्तक हो जाता। कठिन दुर्लभ यात्रा का सही फल तो उन्हीं को मिलता होगा किन्तु मैं उन भक्तों के दर्शन करके गद्-गद् हो जाता था। मार्ग में वे लोग भगवान केदारनाथ का एक स्वर में जयघोष करते, जय हो शिव बाबा की, जय हो भोले शंकर की, जय हो केदारनाथ की, जय हो मेरे इष्टदेव की, जय हो जगत पिता भगवान शिव

की। उनके जय-जयकार के स्वर में अपना स्वर मिलाकर मैं अपना सिर भी झुका लेता था। श्रद्धा पूर्वक, हृदय से द्रवित होकर, कंठ से अवरुद्ध होकर उन नंगे पाँव के आने-जाने वाले तपस्वियों को मैं बार-बार नमस्कार कर लेता। उनके जयघोष की ध्वनि से मार्ग का सारा ही वातावरण शिवमय बन जाता था। मैं जहाँ भी दृष्टिपात करता वहाँ शिव ही शिव दिखाई देता था। द्रुम, लता, विटप, निर्झर, शैलशिखर में भगवान शिव के दर्शन होने लगे।

सात कि० मी० का आधा मार्ग निकल गया और हम रामबाड़ा पंहुच गये। गौरी कुंड एवं केदारनाथ के बीच के अर्द्ध मार्ग का यह विश्राम-गृह है। यहां कई दुकाने हैं ठहरने की व्यवस्था है, कई ढाबे, जलपानगृह यहाँ हैं। हमने भी वहाँ आराम किया, कुछ जलपान किया। जहाँ बैठे थे वहाँ चारपाइयाँ लगी थी, श्रीमती जी थक गयी थी उसने थोड़ी देर लेटकर आराम किया। इसी बीच थोड़ी उसकी आँखों में झपकी आ गई। पंद्रह-बीस मिनट बाद उठी तो उसने मुझे अपने सपने की बात बताई,

''मुझे लेटते ही थोड़ी नींद आ गई थी, नींद में मुझे भयानक सपना आया'' श्रीमती जी ने मुझे बताया।

''क्या सपना आया?'' मैंने पूछा।

सपने में काली-काली आकृति और भयंकर मुखाकृति की महिलाओं ने मुझे घेर लिया, वे काली आकृति और काली ही वेष-भूषा वाली महिलायें मुझसे मेरा सुहाग का नथ माँगने लगी। मैंने उनको अपना नथ नहीं दिया, मैंने कह दिया था यह मेरा सुहाग का नथ है इसको मैं किसी को नहीं दे सकती। किन्तु वे सब मुझपर झपट पड़ी और जबरन मुझसे मेरा नथ छीनने लगी। मैंने अपने दोनों हाथों से नथ को बचाने का प्रयास किया। पूरी शक्ति के साथ नथ को दोनो हथेलियों के बीच छुपा लिया। उन्होंने मुझे नहीं छोड़ा। अवसर पाकर मैं तेजी के साथ आगे भागने लगी तो वे सभी मेरा पीछा करने लगी। मैं सपने में जोर से चिल्लाई- ''भगवान, मुझे बचाओ'' अपनी ही आवाज से मेरी नींद खुल गई।''

''फिर क्या हुआ'' फिर क्या होना था, तब से मेरा शरीर अब तक कांप रहा है। फिर यह तो अच्छा शगुन नहीं था, सुहाग का नथ तो पति के जीवन से सम्बन्ध रखता है, वे तो मेरा सुहाग मुझसे छीन रही थी, यह तो सचमुच अच्छा सपना नहीं था, भगवान भली करें।'' इतना कहकर वह भगवान को हाथ जोड़ने लगी।

मैंने ढाढस देते हुए कहा- ''हम जिस भगवान के दर्शन करने जा रहे हैं, वही केदारनाथ हमारी रक्षा करेंगे'' इतना कहकर हम रामबाड़ा से आगे चल पड़े।

रामबाड़ा से बड़ी विकट चढ़ाई प्रारम्भ होती थी, हल्की-हल्की वर्षा होने लगी, पगडंडी बड़ी संकरी थी। घोड़े, डांडी, कंडी, पैदल यात्रियों का यही आने-जाने का मार्ग था। चढ़ाई पर चढ़ाई बढ़ती गई, गोल-मटोल छोटे-बड़े पत्थर मिट्टी में चिकने हो गये, डाँडी वालों के पैर जमीन में ठीक से नहीं पड़ते थे, फटे पुराने चप्पल पत्थरों पर फिसल जाते, फिर भी जैसे कैसे पसीने से तरबतर थके-मांदे उन मजदूरों ने चढ़ाई में हमको ऊपर से ऊपर पहुँचाया। हम नीचे देखते तो कँप-कपी हो जाती थी, सैकड़ों फुट चट्टान थी, कोई गिरता तो पता भी नहीं चलता और फिर कोई उनको ढूंढ भी नहीं सकता, कोई मार्ग भी नहीं था।

हमने बीच में थोड़ा पैदल चलने का भी प्रयास किया, थोड़ा मजदूरों को आराम मिल जाता, तीर्थयात्रा में अधिक नहीं तो थोड़ा बहुत पैदल चलना अच्छा रहता है, उसका महत्व है। किन्तु हम फिर डाँडी में बैठ गये। दो मजदूर डाँडी पर होते थे और दो उनके थक जाने पर डाँडी पर लगते। इसी क्रम में हम लोग काफी ऊँचाई तक पहुँच गये। आगे छोटा नैपाली लड़का था थक गया, उसका कंधा लाल हो गया लेकिन वह किस से क्या कहता, पीछे वाला मजदूर उसके साथ साथ चल रहा था। चढ़ाई पर थोड़ा संकरा मार्ग आया तो आगे के नैपाली मजदूर के हाथ से डाँडी का अगला हिस्सा धड़ाम से नीचे छूट गया और मैं आधा नीचे चट्टान पर लटक गया, मैंने तत्काल डाँडी को मजबूती से पकड़ लिया शुक्र है पीछे वाले मजदूर से डाँडी नहीं छूटी, मैं कैसे बच गया यह एक चमत्कार से कम न था। वहाँ यात्रियों की भीड़ एकत्रित हो गयी, सबने आश्चर्य से मुझे देखा, मेरे पांव नीचे चट्टान की ओर लटक गये थे, जरा सा मेरा हाथ डाँडी से छूट जाता तो मैं हजारों फुट नीचे खाई में गिर सकता था, जैसे तैसे लोगों ने पकड़कर मुझे बचाया। कुछ मजदूर को प्रताड़ित करने लगे, मेरे सुरक्षा गार्ड ने तो उसका गला ही पकड़ लिया।

''इसका क्या दोष है, थक गया बेचारा, उसने जानबूझकर तो नहीं गिराया'' मुझे उस नेपाली छोरे पर दया आ गई।

''नहीं साहब इसने तो आपको मार दिया था, सैकड़ों फिट नीचे आप चले जाते, इस नालायक को इसकी सजा मिलनी चाहिए'' कुछ लोगों ने कहा।

''छोड़ो भी इसको भगवान का धन्यवाद करो जिसने मुझे बचा दिया'' मैंने सबको समझाया।

मैंने श्रीमती को देखा तो वह भीड़ के बीच में सिसक-सिसक कर रो रही थी, भगवान को हाथ जोड़कर आंसू बहा रही थी।

''रोती क्यों हो? तुम्हारा सपना पूरा हो गया। भगवान उन काली-भयंकर यमदूतियों से तुम्हारे 'सुहाग की नथ' को बचा लिया। भगवान का धन्यवाद करो।'' मैंने श्रीमती जी को समझाया।

कुछ चढ़ाई चढ़ने के पश्चात हम समतल में पहुँच गये। मंद शीतल पवन ने हमें स्पर्श किया। हमने समीप से स्वच्छ-धवल बर्फीली पहाड़ियों को देखा। हमें लगा वह स्वर्ग का टुकड़ा यहाँ कहाँ से आ गया। स्वच्छ, धवल, निर्मल शैल शिखरों की गोदी में केदारनाथ का मंदिर था। हिममंडित पर्वतमालायें आकाश को छू रही थी। सभी धरती, गगन, बर्फ की धरती, बर्फ का आढ़ना, बर्फ का बिछोना था। संध्या एवं दिवस का मिलन था। सूर्य के प्रकाश की सनहली किरणों में पहुँच गये। घर परिवार एवं माया के जगत को भूल गये। स्वच्छ-धवल गगन-चुम्बी शैल शिखरों के किले के बीच में भगवान केदारनाथ के मंदिर की शोभा निराली थी, यह सब भगवान की कलाकृति थी।

हम लोग इस पावन भूमि में पहुँचते ही डाँडी, कंडी, घोड़ों से नीचे उतर गये। एक-दो फुट ऊँचे बरफ के बीच में मार्ग बनाकर सैकड़ों यात्री लाइन बनाकर भगवान केदारनाथ के मंदिर की ओर बढ़ रहे थे। ऐसा लगता था कि सब लोग माया के जगत को छोड़कर अनन्त से मिलने जा रहे हैं, सबकी दृष्टि मंदिर केदारनाथ पर लगी थी। सबकी एक ही आशा थी, एक ही आकांक्षा थी, एक ही भावना थी भगवान केदारनाथ के चरणों में पहुचने की।

जैसे ही हम केदारनाथ के द्वार पर पहुँचे, सांध्यकालीन प्रार्थना की शंख ध्वनि का स्वर हमें सुनाई दिया, छोटी-बड़ी घंटियों एवं घड़ियालों की टना-टन-टन की टन-टनाहट से दिग्-दिगन्तर गूँजने लगे। हमारा सौभाग्य था कि हम ठीक सांध्यकालीन प्रर्थना के समय मंदिर द्वार पर पहुँचे। प्रार्थना में सम्मिलित हुए, भगवान के दर्शन किये, सर्वस्व भगवान के चरणों में समर्पित किया, बड़ा संतोष मिला।

दूसरे दिन प्रातः कालीन पूजा में हमें विशिष्ठ व्यक्ति होने का लाभ मिला। पूजा, प्रतिष्ठा, आरती के पश्चात प्रसाद ग्रहण किया, स्वच्छ, पावन, पवित्र हृदय हो गया। बाहर आकर मैंने हिमाच्छादित ऊँचे पर्वत को देखा तो मुझे हिमाच्छित ऊँचे पर्वत एवं आकाश के बीच में साक्षात बाल गंगाधर-शिव के दर्शन हुए। भगवान शिव की बाल मूर्ति दिखाई दी। भगवान शिव की बालमूर्ति की मैंने कल्पना भी नहीं की, कभी इस बालगंगाधर के चित्र को पहले देखा भी नहीं था, किन्तु भव्य, दिव्य, गले में सर्प सिर पर अर्ध चंद्र को धारण किये मूर्ति को देखकर मैं कुछ क्षण भावविभोर हो गया। मैं अपनी सुध-बुध भूल गया। मुझे अपने नेत्रों पर विश्वास नहीं हुआ, मैंने एक-दो पल फिर बार-बार देखा तो वही बाल गंगाधर शिव था, वह देखते-देखते ही वहीं अन्तर्ध्यान हो गया।

यह सबकुछ क्या था, यह तो भगवान शिव ही जानते हैं, लेकिन आज भी मुझे अपनी सत्यता पर भ्रम नहीं हो सकता। मैं प्रत्यक्षं किम् प्रमाणम् को भ्रम कैसे कह दूँ वह तो साक्षात वही भगवान केदारनाथ था और मेरा भगवान शिव ही था, ऐसा मेरा पूर्ण विश्वास है। यदि सच्ची धुन हो, लगन हो तो भ्रम में ही सही, नेत्रों के भुलावे में ही सही, कल्पना में ही सही, किसी न किसी रूप में वह दर्शन अवश्य देता है। मैं उस सुहाग की नथ के रक्षक भगवान शिव को शत्-शत् प्रणाम करता हूँ।

''जय-जय महेश हे, जयति नन्द केश हे, जयति जय उमेश हे, जयति जय उमेश है, प्रेम से मैं जपा करूँ''।

*****

सांस्कृतिक पर्यटन की अनन्त संभावनाएं

डा. कुसुम नौटियाल

उत्तरांचल विश्वभर में एक उन्नत पर्यटन क्षेत्र बनने की क्षमतायें रखता है। कैसा भी पर्यटन हो, विनोद, धार्मिक, साहसिक, खेलकूद, योग, सौन्दर्य, चुनौतीपूर्ण, जल, थल और आकाश सभी क्षेत्रों में उत्तरांचल की विविधतापूर्ण संरचना और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर्यटन की अनेक संभावनाओं का विकास कर सकती है। विशेषकर सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में 'कल्चरल टूरिज्म' को बढ़ावा मिले तो उत्तरांचल के न केवल राजस्व में वृद्धि हो सकती है बल्कि लुप्त होती सांस्कृतिक परम्पराओं, नृत्य एवं गायन शैलियों और लोक-कलाकारों व प्रदर्शनकारी व्यवसाय से जुड़े संस्कृति कर्मियों के लिए रोजगार के साधन भी जुड़ सकेंगी। विश्व में अनेक देश केवल पर्यटन से प्राप्त राजस्व से अपना गुजारा कर रहे हैं। पड़ोसी नेपाल जो इसका जीता जागता उदाहरण है। थाईलैंड, मलेशिया, इंडोनेशिया, श्रीलंका, मालद्वीप आदि छोटे-छोटे देशों को राजस्व का अधिकांश भाग केवल पर्यटन से आता है। माना जा सकता है कि नेपाल में एवरेस्ट अथवा इंडोनेशिया और थाइलैंड इत्यादि में खूबसूरत समुद्रीतट भी पर्यटकों के आकर्षण के केंद्र हैं किन्तु उससे भी बड़ा आकर्षण है इन देशों में पर्यटकों की रुचियों को ध्यान में रखते हुए संजोकर रखी गई विशिष्ट सांस्कृतिक परंपराएं। थाइलैण्ड, इंडोनेशिया इत्यादि देशों ने अपनी रामायण कालीन संस्कृति आज भी बचाकर रखी हुई हैं।

इन छोटे-छोटे देशों में सांस्कृतिक पर्यटन यूं ही सुरक्षित नहीं हैं। व्यापक शोध, परंपरा का संरक्षण और पर्यटन की आवश्यकता का सांमजस्य बनाते हुए इन देशों की सरकारों ने सांस्कृतिक पर्यटन को बचाया ही नहीं है बल्कि उसका विस्तार भी किया है और विश्वभर में एक पहचान बनायी है।

क्या हम ऐसा नहीं कर सकते उत्तरांचल भी अनंत सांस्कृतिक संपदा से भरपूर है। एक पर्यटक केवल मौजमस्ती नहीं बल्कि उस क्षेत्र और उसके निवासियों के प्रति जिज्ञासा भाव लेकर आता है। दुर्भाग्य से उत्तरांचल केवल बद्री-केदार की यात्रा स्थली बन कर रह गया। स्वतंत्रता के पश्चात भी कभी इसके सांस्कृतिक संरक्षण पर कोई ध्यान नहीं दिया गया। बद्री-केदार और अन्य धामों की यात्रा के लिए सरकारों को कोई प्रयत्न नहीं करने पड़ते थे। श्रद्धालुओं ने तो आना ही था और मौज-मस्ती वाले पर्यटकों के लिए नैनीताल मसूरी थी ही। लेकिन आज जबकि पर्यटन भी एक प्रतिस्पर्धा वाला क्षेत्र बन गया है और देश के सभी राज्यों में पर्यटकों को लेकर होड़ मची हुई है ऐसे में उत्तरांचल का पर्यटन विभाग यदि पर्यटन में सांस्कृतिक प्रदूषण की बजाय सांस्कृतिक सम्मिश्रण की ओर ध्यान दे तो विश्व को केवल देवभूमि की नहीं बल्कि देवसंस्कृति के दर्शन भी हो सकते हैं।

लेकिन यह होगा कैसे यह एक यक्ष प्रश्न है। राजस्थान ने तो यह कर दिखाया है। राजस्थान ने रेगिस्तान के सूनेपन सारंगी और घुंघरूओं की मधुर ध्वनियों के बीच डूबते उतरते लोकधुनों से कारोबार किया है। क्या आज आप और हम लोक-नृतकों के बिना राजस्थान की कल्पना कर सकतें है।

उत्तरांचल के साथ विडंबना यह रही है कि यहां के सांस्कृतिक पहलू पर तो किसी भी दृष्टिकोण से काम नहीं हुआ। न साहित्यिक और न ही शैक्षिक। न तो दोनों ही विश्वविद्यालयों में संस्कृति विभाग खुले और ना ही पूर्व और वर्तमान संस्थाओं ने संस्कृति को बढ़ाना तो दूर की बात है उसे बचाने के लिए भी कोई काम नहीं किया है।

यह लोक-नृत्यों, लोकोत्सवों, मेले, थौलों और रंगीन परंपराओं का प्रदेश है। यह सत्य है कि यह देवभूमि है

परन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि यह केवल मंदिरो, आध्यात्म और साधु-संतो तक ही सीमित प्रदेश है। यहां भोटियां जैसी साहसिक और विलक्षण वेश-भूषा और सांस्कृतिक सौन्दर्य से भरपूर जन-जातियां हैं तो जौनसार के रंगीन लोकनृत्य और लोकगीत है जो आध्यात्म और दोनों का मिश्रण है। विनसर जैसे महान आध्यात्मिक मेले हैं तो पौड़ी में देवीखाल क्षेत्र का विचित्र गेंदु मेला है जो अपने आप में एक स्पार्ट्स एडवेंचर है। ऐसा ही एडवेंचर देवीधुरा का मेला है। जिसमें पत्थरों से खेला जाता है। गढ़वाल और कुमायूं के लोकगीत, लोकनृत्य परम्परागत वाद्ययंत्रों की भरमार है और हुड़क्या तथा वादियों जैसे विशिष्ट लोकगायक और गायिकाऐं। बल्कि ये विशेष समुदाय हैं जिनका परंपरागत कार्य ही मनोरंजन करना था। इनकी अपनी परंपराएं जैसे लांघ, बेडावर्त, कृषिगीत इत्यादि हैं जिन्हें शोध द्वारा कुछ और अधिक रूचिकर बनाकर पर्यटकों के लिए तैयार किया जा सकता है।

हम उत्तरांचल दिवस और अन्य सरकारी-कार्यक्रमों मे उत्तरांचल की सांस्कृतिक छटाओं में क्या देखतें है। सरकार द्वारा किराए पर लाई गई सांस्कृतिक मंडलियां जिन्हें न भाषा की और न ही नृत्य की कोई विशेष जानकारी है। केवल बेडु पाको गा देने या नाच देने से लोक संस्कृति का प्रदर्शन नहीं हो जाता। यह बहुत व्यापक क्षेत्र है जिसमें अत्यन्त शोध की आवश्यकता है और इस प्रदर्शन शैली को उन्नत किया जाय तो पर्यटकों के मनोरंजन के अतिरिक्त उनका ज्ञानवर्धन भी कर सके। इस पर अनुसंधान की आवश्यकता है। अन्यथा कालेजों के लड़के-लड़कियों द्वारा प्रस्तुत किये जा रहे लोकनृत्यों से तो उत्तरांचल की सांस्कृतिक इतिश्री हो ही रही है और संस्कृति के संदर्भ में इसके घातक परिणाम भी हो सकतें हैं।

अत: हमें लोक कलाकार खोजने होंगे। उन्हे लुप्त होने से बचाना होगा। उनके लिए सांस्कृतिक परिरक्षण माध्यम से ही पर्यटन क्षेत्र में रोजगार की व्यवस्था करनी होगी। इसके साथ-साथ प्रशिक्षण, जैसे आधुनिक मंच का ज्ञान, पर्यटकों की रूचि, परिधानों का चुनाव, वाद्य-यंत्रो का रख-रखाव व प्रस्तुति-विषयक प्रशिक्षण भी देना होगा। निश्चय ही गढ़वाल का आध्यात्म और कुमाऊं की रंगबिरंगी संस्कृति का सम्मिश्रण कैसे उत्तरांचल के पर्यटन में चार-चांद लगाता है।

*****

ॐ

With Best Compliments
From :

SHIV GRAPHIC SYSTEM

Graphic Designer, Offset Processing (Out Put)
& Multi Colours Offset Printer

803/16A, Vijay Park, Yamuna Vihar, Delhi-53
Phone: 22913282, 22912343, Mob. 9868115619, 9818505619

कालीमठस्था शिवा

कवित्वम् श्रीकृष्ण सेमवाल

पूज्या सर्वविपत्तिनाशनपरा सर्वार्थसिद्धिप्रदा,
विद्याबुद्धिविकासवैभववरिभा भव्येश्वरीभव्यदा।
कल्याणी कुमुदालया भगवती देवी जगद्व्यापिनी,
काली कालविनाशिनी विजयते कालीमठस्था शिवा ॥ 1 ॥

मानवमात्र की पूजनीया, समस्त विपत्तियों का नाश करने में संलग्न, सभी प्रकार की सिद्धियों को देने वाली, विद्या, बुद्धि के विकास से प्राप्त वैभव की चमक से उत्कृष्ट, ऐश्वर्य की स्वामिनी एवं ऐश्वर्य को देने वाली, प्राणिमात्र का कल्याण करने वाली, सहस्त्र दल कमल में निवास करने वाली, बुरे समय को नष्ट करने वाली, कालीमठ में स्थित मां भगवती जगदम्बा विजय को प्राप्त करती रहें।

क्रूराणां कलने च दुष्टदलने धूर्तस्य वा दण्डने,
मन्दानां मथने तथैव हनने हेरम्बविद्विषिणाम्।
दैत्यानां शमने च सज्जनजनानन्दस्य संवर्द्धने,
यस्या: बद्धमतिश्च सा विजयते कालीमठस्था शिवा ॥ 2 ॥

क्रूर व्यक्तियों को निगलने में और दुष्टों के दहन करने में तथा धूर्तों को दण्ड देने में, मूर्खों को मथने में, मां भगवती के पुत्र गणेश जी से द्वेष रखने वालों को नष्ट करने में, दैत्यों के शमन करने में तथा सज्जनों के आनन्द को बढ़ाने में जिन मां भगवती की कृपा सदा बनी रहती है कालीमठ में स्थित वह माँ भगवती जगदम्बा सदा विजयोत्कर्ष को प्राप्त करती है।

दिव्यस्यास्य हिमालयस्य दुहिता हैमाम्बरा भास्वरा,
लोकलोककरा प्रसन्नहृदया दिव्यतिदिव्येश्वरी।
रुद्राणी विमलाकृति: भयहरा या भीतिदा भूतिदा
सा काली सुखदायिनी भवतु मे कालीमठस्था सदा ॥ 3 ॥

लोक प्रसिद्ध हिमालय की पुत्री, अत्यन्त देदीप्यमान हिम के समान स्वच्छ वस्त्रों को धारण करने वाली, विश्व को आलोकित करने वाली, उज्ज्वल रूप में अत्युज्ज्वल, रुद्राणी, कोमल, आकृति वाली, भय को दूर करने वाली, भय देने वाली एवं ऐश्वर्य को देने वाली काली मठ में स्थित माँ भगवती काली मुझे सुख प्रदान करे।

लालित्यं कवितासु भाति सरसं गाम्भीर्यमत्यद्भुतं,
वाणी निर्झरिणीव नि:सरति या यस्या: कृपाया: फलै:।
सा सा मेत्र सरस्वती सुरगिरा वागीश्वरी यच्छतु,
दिव्यं ज्ञानमनुत्तमं हितकरं कालीमठस्था शिवा ॥ 4 ॥

जिन माँ भगवती काली की कृपा से कवि की कविता में सरसता, लालित्य एवं आश्चर्य आलोकित होता है और वाणी सतत प्रवहमान झरने की तरह प्रवाह युक्त दिखाई देती है काली मठ में स्थित वाणी की स्वामिनी वह माँ सरस्वती मुझे दिव्य, अत्युत्तम तथा हितकर प्रदान करे।

सौम्या शाश्वतशान्तिरूपसकला क्रोधान्विता सत्यपि,
हर्षोल्लासकरा समस्तभुवने चानन्दसन्दोहदा।
गौरी गौरवदायिनी प्रतिजनं या शाम्भवी वैष्णवी,
सा देवी सुखसौरभं वितनुतां कालीमठस्था च मे ॥ 5 ॥

जो माँ सौम्य रूपवाली है, जो क्रोध रूपावली होने पर भी सभी प्रकार से निरन्तर शान्ति रूपवली है। समस्त विश्व में हर्ष एवं उल्लास को देने वाली है तथा जो माँ परमानन्द घन है। जो माँ गौरी के रूप में प्रत्येक मनुष्य को गौरव देने वाली शाम्भवी एवं वैष्णवी भी है। काली मठ में स्थित ऐसी वह माँ सुख रूपी सौरभ प्रदान करे।

मातस्त्वं गिरिजे हिमाद्रितनये गंगाप्रवाहप्रदे,
कैलासाचलवासिनि प्रमुदिते क्षत्रेश्वरि क्षत्रदे।
पाहि त्वं परिपाहि मां परिजनैस्साकं धरित्र्यां रमे,
संसारार्तिसमाप्तिकर्मनिरते कालीमठाधीश्वरि॥ 6॥

कैलाशनिवासिनी, प्रसन्नचित रहने वाली, क्षत्रेश्वरी एवं क्षमा प्रदान करने वाली, गंगा के प्रवाह को प्रवाहित करने वाली एवं संसार के प्राणियों के दुःखों को दूर करने में निरन्तर तत्पर कालीमठाधीश्वरि हे माँ!
संसार में मेरी व मेरे समस्त परिवार के रक्षा करो, रक्षा करो।

मातर्विश्वमिदं प्रपञ्चजटितं छद्मच्छलापूरितं,
दृष्ट्वेयं मम मानसं जननि हे सन्दूयते भूरिशः,
पाहि त्राहि सदैव दुःखितजनं कालीमठाधीश्वरि॥ 7॥

हे माँ कालीमठाधीश्वरि यह विश्व प्रपञ्चादि जड़ता से युक्त तथा छल से युक्त व मित्र व शत्रु के विचार के तत्व से रहित और रात दिन ताप देने वाला है इसे देखकर मेरा मन अत्यन्त दुखित है। इसलिए हे माँ मुझ दुखित की रक्षा करो, रक्षा करो।

दुर्गा त्वं दनुजस्य दुर्गशमनी सत्यस्य वा दुन्दुभिः,
मातस्त्वं मनुजस्य दुर्गतिहरा बोधप्रबोधोद्भवा।
दुःस्वप्नाधिहरा त्वमेव भुवने दुर्बुद्धिसन्नाशिनी,
त्वं देवी जननी त्वमेव जगतः कालीमठावासिनी ॥ 8॥

कालीमठ में निवास करने वाली हे माँ तुम राक्षसों के दुर्गों के शमन करने के कारण दुर्गा हो, तुम सत्य की दुन्दुभि हो, तुम मनुष्य की दुर्गति को दूर करने वाली हो एवं ज्ञान का उद्बोधन करने वाली हो, तथा दुर्बुद्धि का शमन करने वाली हो एवं तुम ही समस्त संसार की माँ हो।

धात्री त्वं जननि त्वमेव भुवने स्नेहप्रदात्री सतां,
तेजस्त्वं प्रतिभासि भासि सकलं सर्वत्र तेजस्विनाम्।
मानस्त्वञ्च मनस्विनां भगवति ज्ञानं महाज्ञानिनां,
सर्वस्वन्वमये मदर्थमनिशं कालीमठाधीश्वरि॥ 9॥

कालीमठाधीश्वरि हे माँ तुम विश्व की जन्मदात्री हो एवं सज्जनों को स्नेह देने वाली हो, तेजस्वियों में तुम सर्वत्र तेज के रूप में देदीप्यमान हो और मनस्वियों को मान हो, ज्ञानियों में तुम महाज्ञान हो, परन्तु हे माँ तुम मेरे लिए मेरी सर्वस्व हो।

मातर्भूमितलात्तलान्तरपरस्ते विग्रहो भूतले,
सामान्यै र्न हि दृश्यते जननि हे कालीमठे कालिके।
त्वं सर्वं परिपश्यसीति भुवनं मे निश्चितं सम्मतं,
तर्हि त्राहि महेश्वरि त्वमनिशं कालीमठाधीश्वरि॥ 10॥

कालीमठाधीश्वरि हे माँ संसार में तुम्हारे विग्रह भूमितल के अन्दर गर्भ-गृह से परे विद्यमान होने के कारण सामान्य जनों द्वारा दृष्टिगोचर नहीं होता है परन्तु मेरा दृढ़मत है कि तुम सभी प्राणियों को निश्चत रूप से देखती हो। अतः हे माँ कालिके आप मेरी सभी प्रकार से रक्षा करो।

गत्वा ते निलयं पुनः पुनरपि ध्यात्वा चरित्रं तव,
नत्वा ते चरणारविन्दयुगलं स्मृत्वा तवानुग्रहम्।
दासोस्यं सततं तवैव जननि त्वत्पादभृङ्गानुगः,
नौमि त्वां परमां पुनः पुनरहो कालीमठस्थां शिवाम ॥ 11॥

हे माँ भगवति कालिके तेरे निवास स्थान में बार-बार जाकर, बार-बार तेरे चरित्र का ध्यान कर एवं निरन्तर तेरे चरण युगलों को प्रणाम कर तथा तेरे द्वारा मेरे ऊपर किये गये अनुग्रहों का स्मरण कर तुम्हारे चरणों का दास यह भौंरा, मैं परमोत्कृष्ट माँ भगवती आपको बार-बार प्रणाम करता हूँ।

*****

my delhi I Care

भागीदारी

Bhagidari

सच्चा लोकतंत्र केवल तभी संभव है जब शासन में नागरिकों की सहभागिता हो। इस बात को महसूस करते हुए दिल्ली की मुख्यमंत्री ने भागीदारी योजना प्रारम्भ की, भागीदारी का शाब्दिक अर्थ है साझेदारी या प्रतिभागिता/सहयोगिता इस संकल्प को कार्यान्वित करने के लिए मुख्यमंत्री कार्यालय में भागीदारी प्रकोष्ठ की स्थापना की गई तथा विभिन्न नागरिक समूहों जैसे रेजिडेंट वैलफेयर एसोसिएशनों (आर० डब्ल्यू० ए०), मार्केट व ट्रेडर्स एसोसिएशनों, ग्रामीण कल्याण समितियों व औद्योगिक कल्याण समितियों) व विभिन्न विभागों के बीच सामन्जस्य स्थापित करने के लिए एकार्ड (गैर सरकारी संस्था) को अनुबन्धित किया गया। सभी संबन्धित स्टेकहोलडरों (अधिकारी वर्ग व नागरिक समूहों)को एक मंच पर सम्मिलत कर के नागरिकों की समस्याओं का आंकलन व उनका व्यावहारिक हल निकालने के लिए लार्ज ग्रुप इटरएक्टिव इविन्ट (एल० जी० आई० ई०) पद्धति का प्रयोग किया गया जिसके अंतर्गत सभी वर्ग एक साथ बैठकर मुद्दों व उनके हल का निर्धारण आपसी सहयोग से करते है और इस प्रकार निर्धारित समाधानों पर समयबद्ध तरीके से कार्य होता है।

भागीदारी कार्यशालाओं का क्रियान्वयन निम्न चरणों से होता है :

1. **औरयेन्टेशन:-** सम्बन्धित नागरिक समूहों व अधिकारियों को कार्यशाला के उद्देश्य से अवगत कराना।
2. **डिजाइन टीम कार्यशाला:-** इस दिवसीय कार्यशाला में सभी स्टेकहोल्डरों के प्रतिनिधि मुद्दों का निर्धारण व मुख्य कार्यशाला की रूप रेखा तैयार की जाती है।
3. **मुख्यकार्यशाला:-** भागीदारी कार्यशाला तीन दिन की होती है पहले दिन माननीय मुख्यमंत्री मुख्य सचिव व सम्बन्धित विभागाध्यक्ष नागरिक समूहों को अपनी योजनाओं से अवगत कराते है व नागरिक समूहों अपनी समस्याओं व प्रश्नों को लिख कर देते है जिनका उत्तर मुख्यमंत्री व विभागाध्यक्ष समापन दिवस पर देते हैं। कार्यशाला के अन्त में नागरिक समूहों तथा अधिकारियों के सम्मिलत प्रयास से निर्धारित कार्यों की सूची तैयार की जाती है जिस का समयबद्ध कार्यान्वयन सम्बन्धित विभागाध्यक्ष व उपायुक्त राजस्व की निगरानी में किया जाता है।

अब तक भागीदारी योजना के अन्तर्गत अनेकों उपलब्धियाँ हासिल की गई हैं जिनमें :

1. पर्यावरण में उल्लेखनीय सुधार।
2. कूड़े का निपटारा।
3. वर्षा जल संचयन।
4. महिला सशक्तिकरण।
5. नागरिकों का विशेष ध्यान।
6. सरकारी स्कूलों में विद्यालय कल्याण समितियों का गठन।
7. विद्युत वितरण प्रणाली में सुधार।
8. पार्कों का बेहतर रख रखाव।
9. नागरिक सुरक्षा के लिए पुलिस व नागरिक समूहों में बेहतर सामन्जस्य।

भागीदारी योजनाओं की सफलताओं व नागरिकों की प्रशासन में सहयोगिता के अनोखे सफल प्रयोगों के लिए संयुक्त राष्ट्रसंघ ने भागीदारी योजना को **यूनाइटेड नेशन्स पब्लिक सर्विस एवार्ड-2005** का प्रथम पुरस्कार देकर सम्मानित किया।

श्री कुलानन्द जोशी, उपसचिव (भागीदारी)
मुख्यमंत्री कार्यालय दूरभाष-23392174

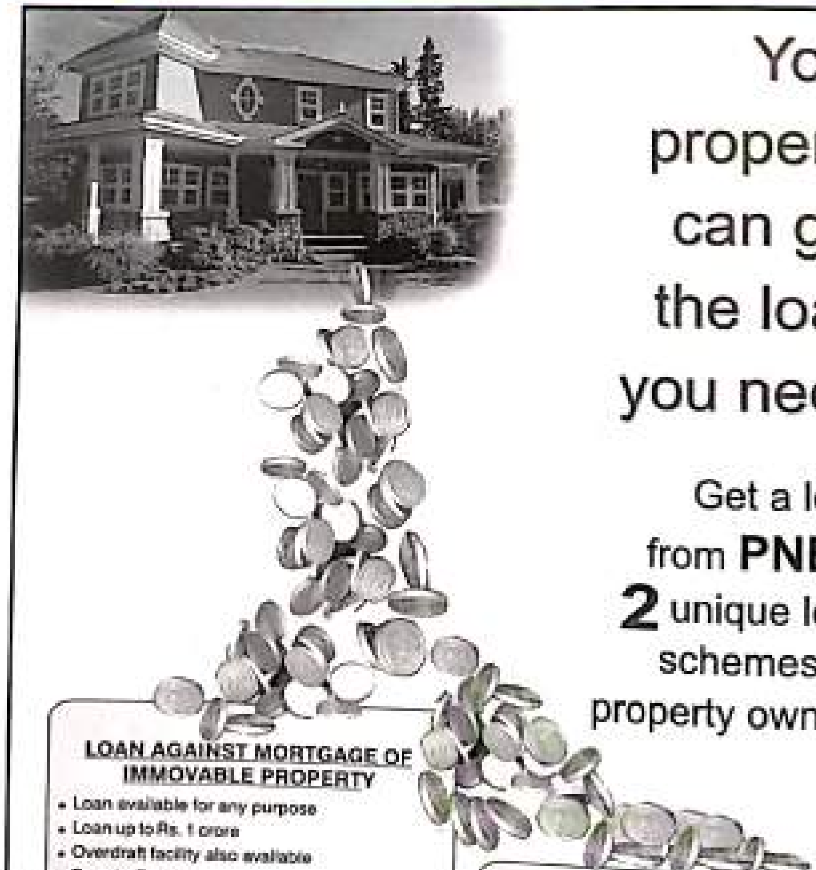

Your property can get the loan you need

Get a loan from **PNB's 2** unique loan schemes for property owners

LOAN AGAINST MORTGAGE OF IMMOVABLE PROPERTY

- Loan available for any purpose
- Loan up to Rs. 1 crore
- Overdraft facility also available
- Easy to Repay
- Business enterprises, Trusts, Societies, Employees of Central/State Government/ Schools/ Colleges/ PSUs/ Corporates etc. eligible.

Avail 0.50% concession in Rate Of Interest under this scheme.
Hurry! offer is valid for a limited period.

FUTURE LEASE RENTAL

- Loan available for all purposes
- Loan up to Rs. 30 crore
- Easy to Repay
- Competitive rate of interest
- Minimum processing time

www.pnbindia.com

For further details, contact your nearest PNB Branch or dial through mobile at 0124-2340000 or All-India Toll Free Helpline 1800 180 2222 through land line

Conditions apply

punjab national bank
...the name you can BANK upon !

उत्तराखण्ड क्लब (पंजी०)

(प्रवासी उत्तराखण्डवासियों की सबसे बड़ी सामाजिक संस्था)

दिल्ली में रह रहे लाखों उत्तराखण्डवासियों को संगठित तथा जागरूक करने हेतु प्रयासरत उत्तराखण्ड क्लब द्वारा किए जा रहे मुख्य कार्यक्रम :

विवाह योग्य गढ़वाली/कुमाऊँनी युवक, युवतियों के उत्तम चयन हेतु उत्तराखण्ड "मैरिज ब्यूरो" का संचालन।

- जुलाई, 2003 कमानी सभागार में भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं "उत्तराखण्ड गौरव सम्मान-2003", "उत्तराखण्ड विशेष/विशिष्ट सम्मान" एवं "मेधावी छात्र पुरस्कार" की शुरूआत साथ ही "दिल्ली उत्तराखण्ड टेलीफोन डायरेक्टरी-2003" का विमोचन।
- नवम्बर, 2003 मावलंकर सभागार में उत्तरांचल राज्य की तृतीय स्थापना दिवस पर अमर शहीदों को श्रद्धांजलि, भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा राज्य आंदोलनकारियों का सम्मान।
- फरवरी, 2004 को जिमखाना क्लब में संरक्षक मंडल व सलाहकार समिति की विचार गोष्ठी।
- अप्रैल, 2004 गढ़वाल भवन, पंचकुइयां रोड में दिल्ली स्तर पर उत्तराखण्डी बच्चों की सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता।
- मई, 2004 में सदस्यों को बद्रीनाथ एवं केदारनाथ की यात्रा एवं बद्रीनाथ में विशाल भण्डारा।
- अक्टूबर, 2004 से उत्तरांचल में असहाय वृद्धों को 200 रु० मासिक आर्थिक सहायता की शुरूआत।
- अक्टूबर, 2004 में क्लब का तालकटोरा स्टेडियम में वार्षिकोत्सव "उत्तराखण्ड गौरव सम्मान-2004" एवं उत्कृष्ट विकास कार्यों के लिए "आदर्श ग्राम प्रधान पुरस्कार" एवं "उत्तराखण्ड विशिष्ट सम्मान"।
- आबूधाबी शाखा द्वारा सदस्य की आकस्मिक निधन पर 1.66 लाख रुपये की आर्थिक सहायता।
- सुनामी राहत कोष में 21,000/-रु० का योगदान।
- जम्मू कश्मीर में आये विनाशकारी भूकम्प के लिए 54,000/-रु० का योगदान।
- "दिल्ली उत्तराखण्ड टेलीफोन डायरेक्टरी-2005-06" का विमोचन जनवरी 2005 में दिल्ली के प्रसिद्ध सभागार प्यारे लाल भवन में।
- नवम्बर, 2005 में दिल्ली के प्रसिद्ध सीरी फोर्ट आडिटोरियम में उत्तरांचल राज्य की पांचवीं वर्षगांठ के सुअवसर पर एक भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम साथ ही "उत्तराखण्ड गौरव" एवं "उत्तराखण्ड विशिष्ट" सम्मान समारोह।
- जनवरी 2006 में (मण्डावली शाखा) स्मारिका- "उत्तरांचल-उपलब्धियां एवम् आशायें" का विमोचन।

क्लब द्वारा 2006 में "उत्तरांचल आइडल" गायन एवं नृत्य प्रतियोगिता (18 वर्ष की आयु तक) का एक भव्य समारोह में आयोजन शीघ्र सम्पर्क करें

राष्ट्रीय शाखाएं : यू.पी.: वसुन्धरा, नोएडा। दिल्ली: रोहिणी, दिलशाद गार्डन, मयूर विहार, संगम विहार, दक्षिण दिल्ली, द्वारका, बदरपुर एवं मंडावली

अंतराष्ट्रीय शाखाएं : आबूधाबी (संयुक्त अरब अमीरात) एवं ओमान

सदस्य बनने हेतु सम्पर्क करें :
मुख्य कार्यालय : एल-1 (भूतल), अर्जुन नगर, निकट ग्रीन पार्क, नई दिल्ली-110029
टेलीफैक्स : 011-26175215, फोन: 55818406, 55640331, ईमेल : uttarakhandclub@rediffmail.com

आभार

गढ़वाल हितैषिणी सभा उन समस्त सज्जनों का आभार प्रकट करती है जिन्होंने हमें तन से, मन से और धन से सहयोग किया आप सब के सहयोग के बिना यह कार्य सम्पन्न करना सम्भव न था। अंत में समस्त कार्यकारिणी आप सबका धन्यवाद करती है। विशेष कर जिनका हमें महति सहयोग प्राप्त हुआ निम्न लिखित हैं।

1. उत्तरांचल सरकार:
   माननीय मुख्यमंत्री उत्तरांचल एवम् उत्तरांचल सरकार
2. श्री आलम सिंह बिष्ट (पैरामैक्स इलैक्ट्रॉनिक्स प्रा० लि०)
3. श्री मनवर सिंह रावत (मयूर पब्लिक स्कूल, दिल्ली)
4. श्री रविन्द्र गुप्ता (श्री लाल महल)
5. श्री आनन्द सिंह रावत (रावत स्टील इंडस्ट्रीज)
6. श्री गणेश चंद्रा (यू०ए०ई०)
7. स्टेट बैंक ऑफ इंडिया
8. श्री डी० एस० रावत (रावत बिल्डर)
9. श्री अजय चेदवाल
10. श्री जय कुमार बंसल
11. रिलैक्सो फुट वियर
12. ओ०एन०जी०सी०
13. टी. सीरीज ऑडियो-वीडियो
14. श्री सुरजीत सिंह सैनी (सैनीटोन)
15. ज्योति दर्शनी ज्वैलर्स
16. मदन सिंह रावत (नरेन्द्र नगर)

समस्त विज्ञापन दाता एवं संकलन कर्ता

प्रसिद्ध श्री देव रथी देवता का यह भव्य मंदिर चम्बा धरासू मो०मार्ग पर चम्बा से 28 कि०मी० की दूरी पर किल्याखाल में स्थित है

जय श्री रथी देवता की आरती

जय रथी देवा, जय रथी देवा, जय-जय रथी देवा।
सभी भक्त तुम्हारी देवता, नित्य करदा सेवा।।
ॐ जय-जय रथी देवता।
सभी भक्त लगांदा देवता, रोज तुम्हारा ध्यान।।२।।
किल्याखाल मां तुम बैठ्यां, कनो तुम्हारो शान।
ॐ जय-जय रथी देवता।
धर्मसिंह तुम्हारू ही नाम, कनो निरालो शान।।२।।
सारू गढ़वाल तुमूँ, कना याद करदान।।२।।
ॐ जय-जय रथी देवता।
बेरों कू शौकीन भारी, चाल छ मतवाली।।२।।
बड़ा-बड़ा बीर तेरी गैल, तेरी शोभा न्यारी।।
ॐ जय-जय रथी देवता।
गला कू मफलर प्यारु, हाथ कू रुमाल।।२।।
छतरी कू शौकीन भारी, तेरी भैंस्या चाल।।
ॐ जय-जय रथी देवता।
ऊँची धार माँ तेरु वास, तेरी महिमा भारी।।२।।
गढ़ पैरू नागराजा की, कनी जोंदी सवारी।।
ॐ जय-जय रथी देवता।
सात गते बैशाख देवा, तेरु लगद् छ थौलु।।२।।
श्रीफल झण्डी तोक, तेरी भेंट औलु।।
ॐ जय-जय रथी देवता।
ध्याण्यों कू रक्षाकारा, तेरी रक्षा भारी।।२।।
तेरु नऊं रोज मैं लेंदू, तेरी कृपा भारी।।
ॐ जय-जय रथी देवता।
रथी देवता को आरती जो कोई नर गावैं।।२।।
सभी भक्तजन, सुख सम्पति पावैं।।
ॐ जय-जय रथी देवता।

पं० दिनेश डंगवाल, डोईवाला देहरादून

With Best Compliments
From

All India Standard Chartered Grindlays Bank Employees Association

AIBEA

C/o Standard Chartered Bank, 10-E, Connaught Place, New Delhi-110001
Phone:- Con. Place : 23418378 Darya Ganj : 23242479

SAMAR BANARJEE
President

RAMA NAND
General Secretary

TEJINDER BAWA
Treasurer

With Best Compliments From :-

Jagat Singh Rawat
98100-48346

AUTO HOME

BUY & SELL INDIAN & IMPORTED CARS

17, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi-110005
Phone : (O) 25743311/66, 25729494, 55474514
Web site : www.autohome-usedcars.com

शुभकामनाओं सहित :

SAINITONE

हिन्दी, भोजपुरी, कुमांउनी-गढ़वाली सुपरहिट गीतों की रिकॉर्डिंग, सीडी फिल्मों की शूटिंग, एडिटिंग डबिंग, स्पेशल इफेक्ट, कोमा, टाइटिलिंग, मास्टरिंग थ्री. डी. एनिमेशन आदि की सुविधा उपलब्ध है।

प्रोप्राइटर
सुरजीत सिंह सैनी (9818572881)
वंश सैनी

हमसे जुड़े हैं

संगीत निर्देशक:
चन्द्र भूषण, नरेश विकल, राजेन्द्र चौहान

रिकॉर्डिस्ट:
विरेन्द्र पॉल
9891226279

फिल्म निर्देशक:
भास्कर जोशी ([illegible]) 9412977908
विनीत बंसल ([illegible]) 9412092382
महावीर रावत ([illegible]) 9871229062

एडिटर/एनिमेटर:
सुधांशु सैनी
9818346318

सैनीटोन
790/1, सुखदेव नगर, कोटला, मुबारकपुर, नई दिल्ली
फोन: 55655589 ई-मेल: sainitone@yahoomail.com

2.5 Lacs

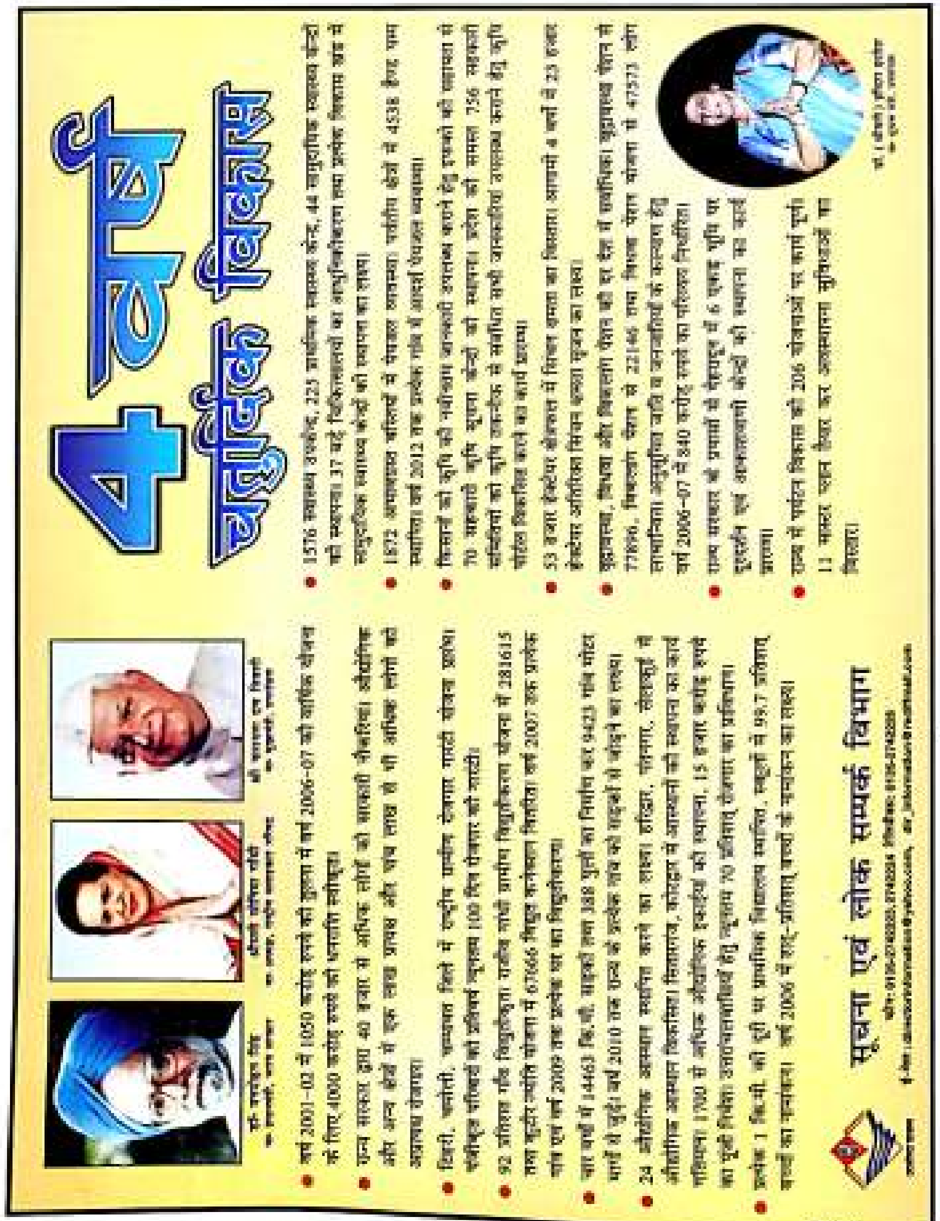
4 वर्ष
चहुँमुखी विकास
सूचना एवं लोक सम्पर्क विभाग

स्वस्थ उत्तरांचल
समृद्ध उत्तरांचल
राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन का शुभारम्भ।
डा. तिलक राज बेहड़

3000/-

CHUN MUN®
We Know What Your Kids Want

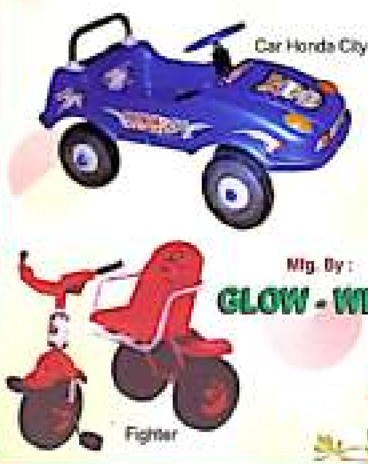

Mfg. By :
GLOW - WELL

With Best Compliments
From :-

Jasbir Singh Adhikari

ADHIKARI BROS. TOURIST TAXI SERVICE

We Provide Transportation Cars, Qualis, Sumo, Ambassadors A/C & Non A/C

"Round The Clock"
"Char Dham Special"
"Film Production Business"

F-12/8 Malviya Nagar, Shop No. : G-12, New Delhi
Ph. : 011 26672995,26672920 Mobile: 9810154312
Email : jasbir987456@yahoo.com

With Best Compliments
From :-

R.N. SHIPPING PVT. LTD.

AIR & SEA

Cargo Customs Clearing & Int'l Freight Forwarders

• SHIPPING • CLEARING
• FORWARDING • CONSOLIDATOR

514, Vishal Chambers, Sector- 18, Noida, U.P 201301
Telefax : 95120 - 4358915-916 -917-918-919-920, 4355890
Email - rnsdelhi@bol.net.in & sunilbisht_rnsdelhi@bol.net.in

With Best Compliments from :-
2500/- मानसिंह खत्री
राजीव खत्री

Vashnavee Shringaar Jewellers

सभी प्रकार के सोने एवं चांदी के गहनों के निर्माता
उत्तराखंडी गहनों में निपुर्ण

हमारे यहाँ सभी प्रकार के राशि के नग भी मिलते हैं

उत्तराखंड वासियों के लिए
विशेष छूट एक बार सेवा का मौका दें।

1059/9, कूचा जतमल दरीबा कलां, चांदनी चौक, दिल्ली - 06
निवास : WB-78, शकरपुर, दिल्ली- 92
Mob. - 9911377513 Resi. - 22531991
9810625985

2500/- With Best Compliments from

Swift Securitas (P) Ltd.

From:
N. S. Negi
S. S. Negi

हार्दिक शुभकामनाओं सहित
2000/-

नित्यानन्द गैरोला
जिला अध्यक्ष भा०ज०पा० उत्तरांचल प्रकोष्ठ
पूर्वी दिल्ली जिला

कार्यालय:- के -21/38, गली न०-10,
गंगोत्री विहार, दिल्ली-110053
फोन:- 9810484317, 32518032

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ:
गढ़वाल ज्वैलर्स
हमारे यहां पर कुमाऊं नथ, हल्द्वानी नथ, रानीखेत नथ, टिहरी नथ, गढ़वाली नथ, गुलबन्द, मुरकी एवं पौंछी, बुलाक
18 CT हीरे की ज्वेलरी, K.D.M. जेवर (100% वापसी खराब निकलने पर) एवं राशि के नग आदि सभी उचित मूल्य पर उपलब्ध है।
वीर सिंह राना, राजीव राना
बी-5/368, बी-ब्लाक, मेन रोड, नजदीक बी-5 मार्किट, महाराज अग्रसेन पार्क के सामने, यमुना विहार, दिल्ली-53
फोन : 22911737, मो. : 9891653377

With Best Compliments
From :-
An ISO 9001 : 2000 Co.
Hissar conduit pipe factory
SPL. IN : SPECIAL SHAPE & ODD SIZE
Manufacturers & Suppliers of :
All Kinds of Conduit Pipes, ERW Pipes, Furniture Pipes, Round & Square, Lancing Pipes, Seamless Pipes, Heating Element Pipes & Automotive Pipes etc.
A-27-B, Gali No. 4, Anand Parbat, Industrial Area, New Delhi-110005
Phone : (Fac.) : 25730388, 25757687 (Res.) : 25229742 (Mob.) : 9810592388
Fax. : +91+11-25817482 E-mail: dhingra@del2.vsnl.net.in

कुलानंद बुड़ाकोटी, मनमोहन बुड़ाकोटी
बुड़ाकोटी ज्वैलर्स
(दिल्ली वाले)
हमारे यहाँ सोने चाँदी के आभूषण गारंटी सहित, आर्डर पर व तैयार उपलब्ध हैं।
116, विवेकानन्द पुरी, आजाद मार्ग, दिल्ली-7
Ph : (S) 25726802 (R) 55166631 (M) 9312324443, 9818477281
वर्कशॉप: 34/3122, बीडनपुरा, करोल बाग, दिल्ली-5
केदार मार्किट, देवी रोड़, कोटद्वार, उत्तरांचल
फोन:01382-228448 (S), 228462 (R)

With Best Compliments
From :
Brij Mohan Upreti (Bittoo)
SHIKHAR
Tent & Catering Services
शिखर
F-21, ANDH MAHA VIDYALAYA, PUNCHKUIAN ROAD, NEW DELHI-110 001 Tel. : 23361690
Mob. : 9312836126, 9818031305, 9818884017
70 Gyan Khand-1, Indirapuram, Near St. Thomas School

With Best Compliments From:-

Pawan Kumar

Ph. : 26163723
Mob. : 9312226663
9312240073

JAI MATA TENT HOUSE

Specialist in :

PIPE PANDAL, WATER PROOF PANDAL, OUTDOOR CATERING

with

Menu, Veg. & Non- Veg., Bar-Be-Que

SHOP NO. 33, SECTOR-8 MARKET,
R.K.PURAM,
NEW DELHI-110 022

With Best Compliments
From:-

ADVANCE ISPAT (INDIA) LTD.

New Delhi

"We Salute Our Ideals"

Late : Mrs. Mala Bhandari
& Mr. Sajay Singh Bhandari

From :
Tripan & Anita Bhandari (Son & Daughter-in-Law)
Puneet & Pooja Bhandari (Grand Son & Grand Daughter)

Courtesy :
B & B Techno Contracts
Sauju Marbles & Interiors
511 Aggarwal Cyber Plaza, Netaji Subhash Place, Pritampura, Delhi -110 034
Ph. : Tele - fax : 011-42470388, 27298769,27875388
Cell : 9810088769, 9810988789

With Best Compliments From:

Ramesh C. Sharma
Mobile : 9810077755

Sakura Tours Pvt. Ltd.

We do all Kind of Travel Arrangements :-
Inbond /Outbond Tours, Air Ticketing, Hotel Accommodation, Package Tours,

INTRODUCES STUDENTS IN JAPANESE LANGUAGE TO INSTITUTES IN JAPAN

299, Vasant Enclave, New Delhi-110057, India (Bharatvarsha)
Tel : 0091-11-26147896, 26149055 Fax : 0091-11-26149055 E-mail : skuratr@vsnl.com

Japan Sales Office:
Mrs. Mitsuko Ueno
Sakura International
1-7-23, 106 Hachiman-cho, Higashi Kurume-shi, Tokyo-203-0042, Japan
Tel : 0424 -73-8802 Fax : 0424-73-8219 E-mail : sakuratyo@mc.neweb.ne.jp

---

With Best Compliments
From :-

Harish Bangwal
(M.D.)

BLACK PANTHER SECURITY GROUP (REGD.)

A SECURITY AND DETECTIVE ORGANIZATION

GUNMEN, GUARDS, P.S.O., BOUNCERS, AND ALL OTHER SECURITIES FOR BANKS, PETROL PUMPS, JEWELLERS, FARM HOUSES & KOTHIS.

AS WELL AS ALL HOUSE KEEPING STAFF

23, Tyag Raj Nagar, Prem Nagar Market, Near Lodhi Road, New Delhi-110003
Phone : (off.) 24653592, 51640626
Mobile : 9811100157, 9811100163

With Best Compliments From :

DCBA — DELHI CONTRACT BUS ASSOCIATION — ESTD 1962

Harish Sabharwal
GENERAL SECRETARY

Delhi Contract Bus Association (Regd.)

Flat No. 6, Gokhale Market, Delhi

☎ 23954182, 23970616

With Best Compliments From :-

Mr. Parveen Malhotra   Mr. Naveen Malhotra
PARTNERS

POWERSEAL®
OIL SEALS

S. M. EXPORTS
IMPORTERS & EXPORTERS

28/1-A, Street No. 6, Anand Parbat Industrial Area,
New Rohtak Road, New Delhi-110 005 (India)
Phone : (Off.) 30953522, 25710629, 25724902
(Res.) 25220522, 25222158
Fax : 091-11-25750733 E-mail : parveen23@vsnl.com

With Best Compliments From :-

KUMAR FOODS

25110/

PARAMEX

ISO 9001 Approved Company
JAS-ANZ
Acc. No. 51410994MA
An ISO 9001 : 2000 Certified Company

POWER & DISTRIBUTION TRANSFORMERS

- Manufacture as per Indian Standard Specification
- Range 10 KVA 11/0.433 KV to 33/11 KV & 66/11KV, 66/33 KV upto 50 MVA
- Ground moutned - Platform Mounted - Pole Mounted
- Oil Filled
- Strict quality control & checks
- Supplying Different state of India
- Focus on Customers Satisfaction
- IS: 2026/BS: 171/IEC: 76 National and International Standards
- Prompt Delivery
- Efficient service with 12 months warranty
- Low Losses
- Competative costs

COMPANY PROFILE

PARAMEX is Quality manufacturer of Power and Distribution Transformers in India and has been continuously increasing it's sales through product innovations, consistent quality and strict adherence to delivery schedules. At Paramex Electronics (P) Ltd. qualified engineers study customer's specific requirements and then design solutions in accordance to the desired specifications, strictly adhering to Indian Standard Specification such IS:1180, IS:2026 & CBIP Manual as per specific requirements of our customers with the use of computer aided design (CDA).

CLIENTS:

1. Different State Electricity Board of India, 2. Different Power Corporation of India 3. Public Utility, 4. Private Industrial Customers.

WORKS:

PARAMEX ELECTRONICS PVT. LTD.

D-25, 26 and B-13, Site 'C', Surajpur Indl. Area, Greater Noida-201306
Ph.: 011-55733567, 0120-2560176, 2569098, Fax: 0120-2569490
E-mail: paramex@rediffmail.com